पुरुषश्री जिनभद्रगणिश्रमाश्रमणविरश्चित

जीतकल्पसूत्रम्।

स्वोपज्ञभाष्येण भूषितम्।

संशोधकः— पूज्यपादमवर्त्तेकश्रीकांन्तिविजयन्नित्य-पूज्यवरश्रीचतुरविजयान्तिषद् मुनिपुण्यविजयः

प्रकाशितमिदम्—
अहम्मदावाद्वास्तव्य श्रेष्ठिवर-श्रीदोलतचम्द्रात्मजश्रीप्रेमचम्द्रमोदीश्रेयोनिमिसं तस्त्तेहि पारेखउत्तमचम्द्रात्मज-बी. प. पल् पल्. बी.
१स्युपाधिधारि-रा. व. श्रीगीरधरलालसमर्पितद्रव्यसाहाय्येन ।

-प्रथमावृ**षि** चीर संवत २४६४.

600

विक्रम संवत् १९९४

वीर	र सेवा मन्दिर
	दिल्ली
	*
	CVWX
क्रम सन्या	२२.०१ जि
काल न०	
वण्ड	

पुज्यश्री जिनभद्रगणिश्च माश्रमण विरचितं

जीतकल्पसूत्रम्।

स्वोपज्ञभाष्येण भूषितम् ।

संद्योधकः— पूज्यपादपवर्त्तकश्रीकान्तिविजयशिष्य-पूज्यवरश्रीचतुरविजयान्तिषद् मुनिपुण्यविजयः

प्रकाशितमिदम्—
अहम्मदाबादवास्तव्य-श्रेष्ठिवर-श्रीदोळतचन्द्रात्मज श्रीप्रेमचन्द्रमोदीश्रेयोनिमित्त तत्स्नेहि पारेखउत्तमचन्द्रात्मज-बी. प पल् पल्. बी.
इत्युपाधिधारि-रा व. श्रीगीरधरलालसमर्पितद्रव्यसाहाय्येन ।

प्रथमावृत्ति वीर संबत् २४६४

400

विक्रम संवत् १९९४

प्रकाशकः— भाईश्री वबळचंद्र केरावळाळ मोदी हाजापटेलनी पोळ, अमदावाद.



धी हायमंड ज्युदिकी प्रिन्टींग प्रेसमां परीख देवीदास छगनलाले छाप्युं. सलापोस रोड—असदाबाद.

स्मरणाञ्जलि.

धर्मातमा भोयुत वकील केशबलाल प्रेमचंद मोदीनी प्रेमभरी प्रेरणाने परिणामे प्रस्तुत प्रन्थनुं सम्पादन में तेमना तरफवी स्वीकार्युं हतुं। आजे अत्यंत दीलगीरीनी बात छे के प्रस्तुत प्रयने अवलोकबा पहेलां तेओ आ दुनिआमांची अदृश्य चया छे। वकील केशबलाल माई ए बोना वकीलोनी जेम असीलो साथ कृट गढमथल करी जाणनार वकील न हता पण प्रामाणिकपणे वर्तनार आदृशे वकील होबा उपरांत, तेओ धर्मात्मा, अपूर्व साहित्यप्रेमी अने साहित्यसेवक हता। भारतीय तेम न पाद्यात्य साहित्यप्रेमी अने साहित्यसेवक हता। भारतीय तेम न पाद्यात्य साहित्यरिक विद्यानीत तेओ मार्गदर्शक अने सहायक मित्र हता। पोताना नीवनमां तेमणे जैन साहित्यनी तेम न जैन धर्मनी अनेक रीते सेवा बजाबी छे। तेमना अभावधी जैन समाजने एक विरल्ल साहित्यसेवीनी स्रोट पढी छे। हुं सद्भत वकील महाद्ययना आत्माने ज्ञान्ति इच्छी विरसुं छुं।

म्रुनि पुण्यविजयः

॥ अईम् ॥

प्रस्तावना

हस्तिलिखित प्रति—प्रस्तुत प्रन्यमा सद्द्रोधनमाटे पूज्यपाद प्रवर्तक भी १००८ भी कान्तिबिजयजी महाराजना चडोदराना हस्तिलिखित जैन ज्ञानभंडारनी नवी लखापल मात्र एक ज प्रतिनो आधार लेवामां आव्यो छे । आ प्रतिने, लींबडीना जैन ज्ञान-भंडारनी कोई विद्वाने सुधारेल प्राचीन प्रतिना आधारे में सुधारी हतो । आ उपरांत, प्रस्तुत प्रयने सुधारचा माटे आवश्यकनिर्युक्ति, पिण्डनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, व्यवहारभाष्य, बृहत्कल्पभाष्य, पंच-कल्पभाष्य चगरे प्रन्थोनो एण उपयोग करवामां आव्यो छे अने जेम वने तेम प्रस्तुत प्रन्थने शुद्ध करवा माटे प्रयत्न कर-वामां आव्यो छे ।

प्रस्तुत प्रन्थनी हस्तिलिखित प्रतिमां अमे वे खास विशेषताओं जोई छे। एक परसवर्णविषयक; अर्थात् अध्मिन्नेय देन्तो
होन्ति अणहियासेन्तेहिं आ प्रमाणे घणे ठेकाणे प्राचीन
समयथी करेला परसवर्णों छे। अने बीजी विशेषता—स्यां ज्यां
प्रस्तुत प्रन्थनी जे जे सूत्रगाथानुं भाष्य समाप्त थाय छे त्यां ते ते
गाथाना अंकने ताइपत्रीय प्रतोमां आषता पत्रांकदर्शक अक्षरांको
द्वारा दर्शाववामां आव्यो छे। उपरोक्त परसवर्ण अने गाथादर्शक
अक्षरांको आसा प्रन्थमां करवामां आव्या हशे परंतु लेखकादिनी
अज्ञानताने लीधे केटलेक ठेकाणे आ बस्तु कायम रही छे अने
केटलेक ठेकाणे पमां परिवर्त्तन पण थयुं छे। अमे, आ बन्नेय
वस्तुओ अमारा पासेनी प्रतिमां जे प्रमाणे मळी छे ते रीते
कायम स राखी छे। आथी अमे पटलुं ज जणाववा इच्छीप
छीप के-आ प्रंथमां परसवर्ण बगेरे जे छे ते अमे इस्तिलिखित
प्रतिने आधारे ज करेला छै।

जीतकरपभाष्य—प्रस्तुत भाष्यमंथ व करूपभाष्य, व्यवहार-भाष्य, पंचकरूपभाष्य, पिण्डनिर्युक्ति वगेरे प्रम्थीनी गाथाना संग्रहरूप ग्रन्थ छे। कारण के आ ग्रन्थमां पदी ढगलाबंध गाथाओं छे जेने उपरोक्त ग्रन्थोमांनी गाथाओं साथे अक्षरशः सरसाधी शकाय।

प्रनथकार — आ पुस्तकमां कीतकल्पस्तत्र अने तेना भाष्यनो समावेश करवामां आष्यो छे। जीतकल्पस्तत्रना प्रणेता भगयान जिनभद्रगणि क्षमाध्रमण छे प निर्विवाद हकीकत छे। आ संबंधमां तेम ज भगवान जिनभद्रगणिना समय निर्णय विषे विद्वद्वयं धोमान जिनविजयजीय पोते संपादन करेळ चूर्णि सहित जीत-कल्पस्त्रनी मस्तावनामां सिवस्तर आळोचना करी छे। पटले आ विषयना जिज्ञासुओनं ते प्रस्तावना जोवा भळामण छे। अहीं मारे मात्र पटलु ज कहेशानु छे के जीतकल्पभाष्यना कर्ता कोण छे?। प्रस्तुत भाष्यमां कोई पण ठेकाणे भाष्यकारे पोताना नामनो उल्लेख कर्यों नथी, नथी चूर्णिकारे प्रस्तुत भाष्यनो पोताना ग्रन्थमां क्यां उल्लेख कर्यों नथी, नथी चूर्णिकारे प्रस्तुत भाष्यनो पोताना ग्रन्थमां क्यां उल्लेख कर्यों तथी जेना आधारे भाष्यकारना नामनो चोक्कस निर्णय करी शकाय। तेम छतां प्रस्तुत जीनकल्पभाष्यनो

तिसमयहारादीण, गाहाणऽहुण्ह वो सह्दवं तु । वित्थरयो वण्णेज्ञा, जह हेट्टाऽऽवस्सप भणिय ॥६१॥

आ गाथामांना "जह हेट्टाऽऽबस्सप भणियं" प पाठ तरफ ध्यान आपतां आपणने सहेजे पम थाय छे के-अहीं "जह आव स्सप भणियं" पटलो ज पाठ वस छतां भाष्यकारे बधारानो "हेट्टा" चाब्द शामाटे मुक्यों ?! "हेट्टा" चाब्द प कोई पाद-पूरणार्थक शब्द नथी के आपणे तेम मानीने चलाबी लहेप। करं जोतां प्रन्थकारो "हेट्टा" अने "उवरिं" प के शब्दोने अनुक्रमे "पूर्व" अने "अग्रे" अर्थमां ज वापरे छे। दा. त. "हेट्टा भणियं" अर्थात् पूर्व भणितम्; "उवरिं चोच्छं" अर्थात् अग्रे वश्ये । आ उपरथी प फलित याय छे के-"पस्तुत जीत-कल्प" ग्रंथना भाष्यकारे "तिसमयहार" अर्थात् "जाबह्या तिसमया—" (आव० निर्युक्ति गाथा ३०) इत्यादि आठ गाथा-ओनुं स्वरूप पूर्वे आवश्यकमां विस्तारयी वर्णव्युं छे"। आव-श्यकनिर्युक्तयन्तर्गत " आवह्या तिसमया०" आदि गाथाओनुं

भाष्यग्रंथ द्वारा विस्तृत व्याख्यान करनार भगवान जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण सिवाय बीजुं कोई ज नथी। पटले मारी प दढ मान्यता छं के-प्रस्तुत जीतकल्पभाष्यना प्रणेता भगवान श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण छं।

भाष्यकार तरीके के आचार्यों जाणीता छे। एक भगवान् श्रीसंघदासगिण क्षमाश्रमण अने बीजा पृष्य श्रीजिनभद्रगिण क्षमाश्रमण। कल्पवृहद्भाष्य वगेरेना प्रणेता कोण छे? प निर्णीत निर्यो, पण प आ के करतां कोई बीजा ज आचार्य छे पम अमे मानीप छोप। अस्तु, प गमे ते हो, तो पण पृष्ट्य श्रीजिनभद्रगिण क्षमाश्रणनी महाभाष्यकार तरीकेनी ख्याति होई प्रस्तुत भाष्यमां तेमना पूर्वे थई गपल भगवान् श्रोसंघदासगिण कृत भाष्यग्रन्था दिनी गाथाओं होवामां कोई पण प्रकारनी विरोध नथी।

विषय—प्रस्तुत प्रन्थमां जैन निर्धन्थ-निर्धन्थीओना जुदा जुदा अपराधस्थानविषयक प्रायश्चित्तोनुं जोतन्यवहारनं आश्ची निरूपण करवामां आन्युं छे। जे विषयानुकमणिका जोवाथी स्पष्ट रीते जाणी शकाशे।

अंतमां हुं पटलुं ज इच्छु छुं के-प्रस्तुत यन्थना संशोधनमा सावधानी राखया छतां स्खलनाओ रहेवा पामी होय तेने विद्वानो क्षमापूर्वक सुधारीने वांचे।

> निवेदक— पुण्यविजय ।

विषयानुक्रमणिका

विषय.	भाष्यगाया.	AB.
मूत्र गाथा १		3
मंगल अभिधेयादि		ę
'प्रवचन' दाब्दनो निरुक्तार्थ	१-३	ę
प्रायश्चित्त ' शब्दनो निरुक्तार्थ	ध- <i>६</i>	१
आगम, श्रुत, आज्ञा, धारणा अने जीत व्यवह	ार ७-८	ર
आगमन्यवहार	९–५५९	3
'आगम' व्यवहारना भेद-प्रभेदो अने		
प्रत्यक्ष आगम परीक्ष आगम	९–१ ०	ર
प्रत्यक्ष-परोक्ष आगमनुं स्वरूप	११	ર
'अक्ष' शब्दनी व्युत्पत्ति	१२१३	૨
ं अक्ष 'ना अर्थ सबंधे अन्य मतनो निर्देश	T	
अने प्रतिषेध	१४-२२	ঽ
'नोइन्द्रिय प्रत्यक्ष आगम'नी त्रिविधताः	२३ -२४	3
अवधि मनःपर्याय-केषस्र		
अवधि ज्ञान	२५-७३	₹
अवधिज्ञाननी प्रकृतिओ	२५-३१	ន
भवप्रत्ययिक अवधिज्ञान	३२- ३३	ន
गुणप्रत्ययिक अवधिज्ञान	રૂટ	೪
'अवधि' नुंस्वरूप	३५-३६	ક
'अषधिज्ञान'ना छ भेदो	३७	ន
आनुगामिक अषधि	३८-४६	ક
अनानुगामिक अवधि	୫७ - ୫ ୧	ધ્ય
वर्धमानक अवधि	५०-६१	فر
हीयमानक अवधि	६ २	Ę
प्रतिपाती अवधि	६३-६४	૭
अप्रतिपाती अवधि	ह्५-ह्	હ
द्रव्याविध क्षेत्राविध	६८-६९	G

कालावधि	५०-७१	9
भावावधि	७२ - ७३	હ
मनःपर्येव ज्ञान	७४–८९	9
मनपर्यव ज्ञानना वे भेदः	હુર	હ
ऋजुमति-विमलमति		
द्रव्यमन पर्यव	હલ્	4
क्षेत्रमनःपर्यव	७ ६–८१	4
कालमनःपर्येष	८२-८३	4
भावमनःपर्यय	८४-८५	4
'मन पर्यव ज्ञान 'नो विषय	८६-८८	4
ऋजुमति-विपुलमति	८९	9
केवलज्ञान	९०-१०९	९
केवलज्ञाननुं स्वरूप	९०-१०४	९
केवलज्ञानिमां मति वगेरे ज्ञाननो अव	मात्र आदि १०५-९	१०
परोक्षागमञ्चवहारी	११० -१६	१०
'प्रायश्चित्तं नीन्यूनता-अधिकतास्	ांबं धी	
पृच्छा अने उत्तर	११७–२४	११
प्रायश्चित्तदानयोग्य	१५५–३१	१२
आलोचनाश्रवणनो क्रम	१३२ ४८	१२
पायश्चित्त देनारनी योग्यता अयोग्य	ना	
संवंधी विचार	186-581	58
पायश्चित्तनां अढार स्थानो	3,84-4,8	3,8
प्रायश्चित्तनां बत्रीश स्थानो	१५५-६०	28
आठ संपदा	१६१–६२	१५
चार प्रकारनी आचारसंपदा	१६३ ६६	ڳ ڻر
चार प्रकारनी श्रृतसंपदा	\$ Ę 9-90	१५
चार प्रकारनी दारीरमंपदा	१७१–७४	१६
चार प्रकारनी वचनमंपदा	१७५ ७८	१६
चार प्रकारनी वाचनासपदा	१७९-८४	१६
चार प्रकारनी मितिसंपदा	१८५-९१	१७

चार प्रकारनी प्रयोगमतिमयदा	१९२–९७	१७
चार प्रकारनी संग्रहपरिज्ञासपदा	१९८ २०६	१८
प्रायिश्वत्तनां छत्रीक्ष स्थानो	२०७-११	30
चार विनयनी प्रतिपत्तिओ	२१२-१३	१९
चार प्रकारे आचारविनय	ર१ક⊱૨૨	१९
चार प्रकारे धृतविनय	२२३-२५	२०
चार प्रकारे दिक्षेपणविनय	२२६ -३३	२०
चार प्रकारे दोपनिर्घातिवनय	२३४-४१	२१
आगमन्यवहारी	२४२–५४	28
'आस्रोचना'ना दश गुणो	२४५	२२
प्रायिकत आपनार योग्य ज्ञानिओना		
अभाव थये ब्रायधिन केम सभवे 2	२५५- ६२	२३
एशो शिष्यनो प्रश्न अने आचार्यनो उन	नर २६३ ७३	२ ३
दश प्रकारे पायधित	રહ્ય	રક
प्रायश्चित्त देवानो विभाग	२७५-९०	રક
प्रायश्चित्तना करनाराओनु अस्तित्व	२९१-९९	२ ६
सापेक्षपणे प्रायश्चित्त देवामां लाभ अने		
निम्पेक्षपणे प्रायश्चित्त देवामां अलाभ	३००-११	२६
चारित्रना अस्तित्वनी सिद्धि	३१२-१८	२७
निर्यापकोनो अञ्यविष्ठे इ	३१९-२१	સ્ટ
भक्तपरिज्ञानो विधि	३२२-५११	36
निर्वाघात अने मध्याघात एवी		
सपराक्रमभक्तपरिज्ञानु स्वरूप	३ २७	२९
द्वारगाथा भो	३२७ ३१	२९
गणनिस्सरणद्वार	३३२-३७	२९
श्चितिद्वार	३३८ ४०	३०
संलेखनाद्वार	३४१-५५	३०
अगीनद्वार	३५६-६९	३१
असं विग्नद्वार	७७~०७६	३२
पकद्वार	३८८-८०	३३

आभोगद्वार	३८१-८६	३३
अन्यद्वार	३८७-८८	38
अनापुच्छाद्वार	३८९-९१	इध
परीक्षाद्वार	३९२-४०७	३४
आलोचनाद्वार	४०८-२३	३६
स् <mark>थान-श्वस</mark> तिद्वार	४२४–३२	३७
निर्यापकद्वार	४३३-३७	36
द्रव्यदापनाद्वार	४३८ –४७	३८
द्वानिद्वार	४४८-५०	३९
अपरितान्तद्वार	કહ ષ્- હ સ્	३९
निर्जराद्वार	४५३–५७	೪೦
संस्तारकद्वार	ध्५८-६०	೪೦
उद्यर्तनाद्वार	४६१-६३	೪೦
स्मारणाद्वार	કદ્દઇ-હ્લ	೪೦
कृतच्छार	<i>७९-३</i> २४	કર
चिद्वकरणद्वार	४९ १- ९.३	ઇક
यतनाद्वार	<i>४</i> ९३-१७	ध३
निन्यीघात अने सन्याघात एवी		
अपराक्रमभक्तपरिज्ञानुं स्वरूप	868-688	₹8′
इंगिनीमरण	4 ? <i>२</i> – ? 4	४५
पाद्पोपगमन	<i>५१६–५९</i>	४५
श्रुतव्यवहार	५६०–६४	४९
आज्ञान्यवहार	५६५-६५४	४०
अपरिणत, अतिपरिणत अने परिणत		
शिष्यानी परीक्षा अथवा तेमनुं स्वरूप	५६५-८८	ક લ્
दर्पना दश प्रकार	५८९-९९	५१
कल्पना चोबीदा भेद	६००-१६	५२
दर्भ कल्प आदि पदोना भांगाओ	६१७-५४	લ્ ષ્ટ
धारणा च्यवहार	६५५७४	५७

जीतन्यवहार	६७५-९४	५९
सावद्य अने अस।वद्य जीतव्यवहार	६८७-९४	६०
व्यवहारना स्थरूपनो उपसंहार	६९५-७०५	६०
सूत्र गाथा २-३		
प्रायश्चित्तनुं माहात्म्य	७०६-१७	६१
मूत्र गाथा ४		
प्रायश्चित्तना दश भेदो		६२
आलोचना	७ १८	६३
प्रतिक्रमण	७१ ९	६३
मिश्र-आलोचना अने प्रतिक्रमण बन्ने	७२०-२१	६३
विवेक	७२२	६३
च्यु त्सर्ग	७२३	દ રૂ
नप	७२४	६३
छे द	७२ ५	६३
मूल	७२६	६३
अने घस्थाः य	८२७-२८	६३
पारांचिक	७ २९–३०	६३
मुत्र गाथा ५-८		
आलोचनापायश्चित्तने योग्य अपराधम्थानो	62-186	६४
'छद्म'नो अर्थ	ূহ ্	६४
सूत्र गाथा ९-१२		
प्रतिक्रमणप्रायश्चित्तने योग्य अपगथस्थानो		६८
गुप्तिओनं स्वरूप	७८४-८६	६८
मनोगुप्ति विशे जिनदासनु उदाहरण	७८ <u>७</u> –९,०	६९
वचनगुप्ति विद्ये कोई साधुनु उदाहरण	<i>७९,१–९६</i>	६९
कायगुनि विशे कोई साधुनुं उदाहरण	७९७-९९	७०
कायगुप्ति विशे बीजुं उदाहरण	८००−३	७०
समितिओनुं स्वरूप	८०४-१७	૭૦
ईर्यासमिति विद्ये अर्देग्नकनुं उदाहरण	८१८-१९	७१
भाषासमिति विशे कोई साधुनुं उदाहरण	८२०-२५	७१

एषणासमिति विद्ये वसुदेवना जीव		
नंदिवर्धननुं उदाहरण	८२६–४७	७२
आदाननिक्षेपणासमिति अने तेना		
विशे उदाहरण	८४८ ५३	હર
पारिष्ठापनिकासमिति अने तेना		
विद्ये धर्मरुचिनुं उदाहरण	८५४–६०	હર
गुरुनी आशा ^त नानु स्वरूप	८६१-७१	ওং
गुरु अने शिष्यनां षचनो	८६९ ७१	ওং
गुरुना विनयना भंगनुं स्वरूप	८७२-७७	(G ^r 4,
प्रकारान्तरे विनयभंगना सात प्रकारो	636	ওই
इच्छाचकरणनी व्याख्या	८७९-८१	હદ્
लघुस्त्रमृषाबादनुं स्त्ररूप	८८२-९०५	હદ્
प्रतिक्रमणप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थान-		
स्रवक अविधिकास जुम्भा श्लुत वात		
असंक्षिष्टकर्म कन्दर्प हास्य विकथा		
कषाय विषयानुषंग स्वलना सहसा		
अनाभोग आभोग स्नेहभय शोक		
वाकु शिक आदि पदोनी व्याख्या	९०६-३२	5 /2
सूत्र गाथा १३-१५		
आलोचना अने प्रतिक्रमण ए वन्ने		
प्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो		< 3
संभ्रम भय आपत् अनान्मवद्यता		
दुश्चिन्तित आदि पदोनी व्याख्या	९,३३-५४	८१
सूत्र गाथा १६-१७		
विवेक पायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो		63
पिंड उपधि द्याया कृतयोगी कालातीन		
अध्वातीत शट अशट उद्गत अनुद्रत		
कारणगृहीत आदि पदोनी व्याख्या	९५५ ७१	८४
मूत्रगाथा १८–२२		
व्युत्सर्गे पायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो	ľ	68
व्युत्तम् नापान्यमम् नापन् नापन्यमाना	ı	- 0

गमन आगमन विहार श्रुत साषचस्वप्न नावा-				
नदीसन्तार अहेत् आदिपदोनी व्याख		८४		
' उच्छुास 'नुं प्रमाण वगेरे	९९१–९७	८६		
यू सूत्र गाथा २३-७	९			
नपःपायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो		<9		
सृत्रगाथा २३-३५	ડ	७ऽ		
'झान'ना आराठ अतिचारो	९९८ -१०३०	८७		
'दर्शन'ना आठ अतिचारो	१०३१-६८	९०		
छ व्रतरूप चारित्रना अतिचारो	१०६९-८६	९३		
सूत्र गाथा ३५				
चारित्रोद्गमनु स्वरूप	१०८७-९४	९६		
उद्गमना सोल दोषो	१०९५-९७	९५		
आधाकर्मनो विचार	१८९.८-११९४	९६		
सयमञ्जेणि	११० ६-१ ०	९६		
औद्देशिकनो विचार	६१९५-१२०२	१०३		
पृतिकर्मनो विचार	१२०३-१५	१०४		
मिश्रजातनो विचार	१२१६-१८	१०५		
स्थापना दोषनो विचार	<i>६</i> २१ ९- २ ३	१०५		
प्राभृतिका दोपनो त्रिचार	₹ > २ ४-३ ७	६०६		
प्रादुष्करण दोषनो विचार	१२३८ ४०	१०७		
क्रीत दोषनो विचार	१२४१-४४	१०७		
प्रामित्य दोषनो विचार	१२४५ -४६	१०१		
परावर्तित दोषनो विचार	१ २४/9-४८	१०८		
अभ्याहृत दोपनो विचार	६२४९-५५	१०८		
उद्भिन्न दोषनो विचार	१२५६ ६८	१०८		
मालाहत दोषनो विचार	१२ ६९ –७३	१०९		
आच्छेद्य दोषनो विचार	१२७४	११०		
अनिसृष्ट दोषनो विचार	१२७५-८२	११०		
अध्यवपूरक दोषनो विचार	१२८३-८६	१११		
कोटि शब्दनो अर्थ अने तेनुं स्वरूप	१२८७-१३१२	१११		

उत्पादनानुं स्वरूप	28-88	११३
उत्पादनाना निक्षेपो	१३१४	११३
उत्पादनाना सोल दोषो	१३१९-२०	११४
धात्रीदोष	१३२१-२४	११४
धात्रीना (धावमाताना) पांच प्रकार	१३२२	११४
वृतीदोष	१३२५-४०	११४
निमित्तदोष	१३४१-४९	११५
आजी बदोष	१३५०-६१	११६
वनीपकदोष	१३६२-८३	११७
चिकित्सापिण्ड	१३८४-९२	११९
क्रोध वगेरे दोषो	१३९३-९४	११९
क्रोधपिंड विशे क्षपक्ष्तुं उदाहरण	१३९५	१२०
मानपिंड विद्ये क्षुह्नकर्नु उदाहरण	१३९६-९७	१२०
मायापिंड विशे आषाढभूतिनुं उदाहरण	१३१८-१४११	१२०
लोभपिड विदो 'सिहकेसर' नामना		
मोदकने ६=छनार क्षपकनु उदाहरण	१४१२-२०	१२१
संस्तयदोष	१४२१–इह	१२२
विद्या अने मन्त्रदोष	१४३७	१२३
विद्या अने मंत्रनो तफावत	૧૪ ૩૮	१२३
विद्या विद्ये भिश्चपासकनुं-वौद्धउपासकनुं		
उदाहर ण	१४३९-४४	१२३
मन्त्र विद्ये पादलिप्त अने मुरुंडराजनुं		
उदाहरण	१४४५-४७	१२३
चूर्णदोष, योगदोष अने मृलकर्म दोष	१४४८	६२४
चूर्णदोष बाबत बे क्षुह्नकनुं उदाहरण	१४४९-५७	१२४
योगदोष	१४५८-६०	१२५
योगिवेशे बहाई पिक तापसोनुं उदाहरण	१४६४-६७	१२५
गुलकर्म	१४६८-७२	१२५
ग्रहणैषणानुं स्वरूप	१४७३-७५	१२६
अहणारणासु रवरत अहणेषणाना दश प्रकार		· -
	3268 20-2-2-1	१२६ १२६
शंकित दोष	१४७७-९०	१२६

शंका विषयक चतुर्भद्वी	१४७८	१२६
म्रक्षित दोष	३ ४९१-१५११	१२७
निक्षिप्त दोष	१५१२-४५	१२९
पिहित दोष	१५४६–५७	१३१
सहत दोष	१५५८-६७	१३२
दायक दोष	१५६८-८२	१३३
उन्मिश्र दोष	१५८३-८६	१३४
अपरिणत दोष	१५८७-९३	१३५
लिप्त दोष	१५९४-९९	१३५
छर्दित दोष	१६००-४	१३६
ग्रासेषणानुं स्वरूप	१६०५-१०	338
संयोजना दोष	१६११-२१	१३६
प्रमाण दोष	१६२२-४२	१३७
अंगार दोष	१६४३-४८	१३९
धूम दोष	१६४९–५५	१३९
कारण दोष	१६५६-७०	१४०
उपसंहारादि	१६७१-७९	१४१
मूत्र गाथा ३६-४	ಕ	
पिण्डविश्रुद्धि विषयक अतिचारोने		
आश्री प्रायश्चित्त	१६८०-१७१९	१४२
सृत्र गाथा ४५-५	९	
तपःप्रायश्चित्तने योग्य धावत डेपन संघर्ष		
गमन क्रीडा उन्कृष्टि गीत सेण्टिका		
जीवहतादि पदोनुं स्वरूप	१७२०–२४	१४६
तप प्रायश्चित्तने योग्य जधन्य मध्यम उत्कृ	ष्ट	
उपधिने आश्री विच्युत विस्मृत अप्रेक्षि	त	
अनिवेदन आदि पदोनुं स्थरूप	१७२५-४१	१४७
तप:प्रायधित्तने योग्य कास्रातीतकरण		
अध्वातीतकरण तत्परिभोग पाना-		
संवरण भूमित्रिकाप्रेक्षण आदि पदो	१७४२–५२	१४८

तप:प्रायश्चित्तने योग्य कायोत्सर्गभंग व	कायो-	
त्सर्गश्रकरण येगवन्दनादि रा	त्रे ^{ड्} यु	
त्सर्गादि दिवसदायनादि पदी	१७५३–६०	१५०
तप प्रायश्चित्तने योग्य चिरकषाय उ	ग स्य	
लशुनादि तर्णादिबन्धनादि पुस्तकप	প্ৰক-	
तृणपञ्चक-दूष्यपञ्चकाप्रतिलेखनादि		
स्थापनाकुलपवेशादि पदो	१७६१-७७	१५०
तप:प्रायश्चित्तने योग्य दर्पपञ्चेन्द्रि	यव्य-	
परोपण संक्षिष्टकर्म दोर्घाध्यकल्प		
ग्लानकल्प आदि पदो	१७७८-८७	१५२
तप:प्रायश्चित्तने योग्य छेदादि		
अश्रद्धानादि पदो	१७८८ ९४	१५३
सूत्र गाथा ६०	- ७९	
सामान्य अने विशेषपणे आपत्ति अ	ा ने	
दानविषयक नपनो द्रव्य क्षेत्र क	ia.	
	11 / 2	
•		
भाव पुरुप प्रतिसेवना आदिने आ विभाग		१५४
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ	श्री १७९५-२२७९	१८४
भाव पुरुप प्रतिसेवना आदिने आ विभाग	श्री १७९५-२२७९	१८४
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग सृत्र गाथा ६०-	'શ્રી	૧ ૦૪ ૧ ૦ ૪
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग सृत्र गाथा ६०- तपप्रायधित्तने आश्री सामान्य अने विद्योष आपत्ति अने दाननुं स्वह्णप	श्री १७९५–२२७९ –६३ १७९५-१८१ १	
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग मृत्र गाथा ६०- तपप्रायधित्तने आश्री सामान्य अने विशेष आपत्ति अने दाननुं स्वरूप मृत्र गाथा ६४-	श्री १७९५–२२७९ –६३ १७९५-१८१ १	
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग मृत्र गाथा ६०- तपप्रायधित्तने आश्री सामान्य अने विद्योष आपत्ति अने दाननुं स्वरूप मृत्र गाथा ६४- द्रव्यनुं स्वरूप अने तेने आश्री	श्री १७९५-२२७९ -६३ १७९५-१८१ १ -६५	१५४
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग मृत्र गाथा ६०- तपप्रायधित्तने आश्री सामान्य अने विद्योष आपत्ति अने दाननुं स्वरूप सूत्र गाथा ६४- द्रव्यनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार	श्री १७९५-२२७९ -६३ १७९५-१८११ -६५ १८१२-१९	१५४
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग मृत्र गाथा ६०- तपप्रायश्चित्तने आश्री सामान्य अने विदोष आपत्ति अने दाननुं स्वरूप मृत्र गाथा ६४- द्रव्यनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार मृत्र गाथा ६	श्री १७९५-२२७९ -६३ १७९५-१८११ -६५ १८१२-१९	१५४
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग मृत्र गाथा ६०- तपप्रायधित्तने आश्री सामान्य अने विद्योष आपत्ति अने दाननुं स्वरूप सूत्र गाथा ६४- द्रव्यनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार	श्री १७९५-२२७९ -६३ १७९५-१८११ -६५ १८१२-१९	ર બક રબફ
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग मृत्र गाथा ६०- तपप्रायश्चित्तने आश्री सामान्य अने विद्योष आपत्ति अने दाननुं स्वरूष मृत्र गाथा ६४- द्रव्यनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार मृत्र गाथा ६ क्षेत्रनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार	श्री १७९६-२२७९ -६३ १७९६-१८११ -६५ १८१२-१९ ६	ર બક રબફ
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग सूत्र गाथा ६०- तपप्रायश्चित्तने आश्री सामान्य अने विद्येष आपत्ति अने दाननुं स्वरूष सूत्र गाथा ६४- द्रव्यनुं स्वरूष अने तेने आश्री तपोदाननो विचार सूत्र गाथा ६ क्षेत्रनुं स्वरूष अने तेने आश्री तपोदाननो विचार सूत्र गाथा ६	श्री १७९६-२२७९ -६३ १७९६-१८११ -६५ १८१२-१९ ६	ર બક રબફ
भाव पुरुष प्रतिसेवना आदिने आ विभाग मृत्र गाथा ६०- तपप्रायश्चित्तने आश्री सामान्य अने विद्योष आपत्ति अने दाननुं स्वरूष मृत्र गाथा ६४- द्रव्यनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार मृत्र गाथा ६ क्षेत्रनुं स्वरूप अने तेने आश्री तपोदाननो विचार	श्री १७९६-२२७९ -६३ १७९६-१८११ -६५ १८१२-१९ ६	१५ ક १५ ફ

सूत्र गाथा ६८

भावनुं स्वरूप अने तेने आश्री		
तपोदाननु स्वरूप	१९३४-३७	१६६
सूत्र गाथा ६९	9३	
पुरुषना पकारो अने तेने आश्री		
_	१९३८-२२६२	१६६
सूत्र गाथा ६९		• •
•		
गीतार्थ, अगीतार्थ, सहनज्ञील, असहन		
शील, शह, अशह परिणामी, अपरि		500
णामी अतिपरिणामी पुरुवोनु स्वरूप		१६६
सूत्र गाथा ७०		
धृतिमंहननोपेत अने हीन, आत्मतर	τ,	
परतर, उभयतर, नोभयतर अने	504 4 50	8= 4
अन्यतर पुरुषो	१९५८-६४	१६८
मूत्र गाथा ७१		
कल्पम्थित अने अकल्पम्थित आदि		
पुरुषोनुं वर्णन	१९६५–२१९५	१६०
स्थितशब्दना एकार्थिको	१९६५-६६	१६९
छ प्रकारनी कल्पस्थिति	१९६७	१६९
दशप्रकारनो कल्प अने तेनो अवस्थित	Т	
अनद्यस्थित तरोकेनो विभाग	६ २६८-७४	१६९
आचेलक्यकल्पनु स्वरूप	१९७८ -८९	१६९
औह शिककल्पनुस्वस्तप	१९९०-९१	१७१
शय्यातरकल्पनु स्वरूप	<i>१९९२-९</i> ५	१७१
राजपिण्डकल्पनु स्वरूप	१९९६-२०१२	१७१
कृतिकर्मकरूपनुं स्वरूप	२०१३-१६	१७३
व्रतकल्पनु स्वरूप	२०१७-२२	१८३
पुरुषज्येष्ठकल्पनुं स्वरूप	૨ ૦૨૨-४८	१७३
प्रतिक्रमणकल्पनुं स्वरूप	२०४९-५५	१७५

मासकल्पनुं स्वरूप	२०५६ ९३	१७६	
पर्युषणाकल्पनुं स्वरूप आदि	२०९४-२१०९	१७९	
परिद्वारकल्पनु स्वरूप	२१ १ ०-५६	१८०	
जिनकल्पनु स्वरूप	२१ ५७ -७८	१८४	
स्थविरकल्पनुं स्वरूप	२१७९-८४	१८६	
परिणत, अपरिणत, कृतयोगी, अकृतयोगी	ते,		
तरमाण, अतरमाण पुरुषोनुं स्वरूपादि	२१८५ ९२	१८६	
सूत्र गाथा ७२			
कल्पस्थितादि पुरुषोने आश्री			
तपोद्दान विभाग	२१९३-९५	१८७	
सूत्र गाथा ७३			
जीतयन्त्रविधि आदि	२१९६-२२६२	१८८	
सूत्र गाथा ७४-७	e e		
प्रतिसेवनानु स्वरूप अने तेने आश्री			
तपोदाननो विभाग आदि	२२६३-७९	१९३	
		124	
मूत्र गाथा ८०-८	४२		
छेद्रशयश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो	२२८०-८७	६९.६	
सुत्र गाथा ८३-८	८६		
मूलप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो	२२८८-२३००	१९६	
मूत्र गाथा ८७-९	Ş		
अनवस्थाप्यप्रायश्चित्तने योग्य			
अपराधस्थानो	२३०१–२४६२	१९८	
हस्ततालनुं स्वरूप	२३७१-८९	२०३	
हस्तालंबनुं स्वरूप	२३९०-९२	२०५	
हस्तादाननुं स्वरूप अने अवसन्नावार्यनुं			
द ष्टान्त	२३९३-२४६०	२०५	
सूत्र गाथा ९४-१०१			
पारांचिकप्रायश्चित्तने योग्य अपराधस्थानो	२४६३-२५८५	२११	

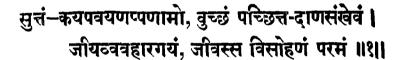
सूत्र गाथा ९४

तीर्थकर प्रवचन श्रुत आचार्य आदिविषयव		~ 2 6
आशातना पारांचिकनुं स्वरूप	२४६३–७६	२११
सूत्र गाथा ९५		
कषायदुष्ट अने विषयदुष्ट पारांचिकनुं		
स्वरूप	२४७७-२५२२	२१३
मूत्र गाथा ९६		
स्त्यानर्द्धित्रमत्तपारांचिक, अन्योन्यकुर्वाण		
पारांचिकनु स्वरूप	२ ५२३ - ३९	२ १६
सूत्र गाथा ९७-१०	, ş	
लिंगपारांचिक, क्षेत्रपारांचिक, काल [,]		
पारांचिक आदिनुं स्वरूप	२५४०-८५	२१८
सुत्र गाथा १०२		
अनवस्थाप्य अने पारांचिकनो सद्भाव		
भद्रबाहु सुधी	२५८६-८७	२२२
मूत्र गाथा १०३		
जोतकल्पनो उपसंहार	२५८८-२६०६	२२३
जीतशब्दनो अर्थ	२५८८-८९	२२३
कल्पशब्दनो अर्थ	२५९०-९ ३	२२३
जीतक रूपशास्त्रना अध्ययनना अधिकारी	२५९४-२६०६	२२३

॥ ॐ नमो जिनाय ॥ आचार्यश्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणविरचितं

जीतकल्पसूत्रम्।

स्वोपज्ञभाष्येण भूषितम्।



पवयण दुवालसंगं, सामाइयमाइ विदुसारंतं ।

अहव चडिवह संघो, जत्थेव पइद्वियं नाणं ॥१॥

अहव पगयपसत्थं, पहाणवयणं व पत्रयणं तेण ।

अहव पगचपतीई, नाणाई पत्रयणं तेणं ॥२॥

जीवाइपयत्था वा, उवदंसिक्जंति जत्थ संपुण्णा।

सो उवएसो पवयण, तिम्म करेत्ता णमोकारं ॥३॥

वोच्छं वक्सामि त्ती, पिच्छत्तं दसह एय उविर्ति तु ।

पार्वे छिंदति जम्हा, पायिच्छत्तं ति भण्णते तेणं ।

पार्वे छिंदति जम्हा, पायिच्छत्तं ति भण्णते तेणं ।

पार्वेण वा वि चित्तं, सोहयई तेण पिच्छत्तं ॥६॥

पणगादी आवत्ती, णिन्विगइअमादि एत्थ दाणं तु । संखेव समासो त्ति व. ओहो त्ति व होति एगद्रा ॥६॥

१ तुत्रालसंग-द्वादशाङ्गं आचाराङ्गादि दृष्टित्रादान्तम्। सामायिक-सूत्रं "करेमि भंते !" इत्यादिकम्। विन्दुसार इति चतुर्दशं पूर्वम्॥ २ पगयपसत्यं प्रकृते प्रशस्तम्॥

आगमादिव्य-वहारपञ्चकम्

आगमन्यव-हार्मेदप्रमेदाः किं अत्थी अण्णे वी, ववहारा जेण जीतगहणं तु ? ।
भण्णित चउरऽत्थऽण्णे, आगममादी इमे मुणमु ॥७॥
पंचिवहो ववहारो, दुग्गइ-भवमूरएहिँ पण्णतो ।
आगम मुय आणा धारणा य जीए य पंचमए ॥८॥
आगमओ ववहारो, मुणह जहा धीरपुरिसपण्णतो ।
पचक्लो य परोक्लो, सो विह दुविहो मुणेयव्वो ॥९॥
पचक्लो वि य दुविहो, इंदियजो चेव नोयइंदियजो ।
इंदियपचक्लो वि य, पंचमु विसएमु णायव्वो ॥१०॥
जीवो अक्लो तं पति, जं वट्टइ तं तु होति पचक्लं ।
परओ पुण अक्लरसा, वट्टंतं होइ पारोक्लं ॥११॥

प्रत्यक्षपरो-क्षयोर्ठक्षणम्

'अक्ष'पदस्य निरुक्तम

दर्शनान्तरी-यामिमतस्य प्रत्यक्षलक्षण-स्य खण्डनम् 'असु वावण'धाऊओ, अक्लो जीवो उ भण्णए णियमा। जं वावयए भावे, णाणेणं तेण अक्लो ति ॥१२॥ 'अस भोयणिम्म' अहवा, सन्वद्वाणि भोगमेतस्स। आगच्छंती जम्हा, पालेड य तेण अक्लो ति ॥१३॥ केसिंचि इंदियाई, अक्लाई तदुवलद्धि पश्चक्लं। तं तु ण जुज्जति जम्हा, अग्गाहगिमिदियं विसए ॥१४॥ क्लादीविसयाणं, जीवो खल्ल इंदिएहिं ज्वलभगो। जम्हा मतिम्म जीवे. ण इंदिया जवलभे विसयं ॥१५॥

७ अत्थी सन्ति इत्यर्थः, "अत्थिस्त्यादिना" (सि॰ ८-४-१४८) इति सुत्रेण सर्वेष्वपि वचनेषु 'अत्थि 'रूपभवनात् । दीर्घत्वं तु"नीया छोवमभूया, य आणिया दीह-बिंदु-दुब्भावा। अत्थं गमेति तं
चिय, जो तेसि पुब्बमेबाऽऽसि ॥" इति वचनात् । पवमग्रेऽपि "वी,
पासती, अक्खस्सा, आगच्छंती, अण्णत्या, सुणस्न, वोच्छामी, सुत्तम्मी,
कडजस्सा" इत्यादिषु यत्र दीर्घत्व "परवाइण, गोणसाइण" इत्यादिषु
च यत्र इस्वत्वं दृश्येत तत्रायमेष नियमो होयः। चडरऽत्थऽण्णे चत्वारः
सन्ति अन्ये इत्यर्थः॥ ८ दुग्गइ-भवमृरपदि दुर्गति-संसारभञ्जकैः
तीर्थकरैः पूर्विविभिवेत्यर्थः॥ १५ मत्तिम मृते॥

तम्हा विसयाणं खल्ल, अग्गाहगमिदियं भवह सिद्धं। जं इंदिएहिँ नज्जइ, तं नाणं लिंगियं होइ ॥१६॥ लिंगं चिंघ निमित्तं, कारणमेगद्वियाइँ एयाई। जाणाइ इंदिएहिं, जीवो धूमेण अर्गिंग व्य ॥१७॥ एवं खु इंदिएहिं, जं नज्जइ लिंगियं तयं नाणं। तम्हा सिद्धं अक्लो, न इंदिया पंच सोयाई ॥१८॥ एत पसंगाभिहितं, जहकण्हुइ इंदियाइँ पश्चक्वं। अहुणा उ इंदिएहिं, णातूणं ववहरे इणमो ॥१९॥ सोइंदिएण सोउं, तस्स व अण्णस्स वा वि पहिसेवं। चर्किलदिएण दढुं, पडिसेविज्जंतमणयारं ॥२०॥ धूवादिगंधवासे, मूर्तिगलियादियं व उद्दवियं । कंदाइ व खज्जंतं, गंधो वि रसो वि तत्थेव ॥२१॥ फासेणऽब्भङ्गियमादि, फासतो अप्पगासे णाऊणं। इंदियपचक्तेणं, इय णाऊणं ववहरंति ॥२२॥ दारं ॥ णोइंदियपचक्लो. ववहारी सो समासती तिविही। ओहि मणपज्जवे या. केवलणाणे य पच्चक्खो ॥२३॥ अच्छउ ता ववहारो, ओहीमादीण लक्खणं तिण्हं। संखेवओ उ एयं, अस्सुन्नत्थं इमं वोच्छं ॥२४॥ तत्थोहिणाण पढमं, सामित्ता कम-विसुद्धिओ होइ। तो तं वोच्छ बहुविई, केत्तिय भेया भवे तस्स ? ॥२५॥

नोइन्द्रियप्रत्य-क्षागमञ्यव हारस्य त्रैविध्यम्

अवधिज्ञानम्

१६ नज्जइ ज्ञायते॥ १७ चिंघ इति लुप्तविभक्त्यन्तं पदम्। प्रन्थे-ऽस्मिन् स्थानस्थानेषु पतादृंशि लुप्तविभक्त्यन्तानि पदानि समेष्यन्ति॥ १९ जहकण्हुइ यथाकथश्चित्॥ २१ मूर्तिगल्लिया पिपीलिका। अधुनातन-भाकृते यथा 'य'कारः श्रुत्यर्थमुपन्यस्यते तथा प्राचीनप्राकृते 'त'कारः श्रुत्यर्थमुपायुज्यत इति क्षेयम्॥ २४ ओद्दीमादीण अवध्यादीनाम्। अत्र मकार आगमिकः, न तु लाक्षणिकः। अग्रेऽप्येवमेष बोध्यम्॥

अवधिशान-स्य प्रकृतयः

संखादीआओ खल्ज ओहीनाणस्स सञ्चपयहीओ। काई भवपच्चडया, खओवसमिया य कायो वि ॥२६॥ किह संखातीयाओ, पगडी ओहिस्स? भण्णए जम्हा। अंगुलअसंखभागा, आरब्भ पर्सवहीर ॥१७॥ उक्कोसेणमसंखा, जा लोगा होंति वैत्तमाणेणं। काले वाऽऽवलियाए, असंखभागाउ आरव्भ ॥२८॥ समउत्तरवड्डीए, उक्कोसेणं असंख जाव भवे। ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिसमयपमाणा भवे पगडी ॥२९॥ इय होंति असंखाओ, ओहिण्णाणस्स सञ्चपगढीओ। संखातीतग्गहणा, ण केवलं होंतिऽसंखेजजा ॥३०॥ ता होति अणंताओ. पोगालकायत्थिकायमाहिकच्च। संखातीतं ति ततो, असंख अणंता य गहिया हु ॥३१॥ सो पुण ओही दुविहो, भवपच्चइयो खओवसिमओ य। देवाण णारयाण य, णियमा भत्रपच्चयो ओही ॥३२॥ उपज्जमाणको खल्ल, भवपच्चइओहि जत्तियो विसको । सन्वं तं ओभासति, ण उ बहूी जैव हाणी यु ॥३३॥ गुणपच्चइयो ओही, गन्भजमँणु-तिरिय-ऽसंखमाऊणं । कम्माण खयोवसमे. तयवरणिज्जाण उप्पन्ने ॥३४॥ अवही मज्जायत्थो, परिमितदव्वं तु जाणते जेणं । म्रुत्तिमदव्वे विसयो, ण खलु अरूवीसु दव्वेसु ॥३५॥ अच्चंतमणुबलद्धा, ओहीणाणस्स होति पच्चक्खा । ओहीणाणपरिणया. दन्वा असमत्थपज्जाया ॥३६॥ तं पुण ओहीणाणं, समासतो छिव्वहं इमं होइ। अणुगामि अणणुगामी, बहुंत य हायमाणं च ॥३७॥ पडिवाति अपडिवाती, छ विवहमेवं तु होति विभेयं । अणुगामिओ उ दुविहो, अंतगतो चेव मञ्झगतो ॥३८॥

भवप्रत्ययि-कोऽवधिः

गुणप्रत्ययि-कोऽवधिः

> अवधेः स्वरूपम्

अवधेः षड् भेदाः

> नुगामि-ऽवधिः

अंतगतो वि य तिविहो, प्रतो तह मग्गतो य पासग्ञो। पुरतो पुण अंतगतं, इमं त वोच्छं समासेणं ॥३९॥ जह कोई तु मणुस्सो, उकं चुडुलिं व दीव मणि वाऽऽदी । काउं पुरओ गच्छइ, पणुद्धयंतो व्य जह पुरिसो॥४०॥ मग्गतो अंतगतो ऊ. तह चेव य णवरि मग्गतो काउं। अणुकडूमाणु गच्छति, अंतगतो मग्गतो एस ॥४१॥ पासगतंऽतगतो ऊ. चुडलादि तहेव जाव त मणि त । परिकडमाणों गच्छति, अंतगतं एत तिह भणितं ॥४२॥ जो से किं मज्झगतो ?, तं जह पुरिसो कोइ चुडलिमादीणि। कातुं सिरम्मि गच्छति, मज्झगतो एस ओही उ ॥४३॥ मज्झगतंऽतगयस्स य, ओहिण्णाणस्स को पइविसेसो ?। प्रतो अंतगएणं, जीयण संखेज्ज इसंखा वा ॥४४॥ पुरतो जाणित पासति, एस विसेसो उ मज्झअंतगओ। एवं त मग्गतो ई. पासगतो चैव बोधव्यो ॥४५॥ अणुगामिओ उ ओही, एमेसो विष्णतो समासेण । एतो उ अण्यामी, ओहिण्णाणं इमाऽऽहंस्र ॥४६॥ जह णाम कोइ पुरिसो, एग महं अगणिठाण काउं जे। तस्सेव य पेरंते, परिघोलणहिंडमाणो त ॥४७॥ तं चेव अगणिटाणं, तत्थगतो पासति ण अण्णत्थ । एवं जत्थुप्पज्जइ, नत्थ ठितो जाण पासइ वि ॥४८॥ ण वि जाणइ अण्णत्था, संखमसंखे उ जीयणे जी उ। ओही तु अण्णुगामी, समासतो एसमक्खातो ॥४९॥ अज्झवसाणेहि पसत्थएहि सुहबद्धमाणचारित्ते । उवस्वरिं सुज्झेते, समंततो वहूए ओही ॥५०॥

अननुगामि-कोऽवधिः

वर्धमानको-ऽवधिः

४५ ई पादपूरणे। ई जेर णि रुथ मो णं इत्यादीनि अन्ययानि प्राकृते पादपूरणे प्रयुज्यन्ते ॥ ४६ इमाऽऽहंसु इदं आह॥

तत्थ जहण्णादी तू, जाव उ उक्कोस ओहिणाणं तु । वड़ंते परिणामे, गाहाहि इमं तु वोच्छामि ॥५१॥ जाँवतिया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स । ओमाहणा जहण्णा, ओहीखेत्तं जहण्णं तु ॥५२॥ सन्वबहुअगणिजीवा, णिरंतरं जत्तियं भरेजंसु । खेत्तं सव्वदिसागं, परमोहीखेत्त णिहिद्दो ॥५३॥ अंगुलमावलियाणं, भागमसंखेज दोसु संखेजा । अंगुलमावलियंतो, आवलिया अंगुलपुहत्तं ॥५४॥ इत्थम्मि ग्रुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्यो । जोयण दिवसपुहत्तं, पक्खंतो पण्णवीसाए ॥५५॥ भरहम्मि अद्धमासो, जंबुद्दीवे य साहिओ मासो । वासं तु मणुयलोए, वासपुहत्तं च रुयगम्मि ॥५६॥ संखेज्जिम्म उ काले, दीव-सम्रद्दा उ होंनि संखेजा । कालम्मि असंखेजे, दीव-सम्रद्दा वि भइयव्या ॥५७॥ काले चउण्ह बुट्टी, कालो भइयव्वों खेत्तबुट्टीए। बुट्टीऍ दव्व-पर्ज्जव, भजितव्वा खेत्त–कार्ला उ ॥५८॥ सुदूमो य होति कालो, तत्तो सुदूमयस्य इवति खेत्तं। अंगुलसेदीमेत्ते, ओसप्पिणीओ असंखेजा ॥५९॥ तिसमयहारादीणं, गाहाणऽहुण्ह वी सरूवं तु । वित्थरयो वण्णेजा, जह हेट्टाऽऽवस्सए भणियं ॥६०॥ एवं तु बहुमाणो, ओही उ समासओ समक्लाओ। एत्तो परिहायंतं, ओहीणाणं इमं होति ॥६१॥ अज्झवसाठाणेहिं, अपसत्थेहिं वड़माणचारित्ते । संकिस्समाणचित्ते, समंततो हायते ओही ॥६२॥

हीयमान-कोऽवधिः

६२ अज्ञवसाठाणेहि अध्यवसायस्थानैः । 'अज्ञ्ञवसा' इत्यत्र यकारलोपेऽविद्याष्टो 'अ'कारः 'सा'मध्ये प्रविष्टः ॥

पृहिवयमाणो ओही, अंगुलभागं त [संखऽ]संखं वा । अंग्रलमेव प्रहत्तं. हत्थ धणू जोअणे तह य ॥६३॥ जोयणसर्यं सहस्सं संखमसंखा व जाव स्रोगं त । पासित्ताण पढेज्जा, ओहीणाणेद पडिवाती ॥६४॥ से किं अप्पहिवार्ति, ओहिण्णाणं त ? जो अलोगस्स । आगासपएसं तू एगमवी पासती जाव ॥६५॥ असंखेजाइँ अलोऍ, पमाणमेत्ताइँ लोगखंडाइं। जाणड पासति य तहा, खेत्तोही एसमक्खातो ॥६६॥ एसो अप्पडिवादी, ओही तु समासओ समक्खातो। सन्त्रं पेतं चउहा, द्व्वादि समासतो वोच्छं ॥६७॥ रूवीदव्वे विसतो, दच्चोही खेत्ततो इमाऽऽहंस्र । अंग्रलअसंखभागं. उक्कोसेणं इमं वोच्छं ॥६८॥ असंखेळाइँ अलोगे. पमाणमेत्ताइँ लोग्खंडाई। जाणइ पासति य तहा, खेचोही एसमक्खातो ॥६९॥ कालतो ओहिण्णाणी, असंखभागं त आवलीए उ। सन्वजहण्णं जाणति, पासति या सो उ णियमेणं ॥७०॥ उस्सप्पिण-ओसप्पिणकालमतीतं अणागतं चेव । उक्कोसेण वि जाणति, पासइ या एस कालोही ॥७१॥ भावतो ओहिण्णाणी. अणंतभावे अणंतभागं च। जाणति पासति य तहा. भावोही एसमक्खातो । ७२॥ ओही भवपचितियो, खयोवसमियो य विणाओ द्विहो। तस्स उ बहु विगप्पा, दब्वे खेत्ते य कालादी ॥७३॥ तं मणपज्जवणाणं, दुविहं तु समासतो समक्खातं । उज्ज्ञमती विमलमती, दन्वादि चउन्विहेक्के ॥७४॥

प्रतिपाती अवधिः

अप्रतिपाती अविधः

द्रव्यतः क्षेत्र-तश्चावधिः

कालतो**ऽव**विः

भावतोऽवधिः

मन पर्यवः ज्ञानम्

६४ आहीणाणेर अवधिज्ञानमिदम्॥ ६७ सन्वं पेतं सर्वमध्येतत् ॥

द्रव्यतो मनः-पर्यवम्

क्षेत्रतो सनः-पर्यवम्

दव्बओं उन्जुमती तू , अणंतपएसे अणंतर्खंघा ऊ । जाणइ पासति ते चियं, वितिमिरसुद्धे तु वि**उ**लमती ॥७५॥ खेत्ततो उज्जुमती तू, ऽहेलोगे जाव रयणपुढवीए। जाणइ पासति उवरिमहेट्टिले खुडुपयरे तु ॥७६॥ एते चिय अन्भिहते, विउलतराए उ मुणइ पासित य । सुद्धवितिमिरतराए, विउलमती उज्जमितणो उ ॥७७॥ उज्जमती उड्डे ऊ, जोतिसियाणं तु जाव सन्बुवरिं। जाणइ पासइँ ते चिय, वितिमिरसुद्धे तु विउल्लमती ॥७८॥ तिरितं उज्ज्यमती तू, उदहिदुए तह य दीव अद्धहिए। पंचिदियजीवाणं, सण्णीपज्जत्तयाणं तु ॥७९॥ भावे मणोगिहगए, सन्वे जाणइ मणिज्जमाणे तु । ते चेव य विमल्यरे, वितिमिरसुद्धे तु विउल्पाती ॥८०॥ णवर विसेसो तु इमो, अट्टाइयअंगुलेहिँ खेत्तं तु। तिरिउड्टमहे अहितं, वितिमिरसुदं तु विउलमती ॥८१॥ कालतो उञ्जुमती तु, जहण्ण उक्कोसए वि पलियस्स । भागमसंखेज्जइमं, अतीत एस्से व कालदुए ॥८२॥ जाणइ पासइ ते तू, मणिज्जमाणे उ सण्णिजीवाणं । ते चेव य विष्लमती, वितिमिरसुद्धे तु जाणइ यु ॥८३॥ भावतो उज्जुमती ऊ, अणंतभावे उ मुणति पासति य। सन्वेसि भावाणं, ते णवरमणंतभागे उ ॥८४॥ ते सब्वे विडलमती, विद्युद्धतर वितिमिरे तु भावतया । जाणित पासित य तहा, मणपज्जवणाण चडमेयं ॥८५॥ तं मणपज्जवणाणं, जेण विजाणाति सण्णिजीवाणं । दहं मणिज्जमाणे, मणद्व्वे माणसं भावं ॥८६॥ जाणित पिहुज्जणो वि हु, फुडमागारेहि माणसं भावं।

एस्रवमा तस्स भवे, मणदन्वपगासिए अत्थे ॥८७॥

कालतो मन.-पर्यदम्

भावतो मनः-पर्यवम्

मन-पर्यवस्य विषयः मुजपञ्जवजाणं पुण, जणमजपरिचितितत्थपागहणं। माणुसखेत्तिवादं, गुणपचिततं चरित्तवतो ॥८८॥ उज्ज्ञमती विजलमतो, जे वहंती स्रतंगवी धीरा। मणपज्जवणाणत्थे, जाणस् ववहारसोहिकरे ॥८९॥ पंकसलिले पसाओ, जह होति कमेण तह इमो जीवो। आवरणे झिडजेते. विसुज्झति केवलं जाव ॥९०॥ केवल संभिष्णं तू, लोगमलोगं तु पासती णियमा । तं णत्थि जं ण पासति, भूतं भव्वं भविस्सं च ॥९१॥ सब्वेहि जियपदेसेहिं, जुगवं जाणति पासई । दंसणेण य णाणेणं, पईवो अन्भमस्स वा ॥९२॥ अंबरे व कतो संतो. तं सच्वं त पगासती। एवं तु उत्रणतो होति, संभिण्णं तु जं वयं ॥९३॥ तं च लोगमलोगं च, सब्बतो पुष्वमादिसु। सब्बं सब्बे त जे भावा, दब्बतो खेत्त-कालतो ॥९४॥ भावतो चेव जे भावा, णित्थ जे त ण पासती। अभावा णित्य ताए तु, जाणती पासती वि य । १९५॥ अह सन्वदन्त्रपरिणामभावविष्णत्तिकारणमणंतं । सासयमन्त्राद्याहं, एगविहं केवलण्णाणं ॥९६॥ सन्त्रं णेयं चतुहा, एतस्स परूत्रणहुयाए तु । गाहासुत्तं वृत्तं, अह त्ति जं विण्यतं हेट्टा ॥९७॥ भिण्णग्गहणं खळु कालतो तु सो घेष्पती तु एतेसि। दन्वादीण चउण्हं, परिणामो पज्जया जाणे ॥९८॥ जीवाण अजीवाण य, उप्पाय-व्यय-ध्रवत्तपज्जाया। परपचएण तिण्हं, धम्मादीयाण परिणामो ॥९९॥

ऋजुमतिः विपुलमतिश्व केवलञ्चानम्

८८ गाथेयमाषश्यक्रनिर्युक्ती ७६ तमा॥ ९६ गाथेयमाषश्यकनिर्युक्ती ७७ तमा॥

गति-ठिति-अवगाहेहिं, संजोग-वियोगओ य सो होइ। ओदडयादीयाणं, परिणामो होड भावाणं ॥१००॥ एतेसिं चिय दव्वादियाण कालो त होनि परिणामो । कार्लं पति पतिस्रहमादिएस् वण्णादिपरिणामो ।।१०१॥ दन्वादीपरिणामं. सन्वं जाणाति केवली अखिलं। किं भवती परिणामी ?, एयस्स उ कारणं इणमो ॥१०२॥ वीससपयोगे अन्भातियाण खंधाण वीससुप्पायो । पण्णरसहा पयोगो, तिविहे कालम्मि परिणामो ॥१०३॥ जो केवली मणुसो. ण सो त बाई करेऽण्णसत्ताणं। णियमेण अणाबाहं, पावइ मोक्खं खविय सेसं ॥१०४॥ जं छउमत्थियणाणं. केवलिणो ण खलु विज्ञए तं तु । जम्हा खयोवसमिए, वृहंते छाउमत्था उ ॥१०५॥ भावे केवल्लणाणं. बहुति णियमेण खाइए णिचं। ण उ अक्लीणे मीसे, खाइयभावस्स उप्पत्ती ॥१०६॥ तम्हा एगविहं खलु, केवलणाणं त होति उववण्णं। जेणाऽऽह केवलम्मि, छपुणाऽणामोहता (?) तेसि ॥१०७॥ आदिगरा धम्माणं. चरित्त-वरणाण-दंसणसमग्गा । सन्बत्तगणाणेणं, ववहारं ववहरंति जिणा । १०८॥ पचक्लव्यवहारी, इंदिय-णोइंदिएस्र वक्लातो । आगमजो ववहारी, पारोक्खं तू इमं वोच्छं ॥१०९॥ पचक्खागमसरिसी, होति परोक्खो वि आगमो जस्स । चंदग्रहीव तु सो वि हु, आगमववहारवं होति ॥११०॥

केवलिनि मत्यादि-ज्ञानाना-सभावः

परोक्षागम-व्यवहारी

> १०४ करेऽण्णसत्ताणं करोत्यन्यसस्वानाम् ॥ १०८ गाथेयं व्यव उ० १० भाव गाव २०६ ॥ ११० इत आरभ्य पश्चदश गाथाः व्यव उ० १० भाव गाव २०७-२२१॥

णातं आगमियं ति य, एगई जस्म सो परायत्तो । मो पारोक्खो व्हति. तस्म परेसा इमे होति ॥१११॥ पारोक्खं ववहारं. आगमतो स्तथरा ववहरंति । चोद्दस-दसपुव्वधरा, णवपुव्वि य गंधहत्थी य ॥११२॥ किह आगमववहारी ?, जम्हा जीवादयो णव पयत्था । उवलद्धा तेहिं तू, सन्वेहिं णयवियप्पेहिं ॥११३॥ जह केवली वियाणित, दव्वं खेतं च काल भावं च। तह चउलक्खणमेतं, स्रतणाणी वी वियाणाति ॥११४॥ पणगं मासविवड्डि, मासिगहाणी य पणगहाणी य । एगाहे पंचाई, पंचाहे चेत्र एगाई ॥११५॥ राग-इोसविवर्टिः, हाणि वा णातु देति पचनस्वी । चोइसपुन्वादी वि हु, तह णाउं देंति हीणऽहियं ॥११६॥ चोअगपुच्छा पचक्लणाणिणो थेवे वि कह बहुं देंति ?। भण्णित सुणसु एत्थं, दिट्टतं वाणिएण इमं ॥११७॥ जं जह मोह्रं रयणं. तं जाणित रयणवाणियो णिडणो । थोवं तु महञ्जरस वि, कासति अप्परस वि बहुं तु ॥११८॥ अहवा वि कायमणिणो सुमहल्लस्सावि कागिणी मोल्लं। वइरस्स तु अप्पस्स वि. मोह्नं होती सतसहरसं ॥११९॥ इय मासाण बहुण वि, राग-दोसऽप्पयाए थोवं तु । राग-इोसोवचया, पणगे वि जिणा बहुं देंति ॥१२०॥ पचक्ली पचक्लं, पासित पहिसेवगस्स सो भावं। किह जाणित पारोक्यी ?, णातिमणं तत्थ धमएणं ॥१२१॥ णालोधमएण जिणा, उबसंघारं करेंति पारोक्खे। जह सो कारूं जाणति, सुएण सोहिं तहा सो तु ॥१२२॥

प्रायश्वित्त-न्यूनाधिक्ये चोदकस्य प्रच्छा आचार्यस्यो-त्तरं च

११८ का नित कस्यचित् ॥ १२२ उवसंघारं उपसंहारं तुलनामित्यर्थः॥

प्रायश्चित्त-दानयोखः

जेणं जीवा-ऽजीवा. उवलद्धा सन्वभावपरिणामा । तो पुरुवधरा सोहिं, कुरुवंति सुओवदेसेणं ॥१२३॥ तं प्रण केण कतं त. स्रतणाणं जेण जीवमादीया। णज्जंति सव्वभावा ?. केवलणाणीण तं त कतं ॥१२४॥ संते वि आगमम्मी, जाहे आलोतियं त तेण भवे। सम्मं णाऽऽलोएती. पहिवज्जित सारियो जइया ॥१२५॥ तो तस्स उ पच्छित्तं, जेण विद्यज्ञ्चति तगं पयच्छंति। आगमववहारी छन्विहो वि पलिउंचिए ण देति ॥१२६॥ आस्रोतिय-पहिकंते, होती आस्रोयणा तु णियमेणं। अणालोडयम्मि भयणा, किह पुण भयणा भवति तस्स्?॥१२७॥ आलोयणापरिणतो. अंतर कालं करे अभिमहो वा । अहवा वी आयरिओ, एमेव य होति संपत्तो ॥१२८॥ आराहओ तु तह वी. जं सम्मालोयणापरिणतो तु । णाराहेति अपरिणयो. एवं भयणा भवति एसा ॥१२९॥ अवराहं वियाणंति, तस्स सोहिं व जहवी। तहाऽवाऽऽलोयणा बुत्ता, आलोअंते बह्न गुणा ॥१३०॥ दव्येहि पज्जवेहि य. कम खेत्ते काल-भावपरिसुद्धं। आलोयणं स्रणित्ता, तो वनहारं पउन्जंति ॥१३१॥ दच्वे सच्चित्तादी. पज्जव दवा बहुविगप्पेहिं। पुदाणुपुन्त्रिमादी, कमओ एवं तु आलोए ॥१३२॥ अद्धाण जणवए वा, खेत्ते काले सुभिक्ख दुब्भिक्खे । भावे हट्र गिलाणे, सेविय जह तं तहाऽऽलोए ॥१३३॥ अहवा सहसऽण्णाणा. भीएण व पेल्लिएण व परेहिं।

भालोचना-श्रवणक्रमः

> १२५ सारियो स्मारित ॥१२७ गाथेयं व्यव उ० १० भाव गा० २२४॥ १३० गाथाद्विकं व्यव उ० १० भाव गा० २२६-२२७। जहवी यद्यपि। सहाऽवाऽऽक्षोयणा तथाऽप्याकोचना॥

वसणेण पमाएण व, मृहेण व राग-दोसेहिं ॥१३४॥ पुर्व्व अपासिऊणं, छुढे पायम्मि जं पुणो पासे । ण य तरति णियत्तेउं, पायं सहसाकरणमेयं ॥१३५॥ अण्णतरपमाएणं, असंपडत्तस्सऽणीवउत्तम्स । इरियाइसु भूतत्थे, अवदृतो एतदण्णाणं ॥१३६॥ भीओ पलायमाणो, अभियोगभएण वा वि जं क्रज्जा। पहितो व अपहितो वा, पेक्किजा पेक्किओ पाणे ॥१३७॥ गीतादि होति वसणं, पंचिवहो खलु भवे पमादो उ। मिच्छत्तभावणा तू, मोहो तह राग-दोसा ऊ ॥१३८॥ एतेसिं ठाणाणं, अष्णयरे कारणे सम्रूपण्णे। तो आगमवीपंसं, करेंति अत्ता-तदुभएणं ॥१३९॥ जदि आगमो य आलोयणा य दोण्णि विसमं त निवयंति । एसा खलु वीमंसा, जो असह जेण वा सुज्झे ॥१४०॥ नाणमाईणि अण्णाणि, जेण अत्थे उ सो भवे। राग-होसप्पद्दीणे वा, जे व इद्वा विसोहिए ॥१४१॥ सुत्तं अत्थे उभयं, आलोयण आगमो इती उभयं। जं तदुभयं ति बुत्तं, तत्थेसा होति परिभासा ॥१४२॥ पडिसेवणातियारे, जदि णाऽऽउदृति जहक्मं सन्वे । ण ह देन्ती पच्छित्तं, आगमववहारिणो तस्स ॥१४३॥ पडिसेवणातियारे, जदि आउट्टइ जहक्सं सच्वे। देंति तओ पिच्छत्तं, आगमववहारिणो तस्स ॥१४४॥ कहेहि सव्वं जो बुत्तो, जाणमाणो वि गृहति।

१३४ इत आरभ्य गाथादशकं व्यव उ० १० भाव गाव २२८-२३७॥ १३५ तरति शक्नोति॥१३८ "पंचिवहो पमादो-कसाय-विगहा-वियद-इन्दिय-निहा पमाया " इति जीतकल्पचूणौं पत्र २९॥१४१ "नाण-मादीणि अत्ताणि जेण अत्तो उसो भवे।" इति व्यव भाष्ये, अय-मेष पाठः साधुः॥

ण तस्म टेंति पच्छित्तं, बेन्ति अण्णत्य सोहय ॥१४५॥

प्रायश्चित्त-दातुर्योग्या-योग्यत्वविन्वार

ण संभरति जो दोसे, सब्भावा ण य मायया। पचक्की साहए ते उ. माइणो उ ण साहई ॥१४६॥ जित आगमो य आलोयणा य दोण्हि वि समं ण णिवइयाई। ण हु देंति उ पच्छितं, आगमववहारिणो तस्स ॥१४७॥ जित आगमी य आलोयणा य दोण्हि वि समं णिवइताई। दिंति ततो पच्छित्तं. आगमववहारिणो तस्स ॥१४८॥ को पुण पायच्छित्ते, दायव्वे अणरिहो व अरिहो वा ?। भण्णइ इणमो सुणस्न, अरिहो जो वा अणरिहो उ ॥१४९॥ अट्टारसहिं ठाणेहिं, जो होति परिणिट्टिओ। नऽलमत्थो तारिसो होति. ववहारं ववहरित्तए ॥१५०॥ अद्वारसहिं ठाणेहिं, जो होति सपरिद्वितो । अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥१५१॥ अद्वारसहिं ठाणेहिं, जो होइ अपतिद्वितो। न अलमत्थो तारिसो होति. ववहारं ववहरित्तए ॥१५२॥ अट्रारसहिं ठाणेहिं, जो होति सुपनिद्रिनो । अलमत्यो तारिसो होइ, ववहारं ववहरित्तए ॥१५३॥ वयस्क कायसकं, अकप्पो गिहिभायणं । पिलयंक गोयर णिसिज्ज ण्हाणे भूसा अद्वार ठाणेते ॥१५४॥ परिणिट्टियों परिण्णाया, पनिद्विनो जो ठिओ उ तेस हवे। अविद् सोहि ण याणति, अठिनो पुण अण्णहा कुज्जा ॥१५५॥ बत्तीसाए त ठाणेहिं, जो होइ परिणिट्टितो । णऽलमत्थो नारिसो होइ, ववहारं ववहरित्तए ॥१५६॥ बत्तीसाए त टाणेहिं, जो होति परिणिट्टितो ।

अष्टादश स्थानानि

१४५ गाथाचतुष्कं व्यव उ० १० भाव गाव २३८-२४१॥ १५० इत आरभ्य सप्तिकातिगीथा व्यव उ० १० भाव गाव २४२-२६८॥ {

अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥१५७॥ बत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होति अपइद्वितो । णऽलमत्थो तारिसो होति. ववहारं ववहरित्तए ॥१५८॥ वत्तीसाए त टाणेहिं, जो होति सुपतिहितो । अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥१५९॥ अट्टविहा गणिसंपय, एकेका चउविहा उ वोद्धव्या । एसा खळु वत्तीसा, ते खळु ठाणा इमे होंति ॥१६०॥ आयार सुय सरीरे, वयणे वायण मती पतोगमती। एतेमु संपया खल्ल, अट्टमिया संगहपरिण्णा ॥१६१॥ एमा अट्टविहा खलु, एक्केकाए चउन्त्रिही भेदी। इणमो उ समासेण, वोच्छामी आणुपूर्व्वीए ॥१६२॥ आयारसंपयाए, संजमधुत्रजोगजुत्तया पढमा। बितिय असंपरगहिया, अणिययवित्ती भवे ततिया ॥१६३॥ तत्तो य बुहृमीले, आयारे संपया चउदेसा । चरणिमह संजमो त्र, तहियं णिचं त्र उवउत्तो ॥१६४॥ आयरिओ अ बहुस्सुय-तवस्ति-जचाइएहि व मदेहिं। जो होति अणुस्सित्तो, सो त असंपगहीउ ति ॥१६५॥ अणिययचारी अणियतिवत्ती अगिहो य होति जो अणिसो। णिहुयसहाव अचंचल, णायन्त्रो बुट्टसीलो त्ति ॥१६६॥ बहुसुत परिजितसुत्ते, विचित्तसुत्ते य होति बोद्धव्ये । वोसविसुद्धिकरे या, चउहा सुतसंपदा होति ॥१६७॥ बहुसुत जुगप्पहाणे, अन्भंतर बाहिरं च बहु जाणे। होति चसद्दग्गहणा, चारित्तं पी सुबहुवं ुतु ॥१६८॥ सगणामं व परिजितं, उक्कम-कमयो बहू हिँ व कमेहिं। ससमय-परसमएहिं, उस्सम्म-ऽववातयो वि वित् ॥१६९॥

द्वात्रिशत् स्थानानि

अष्टे[।] सम्पदः

चतुर्धाऽऽचार-सम्पदः

> श्रुतसम्प-चतुष्कम्

१६९ उस्सग्ग-ऽववातयो विविद्य उत्सर्गा-ऽपवादयोरपि विद्वान्॥

शरीरसम्प-चतुष्कम्

वचनसम्प-इतुष्कम्

घोसा उदात्तमादी, तेहिँ विसुद्धं तु घोसपरिसुद्धं । एसा स्रुतोवसंपय, दारं, सरीरसंपयमतो वोच्छं ॥१७०॥ आरोह-परीणाहो. तह य अणोत्तप्पया सरीरस्स । परिपुर्णिणदियमाऽऽइय, संघतणथिरं य बोद्धवो ॥१७१॥ आरोहो दिग्वतं, विक्लंभो होति तित्तियो चैव । आरोह-परिणाहो, य संपया एस णादन्वा ॥१७२॥ तपु लज्जाए धातू, अलज्जणिज्जो अहीणसन्वंगो । होति अणोत्तप्पो खलु, दारं, अविकलईदी तुपरिपुण्णो ।१७३। पढमादीसंघयणो, बल्लियसरीरो थिरो मुणेयच्वो। एसा सरीरसंपय, दारं, एत्तो वयणम्मि वोच्छामि ॥१७४॥ आएज्ज महुरवयणे, अणिसियवयणे तहा असंदिद्धे । आदिन्ज गन्झको, दारं, अत्थवगाढं भवे महुरं ॥१७५॥ अहवा अफरुसवयणो, खीरासवलद्भिमादिजुत्तो वा । अहवा ससर-स्रहग-गंभीरजुओ महुरवको ॥१७६॥ णिस्सिओं कोहादीहिं, राग-होसेहि वा वि जं वयइ। होति अणिस्सियवयणो, जो वयती एयवइरित्तं ॥१७७॥ अव्वत्तं अफ़ुडत्तं, अत्थवहुत्ता व होति संदिद्धं । विवरीयमसंदिदं, वयणेसा संपदा चतुहा ॥१७८॥ वायणभेदा चतुरो, विधिउद्दिसणा समुद्दिसणओ य।

वाचनासम्प-खतुष्कम्

> १७२ णादन्त्रा ज्ञातन्या ॥ १७८ इत आरम्यैकोनविञ्चातिगोधा व्यव इ० १० भाग गा० २६९-२८७॥

अपरीणामगमादी, वियाणितुमभायणे ण वाएति।

जह आममहिययहे, अंबे व ण छुब्भए खीरं ॥१८१॥

वेणेव गुणेणं तू, वाएयव्वा परिक्खितुं सीसा ।

परिणिव्वविया वाप्, णिज्जवणा चेव अत्थस्स ॥१७९॥

उद्दिसई विजिणेउं, जं जस्स तु जोग्ग तं तस्स ॥१८०॥

जदि छन्भई विणस्सति, णस्सति वा एवमपरिणामादी । णोहिस्से छेदस्रतं, दारं, सम्रहिसे याऽवि तं चेव॥१८२॥ परिणिव्वविया वाए, जित्तयमेत्तं त तरित त ग्वेतुं। जाहगदिहंतेणं. परिजिष् ताहऽण्य उद्दिसति ॥१८३॥ णिजनवयो अत्थस्सा. जो उवजाणेति अत्थो सत्तरसा अत्थेण वि णिव्यहति इ. अत्थं पि कहेति जं भणितं ॥१८४॥ मइसंपय चडमेदा. जगाह ईहा अवाय धारणया । जगहमति छन्भेता, तत्थ इमे होंति छन्भेया ॥१८५॥ खिष्प बहु बहुविहं वा, धुव णिस्सित तह य होयऽसंदिदं। ओगिण्हति एवीहा, अवायमिति धारणा चैव ॥१८६॥ परवाइण सिस्सेण व, उच्चारितमेत्तमेव ओगिण्हे। तं खिप्पं बहुगं पुण, पंच व छ व सत्त गंथसता ॥१८७॥ बहुविहऽणेगपयारं, जह लिहित पहारए गणेइ वि य । अक्लाणगं कहेति इ, सद्दसमूहं व ज्लोगविहं ॥१८८॥ ण वि विस्सरइ धुवं तं, अनिस्सियं जं ण पोत्थए लिहितं। अणुभासिय व्य गेण्डति, निस्संकित हो असंदिद्धं ॥१८९॥ जग्गहियस्स तु ईहा, ईहिए पच्छा अगंतर अवायो । अवगते पच्छा धारण, तीय विसेसी इमी णवरं ॥१९०॥ बहु बहुविह पोराणं, दुद्धर णितयं तहेव असंदिद्धं। पोराण पुरा व जितं, दुद्धर णय-भंगग्रुविलत्ता ॥१९२॥ एत्तो उ पत्रोगमती, चउन्त्रिहा होति आणुपुन्त्रीए । आय पुरिसं च खेतं, वत्थुं वि पर्वजए वातं ॥१९२॥

मतिसम्प-चतुष्कम्

प्रयोगमति-सम्पदः चतुष्कम्

१८३ जाह्रगदिट्ठंतेणं जाह्रकस्तिर्यग्विशेषः, तद्दश्चानं यथा-"पातुं ेवं थोवं, खोरं पासाणि जाहुओ लिह्हू। पमेव जितं काउं, पुच्छति मतिमं न खेदेति ॥१॥" आवश्यक हारिभद्रो टीका पत्र १०३। ताहुऽण्णु तदाऽम्यत्॥ १८७ परवाहण परवादिना॥

जाणित पयोग भिसजो, वाही जेणाऽऽउरस्स छिज्जति छ। इय वाओ व कहा वा, णियसत्ती णाउ कातव्वा ॥१९३॥ पुरिसं उवासगाई, अहवा वी जाणगाइयं पुरिसं । पुरुवं त गमेऊणं, ताहे वाओ पउत्तब्वो ॥१९४॥ खेर्त मालवमाई, अहवा वी साहुभावियं जं तु । णाऊण तहा विहिणा, वाओ हु तहिं पउत्तव्यो ॥१९५॥ बत्धुं पुण परवाई, बहुआगमिओ न वा वि नाऊणं। राया व रायमत्तो, दारुण-भद्दस्सभावो वा ॥१९६॥ एसा उ पञोगमई, एत्तो वोच्छामि संगहपरिण्णं । सा वि य चउव्विगप्पा, तीय विभागी इमी होइ ॥१९७॥ बहुजणजोग्गं पेहे, खेत्तं तह पीडफलहमोगिण्हे । वासाम्र एते दोण्णि वि. काले य समाणए काले ॥१९८॥ पूर अहागुरुं पि य, चडत्थ एसा उ संगहपरिण्णा । एतो एकेकीय य, इमा विभासा मुणेयव्वा ॥१९९॥ वासे बहुजणजोग्गं. वित्थिण्णं जं तु गच्छपायोग्गं । पिंडलेह बाल-दुब्बल-गिलाण-मादेसमादीणं ॥२००॥ खेत असइ अगहिता, ताहे गच्छंति ते उ अण्णत्थ । पीढप्पलगगगहणे, ण उ मइलंती णिसिन्जादी ॥२०१॥ वासास विसेसेणं, अण्णं कारुं त गमय अण्णत्थ । पाणा सीयल-कुंथादिआ य तो गहण वासाम्र ॥२०२॥ जं जिम्म होति काले, कायव्वं तं समाणए तिम्म । सज्झाय पेह जबही, जप्पायण भिक्खमादी त ।।२०३॥ अहगुरु जेंगं पद्माविओ त जस्स व अहीत पासम्मि। अहवा अहागुरू खल्ल, हवंति रातिणियतरया उ ॥२०४॥

बतुधी संप्रह-परिज्ञासंपत

१९३ णियसती णाउ कातच्या निजञ्जिक ज्ञात्या कर्तच्या ॥ १९६ रायमतो हाजामात्यः ॥ १९८ इतोऽष्टचत्यारिद्यद्रायाः च्य० उ० १० गा० २८८-३३२ ॥ २०४ रातिणियतस्या रात्निकतराः व्रतपर्यायस्येष्ठतराः ॥

तेसि अन्ध्रद्राणं. हण्डम्मह तह य होति आयारे । उनहीनहणं निस्सामणं च संप्रयणा एसा ॥२०५॥ एसा खळ बत्तीसा, जाणाति जो पतिद्वितो एत्थं । ववहारे अलगत्यो. अहवा वि भवे इमेहिं त ॥२०६॥ छत्तीसाए त ठाणेहिं. जो होयऽपरिणिट्टिओ । णऽलमत्थो तारिसो होति. ववहारं ववहरित्तए ॥२०७॥ छत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होति अपतिद्विता ॥ णऽलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥२०८॥ छत्तीसाए उ ठाणेहिं, जो होइ परिणिद्वितो । अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥२०९॥ छत्तीसार उ ठाणेहिं. जो होइ सुपइट्रिओ । अलमत्थो तारिसो होति, ववहारं ववहरित्तए ॥२१०॥ जा होती बत्तीसा, तम्मी छोढ्ण विणयपडिवत्ती। चतुमेदं तो होती, छत्तीसा एस ठाणाण ॥२११॥ बत्तीस विष्णय चिया वोच्छं चडमेय विष्यतपहिवर्ति । आयरियंतेवासी, जह विगएता भवे णिरिणो ॥२१२॥ आयारे सुत विणए, विक्लिवरणे चेव होति बोधबो । दोसस्स य णिग्वाओ, विणए चउहेस पहिवत्ती ॥२१३॥ आयारे विणयो खलु, चउिहा होति आणुपुन्बीए। संजमसामायारी, तवे य गणिविहरणा चेव ॥२१४॥ एगल्लविहारे या, सामायारी य एस चडहा तु। एतेसिं त विभागं, वोच्छामि अहाणुपुन्त्रीए ॥२१५॥ संयममायरइ सतं, परं च गाहेइ संजमं णियमा। सीयंतथिरीकरणं. उज्जातचरणं च उदबृहे ॥२१६॥ सो सत्तरसो पुढवातियाण घट्ट-परियावणो-इवणं। परिहरियन्त्रं णियमा, संजमयो एस बोद्धन्त्रो ॥२१७॥

षट्त्रिंशत् स्थानानि

विनय प्रतिपत्तयः

चतुर्धाऽऽ-चारविनयः

पक्ले य पोसहेस्नं, कारेति तवं सतं करेति वि य। भिक्लायरियाय तहा, णियुंजति परं सयं वा वि । ॥२१८॥ सन्विम बारसविहे. णिउंजति परं सतं च उज्जमति। गणसामायारीए, गणं विसीयंत्र चोएति ॥२१९॥ पहिलेहण-पक्लोडण-बाल-गिलाणाइवेयवचेसं । सीदंतं गोहती, सनं च जुत्तो त एएस ॥२२०॥ एगल्लविहारादी, पहिमा पहिवज्जए सतं वऽण्णं। पडिवज्जावे एवं, अप्पाण परं च विणएति ॥२२१॥ आयारविणय एसो, जहक्कं विष्णिओ समासेणं। एतो ऊ स्रतविणयं, जहाणुपुर्विय पवक्खामि ॥२२२॥ सुत्तं अत्थं च तहा, हितकर णिस्सेसयं च वाएड ! एसो चडिहा खळु, सुतविणता होति णायव्यो ॥२२३॥ सुत्तं गाहेति जुत्तो, दारं, अत्थं च सुणावए पयत्तेणं। जं जस्स होति जोग्गं, परिणामगमादितं त हियं ॥२२४॥ णिस्सेसमपरिसेसं, जाव समत्तं तु ताव वाएति । एसो स्रुतविणयो खल्ज, बोच्छं विक्खेवणाविणयं ।।२२५॥ अहिट्ठं दिट्टं खलु, दिट्ठं साहम्मियत्तविणएणं। चतथम्म ठावे धम्मे. तस्सेव हितद्व अब्ध्रे ॥२२६॥ विण्णाणाभावम्मि वि, 'खिव पेरणे' विक्खिवच् परसमया। ससमते णमभिच्छुभे, अदिदृधम्मं तु दिदृ वा ॥२२७॥ धम्मसहावो सम्मद्दंसण जं जेण पुव्वि ण उ लद्धं। सो होयऽदिद्वपुन्त्रो, तं गाहे दिद्वपुन्त्रमित्र ॥२२८॥ जह भायरं व पियरं, व मिच्छदिहिं पि गाहे सम्मत्तं। दिद्वपुट्यं सावग, साहम्मि करेइ पट्यावे ॥२२९॥ चतथम्मो णदृथम्मो, चरित्तथम्माओं दंसणाओ वा। तं वावेति तहिं चिय, पुणो वि धम्मे जहु हि ।। १३०॥

चतुर्घा श्रतविनयः

चतुर्धा विभेपणविनयः

तस्स त्ती तस्सेव उ, चरित्तथम्मस्स बुड्डिहेतुं तु। बारेतऽणेसणादी, ण य गिण्हे सर्य हितद्वाए ॥२३१॥ जं इह-परलोए या, हितं सुहं तं खमं मुणेतन्त्रं । णिस्सेयस मोक्लो तु, अणुगामऽणुगच्छए जं तु ॥२३२॥ विक्लेवणविणएसो. जहकमं विष्णितो समासेणं। एत्तो त पवक्खामी, विणयं दोसाण णिग्घाते ॥२३३॥ दोसा कसायमाई, बंधो अहवा वि अट्रपयहीओ। णिययं व णिच्छियं वा, वाय विणासो य एगट्टा २३४॥ रुद्रस्स कोहविणयण, दुट्टस्स य दोसविणयणं जं त । कंखिय कंख्रच्छेए, आयप्पणिहाण चउहेसा ॥२३५॥ सीयघरम्मि व डाई, वंजुलरुक्लो व जह व उरगविसं। रुट्टस्स तहा को हं, पविणेती उत्रसमेति ति ॥२३६॥ दुहो कसाय-विसयाइएहिँ माणपयभावदुहो व्व । तस्स पविणेड दोसं, णासयए धंसए व ति ॥२३७॥ कंखा उ भत्त-पाणे, परसमए अहव कंख एमाई। तस्स पविणेइ कंखं, संखडि अण्णं व देसेणं ॥२३८॥ चरगाइमाइएस तू, अहिंसमक्खो व्य अत्थि जा कंखा। तं हेउ-कारणेहिं, विणयउ जह होइ णिकंखो ॥२३९॥ जो एएस ण बट्टड, कोहे दोसे तहेव कंखाए । सो होति सुप्पणिहिओ, सोभणपरिणामजुत्तो वा ॥२४०॥ **छत्तीसेयाणि ठाणाणि, भणिताणि अणुपु**न्त्रसो । जो कसलो एतेहिं, सो ववहारी समक्खातो ॥२४१॥ अट्टहि अट्टारसिंह य, दसिंह य ठाणेहिं जे अपारोक्ला। आलोयणदोसेहिं. छहि य अपारोक्ख विण्णेया ॥२४२॥

चतुर्घा दो**द-**निर्घातदिनगः

२३३ विक्खेषणविणयसी विक्षेपणविनय एव:॥ २३४ अटुपयडीओ अष्टकमैप्रकृतिजः।

दश अलोचना गुणाः

आलोयणागुणेहिं, छहिं य ठाणेहिँ जे अपारोक्खा । पंचिह य णियंठेहिं. पंचिह य चरित्तमंतेहिं ॥२४३॥ अट्टायारवमादी, वयछकादी हवंति यऽट्टरसं । दसविद्वपायच्छित्ते, आलोयणमादिए चेत्र ॥२४४॥ आलोयणदोसेहिं, आकंपणमादिएहिं दसहिं तु। छहिँ काएहिँ वएहि व, दसहिँ चाऽऽलोयणगुणेहिं।।२४५॥ इमेहिं-आयार विणयग्रण कप्पदीवणा अत्तसोहि उजुभावो । अज्जव मद्दव लाघव, तुट्टी पल्हायकरणं च ॥२४६॥ मिच्छत्तत्राऽऽयारे. पढमं आलोयणा तर्हि पढमं । विजयो विजासणं ति य. मायाए विजयजार्जेमो ॥२४७॥ चारित्त कप्पो णियमा, णिरित्यारित्त विगहिये सो य। दीविय प्रभासित ति य. प्रगामितो चेत एगद्रा ॥२४८॥ अतियारपंकपंकंकितो य आया विसोहिओ होति। आलोइए य आया, उजुभावे ठाविओ होइ ॥२४९॥ अज्ञवभावे अज्ञव, सयं चियाऽऽलोइए कभो होइ। महबभावेणं पुण, अमाणि होऊग आस्रोए ॥२५०॥ अतियारगुरुभएणं, अकंतालोतिए लहु होति। सुद्धों हं ती य तुही, दारं, अतियारुण्हों य परहाणो । १५१॥ आस्रोयणागुणेसू, जे ऊ एवं हवंतऽपारोक्खा । छद्वाणयपडिएहिं, छिंदें चेव य जे अपारोक्खा ॥२५२॥ संखादीया ठाणा, छहिँ ठागेहिँ पडियाण ठाणाणं। जे संजया सरागा, एगे द्वाणे विगयरागा ॥२५३॥ एआऽऽगमववहारी, पण्णता राग-दोसणीहया । आणाऍ जिणिदाणं, जे ववहारं ववहरंति । २५४॥

२४६ गाथेयं व्यव उ० १० गा० ४७३॥ २५३ इतो हाविदातिर्गाथाः व्यव उ० १० गा० ३३३-३५२॥

इय भणिए चोएती, ते वोच्छिण्णा हु संपदं इहईं। तेस्र य बोच्छिण्णेस्, णत्थि विसद्धी चरित्तस्स ॥२५५॥ चोहसपुव्यधराणं, बोच्छेदो केवलीण बोच्छेदे। केसिंचि य आदेसो. पायच्छित्तं पि वोच्छिणं ॥२५६॥ जं जित्रपण सुज्झति, पावं तस्य तह देंति पच्छित्तं। जिण-चोद्दसपुन्वथरा, तविवरीना जहिच्छाए॥२५७॥ पारगमपारगं वा, जाणंते जस्स जं च करणिक्जं। देति तहा पचक्ली, घुणक्लरसमो तु पारोक्ली ॥२५८॥ जा य जणाहिए बुत्ता, सूत्रे मग्गविराहणा । ण सुज्झे तीइ देंतो छ. असुद्धो कं च सोहए २५९॥ देंता वि ण दी बंती, मास-च उम्मासियाओं सोही ओ। कुणमाणा विय सोहिं. ण पासिमो जो व सिं देज्जा ।२६०॥ सोहीए य अभावे. देंताण करेंतगाण य अभावे। वद्रति संपतिकाले. तित्थं सम्मत्त-णाणेहिं ॥२६१॥ णिज्जवगा य ण संती, महपुरिसाणं तु तेसि वोच्छेते । तम्हा संपयकाले. णितथ विमुद्धी स्रविहियाणे ॥२६२॥ एवं त चोतियम्मी, आयरिओ भणति ण ह तुमे णातं। पच्छितं कहितं तू, किं धरती किंच वोच्छिणं ? ॥२६३॥ अत्थं पडुच सूत्त, अणागनं तं तु किंचि आमसनि। अत्यो वि को वि स्नर्त, अणागतं चेव आमसति ॥२६४॥ सब्दं चिय परिछत्तं, पश्चक्खाणस्स ततियवत्युम्मि । तत्तो चिय णिज्ज् ढं, कप्प पकप्पा य ववहारो ॥२६५॥ ताणि धरंती अज्ज वि, तेसु धरंतेसु कह तुमं भणिस । वोच्छिणं पच्छितं ?, तत्थ इमा तु परूवणया ॥२६६॥

प्रायश्वित्ता-भावविषयं चोदकस्य बचनम

> आचार्यस्य प्रतिवद्यः

२६४ आमस्ति आमृषति-विचारयति ॥ २६५ पक्रप्पो निशीधृ सुत्रम्॥

सपदपरूरण अणुसज्जना य दस चोहसऽह दुप्पसहे। अत्थि ण दीसति धणिएण विणा तित्थं च णिज्जवए।२६७:। पण्णवगस्स तु सपदं, पिन्छत्तं चोयगस्स तमणि । तं संपर्य पि विज्जति. जहा तहा में णिसामेहिं ॥२६८॥ श्चंजित चक्की भोए. पासाए सिप्पिरयणणिम्मविए। तं दद्वं रायीणं. अण्णेसिच्छा सम्रूपण्णा ॥२६९॥ अम्हें कारावेमो, पासाए एरिसे ति इति तेहिं। चित्तकरा पेसविया. णिडणं लिहिङण आणेह ॥२७०॥ पासाद स्सयणे मणहारितं तेहिं चित्तकारेहिं। लीलविहणं णवरिं, आगारो होति सो चेव ॥२७१॥ जह रूपादिविसेसा, परिहीणा होंति पागतजणस्स । ण य ते ण होंति गेहा, ग्रुंजंति य तेस्र ते भोगे ॥२७२॥ एमेव य पारोक्ली, तदाऽणुरूवं तु सो व्य ववहरति। कि पुण ववहरितव्वं. पायच्छितं इवं दसहा ॥२७३॥ आलोयण पडिकमणे, मीस विवेगे तहा वियोसगी। तव छेद मूल अणबद्वया य पारंचिए चेव ॥२७४॥ एतुवरिं भिणहिती, सवित्थरेणं तु आणुपुन्त्रीए। एयं प्रण जह धरती, जं जत्था तं चिमाऽऽहंस्र ॥२७५॥ दसहा अणुसर्ज्जती, जा चोहसपुटित्र पढमसंघरणे। तेणाऽऽरेणऽद्वविहं, तित्थंतिम जाव दुष्पसहो ॥२७६॥ तम्मि कालगए तित्थं चरित्तं च बोच्छि जिहीति ॥ दोसु तु बोच्छिण्णेस्, चोइसपुन्वाऽऽतिमे य संघयणे। तव(तो)पारंच-ऽणवद्वा. णव-दस पच्छित्तवोच्छिण्णा।२७७॥

द्शधा प्रायश्वित्तम् प्रायश्वित्त-दानस्य विभागः

१७३ षागतजणस्स प्राकृतजनस्य ॥ २७५ पतुवरिं पतव् उपरि-अग्रे । जत्था तं चिमांऽऽहंसु यत्र तत् चेदमाह ॥ २७३ गाथेथं व्य॰ उ॰ १० गा० ३५३॥

सेस अद्रहऽणुसज्जति, जा तित्थं णव दसे य लिंगादी । चोदे तं पि ण दीसदि, एवभणंतं ग्ररू भणति ॥२७८॥ दोस्र त वोच्छिण्णेस्, अट्टविहं देंतया करेंता य । ण य केयी दीसंती, एवभणंतस्स चतुगुरुगा ॥२७९॥ दोस्र त वोच्छिण्णेस, अट्टविई देतया करेंता य। पचन्खं दीसंती, जहा तहा मे णिसामेहि ॥२८०॥ पंच णियंटा भणिया. पुलाग बडसा क्रसील निग्गंटा। तह य सिणाओ तेसि, पच्छित्त जहक्रमं वोच्छं ॥२८१॥ आलोयण पहिकमणे. मीस विवेगे तहा विओसग्गे। तत्तो य तवे छेदे, पच्छित्त पुलागे छऽप्पेते ॥२८२॥ बगुस-पडिसेवगाणं, पायच्छित्ता हवंति सब्वे वि । थेराण भवे कप्पे. जिणकप्पे अट्टहा होति ॥२८३।। आलोयणा विवेगो वा, णियंठस्स दुवे भवे । विवेगो य सिणायस्स. एमेया पडिवत्तीओ ॥२८४॥ पंचेव संजया खल्ल, णायस्रएण कहिता जिजवरेण । सामाइसंजयादी, पच्छित्तं तेसि बुच्छामि ॥२८५॥ सामाइसंजताणं, पिच्छत्ता छेय-मूलरहियऽहु । थेराण जिंगोंगं पुण, तवगंतं छव्त्रिहं होति ॥२८६॥ छेदोबद्रावणिए. पायच्छित्ता हवंति सब्बे वि । थेराण जिणाणं पुण, मूलंतं अदृहा होति ॥२८७॥ परिहारविसुद्धीए, मूलंता अट्ट होंति पच्छिता। थेराण जिणाणं पुण, छव्विहमेतं चिय तवंतं ॥२८८॥ आलोयणा विवेगे य. ततियं त ण विज्जइ सुहमम्मि संपराए, अहक्खाए तहेव य ॥२८९॥

२७९ इतस्रयोद्दा गाषाः व्यव उ० १० गा० ३५५ २६६ ॥ २८२ छ प्पेते पडप्येतानि॥

प्रायश्चित्तविधा-तृणामस्तित्वम्

वउस-पहिसेवया खळु, इत्तिरि-छेटा य संजता दोणिण । जा तित्थं अणुसन्जंति, अत्थि हु तेणं तु पच्छितं ॥२९० जदि अत्थि ण दीसंती, केइ करेंता उ भण्णती सुणसु । दीसंत उत्राष्णं. कुव्वंता तिथमं णातं ॥२९१॥ जह धणियो सावेनखो, णिरवेनखो चेव होइ [दुविहो] तु । धारणग संतविभवो, असंतविभवो य सो दुविहो ॥२९२॥ मंतिविभवो त जाहेव मिगतो ताहे देति तं सब्वं। जो पुण असंतिविभवो, तस्त विसेसो इमो होति ॥२९३॥ णिरवेक्लो तिष्णि चयती, अत्ताण धर्णं च तह य धारणयं। सावेक्को प्रण रक्कति, अप्पाण घणं च घारणगं ॥२९४॥ जो तु असैनविभवो, दब्भं घेत्रण पहड़ पाडेण । सो अप्पाण वर्ण पि य, धारणगं चेव णासेति ॥२९५॥ जो पुण सहती कालं, सो अत्यं लहति रक्खित य तं च। ण किलिस्सइ य सर्त पी, एव उवाओ तु सन्वत्थ ॥२९६ जो तु धरेजा अवड़ं, असंनविभवो सर्त । कुणमाणो य कम्मै तु, णिव्विसे करिसावणं ॥२९७॥ अणमप्पेण कालेणं, सो तगं तु विमोयए। दिइंतेसो भणितो, अत्थोवणयो इम्रो तस्स ॥२९८॥ संतविभवेहिँ तुझा, धिति-संघयणेहिँ जे उ संपण्णा । ते आवण्णा सन्त्रं, वहंति णिरणुम्महं घीरा ॥२९९॥ संघयण-धितीहीणा, असंतिवभवेहिँ होंति तुल्ला तु । णिरवेक्को जिद तेसिं, देति तयो ते ण सुज्झेति ॥३००॥ ते तेण परिचत्ता, लिंगत्रिवेगं तु काउ वर्चति । तित्थुच्छेदो एवं, अप्पा वि य चत्ता इणमो उ ॥३०१॥

सापेक्ष-निर-पेक्षतया प्राय-श्चित्तदाने ला-भाऽलाभी ते उद्वेत पराणा, पच्छा एक। णियो तयो होति । ताहे किं तु करेतू?, एवं अप्पा परिचत्तो ॥३०२॥ साविक्खो पवयणम्मी, अणवत्थपसंगवारणाकुसलो । चारित्तरक्खणहा, अन्वोच्छित्तीय तु विसुज्झे ॥३०३ ॥ कल्लाणगमावण्णे, अतरंते जहक्रमेण काउं जे । दस कारेंति चत्रत्थे, तब्बिडणाऽऽयंबिलतवे य ॥३०४ एकासण पुरिमट्टा, णिन्त्रिगती चैव विगुणविगुणाओ । पत्तेयाऽसहुदाणं, कारेंति व सिण्णगासंति ॥३०५॥ चड-तिग-दुगकञ्जाणा, एगं कञ्जाणगं च कारिति । जं जो उतरित तं तस्स देंति असहस्स झोसेंति॥३०६॥ एवं सदयं दिज्जति, जेणं सो संजमे थिरो होति । ण य सन्बहा ण दिज्जइ, अणवत्थपसंगदोसाओ ॥३०७॥ तिल्रहारगदिट्टंतो, पसंगदोसेण जह वहं पत्तो । जणणी य थणच्छेयं, पत्ता अणिवारयन्ती तु ।।३०८॥ णिडमत्थणाः बितियाएँ वारिओ जीविआदिआभागी। णेत्र य थणछेदादी, पत्ता जणणी य अवराहं ॥३०९॥ इय अणिवारियदोसा, संसारं दुक्खसागरप्रुवेति । विणियत्तपसंगा पुण, करेंति संसाखोच्छेई ॥३१०:। पूर्व धरती सोही, देन्त करंना वि एव दीसंति । दारं । जं पि य दंसण-णाणेहिं भाति तित्थं ति तं सुणपु ॥३११॥ एवं ते भणंतेणं, सेणियमादी वि याविया समणा। समणस्य उ सत्तम्मी, जत्थी जरएमु उनवाती ॥३१२॥

चरणस्य अस्तिता

३०२ पलाणा पलायिताः । पकाणियो पकाकी ॥
३०३ इत आरभ्येकादश गाया व्यव उव १० भाव गाव ३७६-३८६ ॥
३०८ तिल्लहारमिद्धंनो तिलहारकदृष्टान्तः गुरुतस्यविनिश्चययुत्ती उव १ गाया २०० मध्ये, व्यव उव १० भाव गाया ३८० टीकायां स प्रस्वयः ॥

जं पि य हु एकवीसं, वाससहस्साइँ होइती तित्थं। तं मिच्छा सिद्धी वा, सन्वगतीसुं पि होज्जाहि ॥३१३॥ अण्णं च इमो दोसो, पिच्छत्ताभावतो त पावड हु। जह न वि चिद्वति चरणं, तत्थ इमं गाहमाहंस्र ॥३१४॥ पायच्छित्ते असंतम्मि. चरित्तं पि ण चिट्ठति । चरित्तिम् असंतिम्म. तित्थे णो सचरित्तया ॥३१५॥ अचरित्तयाए तित्थे, णेव्याणं पि ण गच्छती । णेव्वाणम्मि असंतम्मि, सव्वा दिक्ला णिरत्थिया ॥३१६॥ ण विणा तित्थं णियंठेहिं. णियंठा व अतित्थगा। छकायसंजमो जाव, ताव दुण्हाऽणुसज्जणा ॥३१७॥ सन्वन्नूहिँ परुविय, छक्काय महन्त्रया य समितीओ । स चेव य पण्णवणा. संपयकालम्मि साहणं ॥३१८॥ तं णो वचइ तित्थं, दंसण-णाणेहिँ एव सिद्धं तु। णिज्जवगा वोच्छिण्णा, जंपि य भणियं तु तंण तहा॥३१९॥ स्रण जह णिज्जवगऽत्थी, दीसंनि जहा य णिज्जविङ्जंता । इह दुविहा णिज्जवगा, अत्ताण परे य बोधव्या ॥३२०॥ पाओवनमे इंगिणि, दुविहा खल्ज होति आयणिज्जवना । णिज्जवणा य परेण व, भत्तपरिण्णाऍ बोद्धव्वा ॥३२१॥ पाओवगमे इंगिणि, दोण्णि वि चिट्टंत ताव मरणाई। भत्तपरिण्णाऍ विहिं, वाच्छामि अहाणुपुच्वीए ॥३२२॥ पावज्जादी काउं, णेयव्यं ताव जाव वोच्छित्ती । पंच तुलेतण य सो, भत्तपरिण्णं परिणयो य ॥३२३॥ सपरक्कमे य अपरक्कमे य वाघाय आणुपुरुवी य । स्रत्राजाणएणं, समाहिमरणं तु कातव्वं ॥३२४ ॥

निर्यापकाना-सञ्यवच्छेदः

भक्तपरिज्ञा-विधिः भिक्ल-वियारसमत्या, जो अण्णगणं त गंत चाएति। एस सपरक्कमो खळु, तिव्यवरीओ भवे इवरो ॥३२५॥ एक्केक्क तं दुविहं, णिव्याघायं तहेव वाघायं । वाघाती वि य द्विहो, कालाइधरो व्य इयरो व्य ॥३२६॥ सपरक्कमं त तहियं, णिन्वाघायं तहेव वाघातं । बोच्छामि समासेणं, ठप्पं अपरक्कमं दुविई ॥३२७॥ तं पुण अणुगंतव्वं, दारेहिँ इमेहिँ आणुपुव्वीए । गणिषिसरणाइएहिं, तेसि विभागं त वोच्छामि ॥३२८॥ गणणिसिरणा परगणा, सिति संस्रेहा अगीयऽसंत्रिगो । एगाऽऽभोगण अण्णे, अणपुच्छ परिच्छ आलोए ॥३२९॥ ठाण वसही पसत्थे, णिज्जवगा दव्वदायणा चरिमे। हाणि परितंत णिजजर, संथाहव्यत्तणादीणि ॥३३०॥ सारेऊण य कवर्ष, णिव्वाचाएण चिधकरणं च । वाघाए जयणा या, भत्तपरिण्णाय कायव्या ॥३३१॥ गणिलिसरणिम उ विही, जो कप्पे विणतो उ सत्तविहो। सो चेव णिरवसेसो, भत्तपरिण्णाएँ इहाँ पि ॥३३२॥ णिसिरित्त गणं वीरो, गंतूण य परगणं तु सो ताहे। कुणति दढव्यवसायो, भत्तपरिण्णं परिणयो य ॥३३३॥ किं कारण अवक्रमणं, थेराण इहं तत्रोकिलंताणं ?। अब्धुज्जयम्मि मरणे, कालुणिया झाणवाद्यातो ॥३३४॥ सगणे आणाहाणी, अप्पत्तिय होति एवमादीहिं। परगर्णे गुरुकुलवासो, अप्पत्तियवज्जितो होति ॥३३५॥ उवगरणगणणिमित्ते, तु बुगगहो दिस्स वा वि गणभेदो । बालादी थेराण व, उचियाकरणम्मि वाघातो ॥३३६॥

निर्व्याचाताया सन्याचाताया-श्च सपराक्रमः भक्तपरिज्ञायाः स्वरूपम

> गणनिःसरण-द्वारम्

३२८ इतः पञ्च गोथाः ६४० उ० १० भा० गा० ३९९-४०३ ॥ ३३४ इतः वह गाथाः ६४० उ० १० भा० गा० ४०४-४०९ ॥ श्रितिद्वारम्

सिणेहो पेलवी होती, णिग्गए उभयस्स वि ।
आह्य वा वि वाघाए, णो स होइ विजन्भभो ॥३३०॥
दन्त्रसिती भावसिती, दन्त्रसिती होइ दारुणिस्सेणी ।
भावसिति संजमो जा, तीय वि भंगा इमे होंति ॥३३८॥
संजमठाणाणं कंडगाण लेसाठितीविसेसाणं ।
जवरिल्ला परक्रमणं, भावसिती केवलं जाव ॥३३९॥
भावसिती अहिगारो, विसुद्धभावेण तत्थ ठातन्तं ।
ण हु उन्न्यमणकज्जे, हेट्टिल्लपदं पसंसंति ॥३४०॥

सिति चि दारं॥

संखेखना-द्वारम् संस्रेहणा उ तिविहा, जहण्ण मञ्झा तहेत्र उक्कोसा ।
छम्मासा विरसं वा, वारस विरसा जहाकमसा ॥३४१॥
चिद्वतु जहण्ण मञ्झा, उक्कोसं तत्थ तात्र वोच्छामि ।
जं संस्रिहिऊण ग्रुणी, साहंती अप्पणा अट्टं ॥३४२॥
चत्तारि विचित्ताई, विगतीणिङजूहियाईँ चत्तारि ।
दोग्र चउत्थाऽऽयामं, अविगिष्ट विगिष्ट कोडेकं ॥३४३॥
संत्रच्छराईँ चउरो, ततं विचित्तं चउत्थमादीयं ।
काऊण सञ्त्रपणितं, पारेती उग्गमितसुदं ॥३४४॥
पुणरिव चउरणा तू, विचित्तं काऊण विगतित्रज्जं तु ।
पारेति सो महप्पा, णिदं पणिपं च वज्जेइ ॥३४५॥
अण्णा दोण्णि समाओ, चउत्थ काऊग पारे आयामं ।
कंजीएणं तु तयो, अण्णेकसमं दुहा काउं ।३४६॥
तत्थेकं छम्मासं, चतुत्थ छटं च काउ पारेति ।
आयामेणं णियमा, वितिष छम्मासिष् विगिटं ॥३४७॥

३४२ इतो नव गाथाः व्यव उ० १० भाव गाव ४११-४१८ ॥ ३४४ सव्वगुणितं सर्वेगुणिकं प्रतिबन्धरदितम्, यथेष्टमित् यावत्।

अट्टम दसम दुवालस, कार्ड पारे तमेव आयामं। अण्णेकहायणं तू, कोडीसहितं तु काऊणं ॥३४८॥ आयाम-चजत्यादी, काऊण अपारिए पुणी अण्णं । जं कुणयाऽऽयामादी, तं भण्णति कोडिसहितं तु ॥३४९॥ आयंबिल उसिणोएण पारें हावंतो आणुपुन्तीए । जह दीव-तेल्ल-वत्तीखओ समं तह सरीरायुं ॥३५०॥ बारसमस्मि य वरिसे, जे मासा उवरिमा उ चत्तारि । पारणए तेसि तू, एकंतरतं इमं धारे ॥३५१॥ तेल्लस्स उ गंडूसं, णीसद्वं जाव खेलसंबुत्तो । तो णिसिरे खेलमत्ते, किं कारण ? गल्लधरणं तु ॥३५२॥ लुक्खता ग्रहजंतं, मा हु खहेळा ति तेण धारेइ। माऽह णमोकारस्ता, अपचलो सो हु होजाहि ॥३५३॥ उकोसिया त एसा, संलेहा मज्झिमा जहण्णा य। संवच्छर छम्मासा, एमेव य मास-पक्लेहिं ॥३५४॥ एत्तो एगतरेणं, संस्रेहेणं खवेतु अप्पाणं। कुज्जा भत्तपरिण्णं, इंगिणि पाओवगमणं च ॥३५५॥ अग्गीयसगासम्मी, भत्तपरिण्णं तु जो करेज्ञाहि। चडगुरुगा तस्स भवे, किं कारण ? जेणिमे दोसा ॥३५६॥ णासेइ अगीयत्थो, चडरंगं सव्वलोगसारंगं । णट्टम्मि य चडरंगे, ण हु सुलभं होति चडरंगं ॥३५७॥ किं पुण तं चउरंगं, जं णहं दुल्लहं पुणो होति ?। माणुस्सं धम्मसुती, सद्धा तह संजमे विरियं ॥३५८॥ किह णासेति अगीतो, पढम-वितिएहिँ अहिओ सो उ । ओभासे कालिमाए, तो निद्धम्मो ति छड्डेज्जा ॥३५९॥

अगीत-द्वारम्

३५३ इतोऽष्टार्विदानिर्गाथाः व्यव उ० १० भाव गाव ४२०-४४७॥

अंतो वा बाहिं वा. दिया व रातो व सो विचित्तो त । अहदुहृह्वसहो, पिहनमणादीणि कुज्जाहि ॥३६०॥ मरिऊण अट्टज्झाणा. गच्छेज्ज व तिरिय वणसुरेसं वा । संभरिकण य वेरं. पहिणीयत्तं करेज्जाहि ॥३६१॥ अहवा वि सन्वरीए. मोयं देन्जाहि जायमाणस्स । सो डंडियादि होज्जा, रुट्टो साहे णिवाईणं ॥३६२॥ कुल्ला कुलादिपत्थारं. सो वा रुट्टो तु गच्छे मिच्छत्तं। तप्पच्चयं तु दी हं, भमेज्ज संसारकंतारं ॥३६३॥ सो दिट्टो य विगिचितो, संविगोहि त अण्णसाहृहिं। आसासियमणुसद्दो, मरणज्जह पुणो वि पहिवण्णो ॥३६४॥ एए अण्णे यबहू, तहियं दोसा सपचवाया य। एपहिँ कारणेहिँ, अमीये ण कप्पति परिण्णा ॥३६५॥ तम्हा पंच व छ स्सत्त वा वि जोयणसने समहिए वा। गीयत्थपायमूलं, परिमग्गेजना अपरितंतो ॥३६६॥ एकं व दो व तिनि व, उकासं वारसेव वासाई। गीयत्थपायमुर्ल, परिमग्गेज्जा अवस्तिनो ॥३६७॥ गीतत्थदुल्लमं खलु, पडुच कालं तु मग्गणा एसा । ते खळ गवेसमाणे, खेत्ते काले य परिमाणं ॥३६८॥ तेण य गीयत्थेणं. पत्रवणगहियत्थसन्त्रसारेणं । णिज्जवएण समाही, कायव्या उत्तिमट्टम्मि ॥३६९॥ अगीय ति दारं ॥

असंविन-द्वारम् एवमसंविग्ने वी, पहिवन्नंतस्स हेांति चउगुरुगा। किं कारणं तु ? तहियं, जम्हा दोसा हवंति इमे ॥३७०॥ णासेति असंविग्गो, चउरंगं सन्वलोयसारंगं। णहिमा य चउरंगे, ण हु सुलहं होति चउरंगं॥३७१॥ आहाकिम्मिय पाणय, पुष्फा सीया य बहुजणे णायं।
सेज्जा संथारो वि य, उनही निय होति अविसुद्धो॥३७२॥
एते अण्णे य तिहं, बहने दोसा सपचनाया य।
एतेण कारणेणं, असंतिग्गे ण कष्पति परिण्णा ॥३७३॥
तम्हा पंच व छ स्सत्त वा वि जोयणसते समिहए वा।
संविग्गपादमूलं, परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥३७४॥
एकं व दो व तिण्णि व, उक्कोसं बारसेव वासाइं।
संविग्गपादमूलं, परिमग्गेज्जा अपरितंतो ॥३७५॥
संविग्गदुद्धहं खलु, कालं तु पहुच मग्गणा एसा।
ते खलु गवेसमाणे, खेते काले य परिमाणं ॥३७६॥
तेण य संविग्गेणं, पनयणगहियत्थसन्त्रसारेणं।
णिज्जनगेण समाही, कातन्त्रा उत्तिमहिम्म ॥३७७॥
संविग्गेति दारं॥

एगिम्प उ णिज्जवए, विराहणा होति कज्जहाणी य।
सो सेहा वि य चत्ता, पावयणं चेव उड्डाहो ॥३७८॥
तस्सद्दगतोभासण, सेहादिअदाणें सो य परिचत्तो ।
दांतुं व अदाउं वा, हवंति सेहा वि णिद्धम्मा ॥३७९॥
क्वइ अदिज्जमाणे, मारेति बल ति पवयणं चत्तं ।
सेहा य जं पिडिगया, जणे अवण्णं पयासंति॥३८०॥ दारं॥
सयमेवाऽऽभोएतुं, अतिसेसि णिमित्तियो व आयरिओ ।
देवयणिवेयणेण व, जह णगरे कंचणपुरम्मि ॥३८१॥
कंचणपुर गुरुसण्णा, देवयरुयणा य पुच्छ कहणा य ।
पारणग खीर रुहिरं, आमंतण संघणासणया ॥३८२॥
अहवा वि सो व परतो, पारग मिच्छत्त पारण गुरुगा ।
असती खेमसुभिक्खे, णिच्वाघाते ण पडिवत्ती ॥३८३॥

एकद्वारम्

आभोग-द्वारम्

३८२ माथेयं व्यव १० गाव ४५२॥

सतं चेव चिरावासो, वासावासे तवस्सिणं ।
तेणं तस्स विसेसेणं, वासासु पहिवज्जणं ॥३८४॥
असिवोमादीएसु तु, पहिवज्जंते इमे भवे दोसा ।
संजम-आयविराहण, आणाईया य दोसा उ॥३८५॥
असिवादीहिँ वहंता, वं उवगरणं व संजता चत्ता ।
उवहिं विणा य छड्डणें, चत्तो सो पवयणं चेव ॥३८६॥ दारं॥

अन्यद्वारम्

एगो संथारगतो, बितियो संलेहें तितय पहिसेहो । अपहुचंतऽसमाही, तस्स व तेसिं व असमाही ॥३८७॥ इविज्ञ जिद वाघातो, बितियं तत्थ ठावए । चिलिमिलि अन्तरे कार्ज, बहिं वंदावए जणं ॥३८८॥दारं॥

अनापृच्छा-द्वारम् अणपुच्छाऍ गणस्सा, पिडच्छए तं जती गुरू गुरुगा।
चत्तारि तु विण्णेया, गच्छमणिच्छंते जं पावे ॥३८९॥
पाणगादीणि जोग्गाणि, जाणि तस्स समाहिए।
अछंभे तस्स जाणाही, पिरकेसो य जायणे ॥३९०॥
असंथरं अजोग्गो वा, जोगवाही व जइ भवे।
एसणादिपरिकेसो, जा य तस्स विराहणा॥३९१॥ दारं॥
अपरिच्छणम्मि गुरुगा, दोण्ह वि अण्णोण्णगं जहाकमसो।
होति विराहण दुविहा, एको एको व जं पावे॥३९२॥

परीक्षाद्वारम

तम्हा परिच्छणा खलु, दब्बे भावे य होति दोण्हं पि।
तिह्यं तु जो परिच्छति, दबपरिच्छाएँ ते इणमो ॥३९३॥
मादणपयकिवयादी, दब्बे आणेह मे त्ति तो उदिते।
यदि उबहसंति ते तू, अहो इमो विगयगेहि त्ति ॥३९४॥
किह मोच्छिइ त्ति भत्तं?, तैसेबं दबयो परिच्छा उ।
भावे कसाइजंती, तेसि सगासे ण पडिबज्जे ॥३९५॥

३८५ इतो गाथाद्वादशकं व्यव १० गाव ४४९-४६०॥ ३९५ मोच्छिइ मोध्यति । तेसेवं तेषामेवम् ॥

一日 かんしょうしょうかん

अह पुष विरूवरूवे, आणीऍ दुगुंछए भणंतऽण्णं। आणेमो ति ववसिए, पडिवर्ज्ञति तेसि सो पासे ॥३९६॥ एवंभासी ते तू, परिच्छए दब-भावयो विहिणा। ते विय तं तु परिच्छे, दुविहपरिच्छाऍ इणमो तु ॥३९०॥ कलमोयणो य पयसा, अण्णं व सभावअणुमतं तस्स । उवणीयं जो कुंछइ, दबपरिच्छाऍ सो सुद्धो ॥३९८॥ भावे पुण पुच्छिजाइ, किं संलेहो कतो त्ति ण कयो ति १। इति उदिए सो ताहे, हंतूणं अंगुलिं दाए ॥३९९॥ वेच्छह ता मे एयं, किं कतों ण कतो त्ति एव उदितम्मि । भणति गुरू तो ण तयो, एयं चिय ते ण संस्रीहं ॥४००॥ ण हु ते दव्यसंलेहं, पुच्छे पासामि ते किसं। कीस ते अंगुली भग्गा ?, भावं संलिहमाऽऽउर ! ॥४०१॥ भावो चिय एत्थं तू , संलिहियन्वो सदा पयत्तेणं । तेणाऽऽयहं साहे, दिहंतोऽमच-कोंकणए ॥४०२॥ रण्णा कींकणगाऽमञ्चा, दो वि णिव्विसया कता । दोद्धिए कंजियं छोई, कोंकणो तक्खणा गतो ॥४०३॥ भण्डीओ बइल्लए काए, अमची जा भरेइ तु। ताव पुण्णं तू पंचाहं, णलिए णिहणं गतो ॥४०४॥ एवं जेहिं संलीढो, भावो ते तू साहगा । असंस्रीढे ण साहेन्ति, अमची इव ते खल्ल ॥४०५॥ इंदियाणि कसाए य, गारवे य किसे कुण। ण चेयं ते पसंसामी, किसं साहु ! सरीरगं ॥४०६॥

३९८ डय० १० गा० ४६१ ॥ ३९९ इंत्रुणं उत्प्लुत्य । दाप दर्शयेत् ॥ ४०१ डय० १० गा० ४६३ ॥ ४०३ गाथाद्विकं डय० १० गा० ४६४–६५ ॥ ४०६ डय० १० गा० ४६६ ॥

आलोचना-द्वारम्

एवं परिच्छिक्रणं, जदि सुद्धो ताहे तं पडिच्छंति । दारं ॥ ताहे य अत्तसोहिं, करेति विहिणा इमेणं तु ॥४०७॥ आयरियपादमुलं, गंतुर्ण सति परिक्कमे ताहे। सन्वेण अत्तसोही. परसक्त्वीयं त कायव्या ॥४०८॥ जह सुकुसलो वि वेज्जो, अण्णस्स कहेति अप्पणो वाही। वेज्जस्स य सो सोतं, तो परिकम्मं समारभइ ॥४०९॥ जाणतेण वि एवं, पायच्छित्तविहमप्पणा णिउणं । तह वि य पागडनरयं, आलोएतव्वयं होति ॥४१०॥ छत्तीसगुणसमण्णागएण तेण वि अवस्स कायव्या । आलोयण निंदण गरहणा य ण पुणो य बितियं ति ॥४११॥ किं कारणमालोयण, एवपयत्तेण होति दायव्वा १। भण्णइ सुणसु इणमो, आलोयंतस्स जे उ गुणा ॥४१२॥ आयार विणयगुण कप्पदीवणा अत्तसोहि उज्जभावो । अज्जव महव लाघव. तही परहायजणणं च ॥४१३॥ पावज्जादी आलोयणा त तिण्हं चतुनिकय विसोही। जह अप्पणो तह परे, कायन्त्रा उत्तिमद्रम्मि ॥४१४॥ तिण्हं ती णाणादी, दन्वादि चउनकर्ग मुणेयन्त्रं। जो अतियारी तेमृ, कयो आलोएति तं सब्बं ॥४१५॥ णाणे वितहपरूवण, जं वा आसेवितं तदट्टाए । चैयणमचैयणं वा, दब्बे खेत्तादिस इमं त ॥४१६॥ णाणणिमित्तं अद्धाणमेति ओमे व अच्छति तदहा । णार्ण च आगमेस्सइ, क्रणती परिकम्मर्ण देहे ॥४१७॥ पहिसेवति विगईओ, मेहादव्वे व एसती पियति । वायंतस्स व किरिया, कया तु पणगादिहाणीए ॥४१८॥

४०८ गायाचतुष्कं व्यव १० गाव ४६७-७०॥ ४१० पागडतर्यः प्रकटतरं-स्पष्टम् ॥ ४१३ गाथास्त्रयोविंदातिः व्यव १० गाव ४७३-९४॥

एमेव दंसणम्मि वि. सदृहणा णवरि तत्थ णाणत्तं। एसण-इत्थीदोसे, वयंति चरणे सिया सेवा ॥४१९॥ अहवा तिगसालंबेण दन्वमादी चउक्कमाहच । आसेवियं णिरालंबओ व आलोयए तं तु ॥४२०॥ पडिसेवणातियारा, जदि वीसरिया कहिंचि होज्जाहि। तेस्र कह वट्टियव्वं, सरलुद्धरणम्मि समणेणं ? ॥४२१॥ जे मे जाणंति जिला. अवराहे जेस जेस ठाणेस । ते हं आलोएउं. उबद्वितो सन्वभावेण ॥४२२॥ एवं आलोएंतो, विसद्धभावपरिणामसंज्ञतो । आराहओ तह वि सो, गारवपलिउंचणारहितो ॥४२३॥दारं॥ ठाणं पुण केरिसयं, होति पसत्थं तु तस्स जं जोगं ?। स्थान-वसति-भण्णति जत्थ ण होज्जा, झाणस्स उ तस्स वाघाओ ॥४२४॥ द्वारम गंधव्य-नदृ-जङ्क-८स्स-चक्क-जंत-८ग्गिकम्म-पुरुसे य। णन्तिक्क-रयग-देवड-डोम्बिल-पाडहिय-रायपहे ॥४२५॥ चौरग-कोट्टग-कल्लाल-करकए पुष्फ-दगसमीवे य। आरामअहे वियडे, जागवरे पुन्वभणिए य ॥४२६॥ पदम-वितिएस कप्पे. उद्देसेस उवस्सया जे त । विहिसुत्ते य णिसिद्धा, तिन्त्रवरीए भवे सिज्जा ॥४२७॥ उज्जाणे तरुमूले, सुण्णवर अणिसङ्घ हरिय मग्गे य। एवंविहे ण ठायह, होज्ज समाहीय वाघाओ ॥४२८॥ इंदियपडिसंचारों, मणसंखोमकरणं जिंहं णित्थ । चाउस्सालाईँ दुवे, अणुण्णवेऊण ठायंति ॥४२९॥

४२१ सलुद्धरणिम शस्योद्धरणे अपराधालीचनायामित्यर्थः॥ ४२३ पलिउंचणा प्रतिकुञ्च्यतेऽन्ययासेवितं अन्यया कथ्यते यया सा प्रतिकुञ्चना। व्यवहारपीठिका गाया १५० पत्रं ५०॥

पाणगजोग्गाहारे, ठवेंति से तत्य जत्य ण उवेन्ति । अध्यरिणया वं सो वा. अध्यव्य-गेहिरक्खद्रा ॥४३०॥ भुत्तभोगी पुरा जो तु, गीयत्थो वि य भावितो। संतेसाऽऽहारधम्मेस्र, सो त्रि खिप्पं त खुब्भती ॥४३१॥ पहिलोम अणुलोमा वा. विसया जत्थ दृश्तो । ठावित्ता तत्थ से णिचं. कहणा जाणगस्स वि ॥४३२॥दारं॥ पासत्थोसण्णक्रसीलठाणपरिविज्ञिया उ णिज्जवगा । षियधम्मऽवज्जभीरू, गुणसंपण्णा अपरितंता ॥४३३॥ जो जारिसतो कालो, भरहेरवएस होति वासेस । ते तारिसया तइया, अडयालीसा तु णिज्जवगा ॥४३४:। उच्चत्त दार संथार कहग वादी य अगगदारिम । भत्ते पाण वियारं. कहुग दिसा जे समत्था य ॥४३५॥ दवालसम्र एतेस्र, एक्केक्के चउरौ भवे । दिसि चउम्र पुब्वे एक्केक्के, अडयालीसं भवंती तु ॥४३६॥ एवं खळ उक्कोसा, परिहायंती हवंति दो चेव। दा गीय किं णिमित्तं ?, असुण्णकरणं जहण्णेणं ॥४३७॥दारं॥ तस्स य चरिमाहारी, इही दायबों तण्हछेयहा। सम्बस्स चरिमकाले, अतीव तण्हा सम्रुज्जलइ ॥४३८॥ णव विगइ सत्त ओदण, अट्टारस वंजणुचपाणं च। अणुपुविविद्वारीणं, समाहिकामाण उवहरइ ॥४३९॥ काल-सभावाणुमतो, पुन्तज्ञ्जसिओ सुओवइद्वो वा । झोसिज्जित सो वि तहा, जयणाय चउव्विहाहारी ॥४४०॥ तण्हाछेदम्मि कते, ण तस्स तहितं पवत्तए भावो ।

निर्यापकद्वारम्

द्रव्यदापना-द्वारम्

४३१ संतेसाऽऽहारधम्मेसु सत्सु आहारधर्मेषु ॥ ४३७ गाधाषट्कं ६४० १० गा० ४९५-५०० ॥ ४४१ कहिंचुप्पन्जति कथञ्चिदुत्पचते ॥

अहव कहिंचुप्पज्जति, तहवि णियत्तेइ एवं तु ॥४४१॥

किं व तं जोवभ्रतं में, परिणामास्र्यिं सुर्यि ? । दिट्टसारो सुईं झाइ, चोयणेसेव सीययो ॥४४२॥ चरिमं च एस भ्रंजित. सद्धाजणणं च होति उभए वि । संजय-गिहियाणं वा. तो देंति इमीय त विहीय ॥४४३॥ तिविहं तु वोसिरिहीइ, सो ता उक्कोसगाइँ दव्वाइं। मग्गेत्रा जयणाए, चरिमाहारं पर्दर्सेति ॥४४४॥ पासित्त ताणि कोयी, तीरपत्तस्स किं ममेतेहिं ?। वेरगमणुष्पत्तो. संवेगपरायणो होति ॥४४५॥ सव्वं भोच्चा कोई, धिद्धीकारं इमेण किं मे ? ति। वेरग्गमणुष्पत्तो, संवेगपरायणो होति ॥४४६॥ सव्वं भोच्चा कोई, मणुण्णरसपरिणतो हवेज्जाहि। तं चेवऽणुवंधंतो, देसं सव्वं च रोहीया ॥४४७॥ दारं ॥ विगयीकयाणुर्वधे. आहारऽणुर्वधणाऍ वोच्छेदो । परिहायमाणदव्वे, गुणवड्टि समाहि अणुर्क्षपा ॥४४८॥ द्वियपरीणामं ता, हावेति दिणे दिणे त जा तिण्णि। बिन्ति ण लभंति दलमे. सलभम्मि वि होतिमा जयणा।।४४९।। आहारं ताव छिंदाहि, गेहि तो णं चइस्सिस । जं भुत्तं ण ह पुन्वं ते. तीरपत्तो तमिच्छिसि ॥४५०॥दारं॥ वद्दंति अपरितंता, दिया व रायो व सन्वपरिकम्मं । पडियरगा मुणिवरगा, कम्मरयं णिज्जरेमाणा ॥४५१॥ जो जत्थ होति क्रसलो, सो त ण हावेइ तं सइ बलम्मि। उज्जुत्ता सति जोगे, तस्स वि दीवेति तं सट्टं ॥४५२॥दारं॥

हानिद्वारम्

अपरितान्त-द्वारम्

४४२ झाइ चोयणेलेष सीययो ध्यायति चोदना प्रवेष सीदतः॥
४४४ गाथाद्विकं व्य० १० गा० ५०१-२॥ ४४५ ममेतेहिं मम प्रतेः॥
४४७ इतः ४७२ गाथान्ता गाथा व्य० १० गा० ५०३-२८॥ ४४९ होतिमा
भवति इयम्॥

निर्जराद्वारम्

देहिविओगो सिष्पं, व होज्ज अहवा वि कालकरणेणं।
दोण्हं पि णिज्जरा वृहमाणों गच्छो उ एयहा।।४५३॥
कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो।
अण्णयरिम वि जोगे, सज्झायम्मी विसेसेणं॥४५४॥
कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो।
अण्णयरिम वि जोगे, काउरसग्गे विसेसेणं॥४५५॥
कम्ममसंखेज्जभवं, खवेइ अणुसमयमेव आउत्तो।
अण्णयरिम वि जोगे, वेयावचे विसेसेणं॥४५६॥
कम्ममसंखेज्जभवं, खवेति अणुसमयमेव आउत्तो।
अण्णयरिम वि जोगे, विसेसतो उत्तिमहम्म॥४५०॥ दारं॥

संस्तारद्वारम्

संथारों उत्तिमहे, भृमि-सिला-फलगमादि णायन्य ।
संथारपट्टमादी, दुगचीराऊ बहू वा वि ॥४५८॥
तह वि असंथरमाणे, कुसमादी तिष्णि अन्झुसिरतणाति ।
तेसऽसित असंथरणे, ब होज्ज सुसिरा वि तो पच्छा॥४५९॥
तह वि असंथर कोतव, पावारग णवय तूलि भूमीए ।
एमेव अणहियासे, संथारगमादि पल्लंके ॥४६०॥ दारं॥
पिललेहण संथारं, पाणग उन्वत्तणादि णिगगमणं।
सयमेव करेति सहू, असहुस्स करेति अण्णे उ ॥४६१॥
कायोवचितो बलवं, णिक्लमण पवेसणं च सो कुणित ।
तह वि य अविसहमाणं, संथारगनं तु संवारे ॥४६२॥
संथारो तस्स मजतो, समाहिहेउं तु होति कायन्यो।

उद्वर्त्तनाद्वारम्

स्मारणाद्वारम्

धीरपुरिसपण्णत्ते, सप्पुरिसणिसेविए परमरम्मे । धण्णा सिस्नातस्रतस्रे, णिरावयक्ता णिवज्जंति ॥४६४॥

तह वि य अविसहमाणे, समाहिहेर्ड उदाहरणं ॥४६३॥दारं॥

जदि ताव सावया कुलगिरिकंदरविसमकडगदुग्गेसु। साहेंति उत्तिमट्टं, धितिधणियसहायगा धीरा ॥४६५॥ किं पुण अणगारसहायगेण अण्णोण्णसंगहबलेणं । परलोतिए ण सका. साहेउं अप्पणो अट्टं ?।।४६६॥ जिणवयणम्पमेयं, णिडणं कण्णाहरं सुणेतेणं । सका हु साहुमज्झे, संसारमहोदहिं तरितुं ॥४६७॥ सन्वे सन्बद्धाए, सन्बण्णू सन्बकम्मभूमीसु । सन्वगुरु सन्वमहिया, सन्वे मेरुम्मि अहिसित्ता ॥४६८॥ सन्वाहि वि लद्धीहि, सन्वे वि परीसहे पराइता। सन्वे वि य तित्थगरा, पायोवगरेण सिद्धि गया ॥४६९॥ अवसेसा अणगारा, तीय-पडुष्पण्ण-ऽणागया सन्वे । केई पायोवगया, पश्चक्खाणिंगिणी केयी ॥४७०॥ सन्त्राओ अज्ञाओ, सन्त्रे वि य पहमसंघयणवज्जा। सन्वे य देसविरया, पचनखाणेण तु मरंति ॥४७१॥ सन्बसहप्पभवाओ, जीवियसाराओं सन्वजणयायो। आहाराओ रतणं, ण विज्ञए उत्तिमं अण्णं ॥४७२॥ सेलेसि सिद्ध विग्गह, केवलिओघायए य मोत्तृणं। सन्वे सन्वावत्थं, आहारे हेाति आयत्ता ॥४७३॥ तं तारिसयं रयणं, सारं जं सव्बलोग्रयणाणं । सन्वं परिचइत्ता, पाओवगया पविद्वरंति ॥४७४॥ एवं पाओवगमं, णिप्पडिकम्मं जिणेहि पण्णतं । जं सोऊण परिण्णी, वनसायपरिक्तमं कुणति ॥४७५॥ दारं॥ कोयिं परीसहेहिं, वाउलिओ वेयणहिओ वा वि। कवचद्वारम् ओभासेज क्याई, पढमं बितियं च आसज्ज ॥४७६॥

४६९ पराइत्ता पराजित्य ॥ ४७४ इत. ४८७ गाथान्ता गा**या व्यव** १० गा० ५३०-४३ ॥ ४७६ वेयणद्विओ वेदनार्तः ॥

गीयत्थमगीयत्थं, सारेडं तह विबोहणं काउं। तो पडिबोहय छट्टे, पढमे पगए सिया वितिए ॥४७०॥ इन्दि दु परीसहचम्, जोहेतवा मणेण काएण। तो मरणदेसयाले, केवयब्भूओ तु आहारी ॥४७८॥ णायं संगामदुगं, महसिल-रहम्रसलवण्णा तेसि । असर-सरिन्दावरणं, चेडग एगो गह सरस्स ॥४७९॥ महसिलकंटे तहियं, वहंते क्रणिओ त रहिएणं ! रुक्लगावलगोणं, पहतो पट्टिम कणएणं ॥४८०॥ उष्फिहितं सो कणओ. कवयावरणम्मि तो ततो पहितो । तो तस्स कोणिएणं, छिण्णं सीसं खुरप्पेणं ॥४८१॥ दिद्वंतस्सोवणओ, कवयत्थाणी इहं तहाऽऽहारो । सत् परीसहा खलु, आराहण रज्जथाणीया ॥४८२॥ जह वाऽऽउंटियपाए. पार्य काऊण हत्थिणो प्ररिसो । आरुहति तह परिण्णी, आहारेणं तु झाणवरं ॥४८३॥ उवगरणेहि विह्नणो, जह वा पुरिसो ण साहए कज्जं। एवाऽऽहारपरिण्णी, दिद्वंता तत्थिमे होंति ॥४८४॥ लक्ष पवष जोहे, संगामे पत्थिए इय । आतरे सिक्खए चेव, दिहुत समाहिकामेतो ॥४८५॥ दत्तेणं णावाए, आउह तहोवाहणोसहेहिं च। उवगरणेहिं च विणा, जहसंखमसाहगा सब्वे ॥४८६॥ एवाऽऽहारेण विणा, समाहिकामो ण साहर्षे समाहि । तम्हा समाहिहेर्जं, दायन्त्रो तस्स आहारो ॥४८७॥

४७९-४८१ पतद्राथागतश्चेटक-कीणिकसम्बन्धः महाशिला रथ-मुज्ञालवर्णना च भगवतीस्त्रसप्तमज्ञातकनवमोहेशकादवसेया। पत्र ३१५॥ ४८६ दुसेणं दात्रेण ॥

धिति-संघयणविज्ञतो, असमत्यो परीसहेऽहियासेउं। फिट्टित चंदगविज्झा, तेण विणा कवयभूएणं ॥४८८॥ सरीरमुज्झियं जेण, को संगो तस्स भोयणे ?। समाहिसंघणाहेउं, दिज्जए सो सि अंतिए ॥४८९॥ सुद्धं एसिन् ठावंति, हाणिओ वा दिणे दिणे । पुरुबुत्ताए उ जयणाए, तं तु गोवेन्ति अण्णहि ॥४९०॥ हारं॥ णिव्याघाएणेवं, कालगयविगिचणा विहीपुट्वं । कातन्त्र चिधकरणं, अचिधकरणे भवे गुरुगा ॥४९१॥ उवगरण सरीरम्मि य, अचिधकरणम्मि मंडिओ तहियं। मगगणगवेसणाए, गामाणं घायणं कुणति ॥४९२॥ दारं ॥ ण पगासेज्ज लहुत्तं, परीसहृद्ष्ण होज्ज बाघाओ । उपण्णे वाघाए, जो गीयन्थाण त उवाओ ॥४९३॥ को गीयाण उवाओ ?, संलेहग उट्टविज्जए अण्णो । उच्छहए जो वऽण्णो, इयरे उ गिलाणपरिकम्मं ॥४९४॥ वसभो वा ठाविज्जति, अण्णस्सऽसतीअ तम्मि संथारे । कालगतो त्ति य काउं, संझाकालम्मि णीणंति ॥४९५॥ एव तू णायम्मी, डंडियमादी है होति जयणेसा । सत गमण पेसणं वा, खिसण चउरो अणुग्घाता ॥४९६॥ सपरक्रमे य भणियं, णिव्त्राघाई तहेव वाघायं ! णिव्वाघाइम इयरं, एत्तो अपरक्कमं वोच्छं ॥४९७॥ अपरकमों बलहीणो, अण्णगण ण जाति कुणइ गच्छम्मि । सपरकमो व्व सेसं, णिव्वाघाती गतो एसो ॥४९८॥ वाघाति आणुषुच्वी, रोगाऽऽयंकेहिँ णवृरि अभिभूओ। बालमरणं पि य सिया, मरेज्ज उ इमेहिं हेऊहिं ॥४९९॥

चिह्नकरण-द्वारम्

यतनाद्वारम्

निर्व्याघात-सब्याघाता-पराक्रमभक्त-परिज्ञायाः स्वरूपम्

४८८ चंदगविज्ञा चन्द्रकवेधः पुत्तिकाक्षिचन्द्रकस्य वेधः ॥ ४८९ इतः ४९७ गाथान्ता गाथा व्य० १० गा० ५४४-५२ ॥ ४९९ इतः ५०५ गाथान्ता गाथा व्य० १० गा० ५५३-५९ ॥

वाल-५च्छभरल-विसगय-विसृधिगाऽऽयंक सण्णिकोसलए। **ऊसास गद्ध रज्ज, ओमा-**ऽसिन-ऽहिघाय-संबद्धे ॥५००॥ वालेण गोणसाइण, खड्यो होज्जाहि सहिउमारद्धो । कण्णोद्रणासिगादी, विभंगिया अच्छभरलेण ॥५०१॥ लद्धो व विसेणं तू, विस्थिया वा से उद्दिता होज्जा। आयंको वा कोयी. खयमादी उद्विश्रो होज्जा ॥५०२॥ तिण्णि त वारा किरिया. तस्स कया ण विय उवसमो जातो। जह ओमे कोसलेणं, सण्णीणं पंच उ सयाई ॥५०३॥ सण्णीणं रुद्धाई, अहयं भत्तं तु तुब्भ दाहामि। लाभंतरं च णाउं, लुद्धेणं विक्कियं धर्णं ॥५०४॥ तो णाउ वित्तिछेदं, उसासणिरोहमादिणि कताणि। अणहीयासेन्तेहिं, खुइवेदण ओमें साहहिं ॥५०५॥ एवं ता कोसलए, अण्णिम्य वि ओमों होज्ज एमेव। सहसा छिण्णद्धाणे, असिवगाहिया व कुज्जाहिं ॥५०६॥ अभिघाओं वा विज्जु, गिरिभित्ती कोणगादि वा होज्जा। संबद्ध हत्थ-पादादयो व वादेण होज्जाहि ॥५०७।! एतेहिं कारणेहिं, वाबाइम मरण होति णायव्यं। परिकम्ममकाऊणं, पचक्वाई ततो भत्तं ॥५०८॥ अह पुण जिंद होज्जाही, पंडियमरणं त काउ असमत्थो। **ऊसास गद्धपट्टं, र**ज्जुग्गहणं व कुज्जाहि ॥५०९॥ अणुपुव्विविहारेणं, उस्सग्गणिवाइयाण जा सोही। विहरंतएण सोही, भणिता आयारलोवा या ॥५१०॥ एसा पश्चक्खाणे, आय परे भणिय णिज्जवाण विही । इंगिणि-पायोवगमे, बोच्छामी आयणिज्ञवर्ण ॥५११॥

५०७ गाथाहिकं व्यव १० गा० ५६०-६१ ॥ ५१० व्यव १० गाव ५६२ ॥

पन्वजादी काउं. णेतन्वं जाव होयऽवोच्छित्ती । पंच तुलेत्ग य सो. इंगिणिमरणं ववसिओ यु ॥५१२॥ आय-परपरिक्रम्मं, भत्तपरिण्णाएं दो अणुण्णाता । परिविज्जिया य इंगिणि, चउव्विहाहारिवरती य ॥५१३॥ टाण णिसीय त्रयङ्ग, इत्तिरियाई जहासमाहीए । सयमेत्र य सो कुणती, उत्रसम्म परीसहऽहियासे ॥५१४॥ संघयण-धितीजुत्तो. णव-दसपुच्या सुतेण अंगा वा। इंगिणिमरणं णियमा, पडिवज्जंड एरिसो साह ॥५१५॥ पव्यज्जादी काउं. णेयव्वं जाव होयऽवोच्छित्ती । पंच तुलेतुण य सो, पायोवगमं परिणतो य ॥५१६॥ तं दुविहं णायन्त्रं, णीहारिं चेव तह अणीहारिं। वहिता गामाटीणं. गिरिकंटरमादि णीहारिं ॥५१७॥ वइयादिस जं अंतो. उद्वेडमणा य ठाय अणीहारिं। कम्हा पादवगमणं ?. जं उवमा पादवेणेत्यं ॥५१८॥ सम विसमिम व पडिओ, अच्छति जह पादवी व णिकंषी। णिचल णिप्पडिकम्मो. णिक्खिवती जं जिंह अंगं ॥५१९॥ तं ठित होति तह चिय, णवरं चलणं परप्पयोगातो । वायादीहिं तरुस्स व, पडिणीयादीहिं तह तस्स ॥५२०॥ तसपाण-बीयरहिते, विच्छिण्णवियार थंडिल विसुद्धे। णिहोसा णिहोसे, उर्वेति अब्भुज्जयं मरणं ॥५२१॥ पुबभवियवेरेणं, देवो साहरइ कोति पाताले। मा सो चरिमसरीरो, ण वेदर्ण किंचि पाविहिती ॥५२२॥ उपण्णे जनसागे, दिव्वे माणुस्सए तिरिक्ले य । सच्चे पराजिणित्ता. पायोवगया पविहरंति ॥५२३॥

इङ्गिनीमरणम्

पादपोप-गमनम्

५१२ गाथाचतुष्कं व्य० १० गा० ५६३-६६॥ ५**१८ वर्गा मिजिका** गोकुलम् ॥ ५२१ गाथात्रिकं व्य० १० गा० ५६८-७०॥ ५२**२ साहरर्** कोति सहरति कोऽपि ।

देव-णर दुगतिगऽस्से, केथी पक्लेवर्ग सिया कुज्जा। वोसट्ट-चत्तदेहो. अहाउयं कोड पालिज्जा ॥५२४॥ अणुलोमा पडिलोमं, दुगं तु उभयसहिया तिगं होति। अहवा चित्तमचित्तं, दुगं तिगी मीसग समग्गं ॥५२५॥ पुढवि-दग-अगणि-मारुय-वणस्सति-तसेसु कोइ साहरइ। वोसट्ट-चत्तदेहा, अहाउयं कोइ पालेज्जा ॥५२६॥ धिति-बलजुत्तेहिँ तहिँ, उत्रसम्मा जह सढा **उ धीरेहिं**। णिदरिसणा केइ तर्हि, वोच्छाभि इमे समासेण ॥५२७॥ मुणिसुव्वयंतेवासी, खंदगमणगार कुंभकारकर्ट । देवी पुरंदरजसा, डंडगि पालक मरुगे य ॥५२८॥ पचसया जंतेणं, रुट्टेण पुरोहिएण मलिया उ। राग-होसतुलग्गं, समकरणं चिंतयंतेहिं ॥५२९॥ जंतेहिँ करकएहि व, सत्थेहि व सावएहिँ विविहेहिं। देहे विद्धंसन्ते. ण य ते झाणातो फिटंति ॥५३०॥ पहिणीययाएँ कोई. अग्गि सि पदेन्न अस्रभपरिणामो । पादोवगते संते, जह चाणकस्स वा करिसे ॥५३१॥ पडिणीययाऍ कोई, चम्मं से खीलएहँ विहणिता। महु-घयमिक्त्वयदेहं, पित्रीलियाणं तु दिज्जाहिं ॥५३२ जह सो चिलायपुत्तो, वोसट्ट-णिसट्ट-चत्तदेहाओ। सोणियगंधेण पिबीलियाहिँ जह चालणि व कतो॥५३३॥

५२४ गाथात्रिकं व्यव १० गाव ५७४-७६ ॥ ५२७ सदा सोदाः ॥ ५२८-३० स्कन्दकदृष्टान्त उत्तराध्ययनसूत्रे क्रितीयाध्यययननिर्युकी १११-११३ गाथासु तद्दीकायां च वर्त्तते । पत्र ११४ ॥ ५२८ गाथाद्वाददाकं व्यव १० गाव ५८९-६०० ॥ ५३३ चिल्लातिपुत्रोदाहरणमावदयकचूर्णी-तोऽबसेयम् गाथा ८७२ पत्र ४९७ ॥

मोगल्लसेलसिंहरे, जह सो कालासवेसिओ भगवं। खड्यो विउविज्ञणं, देवेण सियालरूवेणं ॥५३४॥ जह से वंसिपदेसी, वोसट्ट-णिसट्ट-चत्तदेहाओ । वंसीपत्तेहँ विणिग्गएहिँ आगासम्रु दिश्वतो ॥५३५॥ जहऽवंतीसक्रमालो. वोसट्ट-णिसट्ट-चत्तदेहाओ। धीरो सपेल्लियाए, सिवाऍ खड़ओ तिरत्तेण ॥५३६॥ जह ते गोद्रहाणे. वोसद्र-णिसद्र-चत्तदेहागा । इंदर्गेणुबुब्भमाणा, वियर्म्मी संकरे लग्गा ॥५३७॥ **जह सा** वत्तीसघडा, वासट्ट-णिसट्ट-चत्तदेहागा। धीराघाएण उ दीविएण डिलयम्मि ओलड्या ॥५३८॥ बावीस आणुष्टवी. तिरिक्ख मणुया व भंसणत्थाए । विसयाणुकंपरक्खण, करेज्ज देवा व मणुया वा ॥५३९॥ जह णाम असी कोसी. अण्णो कोसी असी विखल अण्णो। इय में अण्णो देहो, अण्णो जीवो ति मण्णंति ॥५४०॥ एगंतणिङजरा से, दुविहा आराहणा ध्रवा तस्स । अंतिकरियं च साह, करेज्ज देवोववर्त्ति वा ॥५४१॥ एवं धिति-बलजुत्तो, अहियासेति पहिलोम उवसमी। एत्तो प्रण अणुलोमे, जह सहती ते तहा बोच्छं !।५४२॥ सकारं सम्माणं, ण्हाणादीयाणि तत्थ कुङजाहि । वोसट्ट-चत्तदेहो, अहाउयं कोइ पालेज्जा ॥५४३॥ पुन्वभवियपेमेण्, देवो देवकुरु-उत्तरकुरासु । कोई हु साहरेज्जा, सन्वसुहा जत्य अणुभावा ॥५४४॥

५३४ कालासवेसिकोदन्तं उत्तराध्ययनसूत्रसितीयाध्ययननिर्युक्ति-११५ गाथातस्तद्वृत्तितश्चावसेयम् पत्र १२०॥ ५३६ अवन्तीसुकुमाल-वृत्तान्त आवश्यकचूर्णीसितीयभाग पत्र १५७ गाथा १३८० चूर्णितोऽ-बधेयः॥ ५४० व्य० १० गा० ५७१॥ ५४१ व्य० १० गा० ५७७॥ ५४३ गाथेकाद्शकं व्य० १० गा० ५७८-५८८॥

पुन्वभविषयेमेणं, देवो साहरति णागभवणिम्म ।
जिह्यं इद्वा कंता, सहस्रहा होंति अणुभावा ॥५४५॥
बत्तीसलक्खणधरो, पायोवगयो य पागडसरीरो ।
पुरिसन्वेसिणि कण्णा, रायविदिण्णा तु गिण्हेन्जा ॥५४६॥
मन्जण-गंधं पुष्फोवकार-परियारणं च कुन्जाहिं ।
सा पवर रायकण्णा, इमेहिँ जुत्ता गुणगणेहिं ॥५४७॥
णवयंगसोयबोहिय, अद्वारसरतिविसेसकुसला तु ।
चोयद्वीमहिलगुणा, णिजणा य विसत्तरिकलाहिं ॥५४८॥
दो सोय-णेत्तमादिग, णवंगसोया हवन्ति एतेसु ।
देसीभास अठारस, रतीविसेसा च जगुवीसं ॥५४९॥
कोसल्लो व वीसइविहं तु एमादिएहिँ तु गुणेहिं ।
जुत्ताए रूव-जोव्वण-विलास-लायण्णकित्याए ॥५५०॥
चजकण्णिम्म रहस्से. राएणं रायिटण्णपसराए ।
तिमि-मगरेहि व उदही, ण खोभितो जो मणो ग्रुणिणो

जाहे पराइया सा, ण समत्या सीलखंडणं कार्ड ।
णेऊण सेलसिहरं, तो सिलमुविरं मुयित तस्स ॥५५२॥
एगंतणिडजरा से, दुविहा आराहणा धुवा तस्स ।
ॐतिकरिया व साहू, करेडज देवोववित वा ॥५५३॥
एमादीह वहुविहं, दुविहं तिविहेह ते महाभागा ।
योरेहि ज्वसग्गेहिं, चालिङजंता वि णिद्दयया ॥५५४॥
एवा-ऽवर-दाहिण-उत्तरेहि वाएह आवयंतेहिं ।
जह ण वि कंपइ मेरू, तह ते झाणाओं न चलिति ॥५५५॥
पदमिम य संघयणे, वृहंता सेलकुडुसामाणा ।
तेसि पि य वोच्छेदो, चडदसपुट्वीण वोच्छेदे ५५६॥

५५५ गाथाद्विकं व्यव १० गाव ५७२-७३॥

एयं पाओवगमं, णिप्पडिकम्मं जिणेहिँ पण्णत्तं । तित्थयर-गणहरेहि य, साहूहि य सेनियमुदारं ॥५५७॥ एवं जहाणुरूवा. संपतिकालम्मि अत्थि जह सोही। विज्जंति य सोहिकरा, तं सब्वेयं समक्खायं ॥५५८॥ एसाऽऽगमववहारो, जहोवएसं जहक्रमं कहिओ । एत्तो सुतववहारं, सुण वच्छ ! जहाणुपुतीए ॥५५९॥ णिज्जृढं चोद्दसपुव्विष्ण जं भद्दबाहुणा सुत्तं । पंचिवदो ववहारो, दुवालसंगस्स णवणीयं ॥५६०॥ जो सुतमहिज्जित बहुं, सुत्तत्थं च णिउणं ण याणाति । कप्पे ववहारम्मि य, ण सो पमाणं सुयधराणं ॥५६१।। जो सुतमहिज्जति वहुं, सुत्तन्थं च णिउणं वियाणाति । कप्पे ववहारिमम य, सा उ पमाणं सुतधराणं ॥५६२॥ कप्पस्स य णिज्जुत्तिं, ववहारस्सेव परमणिउणस्स । जो अत्थओ न जाणति, सो त्रवहारी णऽणुण्णातो ॥५६३॥ कप्पस्स य णिज्जुत्ति, ववहारस्सेव परमणिजणस्स । जो अत्थतो विजाणित, ववहारी सो अणुण्णातो ॥५६४॥ एमो सुतववहारो, जहोवएसं जहक्रमं कहितो । आणाए ववहारं, सुण वच्छ ! जहक्कमं वोच्छं ॥५६५॥ समणस्स उत्तिमहे, सल्लुद्धरणकरणे अभिग्रहस्स । दुरत्था जत्थ भवे, छत्तीसगुणा उ आयरिया ॥५६६॥ अपरक्कमो मि जातो. गंतुं जे कारणं तु उप्पण्णं । अट्ठारसमण्णयरे, वसणगते इच्छिमो आणं ॥५६७॥ अपरकमो तबस्सी, गंतुं ण चतेइ सोहिकरमूळं। सीसं पेसेति तहिं, जहिंच्छ साहिं तुमसमीवे ॥५६८॥

श्रुतब्यबहार:

आज्ञाव्यवहार.

५५८ सन्वेयं सर्वमेतत् ॥ ५५९ इत: ५८९ गाथान्ता गाथा: व्य॰ १० गा० ६०२-३४ ॥ ५६८ चते इ शक्तोति । जहिच्छ सोहि तुमसमीवे यथा इच्छामि शोधि युष्मत्समीपे ॥

श्रपरिणत-अ-तिपरिणत-परि णतानां श्रिच्या-णां परीक्षणम् सो वि अपरक्रमगती, सीसं पेसेति धारणाक्रसलं। णातु तर्हि जो जोग्गो. इमेण विहिणा परिच्छिता ॥५६९॥ अपरक्रमो य सीसं. आणापरिणामगं परिच्छेजा । रुक्खे व बीयकाए. सत्ते वाडमोहणाडडघारि ॥५७०॥ दह महल्ल महीरुह. भणितो रुक्ते विलगितं डेवे । अपरिणतो बेति तयो. णो बट्टिन रुक्खें आरोई ॥५७१॥ किं वा मारेतबी, अहतं ? तो बेह डेव रुक्खाती । अतिपरिणामो भणती, इय होत् अम्ह वेसिच्छा ॥५७२॥ बेति गुरू अह तं तू . अपरिगय अत्थे अ भाससे एवं । किं व मए तं भणितो. आरुह रुक्ते तु सिचते ? ॥५७३॥ तव-णियम-णाणरुक्वं, आरुहिउं भवमहण्णवावतं । संसारागडमूलं, डेवेहि मए तुमं भणितो ॥५७४॥ जो प्रण परिणामो खलु, 'आरुह'भिणता त सो विचितेति। णिच्छंति पावमेते, जीवाणं थावराणं वि ॥५७५॥ किं पुण पंचिदीणं ?. तं भवियव्येत्थ कारणेणं तु । आरुहणवत्रसियं तु, वारंति गुरूऽहवा थंमे ॥५७६॥ एवाऽऽणथ बीयाई, भणिते पडिसेह अपरिणामी तु। अतिपरिणामो पोद्टल, वंध्रणं आगतो तन्थ ॥५७०॥ पचाह गुरू ते तू, जहोदियाऽऽणेह अंविलीबीये। ण विरोहसमत्थाइं, सिचताइं विभणियाइं ॥५७८॥ परिणामगो हु तत्थ वि, भणती आणेमि केरिसाई तु ?। कित्तियमित्ताई वा ?, विरोहमविरोहजोग्गाई ?॥५७९॥

५७० आणापरिणामगं आज्ञापरिणामिनं अवश्यमाज्ञाधारिण-मित्यर्थः । वाऽमोहगाऽऽधारि वाऽमोहनाऽऽधारिणम् ॥ ५७१ देवे प्रतिक्षिप-पत इत्यर्थ ॥ ५७२ अम्ह वेसिच्छा अस्माकमण्येषा इच्छा ॥ ५७६ भवियब्वेत्य भवितब्ययत्र॥ ५७७ प्रवाऽऽणध प्रवमानयत ॥

सो वि गुरू हिं भणिआ, ण ताव कर्ज पुणो भणीहामी। हसिओ व मए वाऽसी, वीमंसत्थं व भणितो सि ॥५८०॥ पदमक्खरमुद्देसं, संधी सूत्तऽत्य तद्भयं पुट्टो । अक्खर-वंजणसद्धं, कहेति सन्वं जहाभणितं ॥६८१॥ ववं परिच्छिऊणं, जोग्गं णाऊण पेसवे तं तु । वचाहि तस्सगासं, सोहिं सोऊण आगच्छ ॥५८२॥ अह सो गतो उ तहियं, तस्म सगासम्मि सो करे सोहिं। द्ग-तिग-चऊविसुद्धं, तिविहे काले विगडभावो ॥५८३॥ ु दुविहं तु दप्प कप्पे, तिविहं णाणाइणं तु अहाए। दव्वे खेत्ते काले, भावे य चजव्विरं एवं ॥५८४॥ तिविहं अतीयकाले. पच्चप्पणो व सेवियं जं त । सेविस्सं वा एस्से, पागडभावो विगडभावो ॥ ५८५॥ कि पुण आलोएती ?, अतियारं सो इमो य अतियारो । वतछकादीओं खलु, णातव्यो आणुप्ववीए ॥५८६॥ वयछक कायछकं, अकष्पो गिहिभायणं। पलियंक णिसेज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं ॥५८७॥ तं पुण होज्ञाऽऽसेविय, दृष्पेणं अहव होज्ज कष्पेणं । दप्पेण दसविहं तु , इगमो बोन्छं समासेणं ॥५८८॥ दप्प अकृष्प णिरालंब चियत्ते अप्पसत्थ बीसत्थे । अपरिच्छ अकडजोगी, अणाणुनावी य णीसंको ॥५८९॥ बायाम-वंगणादी, णिकारण धावणं तु द्रष्यो उ । दारं॥ कायापरिणतगहणं, अकप्पों जं वा अगीतेणं ॥५९०॥ दारं॥ संसारखङ्कपडिनो, णाणादवलंबितुं सम्रुत्तरइ । मोक्खतढं जह पुरिसो, विक्विवयाणेण विसमाओ ॥५९१॥ णाणादीपरिवड्ढी, ण भविस्सति मे असेवयो बितियं। तेसि पसंधणद्व च. सालंबणिसेवणा होति ॥५९२॥

द्र्पस्य दश भेदाः जा प्रण णिकारणयो, अपसत्थालंबणा य सेवा उ । अग्रुएण वि आयरियं. को दोसो वा णिरालंबं ॥५९३॥दारं॥ जं सेवितं तु वितियं, गेलण्णादी असंथरंतेणं। हट्टो वि पुणो तं चिय, चियत्तकिचो णिसेवंतो ॥५९४॥दारं॥ बल-त्रण्ण-रूत्रहेतुं, फासुयभोई वि होति अपसत्यो । किं पुण जो अविसुद्धं, णिसेवए वण्णमादद्वा ? ॥५९५॥दारं॥ सेवंतो तु अकिचं, लोए लोउत्तरम्मि य विरुद्धं। परपक्त सपक्ते वा. वीसत्थासेवणमलज्जे ॥५९६॥ दारं॥ अपरिच्छितमाय-वए, णिसेवमाणो उ होइ अपरिच्छो ।दारं॥ तिग्रणं जोगमकाउं, वितियासेवी अकडजोगी ॥५९७॥दारं॥ बितियपदे जो तु परं, तावेत्ता णाणुतप्पती पच्छा । सो होति अणणुतावी, किं पुण दृष्पेण सेविचा?॥५९८॥दारं॥ करण-भएसु तु संका, करणे कुव्वं ण संकइ कयाइ। इहलोयस्स ण भायइ, परलोए वा भया एसा ॥५९९॥दारी। एसा दिप्यसेवा, दसभेय समासतो समक्खाया। दारं॥ एतो किप्यसेवं, चउवीसविहा इमाऽऽहंस ॥६००॥ दंसण-णाण-चरित्ते, तव-पवयण-समिति-गृत्तिहेउं वा । साहम्मियवच्छरलेण वा वि कुलयो गणस्सेव ॥६०१॥ संघस्साऽऽयरियस्स य, असहुस्स गिलाण-बाल-बुहृस्स । उदयऽग्गि चोर सावय, भय कंताराऽऽवती वसणे ॥६०२॥ दंसणपभावगाणं, सत्थाणऽहाए सेवए जं तु । णाणे सुत्त-ऽत्थाणं, असंथरासेवणे सुद्धो ।।६०३॥ चरणे एसणदोसा, इत्थीदोसा य जत्थ खेत्तस्मि । तत्तो विणिक्समंतो, जं सेवाऽसंथरे सुद्धो ॥६०४॥

कल्पस्य चतु-विंशतिभेदाः णेहादि तर्व कार्ह, कए विगिट्टे वि लागतरणाती। अभिवायणा पवयणे, विण्हुस्स विउन्त्रणा चेत्र ॥६०५॥ इरियं ण सोहइस्सं, चनखुणिमित्तिकिरिया उ रीयाए। . खित्तादि बीय तइया, अहवा वि इमं तु तइयाए ॥६०६॥ अद्धाणकप्पणेसी, अण्णं वर्डासवादिकारणेहिं तु । संकियमाई गिण्हे, जयणाए तत्थ सुद्धो तु ॥६०७॥ आयाणे चलहत्थो, पमज्जमाणेहिँ अण्णहिं जाइ। भहवा वि तस्स अट्टा, ओसह किंची करंज्जाहि ॥६०८॥ पंचिमऍ काइभूमादिवंधमाणे उ आरभे किंचि । विगडादि मणअगुत्ते, वइ-काए खित्त-दित्तादी ॥६०९॥ वच्छन्ले असिइमुंडो, णित्थारिओं जह तु अज्जवइरेहिं। क्रल-गण-संघे अभिचारुगादि रायाइणं क्रजा ॥६१०॥ आयरिय-असह-अतरा, वाले बुढ्ढे य जेण त समाही । तं जायितूण देन्ती, पणगादीहिं तु जयणाए ॥६११॥ णिवदिक्तियादि असह, बालो वहरो व्व दिक्तितो कज्जे। बुट्टो वी कज्जम्मी, जह दिविखतों रिक्खयज्जेहिं ॥६१२॥ उद्य-ऽग्गि-चोर-सावय-भएसु यंभणि पलाण रुक्खे वा । कंतारे पलंबादी, दन्वादी आवई चउहा ॥६१३॥

६०५ लागतरणाती लाजातरणादि, तोर्यत इवाऽस्यामितस्वच्छतया इत्यधिकरणेऽनिट तरणम्, लाजा आष्टा ब्रीहयस्तैनिर्वृत्तं तरणं
लाजातरणम्, उपचारात् पेयाऽभिधीयते । गुरुतत्विविनिश्चयवृत्ती
उ० २ गोथा २०-२१ पत्र ५९ । विष्णुकुमारविकुर्वणाविषयकं कथानकं वसुदेविहिण्डि प्रथमखण्ड १२८ पत्रादवसेयम्॥
६१० आर्यवज्ञतम्बन्धः आवश्यकचूर्णी प्रथमखण्ड पत्र ३९६ मध्यादवसात्य्यः॥ ६११ जायित्रण याचित्वा॥ ६१२ वज्ञदीक्षासम्बन्धः
आवश्यकचूर्णी प्रथमखण्डपत्र ३९१ मध्यादवलोकनीयः। आर्थरिक्षतवृद्धितृदीक्षासम्बन्धः आवश्यकचूर्णी ४०६ पत्राद् झात्य्यः॥

कोई तु वियडवसणी, गोज्जादी वा वि होज्ज णिक्खंतो । जयणाऍ वियडगहणं, गाएज्ञ व गीतवसणी उ ॥६१४॥ एयअण्णयरागाहेस दंसणे णाण चरण सालंबो । पहिसेविङं कयादी. होति पसत्थो पसत्थेस ॥६१५॥ एसा कप्पियसेवा, चडवीसविहा समासतो कहिता। अहुणा उ चारणा तू, इणमो वोच्छं समासेणं ॥६१६॥ ठावेतु दप्प कप्पे, हेट्टा दप्पस्स टस पदे ठावे । कष्पाहो चउवीसइ, तेसिमह अद्वारस पदा उ ॥६१७॥ पढमस्स य कज्जस्सा. पढमेण पदेण सेवितं होज्जा । पढमे छक्के अर्बिभतरं तु पढमं भवे द्वाणं ॥६१८॥ पढमस्स य कज्जस्सा, पढमेण पदेण सेवितं होज्जा। पढमे छक्के अर्धिभतरं तु इय जात्र णिसिभत्तं ॥६१९॥ पढमस्स य कज्जस्सा, पढमेण परेण सेवियं होज्जा। बितिए छक्के अब्भितरं तु पढमं भवे द्वाणं ॥६२०॥ पढमस्स य कजास्सा, पहमेण पदेण सेवितं होज्जा । बितिए छक्के अव्भितरं तु इय जाद तसकायं ॥६२१॥ पढमस्स य कज्जस्सा, पहमेण पएण सेवियं होज्जा । तइए छक्के अब्भितरं तु पढमं भवे हाणं । ६२२॥ पढमस्स य कज्जस्सा, पढमेण पदेण संवियं होज्जा । तितए छक्के अब्भितरं त इय जाव त विभूसा ॥६२३॥ पढममग्रुचंतेणं, वितियादीए तु जाव दसमं तु । पढमच्छकाईसु उ, पुणो पुणो चारणिज्जाई ॥६२४॥ दिष्यसेवाए तू, दष्पेणं चारियाणि अद्वरस । दस अट्टारसगुणिना, आसीयसतं तु गाहाणं ॥६२५॥

६१५ नाथेयं व्यव उ०१० मा० ६३८॥ ६१७ माथायुगरूं व्यव उ० १० मा० ६३९-४०॥ ६२० गाथाचतुष्कं व्यव उ०१० मा० ६४३-४६॥

एवं बीतिज्जस्स वि, कज्जस्सा गाह होंति छ चेव । सन्वाओ गाहाओ, चत्तारि सता तु वत्तीमा ॥६२६॥ वितियस्स य कज्जस्सा, पढमेण पदेण सेवियं होज्जा। पहमे छक्के अञ्चितरं त पहमं भवे ट्राणं ॥६२७॥ एवं बितियस्सा वि हु, कज्जस्सा एय चेव गाहाओ । वितिअगअभिलावेणं, सन्वाओ भाणियन्त्राआ ॥६२८॥ पढमं ठाणं दप्पो, दप्पो चिय तस्स वी भवे पढमं। पढमं छक वयाई, पाणतिवाओ तहि पढमं ॥६२९॥ एवं त ग्रसावायो. अदत्त मेहण परिग्गहे चेव। बितिछके पुढवादी, तनिछके होयऽकप्पादी ॥६३०॥ एवं दप्पपयम्मी, दुष्पेणं चारिया उ अट्टरस । एवमकप्पादीमु वि. एक्केक्के होतिमद्वरस ॥६३१॥ बितियं कर्ज कप्पो, पहमपटं तत्थ दंसणणिमित्तं। पढमं छक वयाई. तत्थ वि पढमं त पाणवहो ॥६३२॥ दंसण अणुम्म्यन्तो. पुन्त्रक्रमेणं त चारणीयाई । अद्वारस ठाणाई, एवं णाणादिएक्केक्के ।।६३३।। चडवीस अहारसगा, एवं एते हवंति कप्पम्मि । दस होति अकष्पम्मी, सन्त्रसमासेण म्रुण संखं ॥६३४॥ दप्पेणाऽसीयसर्त, गाहाणं कप्पे होंति चत्तारि । बत्तीसाऽऽयातेते, छस्सय हांनी तु वारस य ॥६३५॥ सोतूण तस्स पडिसेवर्ण तु आस्रोयणं कमविहिं तु । आगम पुरिसन्नायं, परियाग वर्छ च खेतं च ॥६३६॥ अह सा गतो सदेसं. संतस्साऽऽलोइयल्लयं सन्वं। आयरियाण कहेती, परियाग बलं च खेत्तं च ॥६३७॥

६३२ गाथात्रिकं च्य० उ० ६० गा० ६५६-५८॥ ६३६ गाथेयं व्य० उ० १० गा० ६५९॥

सो ववहारविहिण्यू, अणुसज्जित्ता सुनोवदेसेण । सीसस्स देइ आणं, तस्स इमं देह परिछत्तं ॥६३८॥ पढमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामित्ता । णक्खते पीला भे. सके पणगं तवं कुणह ॥६३९॥ पहमस्स य कडजस्सा, दसविद्दमालोयणं णिसामित्ता । णक्खत्ते पीला भे. सके दसमें तबं क्रणह । ६४०॥ पहमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामेता । णक्खत्ते पीला भे. सके पवसं तवं क्रणह ॥६४१॥ पहमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामित्रा। णक्खते पीला भे, सुके वीसं तर्व कुणह ॥६४२॥ पहमस्स य कज्जस्सा. दसविहमालोयणं णिसामिता। णक्खत्ते पीला भे, पणुवीसनवं कुणह सक्ते ॥६४३॥ एवं ता उवधाए, अणुघाए एत चेव गाहाओ । णवरं तू अभिलावो, किण्हे पणगादि वत्तव्वो ॥६४४॥ पढमस्स य कज्जस्सा, दसविहमालोयणं णिसामेत्रा । णक्खत्ते पीला भे, चाउम्मासं तवं कुणह मुक्के ॥६४५॥ एडमस्स य कज्जस्सा, दसविह्यालीयणं णिसामेता । णक्खते पीला भे, चाउम्मासं क्रणह किण्हे ॥६४६॥ पढमस्स य कज्जस्सा, दसविष्टमालीयण णिसामेता। णक्वते पीला भे, छम्मासनवं कुण इ सुक्के ॥६४७॥ पढमस्स य कज्जस्मा, दसविहमालीयणं णिसामेता। णक्खते पीला भे, छम्मासत्वं कुणह किण्हे ॥६४८॥ छिंदंतु वर्त भाणं, गच्छंतु तवस्म साहुणो मूलं। अव्वावारा गच्छे, अञ्चितिया वा परिहरंत ॥६४९॥

६३८ गाथेयं व्यव उ० १० गा० ६६१॥ ६४४ इतो गाथापर्कं व्यव उ० १० गा० ६६३-६९॥

4

पणगादिभाणछेदं, साह्रमुले भवे पुणकरणं। पुन्वमवहाय सन्वं, पंचाऽऽभवणाउ उवरिं तु ॥६५०॥ लिंगादीजोगत्थे. जहण्ण उक्कोसओ व बोधन्त्रो। उक्कोस जहण्यो वा. विहरउ सो अञ्चितीओ उ ॥६५१॥ बितियस्स य कज्जस्ताः तहियं चज्वीसगं वियाणिता । णवकारेणाउत्ता, हवन्तु एवं भणेज्जासि ॥६५२॥ एवं गंतुण तहिं, जहावएसेण देहि पच्छितं । आणाए ववहारो, भणिएसो धीरपुरिसेहि ॥६५३॥ एसाऽऽणाववहारो. जहोवएसं जहक्रमं भणितो । धारणववहारं पुण. सुण वच्छ ! जहक्कमं वोच्छं ॥६५४॥ उद्धारणा विहारण. संधारण संपहारणा चैव । धारणववहारसस उ, णामा एगडिना एते ॥६५५॥ पाबल्लेण खवेच व. उद्धियपयधारणा उ उद्धारो । विविहेहिँ पगारेहिं, धारेयऽत्थं विधारो तु ॥ ६५६॥ सं एगीभावम्मी. 'धी धरणे' ताणि एव भावेणं। धारेयडत्थपयाणि तु, तम्हा संधारणा होति ॥६५७॥ जम्हा संपहारेजं, ववहारं पजुंजती । तम्हा कारणे तेण, णातन्त्रा संपहारणा । ६५८॥ धारणववहारेसो. पउंजियन्त्रो त केरिसे पुरिसे ?। भण्णाइ गुणसंपण्णे. जारिसए तं सुणेह ति ॥६५९॥ पवयणजसंसि पुरिसे, अणुग्गहविसारए तवस्सिम्मि । सुस्सुय बहुस्सुयम्मि य, विवक्कपरियागबुद्धिम्मि ॥६६०॥ एतेसु धीरपुरिसा, पुरिसन्जाएसु किंचि खलिएसु। रहिए विहारङ्ता, जहारिहं देन्ति पच्छितं ॥६६१॥

धारणा-व्यवहारः रहिए णाम असन्ते, आतिल्लिम्म ववहारतियगिम्म । ताहे विहारइत्ता, वीमंसेत्रण जं भणियं ॥६६२॥ प्ररिसस्स उ अवराईं, विधारइत्ताण जस्स जं भणितं। तं देन्ती पच्छितं. केणं देन्ती उ ? तं स्रणस्र ॥६६३॥ जो धारिओ सुतत्थो, अणुओगविहीय धीरपुरिसेहिं। अञ्चीणपलीणेहिं, जतणाजुत्तेहिं दंतेहिं ॥६६४॥ अल्लीणा णाणादिस्र, पइ पइलीणा उ होन्ति त पलीणा । कोहादी वा पलयं. जेसि गया ते पलीणा त ॥६६५॥ जतणाजुत्तो पयत्तवं. दंतो जो उवरतो त पावेहिं। अहवा दन्तो इंदियदमेण नोइंदिएणं च ॥६६६॥ एरिसया जे पुरिसा, अत्थधरा ते भवंति जोग्गा उ। धारणववहारन्तु, ववहरिउं धारणाकुसला ।।६६७।। अहवा जेणं ईयाऽऽदिहा, सोही परस्स कीरंती। तारिसयं चेव प्रणो, उप्पण्णं कारणं तस्स ॥६६८॥ सो तम्मि चेव दब्वे, खित्ते काले य कारणे पुरिसे। तारिसर्य अक्ररेन्तो, ण हु सो आराहओ होति ॥६६९॥ सी तम्मि चेव दब्वे, खित्ते काले य कारणे पुरिसे। तारिसयं चिय भूतो, कुन्वंतो राहओ होति ॥६७०॥ अहवा वि इमे अण्णे. धारणववहारजोग्गयमुर्वेति । धारणववहारेणं, जे ववहारं ववहरंति ॥६७१॥ वेयावचकरो वा, सीसो वा देसहिंडओ वा वि। दुम्मेहत्ता ण तरइ, अवधारेउं बहू जो तु ॥६७२॥ जस्स च उद्धरिक्षणं, अत्थपयाई तु देंति आयरिया । जेहिं करेहि कर्जं, आहारेन्तो तु सो देसं ॥६७३॥

-

धारणववहारो खळु, जहक्रमं विष्णितो समासेणं । जीतेणं ववहारं. सुण वच्छ ! जहक्कां वोच्छं ॥६७४॥ वत्तणुवत्तपवत्तो, बहुसो आसेवितो महाणेणं । एसो उ जीतकप्पो, पंचमयो होति ववहारो ॥६७५॥ वत्तो णार्म एकसि, अणुवत्तो जो पुणो बितियवारे । ततियव्वारपवत्तो, परिग्गिहीओ महाणेणं ॥६७६॥ बहुसो बहुस्युएहि, जो बत्तो ण य णिवारितो होति । वत्तणुपवत्तमाणं, जीएण कतं हवति एयं ॥६७७॥ जो आगमे य सत्ते, य सुण्णतो आण-धारणाए य। सो ववहार जीएणं, क्रणती वत्ताणुवत्तेणं ॥६७८॥ असतो अस्यत्थकतो, जह अस्यस्स अस्एण ववहारो । असुअत्थविय तह कओ, असुतो असुएण वनहारो ॥६७९॥ तं चेवऽणुकज्जंनो, ववहारविहिं पयुंजति जहुत्तं । जीतेण एस भणितो, ववहारी घीरपुरिसेहिं ॥६८०॥ धीरपुरिसपण्णत्तो, पंचमयो आगमो विद्यसत्थो । वियधम्मऽत्रज्जभीरूपुरिसज्जाताणुचिण्णो य ॥६८१॥ सो जह कालादी गं, अपडिकंतस्य गिन्त्रिगईयं तू। मुहुणंतिकिडिय पाणग, असंवरे एवमादीसु ॥६८२॥ एगिन्दिऽणन्तवज्जे, घट्टण तावेऽणगाढ गाढे य। णिब्बिगतियमादीयं, जा आयामन्तम्रहवणे ॥६८३॥ विगलिंदऽणंतवहूण, परियावऽणगाढ गाढ उद्दवणे। पुरिमड्रादिकमेण उ, णेतव्वं जाव खमगं तु ॥६८४॥ पंचिदि घट्ट तावणऽणगाढ गाढे तहेव उद्दवणे । एगासणमायामं. खमणं तह पंचकञ्चाणं ॥६८५॥

जीतव्य-वहारः सावद्यासावद्ये जीते

एमादीओ एसो, णायव्यो होति जीयववहारो । अणवज्जविसोहिकरो, संविग्गणगारचिण्णो ति ॥६८६॥ जं जीतं सावज्जं, ण तेण जीएण होति ववहारो । जं जीयमसावज्जं, तेण उ जीएण ववहारो 🗠६८७॥ केरिस सावज्जं तु ?. केरिसयं वा भवे असावज्जं ? । केरिसयस्स व दिज्जति, सावज्जं वा वि ? इयरं वा ? ॥६८८॥ खार धिंड हरमाला, पोट्टेण व रिंगणं त सावज्जं। दसविह पायच्छित्तं, होइ असावज्ज जीयं तु ॥६८९॥ ओसण्णे बहुदोसे, णिद्धंधसे पत्रयणे य णिखेक्खे । एयारिसम्मि पुरिसे, दिज्जिति सावज्ज जीयं तु ॥६९०॥ संविग्गे पियधम्मे, य अप्पमत्ते यऽवज्जभीरुम्मि । कम्ही पमायखलिए, देयमसावज्ञ जीयं त ॥६९१॥ जं जीयमसोहिकरं, प तेण जीएण होति ववहारो । जं जीयं सोहिकरं. तेण उ जीएण ववहारो ॥६९२॥ जं जीयमसोहिकर्, पासत्थ-पमत्तसंजयाचिण्णं । जइ वि महाणाचिण्णं, ण तेण जीएण ववहारो ॥६९३॥ जं जीयं सोहिकरं, संविग्गपरायणेण दंतेण । एक्केण वि आइण्णं, तेण उ जीएण ववहारो ॥६९४॥ एवं जहोवइट्टस्स धीर-विदुदेसित-प्पसत्थस्स । णिस्संदो ववहारस्स एस कहितो समासेणं ॥६९५॥ को वित्थरेण वोज्ञण समत्थो णिरवसेसए अन्थे। ववहारो जस्स ठिता, जीहाण ग्रुहे सतसहस्सं ? ।।६९६॥ किं पुण गुणोवदेसो, ववहारस्स तु विदुष्पसत्थस्स । एवं मे परिकहियं, दुवालसंगस्स णवणीयं ॥६९७॥

ववहारे पंचसु वी, विज्ञंते केण त् ववहरेज्जा ? ।
आगमववहारेणं, तस्स अभावा सुतेणं तु ।।६९८॥
सुतववहारअभावे, ववहारं ववहरेज्ज आणाए ।
जेणं सो उ सुतस्सा, अणुसिरसो एगदेसेणं ॥६९९॥
आणाऍ अभावाओ, ववहारं ववहरेज्ज धरणाए ।
जेणेसा वि सुयस्सा, वट्टइ त् एगदेसिम्म ॥७००॥
धारणऽणंतर जीयं, एत्थं पुण जीयकप्पे पगयं तु ।
जेणेसो सावेक्खो, अणुसज्जइ जाव तित्थं ति ॥७०१॥

अणं च---

दव्वं खेत्तं कालं, भावं पुरिस पिडसेवणाओ य ।
धिति वल संघयणं वा, आवेक्खित जीयकप्पो उ ॥७०२॥
एस पसंगाभिहिनो, चोयगवयणाओं अहुण जीवस्स ।
बोच्छामि सोहणं तू, परमं सुममाहिनो एण्हि ॥७०३॥
'जीव ति पाणधारणे,' पाणा पुण आउमादि णिहिद्धा ।
अहवा जीवइ जीविस्सई य जिवं ति होइ जिओ॥७०४॥
होइ विसोहणा सोहण, जह तू वत्थस्म नोयमादोहि ।
तह कम्ममलक्खउरिद्धयस्स जीवस्स पिच्छत्तं ॥७०५॥
सोधनं ॥

एयं पुण पिच्छत्तं, परम पहागं ति होति एगट्टं। कस्सेयं परमं ? ती, जीवस्स उ होइ पिच्छत्तं ॥७०६॥ संवर-विणिज्जराओ, मोक्खस्स पहो तवो पहो तासिं। प्रायिष्यस् नाहात्म्यम् तवसो य पहाणंगं, पिच्छत्तं जं च णाणस्स ॥२॥

संवर घट्टण पिहणं, एगट्टं सो य संवरो दुविहो । देसे सन्वे य तहा, एमेव य णिज्जरा दुविहा १:७०७॥ संविरयासवदारो, णवकम्मोवज्ञणं ण कुव्वइ उ ।
पुव्विज्ञितस्स स्ववणं, विणिज्ञरा सा उ णायव्वा ॥७०८॥
सेलेसि पिडवण्णे, दुचिरमसमयिम वद्दमाणे य ।
तिह सव्वसंवरा णिज्ञरा य अवसेस देसिम ॥७०९॥
संवर-विणिज्ञराओ, उभयमवी मोक्सकारणं होति ।
मोक्सवहो हेतू कारणं ति एते उ एगद्धा ॥७१०॥
एतेसिं दोण्ह वि तू, तवो पहो हेउ कारणं होति ।
एतस्स वि पिच्छत्तं, पहाणमंगं ग्रुणेतव्वं ॥७११॥
जेण तवो बारसहा, पिच्छत्ते णिवतती तु दसमेदे ।
तेण पहाणं अंगं, तवस्स तू होति पिच्छत्तं ॥७१२॥
गाहापच्छद्धणं, तस्स वि जं भिणय जं च णाणस्स ।
णंतर तितगाहाए, सारं तू तं चिमं आह ॥७१३॥

सारो चरणं तस्सा, णिव्वाणं चरणसाहणत्थं च। पच्छित्तं तेण तयं, णेयं मोक्खित्थिणाऽवस्सं॥३॥

सामाइयमादीयं, सुतणाणं विंदुमारपज्ञन्तं।
तस्स वि सारो चरणं, चरणस्स वि होति णेव्वाणं ॥७१४॥
णेव्वाणस्स अणंतर, चरणं चरणा अणंतरं णाणं।
णाणविसुद्धीए पुण, चारित्तविसुद्ध्या होति ॥७१५॥
चारित्तविसुद्धीए, णेव्वाणफलं तु पावती अचिरा।
सा पुण चरित्तसुद्धी, पिच्छित्ताहीण णातव्वा ॥७१६॥
जम्हा एतेऽत्थ गुणा, पिच्छत्ते विण्णया तु सुत्तम्म।
तम्हा खळु णायव्वं, दसहा मोक्लित्थिणा जहिमं॥७१७॥

प्राथितस्य तं दसविहमालोयण-पडिकमणो-भय-विवेग-वोसग्गा। ्^{मेदाः} तव-छेद-मूल-अणवट्टया य पारंचियं चेव ॥४॥ आलोयणअरिहं ती, आ मज्जाआऽऽलोयणा गुरुसमासे। **अ**लोचना जं पाव विगडिएणं, सुज्झति पच्छित्त पढमेयं १.७१८॥ मिच्छाद्कडमेर्राण, चेव जं सुज्झती त पावं त । प्रतिक्रमणम् ण य विगडिज्जिति गुरुणो. पडिक्रमणरिहं हवति एयं ॥७१९॥ तदुभयम् जह तू अणाभोगेणं, खेलादी णिसिरितं तु होज्जाहिं। हिंसाइए य दोसे, ण य आवण्णो तु किंचिदवि ॥७२०॥ जं पाव सेवित्णं, गुरुणो विगडिज्जनी उ सम्मं तु । गुरुसंदिष्ट पडिकम, तदुभयमेर्तं मुणेतन्त्रं ॥७२१॥ जं किंचि दव्व गहितं. अहिकमणं व अहव उणं त । विवेक: विहिणा त विर्गिचन्ते, पच्छित्त विवेगअरिहेटं ५७२२॥ जं कायचेट्टमेत्तेण णिरोहेणं त सुज्झती पावं। व्युःसर्गः जह दुस्सिमिणादीयं, पच्छित्तेयं वियोसमां ॥७२३॥ णिव्वीतियमादीओ, छम्मासंतो उ जत्थ दिज्जइ तु। तपः एय तवारिह भणिनं, इदाणि छेदारिहं वोच्छं ॥७२४॥ जेण पडिसेविएणं, दिसज्जः जस्स पुन्वपरियाओ । छेद : तत्तियमेत्तं छिज्जह. सेसगपरियायरकखद्रा १७२५॥ जिम्म पहिसेवियम्मी, सन्वं छेत्रूण पुन्वपरियायं। मूलम् पुणरवि महन्वयाई, आरोविर्जात मूलरिहे ॥७२६॥ जिम्म पडिसेवियम्मी, अणब्हो कंचि काल कीरइ तु। **अ**नवस्थाप्यम् मूलवएसुं पंचसु, चिण्णतवो पच्छ होत्णं १७२७॥ तद्दोसोवरयस्य उ. महन्त्रयारुत्रण कीर्ती तस्स । अणबहुष्पो एसो. एतो पारंचियं वोच्छं ॥७२८॥ अंचु गती-पूजणयो, पारंचर गच्छती तू पारं तु । तवमादीणं कमसो, सो लिंगादीहिँ चतुथा तु ॥७२९॥ पाराश्चिकम

आलोयणमादीणं, दसण्ह वी एस होति पिंडत्थो । सहाणे सहाणे, विभागतो इणमो वोच्छामि ॥७३०॥

भालोचना-प्रायश्वित्तम करणिजा जे जोगा, तेसुवयुत्तस्स णिरतियारस्स । छउमत्थस्स विसोही, जइणो आलोयणा भणिया॥५

के पुण करणिज्जा ? जे, तित्थंकर-गणहरोत्रइहा उ । मुत्ताणुसारओ तू, संजम-दुक्खक्खया होऊ ॥७३१॥ जेत्तिय जे णिहिट्टा, जुजि जोगे कातमादिआ तिण्णि। जं जीवे जंजयती. पेरयती वा ततो जोगा । ७३२॥ संखेवयो उ एते, ग्रहपुत्तियमादि जाव उस्सम्मो। दियरागोसमायारी, जा जहियं वृत्त स्रत्तिम ॥७३३॥ ते तु जया उवउत्तो, अमवत्त करेड णिरतियारा य । तद आलोयणमेत्तेण चंत्र सुद्धी त छद्मस्स ॥७३४॥ छउमं कम्मं भण्णइ, जाजावरणं च दंसजावरणं। मोहणिय अंतरायं, चडव्विहं होति णायव्वं ॥७३५॥ जे त जया करणिज्जे, उवयुत्तों करेति णिरतियारी य । णण तत्थ का व सदी ?, का व असदी उ ? चोएति ॥ गुरुराह तत्थ चेट्टा, जा किरिया सुहम आसवेसुं वा । अहव पमाया मुहुमा, अनियार ण जाणनी छतुमो ॥७३७॥ ते अइयारा सुहुमा, आलोइयमेत्तया विसुज्झंति । सा आस्रोयण चोयग !. करणिज्ञा तीस जोगेस ॥७३८॥ को कारयो ? जनी तु. जइ साहु पयत्तियो विणिहिद्वो। पंचम गाह समत्ता, गाई छट्ट इमें वोच्छं ॥७३९॥ आहाराईगहणे, तह बहियाणिग्गमेसु णेगेसु । उच्चार-विहारावणि-चेइय-जइवंदणादीसुं ॥६॥

छद्म

आहारों जैसि आदी, सो चउहा होइमो उ आहारो। भत्तं पाणं खाइम, सादिम होनी चउन्धं तु ॥७४०॥ आदिग्गहणेणं पुण, सेज्जा-संथार-वत्थ-पायहा । पाउंछणअहा वा, ओहोबहुबग्गहट्टा वा ॥७४२॥ अहव गिलाणस्सद्धा, आयरिए बाल बुहू खमए वा । दुब्बल सेहे व महोद्रे व आदेसअट्टा वा ॥७४२॥ एतेसि पाउगां, आहारो अहव होज्ज सेज्जाही। ओसह-भेमजाणि य, एमाडी होज्ज अट्टो उ ॥७४३॥ एतैसि अट्टाए. गुरु पुच्छित्ता गुरूणऽणुण्णाओ। मुनाणुसारओं तू, उत्रयुनों विहीय घेनूणं । ७४४॥ आलोएनी गुरुणो, जै जह गहियं तु भनमाडीयं। मुत्ताणुसारतो त्, आलोयणरेत्तयो मुद्धो ॥७४५॥ मीसाऽऽह जई एवं, विहिगहणं होति एवऽमुद्धं तु । तो गहणमेव सब्वे, आहारादीण मा कुणउ ॥७४६॥ चोअग ! जिंद एवं तु. संजमजोगा उ होति संपुण्णा । आहारमाइयाणं, को णाम परिगाहं कुज्जा ? ५०४०॥ अव्यं च इमो दोमो, अम्महणा पावती महेनो उ। आयारियादी चत्ता. णाणादीणं च बोच्छेरा ॥७४८॥ तम्हा अवस्य गहर्ग, आहारादीण होति विहिणा उ । आहाराईगहणे, एगो पाटो समत्तमो । ७४९॥ णिग्गम गुरुमृलाओ, सेज्ञाओ ता हवेज्ञ णिग्गमणं। ते य अणेगा णिग्गम. कुलादिया इणमु वोच्छामि ॥७५०॥ कुल गण संघे चेड्य. तहव्यविणामणे द्विहभेदे। एतेसि णिवारणया, गुरुवृत्र करेज णिगमणं ॥७५१॥ संथारादीण अह्या, अप्विगणत्था उ पाडिहारीणं ।

निग्गमों गुरुमूलाओ, वसहीओ वा करेजाहि ॥७५२॥
गाहापच्छेदेणं, जं भणितृचार अवणिसहो तु ।
अवणी भूमी भण्णति, तेण उ उच्चारभूमी उ ॥७५३॥
सन्झाय विहारो तु, अवणीसिहओ विहारभूमी उ ।
चेइयवंदणहेउं, गच्छे आसण्ण दृरं वा ॥७५४॥
आयरिया तु अपुन्ता. अहवा साह अतीव संविग्गा ।
वंदण-संसयहेउं, गच्छे आसन्न दृरं वा ॥७५५॥
आदीगहणेणं पुण, सहूा सण्णाय अहव ओमण्णा ।
दंसणगाहण निक्लमणं च ओसण्णउच्छहणा ॥७५६॥
एतेहिँ व कडजेहिं, गुरुमृला णिग्गमो उ साहूणं ।
गाहा छट्ट समत्ता, अहुणा पुण सत्तमं वोच्छं ॥७५७॥

जं चऽण्णं करणिज्जं, जतिणो हत्थमयबाहिरायरियं। अवियडियम्मि असुद्धो, आलोएंनो तयं सुद्धो।।७।

जं चडण्णमवृत्तं ती, करणिडजं तं इमं तु खेनादी।
इत्थसवा आरेणं, परयो व इमं पवन्तवामि ॥७५८॥
स्वित्तपिहलेह थंडिल, णिक्खमणं अहव होज्ज सेहम्स।
संलेहणं व कोई, आयरियादी व कुज्जा तु ॥७५९॥
हत्थसयाओं परेणं, जं आयरियं तु होज्ज खेत्तादी।
समितिविसुद्धिणिमित्तं, अवस्म आलोयणं कुज्जा॥७६०॥
जं पुण हत्थसयाओं, अंतो आसेवियं हवेज्जाहिं।
तं विगडिज्जइ किंची, अहव ण विगडिज्जती किंचि ॥७६१॥
जह—
पासवण-खेल-सिंघाणगादिउवयुत्ते णित्थ आलोगा।

आलोएइ पमचोऽणालोइऍ होतऽसुद्धो.त ॥७६२॥

सत्तम गाह समत्ता, एत्तो वच्छामि अट्टमं गाहं । कारण निग्ममें जत्थ उ, स-परगणाओ व आगमणं ॥७६३॥

कारणविणिग्गयस्म य,मगणाओ परगणागतस्स विय। उवमंपया विहारे, आलोयणमणइयारस्स ॥८॥

दुविहो उ णिगामो खलु, कारण निकारणो व गच्छाओ । असिवादी कारणिओ, णिकारण चक्क-थुभादी ॥७६४॥ असिवे ओमोयरिष, रायदुढे भए व गेलण्णे। अहवा वि उत्तम्हे, समाहिकामो तु गच्छेज्जा ॥७६५॥ आयरियपेसणादी, विणिगमो गच्छयो व होज्जाहि । कारण जिग्ममो एसो, जिकारणयो इमं वोच्छं ॥७६६॥ चके थुमे पहिमा, जम्मण णिक्खमण णाण णिन्वाणे। महिम समोसरणे वा. सण्णायग-वइयमादिसु वा ॥७६७॥ असमत्तकप्पियाणं, णिकारण णिगामा भवे एते। एते चिय कारणयो, जयणाजुत्तस्स गीतस्य ॥७६८॥ कारणविणिग्गएगं, णिश्तीयार।ण वी अवस्सं तु। आस्रोयण दानन्त्रा, सिमिनिवियुद्धीणिमित्तं तु ॥७६९॥ सा आलोयण द्विहा, औंँए विभागतो य णायन्त्रा । ओहो संखेवो ऊ. विभागों पुण वित्थरो भणिओ ।:७७०॥ ओहो तत्थ इमो खलु, अब्भंतरअद्धमासआयस्स । पडिकंतस्स य इरियं, साहसमुद्दिसणवेला तु ॥७७१॥ णिरईयारो य जती, भत्तद्वी वि य हवेज्ज जदि सो तु । ओहेण तत्थ आलोइतूण तो मंडलिं पविसे ॥७७२॥ अप्पा मूलगुणेसुं, विराहणा अप्प उत्तरगुणेसुं। अप्पं पासत्थाइस्र, दाणग्महणं तु ओहेसा ॥७७३॥

अण्णाय उ वेलाए. विभागआलोयणा त दायच्या । समितिविस्रद्धिणिमित्तं, एमेव य पक्खपरयो वि ॥७७४॥ एवं ता कारणिए, असिवादीणिगायस्य सगणाओ । अतिदारविरहियस्स वि. आलोयणमेत्तयो सुद्धी ॥७७५॥ जे बहियाऽऽगन साह, ते दुविहा होन्ति तू मुणेतच्वा । सम्पूर्वा अपूर्वा वा. सम्पूर्वा सगच्छतो चेव । ७७६॥ परगणे जे अमणुण्णा, ने दुविहा होंति तू मुणेयन्त्रा । संविग्गमसंविग्गा. पासत्थादी असंविग्गा ॥७७७॥ परगणसंविगाओ, जो साह आगनो उ अण्णगणं। तेण अवस्साऽऽलोयण, विभागनो होनि दायन्वा ५७७८॥ उवसंपद पंचिवहा, सुन सुह दुक्खे य खेत मग्गे य। विणयोवसंपया वि य. पंचिमया होति नायव्या ॥८७२॥ पंचिवहाए नियमा, एगिइहाए व जन्थ उबसंपे । निरतीयारेण वि या. विभागनोऽवस्य दानव्वा (७८०)। विहरेन्ति एगसंभोडया उ फड़ादनी उ गीयन्था। तत्थऽण्णत्थ व खत्ते, समण्ण्या एम गन्छम्म ।,७८१॥ पगाइ पणग पक्लो. चडमामे वि जन्ध वि मिर्लनी। तत्थ विभागालोयण, अवरोप्पर तेहिँ दायव्या । ७८२:। आलोयणारिहं नि इ. पहम दारयेयं समक्रवानं । दारं । पडिकमणारिहमेत्तो, वितियं दारं इमं वीच्छं ॥७८३॥

प्रतिक्रमण-प्रायश्वित्तम्

ग्रप्तयः

गुत्ती-समितिपमत्तो, गुरुणो आसायणा विणयभंगे । इच्छाईणमकरणे, लहुस मुसादिण्णमुच्छासु ॥९॥

पुरक्खणम्मि (?) गुन्ती, नाणि मणादीणि होन्ति तिण्णेव । तेहिँ कहिंचि पमायं, साहु करेज्जा इमं नं च ॥७८४॥

दुर्चितिय दुब्भासिय, दुचेट्टिय एमऽगुत्तिया होति । मणमादीणं कमसो. एस पमाओ उ साहस्स ॥७८५॥ गुत्तो होइ कह ०णू, मणमादीहिं तु साहणा निर्वे। तत्थोदाहरणे तू, जिणदासादी इमे वोच्छं ॥७८६॥ मणगुत्तीए तहियं, जिणदासा सावञा उ सेहिमुतो। सो सन्त्रगाइपडिमं. पडिवण्णो जाणसालाए ॥७८७। भज्जुब्धामिग परलंक घेत्त खीलजुबमागवा तत्थ । तस्सेव पायग्रवरि. मंचगपादं ठवे ऋणं १,७८८॥ अणयारमायरंती. पादो विद्धो य मंचरवीलेणं । तो तं महंति वियणं, अहियासेनी तहि मम्मं ॥७८९॥ मणद्कडमुष्पव्यं, ण तस्म झाणस्मि णिञ्चलमङ्स्स । दहूण नीय विश्वियं, इय मणगुत्ती करेनच्या ॥७९०॥ वइगुत्तीए माहू, सण्णायगपत्त्रि गच्छर दहुं। चौरगाह सेणावह, विभोइनो भणिउ मा साह १७९१॥ चलिया य जण्णजता. मण्णायम मिलिय अंतरा चेव । माइ-पिति-भातिगादी, सो वि णिवत्तो समै नेहिं । ७९२॥ तेजेहि गहित ग्रतिया, विद्वो नो बिन्त मो इसी समणी। अस्हेहि गहिय मुकी, तो बेती अस्मया तम्म 1,७९३॥ तुम्हेहि गहिय मुक्को ?, आमं आणेह बेति तच्छरियं। जा छिंदामि थणं ति इ. किं ? ती सेणावती भणइ ॥७९४॥ दज्जायजम्म एसो, दिहं अम्हं तहा वि ण वि सिद्धं। कह पुत्तो ? त्ती आमं, कहण वि सिट्टं ? ति घन्मकहा । ७९५॥ आउद्दो उवसंतो, मुक्को मज्झे पि नं सि माय त्ति । सब्बं समर्पियं ती, बहुगुत्ती एव कातव्या १७९६॥

मनो गुप्ती जिनदासी-दाहरणम्

बचनगृप्ती कस्यचित् साधोहदा-हरणम कायगुप्ती कस्यचित् **साधोरा**ह-रणम्

काय प्रप्ती द्वितीयमुः

बाहरणम्

काइमगुत्ताहरणं, अद्धाणपवण्णमो जहा साह । आवासियम्मि सत्थे, ण लभति तहि थंहिलं किंचि । ७९७॥ लदं च णेण किह वी, एगो पाओ जहिं पइट्टाइ । तहियं ठिएगपादो. सन्वं राइं तहा थद्धो ॥७९८॥ ण य ठवितो तेणाथंडिलम्मि होनव्यमेव गुत्तेणं। सुमहब्भए वि अहवा, साहू ण भिंदे गई एगो ॥७९९॥ सक पसंसा अस्सहहाण देवागमो विउव्यणया । मंडुक्लि सहम बहू, जनणा सो संक्रमे सणियं॥८००॥ हत्थी विग्रविवशो या, आगच्छित मग्गतो गुलगुलैतो । ण य कुणत गनीभेदं, गएण इत्थेण उच्छहो ॥८०१॥ बेइ पडेंगो मिच्छामिद्ऋडं जिय विराहियं में ति। ण वि अप्पाणे चिंता, देवो तुहो णमंसति य ॥८०२॥ ग्रुतीदारं भणियं, अगुत्तगुत्ती वि ह पसंगेण। समिईदारं वांच्छं, समिति समिति वि माताओ ॥८०३॥ गमणिकस्या ह समिती, सामण्णे परिणयस्स वा गमणं। सम्ममयति ति ममिति. सा पंचह इरियमादीया ॥८०४॥

समितीना स्वरूपम्

गमणाकारवा हु सामता, सामणा पारणवस्स वा गमण सम्ममयित त्ति मिर्मित. सा पंचह इरियमादीया ॥८०४ कह समितीस पमादं, साहु करेजा तु ? भण्णए सुणसु । उदृग्रहों कहरत्तो, वचइ माहु पमाएसो ॥८०५॥ सावज्ञ भास भामित, गारित्थय दहुर व्व भासेज्जा। एमादी तु पमाओ. भासाए होति णातव्वो ॥८०६॥ हिंडेतों गोयरिम्म, संकितमादीसु जो तु नाऽऽयुत्तो। भिक्ताएँ गहणकाले, एसण एमो पमाओ तु ॥८०७॥ आदाण-भंडणिक्त्वेवणिम्म जो होइ एत्थऽणाउत्तो। एसो होति पमायो, एत्थ पमायिम्म छ ब्भंगा ॥८०८॥

गहणं आदाणं ती, होति णिसद्दो नहाऽहियत्थिम । खिव पेरणे व भणितो, अहिउक्खेवो तु णिवखेवो ॥८०९॥ ण वि पेहे ण पमज्जे. ण वि पेहे पमज्जती तु बिनिभंगो। पेहे ण पमञ्ज तित्रो, पेह पमञ्जे चउत्थो तु ॥८१०॥ जो सो चउत्थ भंगो, पेहेति पमज्जनी य तस्स पुणो । भंगा भवंति चडरो, दुपेहद्पमञ्जले पढमो ॥८११॥ बितियो द्पेहसुपमज्जणिम तङ्ओ सुपेहदपमञ्जे। स्रपडिल्लेहियस्रपमिजनयम्मि भंगो चउत्थेसो ॥८१२॥ आदिमभंगा तिण्णि इ, अपेहअपमज्जणे य पढमादी। तिण्णि दुपेहादी वि य, छ व्भंगा होति एते उ ॥८१३॥ उचारे पासवणे, खेले सिंघाणमादियाणे च। पिठवणे एत्थं पि हु, पमाइणो होन्ति छ ब्भंगा । ८१४॥ परिठवणुचागदी, उचग्ती तेण होति उचारो ॥ पस्सवड नि य तेणं, पासवणं भण्णए काई ॥८१५॥ अहबुचरई काइय, पायं सर्वर्ध य पासवणसण्णा । खेळलणाओ खेळो. णासिगळाणाओ सिंचाणो ॥८१६॥ एस पमाओ भणितो, पंचमु समिईमु इरियमादीसु । अहुण पसंगेणं चिय, वोच्छामि इ अप्पमायं तु ॥८१७॥ जुगमेत्तंतरदिही, पदं पदं नसति चक्लुपूर्यं च । अन्विक्तितायुत्तो, अरहण्णगो एत्युदाहरणं ॥८१८॥ अह अरहण्णगमाह. समितीअ समीय गड्ड डेवन्तो। छलिओ पादो छिण्णो, अण्णाए संधिओ याति ॥८१९॥ भासासमितो साह, भिक्लब्हा णगररोहए कोयी। णिग्गंतु बाहिकडए, हिंडंतो केणयी पुट्टो ॥८६०॥ केवइय आस इत्थी ?, धणणिचयो दारु-धण्णमादीणि । णिव्विण्णमणिव्विण्णं, णगरं तो बेइमं समितो ॥८२१॥

ईर्यासमि ११-बहन्नकः

भाष;समिने। कश्चित् साधु बेड ण याणामो त्ती, सज्झाय-ज्झाण-जोगविस्वता।

हिंदंना ण वि पिच्छह, ण वि सुणहा किह हु ? तो बेति ॥८२२॥

वहं सुणेति कण्णेहिं. वहं अच्छीहि पेच्छति । ण य दिट्टं सुर्यं सर्व्यं, भिक्ल् अक्लाउमरहति ॥८२३॥ अहव य भामति कर्जे, णिर्वरजमकारणे ण भासति य । विकद्द-विसोत्तियपरिवज्जितो जनी भासणासमितो ॥८२४॥ बायालमेसणाओ. भोयणदोसे य जो विसोहेति। सो एसणाए समिओ, दिहुंगो इत्थ वसुदेवो ॥८२५॥ वस्रदेव अण्णजम्मे. आहरणं एमणाए समिएणं। मगहा णंदिरगामे. गोयम धेज्जाह वकायरो ॥८२६॥ तस्स य वारुणि भज्जा. गब्भो तीए कयाइ संधुओं। धेजाइ मतो छम्मासि गब्ध धेजाञ्चण उजाए ॥८२७॥ मातुल्लसंबट्टण कम्मकरण वेयारणा अ लोएणं। णित्थ तह एत्थ किंचि इ, तो बेती माउलो तं च ॥८२८॥ मा सुण लोयम्स तुमं, धुयाओं तिष्णि तासि जेह्रयरी। दाहामि करे कम्मै. पक्रयो पत्ते य वीवाहे । ८२९॥ सा णेच्छई विसण्णो, माउलओ भणति अण्ण दाहामि। सा वि तहेव य णेच्छड. तड्यं ती णेच्छड य मा वि ॥८३०॥ णिव्यिण नंदियद्धण, आयरियाणं सगासे णेक्यंतो । जाओ छट्टक्समओ, गिण्हड य अभिग्गहमिमं त । ८३१॥ बाल-गिलाणादीणं, वेयावर्चं मए त कायव्त्रं। तं कुणइ तिव्वसद्धोः, खायजसो सक्कः ग्रणकित्ती ॥८३२॥

अस्सद्दशण देवस्य आगमो कुणइ दो समणरूवे।

बेति य गिलाणों पडिनो, वेयात्रचं तु सद्दहे जो उ । सो सिग्धं उट्टेतू, सुतं च तं नंदिसेणेणं ॥८३४॥

अतिसारगहियमेगो. अडवीय ठियो गओ वितिओ ॥८३३॥

एषणासमिती **ब**मुदेवजीवो नन्दिबधनः

छद्रोववासपारणगमाणितो कवल घेत्तकामेण । तं स्रुत मोत्तं रभसुद्विओ य भण केण कज्जं ? ति ॥८३५॥ पाणगदन्वं च तहिं, जं णत्थी तेण बेनि कज्जं ति । णिग्गय आहिंडते. अणेमणं क्रणति ण य पेल्ले ॥८३६॥ इत एकवार वितियं, च हिंडिओ लद्ध तइयवाराए। अणुकंपा तरंतो. गयो य नो तस्सगासं त ॥८३७॥ खर-फरुस-णिहरेहिं, अक्कोसइ मो गिळाणतो रहो। दे मंदभगा ! घुकिय, तुमिम नं णाममेत्तेणं ॥८३८॥ साहवयारि ति तुमं. णामड् अहं तु उद्दिसिउ आयो। एयाऍ अवत्थाए. तं अच्छाँस भत्तलोहिल्लो ॥८३९॥ अमयमिव मण्णमाणो. तं फरुसगिरं तु सो ससंभंतो । चल्रणगतो खामेती. धुवति य तं समलल्जि तु ॥८४०॥ उद्देह बयामा त्ती, तह काहामो जहा उ अचिरेणं। होहिह णिरुया तुब्भे, बेती ण तरामि गंतं जे ॥८४१॥ आरुभहा पट्टीए. आरूढो ताहे तो पयारं तु । परमासुइ दुर्गार्थ, ग्रंचित सो तस्स पट्टीए ॥८४२॥ फरुसं बेति दुमुण्डिय !. वेगविधाओ कतो ति दुक्खविओ। इय बहुविहमक्कोसति, परे परे सो वि भगवं तु ॥८४३॥ ण गणेती फरुसगिरं, न वि अ हु दुव्विसहमसुइगैंधं च। चंदणिमव मण्णंनो, मिच्छामी दुनकडं भणित ॥८४४॥ चिन्तेइ किं करेमी, कह णु समाही हवेज साहुस्स ?। इय बहुदिहप्पगारं, ण वि तिण्णो जाहे खोमेंडं ॥८४५॥ ताहे अभित्थृणित्ता, गतो तयो आगयो य इयरो वि । आछोएइ गुरूहि य, धण्णो ति तयो समणुसट्टो ।८४६॥ जह तेणं ण वि पेल्लिय, एसण इय एव साहुणा णि हैं। जइअन्वं एमेसा, एसणसमिती समक्खाया ॥८४७॥

बादान-निश्चेपणा-समितिः तत्रोदाह-रणं च

पुर्वित चक्ख परिक्खिय. पमिक्काउं जो ठवेति गिण्हड वा । आयाणभंडनिक्खेवणाएँ सो होड इह समितो ॥८४८॥ एत्थ वि ते चिय भंगा. कायच्या जाव होति अंतिमतो । सुप्पहिलेहिय-सुपमिष्जियं च भंगो चउत्थो उ ॥८४९॥ एसो गज्ञो एत्थं, तम्प्रवयुत्तो स होति खलु समितो । आहरण गुरुण भणितो. साह वचामो गामं ति ॥८५०॥ ओगाहिए पडिग्गहे, नाहें ठिया कारणेण केणावि। तत्थेगो पेहेउं णिक्खित्ती विद्या पुण आह ॥८५१॥ पेहियमेनं कि पेहणा, प्रणो ? होज्ज एत्थ कि सप्पो ?। स्विणिति उदेवयाण, विडिव्यतो तत्थ तो सप्पो ॥८५२॥ ज्ञाहिए य दिहो, आउहो देनि मिच्छकारं च। समिता अपिना एतं. उक्कोस-जहण्यया होन्ति ॥८५३॥ उचारं पास्तवणं, खेलाडि व अण्णपाणमहियं वा । स्रिविवेद्द पदेसे, णिमिरंतो होइ इह ममिओ ॥८५४॥ इत्थ वि दे चिय भंगा. तहेव समियो त अंतिमे होति । आहरणं धम्मस्तीः परिठावणसमितिमञ्जूतो ॥८५५॥ काइयऽसमाहि परिठावणे य गहितो अभिगाहो तेणं। सक पसंसा अस्सहहाण देवागम विजन्वे ॥८५६॥ सुबह पिपीलियाओ. बाहाहा यावि काइयऽसमाही ।

अण्णो य काइयाए, उत्रद्विनो वेयऽहं असहू ॥८५७॥ अहयं त काइयाडो, वेड परिद्रव समाहि मा अच्छ ।

अह साह किलामिजाइ, ताहे पीतो य धरिता देवेण ।

एत पसंगाभिहितं. आसातण इणम् बोच्छामि ॥८६०॥

वंदित्त गतो देवो, समितीम एव होति जतितव्वं ।

णिग्गय णिसिरे जहि जहि, पित्रीलिया ऊ सरे तत्थ । ८° ८॥

मा मा य णिसिद्धो त्ती. मा पिय देवो य आउदो ॥८५९॥

पारिष्ठ.पनिका समितिः तत्रार्थे धर्भ**द**चे-राहरणम

गुरुवो आयरिया तु. णाणादीओ उ होइ आयारी। आयरण परूवणया, बहुइ सो तेसिमाऽऽमाणा ॥८६१॥ तीय विभासा इणमो, आसातण द्वद वयणमेव ति । आयाय सातवाणा. आयस्स उ साहणा जा उ ॥८६२॥ सा होती आसातण, आओ लाभो ति आगमो यावि। णाणादीणं साया. सायण धंनो विजासो ति ॥८६३॥ आतस्स साहणं ती. यकारलोवस्मि होई आसयणा । आयरियाणं डणमो. आसयणा होडमेहि तु ।८६४॥ दहरो अक्कुलीणो ति य. दुम्मेहो दमग मंदबुद्धि ति । अवि अप्पलामलद्धी, सोमो परिभवः आयरियं ॥८६५॥ अहवा वि वदे एवं, उबएस परस्म देन्ति एवं त । दसविष्ठ वैयावच्चे, कायव्य सयं ण क्रव्वंति । ८६६।। अहव तिहा आसायण, मण-वड-काएण मणपदोसादी । वायाए आसायण, अंतरभासादि क्रुव्यिज्ञा ॥८६७॥ काएणं संघटण, जमालत प्रशो व बचरी पंथे। अहवा आसायणमो, तुसिणीमादी मुजेयन्वा ॥८६८॥ आलते वाहिते. वावारिय प्रन्छिए णिसहे या । गुरुवयणा पंचेते. सीसस्स तु छा इनेक्केक्के ॥८६९॥ तुसिणीए हुंकारे, कि ? ति व किं चडगरं करेसि ? ति। कि णिब्बुई ण देसी ?. केनइयं वा विरद्धि ? ति ॥८७०॥ एवं छा आलते, तसिणीमादी उ होति णातव्वा । वाहितादि य छ चिय, एक्केक्कपयम्मि बोद्धव्या ॥८७१॥ गुरुआसायण भणिया, एत्तो वोच्छामि विणयभंगं तु । णेगविष्ट अब्धराणे. अभिगाहे आसणे चेव । ८७२॥ आसणदाणं सकारणा य सम्माणणा य कितिकम्मे । अंजिक्किप्रगृह अणुगती य दिनपञ्जुवासणना ॥८७३॥

आशातना

गुरु-शिष्ययो-वंचनानि

विनयस्य भन्नः जंते पडिसंसाइण, आसणमादीहि होति सकारो। सम्माणो उनहीए. जोगां जं जस्स तं क्रजा ॥८७४॥ कप्पो संयारो वा, जिंह चेट्टो अच्छई तु आयरिओ। णायागमस्स कार्ल, पडिलेहिय घेतु तं अच्छे ।८७५॥ कितिकम्पं वंदणयं, इत्थुस्सेहो णिडालदेसम्म । अंजलिएगाइमेतं, सेसा उ पया हु कंडोत्ता ॥८७६॥ एमादी विणयं तु, जो ण वि क्रुणती उ स्रिमादीणं। विजयब्भंगो एसो. सत्तविहो अहव जाजादी ॥८७७॥ णाणे दंसण चरणे, मण वडु कायोवयार सत्तविहो । एतेस अवृद्धते. समासओ एस भंगो तु ॥८७८॥ विणयन्भंगो एसो, ओहेण समासओ समक्खायो इच्छादी दसहा तू, अकरणेणमो तू वोच्छामि । ८७९॥ इच्छा-मिच्छा-तहकारो, आवसिया य णिमीहिया। आपुच्छणा य पहिषुच्छा, छंद्रणा य निमंत्रणा ॥८८०॥ जवसंपया य काले, इच्छादिअकरणया उ दसहेसा। लहसमुसावादि त्ती, एतो उ समासनो बोच्छं ॥८८१॥ पयळाउळ मरुष, पचन्खाणे य गमणपरियाए । सम्रद्देससंखडीओ, खुडुयपरिहारियसुहीओ ॥८८२॥ अवस गमणं दिसास्त्र, एगक्ले चेव एगद्व्वं य । एमादी त पदेहि, ग्रसं त लहसं वए साह ॥८८३॥ पयळासि किं दिवा ? ण पयलामि लहु बितिय णिण्हवे गुरुतो। अण्णदाविय णिण्हावे, बहुमा गुरुमा बहुतराणं ॥८८४॥ णिण्हवणे णिण्हवणे, पिन्छत्तं वर्ड्ड ऊ जा सपयं । **ळहु-गुरुमासो सु**हुमो, छहुमादौ बायरो होति ॥८८५॥ कि वचसि वासंते ?, ण गच्छे णणु वासविंदवो एते । दारं । भ्रंजित जीह मरुया, कहं ? ति जागु सव्वगेहेसु ।८८६॥

सप्तथा विनय**भ**ङ्गः भ्रंजस पश्चववाणं, महं ति तक्खण पश्चेजियो पुट्टो। किं व ण में पंचिवहा, पश्चम्लाता अविस्तीओ ? ॥८८७॥ वचसि ? णाइं वच्चे, तक्खण वच्चंत पुच्छिओ भणति । सिद्धंतं ण वि जाणह्, णणु गम्मति गम्ममाणं तु ? ॥८८८॥ दस एयस्स य मज्झ य, पुच्छितौ परियाग बेइ तु छलेण। मज्झ णव ति य वंदिएँ, भणाइ वे पंचगा दस उ ॥८८९ दारं॥ बट्टड त सम्रहेसो, कि अच्छह कत्थ एस गयणंमि । दारं । बट्टन्ति संखडीओ, घरेसु णणु याउग्वंडणया ॥८९०॥ दारं॥ खडूगजणणी उ मुया, परुण्णो जियइ ति एव भणियंमि । माइत्ता सन्त्रजिया, भविंसु ते णे समायाते ॥८९१॥ दारं। ओसण्णे दट्टणं, दिट्टा परिहारिय त्ति छहुकहणे। कत्थुजाणे गुरुओ. अदिष्ठ दिष्ठे य लहुगुरुगा ॥८९२॥ छल्लहगा उ नियत्ते, आलोएंतम्मि छग्तुरू होन्ति। परिहरमाणा विकर्ट, अप्परिहारी भवे छेदो ॥८९३॥ खाणुगमाई मुस्नं, सन्वे तुब्भेगो हं ति अणवट्टो। सन्वे उ बाहिरा पवयणस्स तुन्भे ति पारंची॥८९४॥ भण वय दिद्रणियहे. आस्रोयामंति घोडगम्रही उ। किमणुस्सा सन्वेगो. सन्वे बाहि पत्रयणस्स ॥८९५॥ मासो छहुओ गुरुओ, चउरो नासा हवंति छहुगुरुगा। छम्भासा लहुगुरुगा, छेदो मुलं तह दुगं च ॥८९६॥ दारं । गच्छिस ण ताव गच्छं, तक्खण वच्चंत पुच्छितो भणइ । वेला ताव ण जायइ, परलोगं वा वि मोक्खं वा ॥८९७॥ कर्तारं दिसि गमिस्सांस ?, पुट्वं अवरं गतो भणति पुट्टो । कि वा ण होति प्रव्वा, इमा दिसा अवस्यामस्स ? ॥८९८॥ अहमेगकुलं गच्छं, वचह बहुकुलपवेसणे पुट्टो । भणित कई दोण्णि कुले, एगसरीरेण पविसिस्सं ॥८९९॥

वसह एगं दव्वं, घेच्छं णेगगह पुच्छिओ भगति ।
गहणं तु लक्खणं पोगगलाण णऽण्णेसि तेणेगं ॥९००॥ दारं॥
पयलादी तु पदा खल्ज, एमेते विण्णिया समासेणं ।
लहुगुरुया जाव मुसं, लहुसगमेयं मुणेतव्वं ॥९०१। दारं॥
तण हगल छार मल्लग, जगहमणणुण्णवेचु जो गिण्हे ।
लहुसग अदत्तमेयं अहवा रुक्खादिम्र लहुसं ॥९०२॥
मुहणंत पायकेसरि, पत्तद्ववणं च गोच्छओ चेव ।
लहुसपरिग्गहमेसो, मुच्छ करंतस्स साहुस्स ॥९०३॥
अहवा वि इमो अण्णो, सेज्ञातर-गोण—साण—कागादी ।
धारण कप्पद्वस्स व, रक्ख-ममत्तादि कुज्ञा तु ॥९०४॥
वितियवय-तिवय-पंचमलहुस्सगा एते होंतिणातव्वा ।
गाहेसा तु समत्ता, णवमा दसमं अतो वोच्छं ॥९०५॥
अविहीय कासजंभियखुयवायाऽसंकिलिङकंमेसु ।
कंदप्पहासविकहाकसायविसयाणुसंगेसु॥१०॥
अविही हत्थमदातुं, अहवा मुहणंतयं अदातुणं ।

अविधिः

जंभाइए वि एवं, खुइए वी एव वत्तव्वं ॥९०६॥

स्वु त्ति कतं तं खुइतं, छीयं वा होति इह उ खुइतं तु ।
वायणिसग्गो दुविहो, उहे य अहे य णायव्वो ॥९०७॥

उहं उड्डोयादी, वायणिसग्गो अहे ग्रुणेतव्वो ।

ग्रुहणंतय हत्यं वा, उड्डोए तत्य जयणाए ॥९०८॥

ग्रुयकहृणा उ हेट्टे वायणिसग्गस्स होइ जयणेसा ।

इयवियरित्तो जो खु , अविहीए सो णिसग्गो तु ॥९०९॥
छेयण-मेयणमादी, असंकिल्डिट य होइ कंमं तु ।

कंदप्यो वायाए, काएण व होति णातच्यो ॥९१०॥

कास-जम्मा-दीना व्या-

ख्यानम

हासं तु हासमेव तु, विकहा पुण इत्थिमाइया चउहा । कोहादी उ कसाया, विसया सद्दाइया णेया ॥९११॥ जा तेसि तु पसज्जण. सहसाऽणाभोगयो व साहूणं। सा होति विसयसंगो, अविहीगाहा समत्ता उ ॥९१२॥ खिलतस्स य सवत्थ वि, हिंसमणावज्जओ जयन्तस्स। सहसाऽणाभोगेण व, मिच्छकारो पडिकमणं ॥११॥

खलणा दुविहा भणिया. सहसाऽणाभोगतो व होजाहि।
सा कत्थ पुणो दुविहा, सञ्बत्थ इमं पवक्खामि॥९१३॥
सञ्वत्थ ग्रिसु, समिती णाणादिएसु व हवेजा।
सञ्वत्थ वि एतेसुं, खलणेसा होति णायञ्चा॥९१४॥
सहसाऽणाभोगण व, हिंसमणावज्जओ जयन्तस्स।
सहसाऽणाभोगाणं, को णु विसेसो ? ति चोएइ॥९१५॥
आउत्तो वि य होतुं, कारेन्नो वि ण याणतीयारं।
जह हं करेमि एयं, कए य नाऽयं अणाभोगो॥९१६॥
आउत्त पुञ्चभासा, पहिसेवण सहस एव जा तु भवे।
ण य तरित णियत्तेंचं, सहसकारो भवे एसो ॥९१७॥
सहसाऽणाभोगा ज. सञ्बत्थ उ विणया समासेणं।
एस विसोहिट्टाणं, मिच्छकारो पहिक्रमणं॥९१८॥

॥ गाहा सम्मत्ता ॥

आभोगेण वि तणुएस णेहभयसोगबाउसादीस । कंदप्यसोगविगहादिएस णेयं पडिक्रमणं ॥१२॥

आभोगे जाणंतो, तणुओ थोवे तु होति णातच्यो । तं पुण करेळा कप्पट्ट-सेळानर-सिण्णमाइसु वा ॥९१९॥ एमादीणेहाऊ, जं कय कप्पट्टगादि आभोगा । तस्स तु पायच्छित्तं, मिच्छकारो पदिकमणं ॥९२०॥ **स्**खलना

सहस्राऽना-भोगो

आभे गः

स्नेहः

भयम्

तणुओ णेहो भणितो, भइ सत्तविहं इमं तु वोच्छामि । इह परलोगाऽऽयाणे. अक्रम्ह आजीवियऽसिलोए ॥९२१॥ मरणभयं सत्तमयं, एतेसि समासतो विभागों इमो। मणुओ मणुयस्सेव तु, देवो देवस्स तिरि तिरिए ॥९२२॥ बीभेड सजाईए. इहलोगभए य होति बोद्धव्वं। परलोगभयं विसरिस, जह मणुओ बीभे तिरिदेवे ॥९२३॥ धणमायाणं भण्णति. तब्भय चोरादियाण जंबीभे । तस्सेव य रक्खट्टा, वइ-पागाराइ जं कुणति ॥९२४॥ अणिमित्त अकम्हभयं, ण वि किंची पासती तह वि बीमे । अडवीए रातीय व. आजीवभयं जहा अहणो ॥९२५॥ दकालो आएसो, कह जीवीई ति एस चितेति । मरणभयं सिद्धं चिय, मरणमिति महन्भयं जह त ॥९२६॥ असिलोगो ति इ अयसो. जइ एव करिस्स होहिई अयसो। असिलोगभयं एयं. वेयणभय होड मीयादी ॥९२७॥ सत्तविहं भयमेयं, एएसु यु विद्यं तु जं तणुए। तस्स विसोहिद्राणं, मिच्छकारो पडिक्रमणं ॥९२८॥ सोगं आभोएण वि, चिन्तादि करंते विष्ययोगम्मि । तस्स त पायच्छित्तं, मिच्छकारो पहिक्रमणं ॥९२९॥ आभोगमणाभोगे, संबुडमम्संबुडे य अहसुहुमे । पंचिवहो बाउसिओ, सहमाभोगेण पगर्येत्थं ॥९३०॥ कंदप्पादी तु पदा, पुन्युत्तकमा तु दसमगाहाए । एव जहाइहेमू, तणुए सोही पडिकमणं ॥९३१॥

बितिय दार समत्तं, पिङक्तमणारिहमहुण तितयं तु । तदुभयदारं वोच्छं, तत्थ इमा होइ गाहा तु ॥९३२॥

शोक:

बाकुशिद:

संममभयातुरावतिसहसाणाभोगऽणप्पवसञ्जो वा । सञ्बवयातीयारे, तदुभयमासंकिते चेव ॥१३॥ संभमों रुणेगविही खल्ज, इत्थी अगणी व उदगमादीओ। भय दसुग मिलक्ख् वा, मालक्तेणाइओ बहुहा ॥९३३॥ पढमवितीयातिपहिं, परीसहेहाऽऽतुरो तु बहुहा तु । आवड चउहा इणमो, समासतोऽहं पवनलामि ॥९३४॥ दच्वावति खेत्तावइ, कालावइ भावआवई चेव। दन्वावती त दन्वं, जं दुलभं होति साहस्स ॥९३५॥ वित्थिण्णमहम्बादी, खेत्तावति एस होइ णातव्वा। कालावनी त ओमे, भावे त गुरू-गिलाणादी ॥९३६॥ महमाऽणाभोगा तू, पुन्युत्ता अहुण वोच्छऽणप्वयसो । णप्यवसो उ परवसो, सो होति इमेहिँ कज्जेहिं ॥९३७॥ वाइय पित्तिय सिंभिय, अहवा वी होज्ज सण्मिवाएणं। एतेहि अणप्पवसो, अहवा होज्जा इमेहि तु ॥९३८॥ जनखाइद्रसरीरो, मोहणिए अहव होज्ज कम्मुदए। एतेहि अणप्पवसो, होज्जाही कारणेहिं तु ॥९३९॥ एव जहृद्दिहेर्सुं, संभममादीसु कारणेसुं हु। सन्वन्वयायियारं, णासं तु करेज्जऽणप्यवसी ॥९४०॥ पुरुचि जल अगणि मारुय, वणस्सती कुज्ज रुक्खरुहणं वा। विय तिय चउरो पंचिदियं व साह विराहेजा ॥९४१॥ एव ग्रुसावादादी. अणपज्जो आयरेज्ज साह तु। पिंडविसोहादीणि व, सेवेज्ज व उत्तरगुणाणि ॥९४२॥ एमादी आवण्णे. अतियारविसोहि तदुभयं होति । तदुभय गुरुमालोइय, मिच्छामी दुक्दं बेति ॥९४३॥ आसंकिए तदुभयं, मूलगुणे उत्तरे य णातव्वं । परिखिदित ण वि सक्के, कतमक्रयं एस आसंका ॥९४४॥

तदुभयाई-प्रायश्वित्तम्

स**म्त्रम**भयौ

आपत्

अनात्मवशः

दुर्निनितय दुब्भासिय, दुच्चे द्विय एवमादियं बहुहा। उवउत्तो वि ण याणति, जं देवसियातियाराति ॥१४॥

'दु त्ति दुगुंछा' धात्, संजमजनरोहि कुच्छियं होति ।
तं मणसा जइ चिंतिय, दुचिंतिय एव णातव्वं ॥९४५॥
एवं तू दुव्भासिय, दुचेद्विय एवमेव णातव्वं ॥९४६॥
दुप्पिडलेहियमादी, आदीसद्देण बोद्धव्वं ॥९४६॥
एमादियं तु बहुसो, अणेगसो होइ हू ग्रुणेतव्वं ।
उवज्तो वि ण जाणित, ण वि संभरती उ जं भणियं ॥९४७॥
आदिग्गहणेणं पुण, राइय पिक्खिय तहेव चडमासे ।
संवच्छिरिए य तहा, अतियारा होति बोद्धव्वा ॥९४८॥

सब्वेसु य बितियपए, दंसणणाणचरणावराहेसु । आउत्तस्स तदुभयं, सहसकाराइणा चेव ॥१५॥

पहमं उस्सग्गपदं, अवनादपयं तु वितिययं होति ।
सन्तग्गहणेणं पुण, सन्त अनराहा मुणेयन्ता ॥९४९॥
दंसण णाण चरित्तं, जे अनराहा तु होन्ति गीतत्थे ।
कारणजयणाजुत्ते, एव जयंतस्स जे उ भने ॥९५०॥
जह तिनखउदगवेगे, विसमिम्म व विज्ञलम्म वर्चतो ।
कुणमाणो वि पयत्तं, अन्तसो जह पानए पडणं ॥९५१॥
तह समणमुविहियाणं, सन्त्रपयत्तेण नी जयंताणं ।
कम्मोदयपचइया, निराहणा कस्सइ हवेज्जा ॥९५२॥
प(पु?)रिसज्जतणाजुत्ते, तस्स विसोहीय तदुभयं होति ।
सहसा वि होइ तदुभय, आनण्णे दंसणाईम्र ॥९५३॥
तदुभयदार समत्तं, निवेगदारं अयो पनक्लामि ।
कस्स पुण विवेगो ज, तत्थ इमा होति गाहा तु ॥९५४॥

पिंडावहिसेज्जादी, गहियं कडजोगिणोवयुत्तेणं । पच्छा णायमसुद्धं, सुद्धो विहिणा विगिंचंता।।१६॥

'पिडि संघाए' धातू, पिंडो संघाओं भण्णए तम्हा । सो इह सिचताई, णत्रणवभेदो पुणेक्केको ॥९५५॥ पुढवी आउकाए, तेऊ वाऊ वणस्सती चैव । बेइंदिय तेइंदिय, चउरो पंचिंदिया चेव ॥९५६॥ एक्केको पुण तिविहो, पुढवीमादी सचित्तमादीओ। सत्तावीसपभेदो. पिंडेस समासतो होति ॥९५७॥ ओहिय ओवग्गहिओ, उनही दुनिहो समासतो होति । होंड विभागेणं पुण, जह भणिओ ओहजुत्तीए ॥९५८॥ भण्णति सिज्जा वसही, आदीसहेण होति डगलादी । ओसहभेमज्जाणि य. आदीसहेण लहियाणि ॥९५९॥ कडजोगी गीयत्थो, जं बुत्तं होति जो उ गहियत्थो। पिंडेसण-पाणेसण-वन्थेसण-सेज्जमादीणं ॥९६०॥ अहवा छेदसुयादीसुत्तत्थाहि जित्तो तु गीयत्थो । गहितुं तेणुवयुत्तेण जात पच्छा असुद्धं तु ॥ ९६१॥ केण असद्धं ? भण्णति. उग्गमजप्पायणेसणादीहिं। अहवा वि संकियादी, सो सुज्झति विहिविगिचंतो ॥९६२॥

पिण्ड:

उपधिः

सच्या

कृतयोगी

कालद्धाणाऽतिच्छियमणुग्गयत्थमियगहियमसढो उ। कारणगहिउव्वरिए, भत्तादिविगिंचणे सुद्धो ॥१७॥

पढमाएँ पोरिसीए, पिंडगाहेत्ताण असणपाणादी । जो तइयमइकामे, कालातीतं इमं होति ॥९६३॥ अद्धोयणा परेणं, आणियःणीयं व असणपाणादी । एयऽद्धाणातीतं, सो सढ असढो वइकामो ॥९६४॥

कालातीतम्

अध्वातीतम्

शठाशठी

विगहा-किड्डादीहिं, होति सढो एस होति असढो तु।
गेलण्णवावडत्ता, होज्ज व सागारिया तत्थ ।।९६५॥
थंडिल्लअभावा वा, तेणाहिभयं व तत्थ होज्जाहि।
एमादीकज्जेहिं, असढो तृ होइ णायन्त्रो ॥९६६॥
एमादी असढो जं, विही विगिंचंतो होति सुद्धो उ।
अणुदित अत्थिमओ वा, गहियं असढेणिमं वोच्छं॥९६७॥

अजुद्गता-स्तमने गिरि-राहु-मेह-महिया-पंसु-रयावरिओं होज्ज वा सविया।
उग्गयबुद्धी साहू, एमेव य होयऽणत्थिमए ॥९६८॥
पच्छा णायमणुग्गय, अहव अत्थिमओं एस इण्हिं तु।
एचण्णायमि सहो, सुद्धों तु विही विगिचंतो ॥९६९॥
आयसिय य गिळाणे पाडणा समग्र बाळ वहे य।

कारणगृही**त**म्

आयरिए य गिलाणे, पाहुणए खमग बाल बुहु य । एनेसऽहा गहितं, तं होती कारणगहियं ॥९७०॥ विहिपरिभुत्तुव्वरियं. विही विगिचन्त होति सुद्धं तु । एयं विवेगदारं, एत्तो वोच्छामि वोसग्गं ॥९७१॥

व्युःसर्ग-प्रायश्वित्तम् गमणागमणविहारे, सुयंमि सावज्जसुविणयादिसु य । णावाणदिसंतारे, पायच्छित्तं वियोसग्गो ॥१८॥

गमनागमन-विहारः वसही गुरुमूला वा, गमणं अण्णत्य पुणरवागमणं। एयं गमणागमणं, विहार सज्झायभूमी तु ॥९७२॥ तो सज्झायणिमित्तं, गमणं अन्नत्य होज्ञ साहुस्स। गमणागमणिवहारं, णातव्यं होति एतं तु ॥९७३॥ समितिविसुद्धिणिमित्तं, एत्थं पिष्ठित्त होति उस्सम्गो। होति सुतं सुतणाणं, उद्देसगमादि णातव्यं ॥९७४॥ पद्वशृद्धिसणे या. सम्रदिसणे तह य होतऽणुण्णाए।

श्रुतम्

पट्टनणुह्सिणे या, सम्रुदिसणे तह य होतऽणुण्णाए । कालपडिक्कमणम्मि य, मुयस्स एत्थं तु उस्सम्मो ॥९७५॥

सा**व**यस्वप्रम्

पाणितवायादीयो, सावज्जो सुमिणतो तु णातन्त्रो । आदिग्गइणेणं पुण, अणवज्जपसत्थएमुं पि ॥९७६॥

चस्सद्दगहणाओ, दुस्सउणा दुण्णिमत्त गहिया उ। पहमवयादीएस य. सब्बेस विसोहि उस्सग्गो ॥९७७॥ णावा चउव्विहा तू, सम्रह्मणाविक तिण्णि उ णदीए। उज्जाणी ओयाणी, तिरिच्छगामी भवे तइया ॥९७८॥ जंघद्धा संघद्दो. णाभी लेबोबरि त लेखबरि । बाहोडपाइओ खळु, णदिसंतारेवमादीओ ॥९७९॥ णावादीहि पएहिं, जाव तु उडुपादिसंतरंतो तु । सन्वत्थ तु पच्छित्तं, जतणाजुत्तस्स उस्सग्गो ॥९८०॥ भत्ते पाणे सयणामणे य, अरहंतसमणसेज्जासु । उचारे पासवणे, पणवीसं होन्ति उस्सासा ॥१९॥ भत्तं पाणं [सय]णं. सयणं सेज्जा उ होति णातव्या । 'आस उवेसण' धातु , उवेसणं आसणं होति ॥९८१॥ 'अरह पूयाए' धातु, पूयामरिहंति तेण अरिहंता। अरिहंति वंदण णमंसणं च तम्हा त अरिहंता ॥९८२॥ कोहाई उ अरी ऊ, अहव रयं कम्म होइ अट्टविहं। अरिणो व रयं इंता, तम्हा उ इवंति अरिहंता ॥९८३॥ सयणं सेज्ज पहिस्सय-भत्तादी जाव होति सेज्जा ऊ। इत्थसयाउ परेणं, गमणागमणम्मि सन्त्रतथ ॥९८४॥ समितिविसद्धिणिमित्तं, जयणाजुत्तस्स होति उस्सग्गो । पणुवीसं उस्सासा, उचारमयो तु वोच्छामि ॥९८५॥ उच्चरती उचारं, पस्सवती तेण होति पस्सवणं । सण्णा काइय कमसो, अहव इमो होइ सहत्यो ॥९८६॥ उचरति काइयं तू, जम्हा तेणं तु होति उचारो । पायं सवती जम्हा, तम्हा तू होति पासवणं ॥९८७॥ परिठविष्सेप्सुं, इत्थसया आरतो व परतो वा। सोही काउस्सम्मो. पणुवीसं होति ऊसासा ॥९८८॥

नावा नदीस-न्तारः

अईन्

हत्थसतबाहिरातो, गमणागमणाइएसु पणुवीसं । पाणिवहादिसुमिणए, सतमृद्वसतं चउत्थिमम ॥२०॥ गाहद्ध पढम कंठं, पाणवहे सुमिणदंसणे रातो । कतकारियादिएसं, विसोहि ऊमाम सतमेगं ॥९८९॥ एव ग्रुसावादादिसु, उस्सम्मो जाव होति णिसिभत्तं। सतमुस्सामाण भवे, अदूसतं पुण चडत्थम्मि ॥९९०॥ देसिय राइय पिन्स्तिय, चाउम्मासे तहेव वरिसे य। सतमद्धं तिण्णि सता, पंच सतऽद्वत्तर सहस्सं ॥२१॥ देसियमादिपदाणं. कमस्रो ऊसासमाणमेयं तु । ते पुण कह विण्णेया, उस्सासा ? तमिह वोच्छामि ॥९९.१॥ लोयस्मुज्जोयगरा, चउरो एगं सनं मुणेयव्त्रं । पंचासा दोहि भवे, तिण्णि सया होति बारसहिं ॥९२२॥ पंच सया वीसाए, अट्टमहस्सं च होति चत्ताए। देसियमाजस्सम्मे, होई एयं तु परिमाणं ॥९९३॥ अहवा-पणुवीस अद्धतेरस, सिलोग पण्णत्तरिं च बोधव्या । सतमेगं पणवीसं, दो वावण्णा य वरिसेणं ॥९९४॥ उद्देस समुद्देसे, सत्तावीसं तहेवऽणुण्णाए । अहेव य ऊसासा, पहुवण-पिङक्मणमादो ॥२२॥ उद्देसय अज्झयणे, सुतखंधे चेव होति अंगे य। उद्दिसणादिपयाणं, सत्तावीसं तु उस्सासा ॥९९५॥ पट्टबणपिकमणे, अट्टस्सासा उ होति उस्सग्गो। आदिग्गहणेणं पूण, पहुत्रयंते वि अणुओगं ॥९९६॥ कालपहिक्सणे वि य. अवसरुणे चैव होति सन्वत्थ ।

उस्सासा अद्व भवे, काउस्सम्मो ग्रुणेतन्वो ॥९९७॥

उच्^{छ्}।**स**स्य मानम् उद्देसय अज्झयणे, सुतरवंधंगेसु कमसो पमादिस्स। कालाइकमणादिमु, णाणायाराइयारेसु ॥२३॥ णाणायारो दुविहो, ओहेण विभागयो य णातव्वो । उद्देसय अञ्झयणे, स्रुयखंधंगे विभागो तु ॥९९८॥ उद्देसादिचउण्ड वि. अतियारो अदृहा मुणेतव्वो । पत्तेयं पत्तेयं, कालादि इहं पवयणम्मि ।१९९॥ काले विषए बहुमाणे उवहाणे तहा अणिण्हवणे। वंजण अत्थ तदुभए, अट्टविही णाणमायारी ॥१०००॥ जो तु करेति अकाले, सज्झायं कुणइ वा असज्झाए। सज्झाए वा ण कुणति, कालतियारो भवे एस ॥१००१॥ जचादिमदुम्मत्तो, थद्धो विणयं ण कुव्वति गुरूणं । हीलयइ व जो तु गुरुं, विणयइयारो भवे एस ॥१००२॥ स्तणाणिम्म गुरुम्मि व. भत्ती वहमाण जो त ण करेति। भत्ती होयुवयारो, बहुमाणो गोरवसिणेहो ॥१००३॥ बहुमाणे अइयारो, एमेसो विण्णिओ समासेणं। उन्हाणं होति तवो. आयंबिलमादिओ सो य ॥१००४॥ जो नं ण कुणति साहू, अहवा वि ण सद्द्वेयमुत्रहाणं। सो उवहाणतियारो. णेण्हवणेत्तो पवनखामि ॥१००५॥ णिण्हवणं अवलवणं, अग्रुगसगासे अहं णऽहिज्ञामि । अण्णं जुमप्पहाणं, आयरियं सो उ उद्दिसति ॥१००६॥ णिण्हवणे अतियारो, एमेसो विण्णतो समासेणं ! वंजणमादिपदाणं, अतियारमतो पवक्खामि ॥१००७॥ भणितं वंजणमक्खर, तिणप्फिण्णं सुतं सुणेतच्वं । पागतिणबद्धमेयं. सक्क्यमादी करेजाहि ॥१००८॥ धम्मो मंगलमुकटं, द्या संवर णिजारा। तस्सेव य अत्थस्सा. अण्णाणि य वंजणाणि करे ।।१००९।।

अष्ट ज्ञानातिचारा:

अहवा मत्ता बिंदू, अण्णभिहाणेण बाधितं अत्थं। वंजिङ्जित जेण अत्थो, वंजणिमिति भण्णते सुत्तं ॥१०१०॥ वंजणभेदेण इहं, अत्यविणासी हवेडज तु कयाई । अत्यविणासा चरणं. चरणविणासे अमोक्खो त ॥१०११॥ मोक्खाभावातो प्रण, पयत्तदिक्खा णिरत्थिया होति । जम्हा एते दोसा, तम्हा सुत्तं ण भिदिज्जा ।।१०१२॥ वंजणभेटो भणिओ. अत्थे भेटं अतो पवक्खामि । अत्थं तु वियप्पंती, तेहिं चिय वंजणेहऽण्णं ॥१०१३॥ आयारे सत्तिमणं. आवंती पंचमम्मि अज्झयणे। आवंती केआवंती. लोगंसी विपरिग्रसंति ति ॥१०१४॥ अट्टाएँ अण्ट्राए, एतेसं विष्पराम्रसंती त । एयं सुत्तं आरिस, अत्थ विकप्पेतिमं अण्णं ॥१०१५॥ आवंती होति देसो, तत्थ तु अरहट्टकूवजा केया। सा पडिया हेट्टे तू , तं लोगो विष्परामुसइ ॥१०१६॥ अत्थविसंवाएवं, तदुभयदारं इमं पवक्खामि । जत्य द्व स्रत्तत्था खळु, दो वि विणस्पंति नं च इमं ॥१०१७॥ धम्मो मंगलग्रकत्थो, अहिंसा पव्यतमत्थए । देवा वि तस्स णस्संति, जस्य धम्मे सया मती ॥१०१८॥ अहाकरेष्ठ रंधंति, कट्टेसु रहकारी उ। रण्णो भत्तम्म णो जत्थ, गद्दभो जत्थ दीसति ॥१०१९॥ एसो तदुभयभेदो, दोण्णि वि णासंति एत्थ सत्तत्था। एवं तु ण कातव्वं, दोसा ते चेव पुव्युत्ता ॥१०२०॥ णाणायारो एसो, अट्टविगप्पो जिणेहिं पण्णत्तो । उद्देसनमादीणं, पच्छित्तदितं इमं कमसो ॥१०२१॥ णिव्विगतिय पुरिम्ह्रेगभत्त आयंबिलं चऽणागाढे। पुरिमादी खमणंतं, आगाढे एवमत्थे वि ॥२४॥

उद्देसे णिन्विगति, पुरिमहुं सोहि होति अडझयणे।
पुतत्वंधे एगभत्तं, अंगम्मि य होति आयामं।।१०२२॥
एवं ताऽणागाहे, आगाहजोगम्मि होति पुरिमादी।
अंतम्मि होति खमणं, एमेव य होति अत्थे वि ॥१०२३॥

सामण्णं पुण सुत्ते, मतमायामं चउत्थमत्थम्मि । अप्पत्तापत्तावत्तवायणुद्देसणादीसु ॥२५॥

ओहो सामण्णं तू. सन्वम्मी चैव होति सुत्तम्मि । अविसेसिय सुत्तत्थे, आयाम चउत्थ कमसो तु ॥१०२४॥ अप्पत्तो दुविहो तू, सुतेण अत्थेण चेव बोद्धन्वो । पुन्विल्ल सुत्त अत्थे, बितिय अपत्तो सुणेतन्वो ॥१०२५॥ अप्पत्त त्ति गतम् ॥

तिन्तिणिआदि अपत्तो, अन्त्रत्तों वए सुए न णातन्त्रो । वायंतस्स तु एते, चउगुरुया उद्दिसादिसु य।।१०२६॥ पत्तमवाएंतस्स वि, उद्दिसणादीसु चेत्र य पदेसु । चउगुरुया बोद्धन्त्रा, अववाए कारणा सुद्धो ॥१०२७॥

कालाऽविसज्जणादिसु,मंडलिबसुहापमज्जणादिसु य। णिबीतियं अकरणे, अक्षणिसेज्जा अभत्तहो ॥२६॥

कालाविसज्जणाती, ण पहिकंतं तु जिमह कालस्स ।
तिविहा य होति मण्डली. वसुहा भूमी मुणेतव्वा ॥१०२८॥
भोयण सुत्ते अत्थे, तिविहेसा मंडली मुणेयव्वा ।
कालऽविसज्जणे मंडलिभूमीअपमज्जणे विगती ॥१०२९॥
सुत्ते वा अत्थे वा, ण करि णिसेज्जं च अक्ख ण रएति ।
चस्सद्देणं वंदण, उस्सग्ग ण कुव्वति चउत्थं ॥१०३०॥

आगाढाऽणागाढिम सब्धंगे य देसभंगे य । जोगे छट्ट चउत्थं, चउत्थनायंबिलं कमसा ॥२७॥ मोगो तु होति दुविहो आगाहो चेव तह अणागाहो। दुरिहे वि हो त भैगों मध्ये देसे य णातन्त्रो ॥१०३१। मन अभेगे छहं होति च उत्थ तु देसे आगाहे णागाहे तु चडार्थ, वच्चे देसे य आवामं ॥१०३२॥ कह भंगो सञ्चम्मी कह वा देसम्मि एव चोएति । भण्णति एडनिगडाहि गाहाहि उमा विवासि १०३३॥ दिगात अणहा भुजाः । न वृणह आयीवले ५। सहहति । एसी उ सव्धांगा देसे भंगी इसी होति । १०३४॥ का उस्सरममकाउं, भुंजइ भोत्तृण वा कुणति पच्छा । संदिसह त्ति व भणती एवं देसे भवे भंगो ॥१०३५ णाणाचारो भणिओ, अट्टविहो एस तू समासेण । अहुणा अट्टविहो चिय. आयारो दंसणे होति ॥१०३६॥ णिम्संकित णिकंखित, णिव्वितिगिच्छा अमुद्दादिही य। उववृह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ट ॥१०३७॥ दंसणयारी अट्टहा एमेसा होइ तू समासेणं। प्तेसि विवक्खो ऊ, अइयारो होति सो य इमो ॥१०३८॥ संसयकरणं संका. कंखा अण्णोज्णदंसणगाहो । वितिगिच्छा अप्पणो ऊ, सोम्मति होज्जा ण वा वि त्ति॥१०३९॥ अहवा वि दुगुंछा ऊ, विड त्ति साह हवंति णातन्त्रा । ते उ दुगुंछति णिचं, मंडलि मोए य जल्लादी ॥१०४०॥ णेगविहा इड्डीओ, पूर्व परितित्थयाण दहूण। सोत्णं वा जस्स उ, मइमोहो होति मृहेसा ॥१०४१॥ जबबूह होति दुविहा, पसत्थ अपसत्थिया य णातव्या । साइणं तु पसत्था, चरगादीणऽप्पसत्था तु ॥१०४२॥

अष्टघः दर्शनाच र:

दंसणणाणचरित्ते, तवसंजमविणववेयवचादो । अब्भुज्जयस्य उच्छाइबद्धणं होति त पसत्था ॥१०४३॥ अपसत्था उवबूहा, अण्णाणे अविर्ताय मिन्छते । चरगादी बहुते, अबबूहति दुविह ए र गता ॥१०४४॥ थिरकरणा वि य दुविहा, पसत्थ इयरा य होति णात्वा । साहूण पसत्था तू. णाणादीएहि सीयंति ॥१०४५॥ बहुदोसे माणुस्से, मा सीद थिरीकरेति एवं तु। एस पसत्था भगिया, अपसत्थेत्तो पत्रक्लामि ॥१०४६॥ मिच्छादिद्वीप तू, चरगादी थिरिकरेंत अपसत्था। पासत्थादी अहवा, थिरीकरेन्तम्मि अपसत्था ॥१०४७॥ बच्छाङ्घा वि य दुविहा, पसत्थ इयरा य होति णातन्त्रा। आयरियादि पसत्था, पासत्थादीण इयरा तु ॥१०४८॥ आयरिय गिलाणे या, पाहुणए असहु-बाल-बुहृादी । आहारोविहमादीण, समाहिकरणं पसत्थं त ॥१०४९॥ पामत्थोसण्णाणं, क्रसोल-संसत्त-णीयवामी गं। अहव गिहत्थादीणं, एमादी अप्पसत्था तु ॥१०५०॥ दुविहा पहावणा वि य, पसत्थ इयरा य होति णायवा । तित्थगरादि पसत्था, मिच्छत्तऽण्णाणे अपसत्था ॥१०५१॥ तित्थयर प्रवयणे वा, णाणादीणं च तिण्णि वी स्रोप । मग्गं णेव्वाणस्स उ, पभावयंते पसत्येसा ॥१०५२॥ मिच्छत्तऽण्णाणादो, पभावयंतेस होति अपसत्था । एसो दंसणयारो, पच्छितं तेसि वोच्छामि ॥१०५३॥ संकादिएस देसे, खमणं मिच्छोवबृहणादिसु य।

पुरिमादी खप्रणंतं, भिक्खुपभितीण य चतुण्हं॥२८॥

संकादी अट्ट पदा, देसे सब्वे य होति णायच्या । संकादीण चउण्हं, देसे खमणं तु णायव्वं ॥१०५४॥ उववृहादिचउण्ह वि, अपसत्ये देसे होयभत्तद्वं। सर्विम्म होति मुळं. एवं संकाइएसुं पि ॥१०५५॥ एवं ता ओहेणं, अविसेसो होति एस पच्छिते। पुरिसविभागेणऽहुणा, देसे सोही इमा होति ॥१०५६॥ संकादो अद्वयु बी, देसे भिक्खुस्स होति पुरिगडं। वसभे एकासणयं. आयामं होति उवज्ञाए ॥१०५७॥ आयरिय अभत्तद्वो, एस विभागेण होइ सोही तु । अहुणा जनवूहादीण, अकरणें सोही इमा जयिणो ॥१०५८॥ एवं चिय पत्तेयं, उववृहादीण अकरणे जतीणं । आयामंतं णिव्वीतिआदि पासत्थस्रद्वेसु ॥२९॥ एवं चिय पुरिम ं, अणंतरुहिद्वपुरिसभैएणं। पिष्ट पिष्ठ जित ण करेती, उबबुह पसत्थ साहुणं ॥१०५९॥ एव थिरीकरणं तू, वच्छल्ल पभावणा पसत्थेस् । पवयण-जडमादीणं, अकरिते तत्थिमा सोही ॥१०६०॥ भिन्सुस्स तु पुरिमडूं, वसभा भत्तेक होति सोही तु । अभिसेगे आयामं, आयरिए होयऽभत्तर्हं ॥१०६१॥ गाहापच्छद्धस्साऽणन्तरगाहाऍ होति संबंधो । एयस्स वियत्तपए, संबंधो तं चिमं वोच्छं ॥१०६२॥ परिवारादिणिमित्तं, ममत्तपरिपालणादि वच्छल्ले । साहम्मिउ त्ति संजमहेउं वा सव्वहिं सुद्धो ॥३०॥ पासत्थोसण्णाणं, कसील-संसत्त णीयवासीणं। जो कुणित ममत्तादी, परिवारणिमित्तहेतुं च ॥१०६३॥

तस्स इमं पिच्छत्तं, निब्बीयादी तु अंते आयामं। भिक्खमादीयाणं, चडण्ह वी होति जहक्रमसो ॥१०६४॥ आदिग्गहणेणं पुण, सट्टा सण्णायमा व सेज्जनरा । दाइंगाऽऽहारादी. तेण ममत्तादि कुज्जा त ॥१०६५॥ अह पुण साइम्मि त्ती, संजमहेउं च उज्जिमिस्सति वा। कुलगणसंघगिलाणे, तिष्पस्सित एवबुद्धी त ॥१०६६॥ एव ममत्त करेंते. परिवालण अहव तस्स वच्छल्लं। दढआलंबणचित्तो, सुज्झति सन्बत्थ साह तु ।। १०६७॥ एमो अट्टवियप्पो, अतियारो दंसणे समक्खातो । चारित्ते अतियारं, इणमो उ समासतो वोच्छं ॥१०६८॥ एगिंदियाण घट्टणमगाढगाढपरितावणोद्दवणे । णिव्त्रीयं पुरिमर्डं, आसणमायामगं कमसो ॥३१॥ एगिदिय पुढवादी, जा पत्तेया वणस्सती होति। एतेसि पंचण्ह वि, पिह पिह संघट्टणे विगती ॥१०६९॥ परियावियऽणागाढे, पुरिमट्टं गार्ढे होति भत्तेक्कं। उद्दवणे आयामं, एत्तो अणंताईणं वोच्छं ॥१०७०॥३१॥ पुरिमादी खमणंतं, अणंतविगलिंदियाण पत्तेयं। पंचिंदियम्मि एकासणादि कल्ळाणगमहेगं ॥३२॥ साहारणवणकाए, बिय तिय चउरिंदिए य विगलम्मि । एतेसि चउण्हं पी, पिह पिह संघट्टणे पुरिमं ॥१०७१॥ परिआवित अणागाहे. भत्तेक्कं गार्हे होति आयामं । उद्दवणेऽभत्तद्रं, पंचिदिविसोहिमं वोच्छं ॥२०७२॥ पंचेंदियसंघट्टे. एकासणयं त होति णातव्वं । अणगाहे आयामं. परिताविए गाहे भत्तद्वं ॥१०७३॥

उद्दवणे कल्लाणं. एगं चिय होति तत्थ णायव्वं । पढमवए सोहेसा, पमायसिहयस्स णायव्वा ॥१०७४॥३२॥ मोसादिसु मेहुणविज्जिएसु दव्वादिवत्थुभिण्णेसु । हीणे मज्झुकोसे, आसणआयामस्मणाइं ॥३३॥

मोसाऽदत्तादाणं, परिग्नहो चेव होति णातव्यो । एते मोसादिवया. मेहुणवज्जा ग्रुणेतव्वा ॥१०७५॥ तत्थ ग्रुसं चउभेदं, दब्वे खेत्ते य काल भावे य। तत्थ तिहा दव्यप्रसं, जहण्ण मज्झे तहुक्कोर्भ ॥१०७६॥ एवं खेत्तमुसं पी, कालमुसा तह य होति भावमुसं। हीणं मज्ब्रकोसं, सभेदभिण्णं मुणेतन्त्रं ॥१०७७॥ एवमदत्तपरिग्गह, दब्बादी चडह होन्ति णायव्या। हीणा मज्झकोसा, तिविहं पत्तेय पत्तेयं ११०७८॥ मोसम्मि चउन्मेदे, दन्वादो हीण मज्झ उक्कोसे। दच्वादीणं कमसो, इवं तु सोहि पत्रक्लामि ॥१०७९॥ द्व्यप्रसे तु जहण्णे, भत्तेक्कं मज्झें होति आयामं । उक्कोसेस्र चउत्थं, एवं खेत्तादिएसुं पि ॥१०८०॥ एवमदत्तपरिग्गह, दच्वादीसं त एस चेव गमो। हीणे मज्बुकोसे, आसण-आयाम खमणाई ।१०८१॥ एव ग्रसावायादिस्, सोही भणिया समासतो एसा । एत्तो तु राइभत्ते, सोहि वोच्छं समासेणं ॥१०८२॥३३॥

लेवाडयपरिवासे, अभत्तहो सुकसण्णिहीए य। इतराय छहभत्तं, अहमगं सेस णिसिभत्ते ॥३४॥ लेवाडय कंटोत्तं, संदिवहेडादि अगयमादो वा। परिवासेन्ते एसि, सोही साहुस्स भन्नड ॥५०८३॥

इतरा य गिल्लपिणिहि. गुलघनतेल्लादिया मुणेतन्त्रा । परिवासेते नेसि सोही छद्रं तु माहस्म १०८४ णिसिभने सेम निविद्दं, दियगहि । राओश्चन पढमं त । राओगह दिवसूत्तं गहर्सनणसभययो रातो १०८५॥ निविदेवं णिसिभन्तं, साही एत्थं त अट्टमं होति । तिविद्दम्मि वि पत्तेयं ए समतेन णिसिभत्तं १०८६ ३४॥ उद्दसियचरिमतिए, कम्मे पासंडसघरमीसे य। बादरपाहुडियाए, सपचवायाहडे लोभे ॥३५॥ अ छ उ ना गाहन्थो, एतेमि उगमादि अहुए । लक्खण आवत्ती दाणमेव वोच्छं मविन्थरतो ॥१०८७॥ सोलम उगमदोसा. सोलस उपायणाएँ दोसा उ। दस एमणाएँ दोसा. संजोयणमादि पंचेव ॥१०८८॥ सो जगमो चतुद्धा, णामादी तत्थ दिव्वमो होति। जोतिसतणोसहीणं, मेहरिणकरेवमादीणं ॥१०८९॥ अहवा वि लडुगादी, भावे तिविहुग्गमो मुगोतव्वो । दंसण णाण चॅरिने, चरिनुग्गमेण एत्थं अहीगारो ॥१०९०॥ कि कारणं चरित्ते. अहिगारी एत्थ होति भणितो तु ?। चोदग ! सुण चारित्ते. जे त गुणा ते त होन्ति इमे ॥१०९१॥ दंसणणाणप्यभवं, चरणं सुद्धे तु तम्मि तस्सुद्धी । चरणेण कम्मसद्धी. उग्गमसुद्धी चरणसुद्धी ॥१०९२॥ पिंडोविहसेज्जास, जेण असुद्धासु चरण ण विसुज्झे । पिंडोवहिसेजासु, सुद्धासु चरणसुद्धी उ ॥१०९३॥ तो चरणसृद्धिहेतं. पिडस्म उ उग्गमेण अहिगारो । तस्स पुण जगगमस्सा, सोलम दारा इमे होन्ति ॥१०९४॥ आहाकम्मुद्देसिय, पूतीकम्मे य मीसजाये य। वनणा पाहुडियाएं, पायोयर कीत पामिचे ॥१०९५॥

षोडश उद्गमदोषाः **आ**धा ऋर्म

परियद्भिष अभिहरे, उविभण्णे मालोहरे इय । अच्छेज्जे अणिसद्दे, अज्बोयरए य सोलसमे ॥१०९६॥ एते सोलस दारा, उद्दिद्धमियाणि विवरणं वोच्छं। एतेसि पढम आहा. तस्स इमे होति णव दारा ॥१०९७॥ आहाकम्मियणामा, एगट्टा कस्स वा वि किं वा वि। परपक्ले य सपक्ले, चडरो गहणे त आणादी ॥१०९८॥ तत्य इमे णामा खलु, आहाकम्मस्स होन्ति चत्तारि । आह-अहेकम्मे या, अहयम्मे अत्तकम्मे य ॥१०९९॥ ओरालसरीराणं. उह्नवणऽइवायणं त जस्सद्वा । मणमाहित्ता कुव्वति, आहाकम्मं तयं बेन्ति ॥११००॥ ओरालग्गहणेणं, तिरिक्खमणुयाऽहवा सुहुमवज्जा। उद्दवणं उत्तासण. अतिवातिवविज्ञया पीला ॥११०१॥ काय-वइ-मणा तिव्णि उ, अहवा देहायु-इंदिय-प्पाणा । सामित्त अवायाणे. होइऽतिवाओ उ करणम्मि ॥११०२॥ हिययम्मि समाहेजं, एगमणेगे व गाहगे जो तु। वहणं करेति दाता. कायाण तमाहकम्मं त ॥११०३॥ जस्सद्वा तं तु कतं, तं जो भ्रंजित सतं तु कायवहं। अणुमण्णइ आहेइ य, स कम्मवन्धं तमायाए ॥११०४॥ अवि य हु विवाहमङ्गे, भणितं भ्रुंजंतों आहकम्मं हु। पसिढिलबन्धादीया, पगडीओ करेति धणियादी॥११०५॥ आहेति गतम् ॥

संयमश्रेणि:

संजमठाणाणं कंडगाण लेस्साठितीविसेसाणं। भावं अहे करेती, तम्हा तु भवे अहेकम्मं ॥११०६॥ सं एगीभावम्मि, जम उवरम एगीभावजवरमणं। सम्म जमो वा संजमो, मण-वइ-कायाण जमणं तु॥११०७॥ चिद्धइ संजमों जिह्म , तं होइ हु संजमस्स ठाण हु।
तं पुण चिरत्तपज्जव, होन्ति अणंतेकठाणं हु॥११०८॥
संजमठाणमसंखा, उ कंडगं कंडगा असंखा उ।
हवित उ लेसाठाणं, ते तु असंखेज्ज जवमज्झं ॥११००॥
तत्तो पिरहायंता, लेसा कंडा य संजमहाणा।
एिरसयाणमसंखा, लोगा उ हवित ठाणाणं॥१११०॥
एसा संजमसेढी, तत्थ विद्युद्धीसु ठाणमादीसु।
बद्दंतुकोसाऊसुरिठितिजोगेसु होतूणं ॥११११॥
तं शुंजमहेकम्मं, हेट्टिल्लेऽहिट्टवेति अप्पाणं।
धुत्ते उद्दियमहे तू, करपकरिचणोविचणमादी (१)॥१११२॥
बंधित अहेभवाउं, पकरेति अहोसुहाइँ कम्माइं।
घणकरणं तिच्वेण उ, भावेण चयो उवचयो तु ॥१११३॥
वेसिं गुरूण उद्दण अप्पयं दुग्गतीऍ पवडंतं।
ण चएति विहारेउं, अहकम्मं भण्णए तम्हा॥१११४॥
अहेकम्मे ति गतम्॥

अहाऍ अणहाए, छक्कायपमद्दणं तु जो कुणित ।
अणियाए य णियाए, बेन्ति तु दन्वाऽऽयहम्मं ती ॥१११५॥
जाणंतमजाणंतो, वहेति णिहिसिय ओहओ वा वि ।
जाणगमजाणए या, भणिता णिय अणिय होतेसा ॥१११६॥
दन्वायहम्ममेयं, भावाया तिण्णि णाणमाईणि ।
परपाणपाडणस्यो, भावायं अष्पणो हणित ॥१११७॥
णिच्छयणयस्स चरणा-ऽऽयिव्याये णाण-दंसणवहो वि ।
ववहारस्स उ चरणे, हयम्मि भयणा उ सेसाणं ॥१११८॥
आयाहम्मग एयं, एतो वोच्छामि अत्तकम्मं तु ।
जो परकम्मं अत्तीकरेति तं अत्तकम्मं तु ॥१११९॥

आहाकम्मपरिणयो, फासुयमवि संकिलिट्टपरिणामो। आतियमाणो बज्झति, तं जाणस् अत्तकम्मं त ॥११२०॥ परकम्ममत्तकम्भीकरेति तं जो उ गिण्डिचं अंजे। चौषति परिकरिया, कहण्णु अण्णत्थ संकमति ? ॥११२१॥ भण्णड परप्पल्तं, जह विसमइयं त मारगं होति। तह परकडे वि बंधो. परिणामवसेण जीयस्स ॥११२२॥ बेती परकडभोयिण, तो तुब्भ वि एव होति बंधो छ। जह अण्णत्थ पउत्ते, कूढे जो पडति सो बज्झे ॥११२३॥ गुरुराह जो पमत्तो, जो य अदनखो स बज्झए तत्थ । अपमत्तो ण वि बज्झति, तहेव दक्खे य जो होति ॥११२४॥ इय जो यु अप्पमत्तो. मणवायाकायजोगकरणेहिं। सो तु ण बज्झति णियमा, बज्झति इयरो परकडे वि ॥११२५॥ कामं सयं न कुट्यति, जाणंतो पुण तहावि तग्गाही। बड़ेति तप्पसंगं, अगिण्हमाणो उ नारेति ॥११२६॥ तम्हा उ परकडिम्म वि, अत्तीकरणं तु होयऽसुद्धेहिं। मणमादीहि कहं पुण, अत्तिकरे ? भण्णति इमेहिं ॥११२७॥ पहिसेवण पडिसुणणा, संवासऽणुमोयणा चडण्हं पि। प्एडिं पगारेडिं, अत्तिकरे तत्थिमे णाया ॥११२८॥ पहिसेवणाएँ तेणा, पहिसुणणाए य रायपुत्तो तु । संवासम्मि य पञ्छी, अणुमोयर्णे रायदुद्दो उ ॥११२९॥ आहाकम्मियणामा, एते चडरो समासतो भणिया । एगद्विताणि अहुणा, वोच्छामि समासतो चेव ॥११३०॥ एगट्ट एगवंजण. एगट्टं णाणवंजणं चेव। णाणह एगवंजण, जाणहा जाणवंजजया ॥११३१॥ जह स्वीरं स्वीरं चिय, एगट्टं एगवंजणं दिट्टं। पगड णाणवंजण, दुद्ध पयो वालु खीरं च ॥११३२॥

जाणहुमेगवंजण, गोमहिसअजाइयाण खीरं ति । णाणहु णाणवंजण, घडपडकडसगडरहमादी ॥११३३॥ एवमिहमाहकम्मं, आहाकम्मं ति पढमओ भंगो। आहा अहेकम्मादी, बितिओ सिक्कन्द इव भंगी ॥११३४॥ तिततो भंगो तू आतकस्ममहकस्म पणगमादी य। आहाकम्म पद्धचा, णियमा सुण्णो चउत्थो उ ॥११३५॥ इंदर्श्य जह सद्दा, प्ररंदरादी तु णातिवत्तंति । अह-आह-अत्तकम्मा, तहा अहे णातिवत्तंति ॥११३६॥ आहाकम्मेण अहे, करेंति जं हणति पाणभृयाई। जं तं आतियमाणो, परकम्मं अत्तणो कुणः ॥११३७॥ पगद्वितदारमिणं, अहुणा कस्स कडमाहकम्म भवे ?। भण्णति साहम्मिकडं, सो बारसहा इमो होति ॥११३८॥ णामं उवणा दविए, खेत्ते काले य पवयणे लिंगे। दंसण णाण चरित्ते, अभिग्गहे भावणाहिं च ॥११३९॥ णामेणं साहम्मी, जाव उ कालेण सन्व बोधन्वा। पवयण लिंगेणं वा, साहम्मिय पत्थ चडभंगो ॥११४०॥ प्वयणमणुम्मुयंते, दंसणमादी उ भावणा जाव। सन्वत्थ त चल्पंगा, जोएयन्त्रा जहाकमसो ॥११४१॥ एवं छिंगेणं पी, तह दंसणमादिएहिँ चडभंगा। भइएस उवरिमेस, हेट्टिझपयं त छड्डेजा ॥११४२॥ प्वं बुद्धीए तू, सन्वे वि जहक्रमेण जोएजा। चडभंग जाव चरिमो, अभिग्गहे भावणाहि च ॥११४३॥ पत्तेयबुद्धि णिण्हय, उवासए केवली य आसज्ज । खड़याइए य भावे, पडुच भंगे तु जोएजा ॥११४४॥ जत्य त्र ततिओ भंगो, ण तत्य कप्पति तु सेसए भयणा । तित्थगरिणिण्डञीवासगादि कप्पे ण सेसाणं ॥११४५॥

कस्स ति जहुद्दिर्ड, एरिस साइम्मियाण ण वि कप्पे। कि ती आहाकमां. असणाईयं इमं तं च ॥११४६॥ सालीमाई अगहे, फले य संठी य साइमं होति। तस्स कडणिट्टियम्मि, सुद्धासुद्धे य चत्तारि ॥११४७॥ भंगा I कोइवरालगगामे, वसही रमणिज्ञ भिवस्व सज्झाए। खेत्तपिंडलेह संजय, सावयपुच्छुज्जुए कहणा ।।११४८॥ जुज्जति गणस्स खेत्तं, णवर गुरूणं ति णित्थ पायोग्गं । सालि त्ति कए रूपण, परिभायण णियगगेहेसु ॥११४९॥ बोर्ळेता ते व अण्णे वा, जाव तु किमियं ? तिकहिय सब्भावे । वज्जेन्ति एव णाए, अहवा अर्ण्ण वयंती तु ॥११५०॥ एसऽसणे कम्पं तू, इवेज्ज कह पाणगे हवेज्जाहि ?। तह वि य साहु ण उन्ती, सावगपुच्छा दगं लोणं ॥११५१॥ अह ताव सात्रयो तू, खणेज्ज महुरोदगं तहिं अगडं। अच्छति य ढिकिएणं, जावाऽऽगय साहुणो तत्थ ॥११५२॥ ष्त्थ वि तहेव जाणण, वज्जण तह चेव होति णातव्या। एवं खाइम सातिम, णेयव्य जहक्रमेणं तु ॥११५३॥ कक्किंडिंग अंबगा वा, दाडिम दक्खा व बीयपूरा वा। एमाइ खाइमं तू, साइम तह तिगडुआदीयं ॥११५४॥ कि आहायम्मं ती, एतं तं विण्णयं समासेणं । परपक्त सपक्ते ती. अहुणा दारं अणुष्पत्तं ॥११५५॥ प्रपक्तो तु गिहत्थो, समणा समणी य होइ तु सपक्तो । एत्य कडनिट्टिएहिं, चडभंगो होइ तं वोच्छं ॥११५६॥ तस्स कह तस्स निद्विय, तस्स कहऽण्णस्स निद्वियं चेव । अण्णकड तस्स निष्टिय, अण्ण कडं निष्टियऽण्णस्स ॥११५७॥ वाविता लूया मलिया, कंडित एगच्छड कडा जे तु। तिच्छड निष्ठिय होन्ती, ते रद्धा दुगुणमहकम्मं ॥११५८॥

कडनिट्रियाण लक्खणिमणमो त समासतो सुणेतव्वं । फासुकडं रद्धं वा. णिट्टियमितरं कडं होति ॥११५९॥ समणट्ट वावियादी, जा दुछडा एय होति तस्स कडं। तस्सट्ट तिछडरद्धं, णिट्ठितमेसो पढमभंगो ॥११६०॥ ममणह जाव दुछडा, जवरि य तुरियऽग्ज कारणुष्पण्णं। तेसऽह तिछडरद्धा, वितिभंगो एस णानव्वो ॥११६१॥ जा दुछडा अत्तट्टा, णवरि य साह तु पाहुणा आया । तेसऽट्ट कया निछडा. तनिभंगो एस णानच्यो । ११६२॥ आयट्टा जा दुछडा, आयट्टा चेव तिछडरद्धा य । एस चडत्थो भंगो, कतरे कप्ये ण कप्पइ वा ? ॥११६३॥ पढमतिए ण कप्पे. वितियचडत्था उ दोण्णि वी कप्पे। एमेव पाणगे वी. खातिम तह साइमे चेव ॥११६४॥ साहृणिमित्ता रद्धं, जाव ण फासुं कडं तु नाव कडं । फासुकड णिड्डियं त्, चाउलध्वणादि पाणम्मि ॥११६५॥ फलमादि छिण्णछोडिय, फासुकडं णिहितं सुणैतन्त्रं । एमेव साइमे वी, अल्लगमादी ग्रुणेतच्या ॥११६६॥ सन्वत्थ त चतुभंगो, जोएअन्वो जहक्कमं होति । एत्थं तू परिहरणा. विहि अविही सन्व बोद्धन्या ॥११६७॥ छायं पि विवज्जेन्ती, केयी फलहेत्रगादिवृत्तस्स । तं तु ण जुज्जिति जम्हा. फलं पि कप्पं वितियभंगे 🖂 १६८॥ परपचइया छाया, ण वि सा रुक्लो व्व बड्टिना कत्ता । णहुच्छाए य दुमे, कप्पइ एवं भणंतस्स ।।११६९॥ वड्टति हायति छाया, तच्छिनकं पूर्यं पित्र ण कप्पे । ण य आहाय मुनिहिए, णिन्वत्तयती रवीछाया ॥११७०॥ अवणवणचारिगगणे, छाया णहा दिया पुणो होति । कप्पति णिरायवे णाम, आयवे तं विवन्नतं ॥११७१॥

तम्हा ण एस दोसो, तु संभवे कम्मलक्खणविह्णो। तं पि य हु अतिघिणिल्ला, वन्जेमाणा अदोसिल्ला ॥११७२॥ परपक्ल सपक्ते त्ती, एमेयं विण्णयं समासेणं। चउरो त्ति दारमहणा. वोच्छामि समासतो चैव ॥११७३॥ चडरो अतिक्रमे वतिक्रमे य अतियार तह अणायारा । आहाकम्मे एते. चउरो वि जहक्रमं जोए ॥११७४॥ तस्स पुण संभवो ऊ, आहाकम्मस्स कह उ होज्जाहि ? । णिदिरसणं जह भरए, सहुा दहूण मरुपूर्य ॥११७५॥ महसदृादीएसुं, तेसु वि सद्धा ततो समुप्पण्णा । अम्हे वि य साहणं, करेमि भत्तं तु सविसेसं ॥११७६॥ साळीघयगुळगोरस, नवेसु बङ्घीफलेसु जाएसु । दाणा अभिगमसहूरी, आहाकम्मे निमंतणया ॥११७७॥ आमंतियपिडसुणणा, सञ्चासु सुभो अतिकमो होति । पदमेयाइ वतिकमो, गहिए होई अईयारो ॥११७८॥ मुह्छूर्हे अणायारो, केयी गिलियम्मि बेन्ति अणायारं। कि कारण ? छूटे वी, पुणरावत्ती कयाइ भवे ॥११७९॥ तो खेळमञ्जयम्मी, णिग्गलइ ण एव पत्तोऽणायारं । गिलियम्मि अणायारो. तस्स णियत्ती तुओ णित्य ॥११८०॥ सेसेहि णियत्तेजा, एग दुग तिगे व एत्थ दिइंतो । जह तिहि आगास ठितो, पदेहि विणियत्तिओ इत्थी ॥११८१॥ च उरो गहणे एवं, अतिकसादी त विणया एते। आणादी चंडरो वि य, दारं एत्तो पवष्रवामि ॥११८२॥ आणं सन्वजिणाणं, गेण्हंतो तं अतिक्रमति लुद्धो । आणं च अतिक्रमंतो, कस्साऽऽएसा कुणति सेसं ?।।११८३।।

एगेण कयमकर्जं, करेति तप्पचया पुणो अण्णो ।
सायाबहुलपरंपर, बोच्छेओ संजमतवाणं ॥११८४॥
जो जहवायं ण कुणति, मिच्छादिद्वी तओ हु को अण्णो ?।
बहुति य भिच्छत्तं, परस्स संकं जणेमाणो ॥११८५॥
दुविहा विराहणा खल्छ, संजमतो चेव तह य आयाए ।
आहाकम्मगहणे, तत्थ इमा संजमे होति ॥११८६॥
बहुति तप्पसंगं, गेही य परस्स अप्पणो चेव ।
सजियं पि भिण्णदाढो,ण मुयति णिद्धंथसो पच्छा ॥११८७॥
खद्धे णिद्धे य ख्या, सुत्ते हाणी तिगिच्छणे काया ।
पिडयरगाण य हाणी, कुणिन किलेसं च किस्संतो ॥११८८॥
पाएण पिकच्चेण य, आहाकम्मं तु भारियं होति ।
एसा आनविराहणया, तम्हा तू तं ण भोत्तव्वं ॥११८९॥
पिडदारगाहा सम्मत्ता ॥

अब्भोज्जे गमणादी, पुच्छा दन्व काल देस भावे य।
एव जयंते छलणा, दिहंता तित्थमे दोण्णि ॥११९०॥
जह वंतादि अभोज्जं, जाव य चंदो य सुरउद्यं च ।
जज्जाणा दोण्णि भवे, सिवत्थरं सत्व बोद्धव्वं ॥११९१॥
जह ते दंसणकंखी, अपूरितिच्छा विणासिया रण्णा ।
दिहे वितरे सुका, एमेव इहं समोआरो ॥११९२॥
आहाकम्मं सुंजति, ण पिडक्कमए य तस्स टाणस्स ।
एमेव अहति बोहो, छक्कणिछको जह कवोहो ॥११९॥
आहाकम्मदारं, एविमणं मे समासतो कहितं ।
आवत्ती दाणं वा, विसोहिमेतेसिमं वोच्छं ॥११९४॥
आहाकम्मे चतुगुरु, आवत्ती दाण होयऽभत्तद्वं ।
उद्देसियं पि दुविहं, ओहे य विभागओ चेव ॥११९५॥

औद्देशिकम्

अोहे मासलहुं तू, आवत्ती दाण होति पुरिमहुं।
होन्ति विभागुद्देसे, मूलवत्थू इमे तिण्णि। ११९६॥
उद्देसकडे कम्मे, एक्केक चल्लिहो भवे भेदो।
कह होति चल्लेको ए. इमाहि गाहाहि वोच्छामि।।११९०॥
उद्देसियं समुद्देसियं च आदेसियं समाएसं।
एमेव कडे चलरो, कम्मम्मि वि होति चतारि।।११९८॥
जावंतिगमुद्देसो. पासंडीणं भवे समुद्देसो।
समणाणं आएसो, णिग्गंथाणं समाएसो।।११९९॥
उद्देसियम्मि लहुओ, पत्तंयं होति चतुसु ठाणेसु।
एमेव कडे गुरुओ, कम्मादिम लहुग तिसु गुरुगा।।१२००॥
थी (१) लहुमासा गुरुगा. चलगुरुगा तिण्णि तू मुणेतन्त्रा।
तवकालेहिँ विसिद्धा, दाणं तु अनो पवक्खामि।।१२०१॥
लहुमासे पुरिमहुं, गुरुमासे होति एगभतं तु।
चललहुए आयामं, चलगुरुण होयऽभत्तं ॥१२०२॥
उद्देसिए ति गयं।

पृतिकर्म

पूतीकम्मं दुविहं, दब्वे भावे य होइ णायव्वं।
दब्बिम्म छगणधम्मी, भावे दुविहं इमं होति ॥१२०३॥
स्रहुमं व बादरं वा, दुविहेयं होति हू सुणेतव्वं।
बादर पुणरिव दुविहं, उवगरणे भत्त-पाणे य ॥१२०४॥
इंधण गंधे धुमे, स्रहुमेयं एत्थ णित्थ पृइत्तं।
चुल्छुक्खिख्यादीणं, उवगरणे पूतियं होति ॥१२०५॥
प्वं मासलहं तू. आवत्ती दाण होति पुरिमहं।
होए छोणे हिंगू, संकामण भत्तपूतीयं ॥१२०६॥
पत्थं मासगुरुं तू, आवत्ती दाणमेगभत्तं तु।
उवगरण भत्तपाणे, पूतिस्स उ लक्खणं वोच्छं ॥१२०७॥

सिङ्ग्नंतस्यवगारं, सिद्धस्स करेति वा वि जं दब्वं। तं उवगरणं भण्णति. चुल्लुक्खलिदविवडोयादी ॥१२०८॥ संघट्टकया चुल्ली, उनखिल डोए तहेय दन्नी य। सो होति आइकम्मी, पूतीकम्मं इमं होति ॥१२०९॥ संघियचिक्खल्लेणं, सयचुल्लीखंडियाइ संठवणं । एमेव एक्खलीय वि. फड्डगमादी त जं लोए ॥१२१०॥ एवं सतडोतीए, दच्बीए वा वि संघदारूणं। अगिलियं जिंद लाए, गंडफलं वा वि एगतरं ॥१२११॥ उवगरणपूर्ति भणितं, एत्तो वोच्छामि भत्तपूर्ति तु । हाए लोणे हिंगू, संकामण फोडणं धूमे ॥१२१२॥ अत्तद्विय आयाणे, डागं लोणं व कम्मे हिंगुं वा । तं भत्तपाणपूर्ति, फोडणमण्णं व जं छभइ ॥१२१३॥ संकामे उं कम्मं. तेणेव य भायणेण संकामे। जं सुट्टं तं पूर्ति, अहवा रद्धं तिह होज्जा ॥१२१४॥ अंगारभूइ थाली, वेसण हेट्टामुहीए जं धुमे । संघट्टकडे तम्म उ, अत्तद्व करेन्ते पूनीयं ॥१२१५॥ पति चि गयं।।

मीसज्जायं तिविहं, जावंतिगमीस वितिय पासंडे।
साह्मीसं तितयं, पिच्छत्तं तेसि वोच्छामि ॥१२१६॥
पढमे चउल्रहुया तू, विति तितते चउगुरू मुणेतव्वा।
तवकालेहिं विसिद्धा, चउगुरुगा होन्ति णायव्या ॥१२१७॥
चउल्रहुए आयामं, चउगुरुए होति तु चउत्थं तु।
मीसज्जानं भणितं, ठवणाभत्तं अतो वोच्छं॥१२१८॥
ठवणाभत्तं दुविहं, इत्तरठवियं तहेव चिरठवियं।
इत्तरठविए पणगं, चिरठविए होति मासलहं ॥१२१९॥

मिथजातम्

स्थ पना

पणमे णिव्विगई तू, लहुमासे दाण होति पुरिमहूं। इत्तर चिरठविए या. समासतो लक्खणं वोच्छं ॥१२२०॥ संघाडग हिंडते, परिवाडिठिएस त गेहेसू। एक्को दोस्रवयोगं, करेति भिक्खाएँ गेहेस ॥१२२१॥ बितिओ साणादीणं, देयुवओगं परे तहेक्रम्मि। तेण परेण चडत्थे, डक्स्वित्ता इत्तरद्वविया ॥१२२२॥ चतुथघरा त परेणं, चिरठविया जाव पुव्यकोडी उ। एयं ठवियाऽभिहितं, एत्तो वोच्छामि पाहुडियं ॥१२२३॥ सा पाहुडिया दुविहा, सुहुमा तह बादरा य बोद्धव्वा। औसकण उस्सक्के. एक्केका सा भवे दुविहा ॥१२२४॥ सुहमाए लहुपणगं, आवत्ती दाण होति णिव्विगति । चउगुरुग बायराए, आवत्ती ढाणऽभत्तद्रं । १२२५॥ प्त्थं सुहुमा तु इमा, जह काइ अगारि कन्तमाणी उ। भणिया त चेडरूवेण देहि अम्मो ! महं भत्तं ॥१२२६॥ भणितोद्विनो त्ति होही, जाया ! कन्तामि ता इमं पेछुं । जइ तं सुणेति साह, ण गच्छए तत्थ आरंभो ॥१ २०॥ अस्स्रहिया भणंती, तुज्झ मि देमि त्ति किं ति परिहरति। किइ दाणि ण उद्विस्से ?, साहपभावेण लब्भामो ॥१२३८॥ एवं णाऊण ततो, परिहरती एस होति ओसका । उस्सक्कण कन्तंती. भणिता चेडेण दे भत्तं ॥१२२९॥ कन्तामि भणति पेछं, तो ते दाहामि पुत्त ! मा रोव । सा य समता पेळ, देही एताई सो भणति ॥१२३०॥ मा ताव शंख पुत्तय !, परिवाहीए इहेहिही साह । एयद्वय्रुष्टिना ते, दाहं सोउं विवज्जेति ॥१२३१॥ अंगुलिए चालेउं, कट्टिति कप्पट्टतो घरं जत्तो । किन्ति ? कहिए ण वचिति,पाहुटिया एअ सुहुमा उ ॥१२३२॥

प्रामृतिका

प्रादुष्करणम्

कीतकृतम्

बायरपाहु डिया वि य, ओसक ऽहिसक णे य दुविहा उ । कप्पट्टगसंघाडय, ओसरणेणं च णिद्देसो ॥१२३३॥ जह पुत्तविवाहदिणो, ओसरणानिन्छिए सुणिय सहूो । ओसक्के ओसरणं, संखडिपाहेणदव्बद्घी ॥१२३४॥ अप्पत्तम्मी ठवियं, ओसरणे होहिइ ति उस्सक्के । संपागडमितरं वा, करेति उज्जूमणुज्जू वा ॥१२३५॥ मंगलहेतुं पुण्णद्वया व ओसक्कें तं च उस्तक्के। किं कारणं ? ति पुट्टो, सिट्टे ताहे विवज्जेन्ति ॥१२३६॥ पाहुडिभत्तं भ्रुंजति, ण पडिक्समए य तस्स ठाणस्स । एमेव अडित बोडो छुक्कणि छुक्को जह कमेडो ॥१२३७॥ पाहुदिया भणितेसा, एतो पायोवगरण वोच्छामि । पाद् पयासणम्मी, अपगासपगासणं जं तु ॥१२३८॥ पायोकरणं द्विहं, पागडयरणं पगासकरणं च। पागडे मासलहुं तू , पगासकरणे उ चतुलहुगा ॥१२३९॥ लहुमासे पुरिमहूं, चतुलहुए दाण होति आयामं। पायोकरणं भणियं, कीनकडमयो तु वोच्छामि ॥१२४०॥ कीतकडं पि य दुविहं, दन्वे भावे य दुविहमेक्केक्के। आयपरकीयमेवं, पच्छितं तेसि वोच्छामि ॥१२४१॥ दन्वाय-परकीए, दुविहे वि चउलहू ग्रुणेयन्वं। दाणं आयामं तू, भावम्मि अतो परं वोच्छं ॥१२४२॥ मावे तु आयकीयं, चउलहुगा एत्थ वी ग्रुणेयन्वा । दाणं आयामं तू, भावे परकीय वोच्छामि ॥१२४३॥ मासल्रहुमिहावत्ती, दाणं पुण एत्य होति पुरिमहृ। कीयकढें भणियं, पामिसमतो उ वोच्छामि ॥१२४४॥

प्रामित्यम्

पामिश्वं पि य दुविह, लोइय लोउत्तरं समासेणं । लोइप् चतुलहुगा तू, आवत्ती दाणमायामं ॥१२४५॥ लोउत्तरें मासलहुं, दाणं पुण एत्य होति पुरिमहुं । पामिश्चेयं भणियं, परियद्दियमिणमा वोच्छामि ॥१२४६॥

परावर्तितम्

परियद्दियं पि दुविहं, लोइय लोउत्तरं समासेणं । लोइपं चउलहुगा तू, आवत्ती दाणमायामं ॥१२४७॥ लोउत्तरें मासलहुं, आवत्ती दाण होति पुरिमहूं।

अ∓याहतम्

परियद्दिय भणिएयं, अभिहहदारं अयो वोच्छं ॥१२४८॥ तं होति दुहाऽभिहृहं. आतिणं चेन तह अणाइणं। आइण्ण णोणिसीहं, होति णिसीहं च दुविहं तु ॥१२४९॥ छण्ण णिसीहं भण्णति, पगडं पुण होति णोणिसीहं ति। एक्केकं परगामे, सगामे चेन बोद्धन्वं ॥१२५०॥ सगामाहृह दुविहं, आइण्णं चेन होयऽणाइण्णं। अण्डण्णे मासलहुं, दाणेत्थं होति पुरिमृहं ॥१२५१॥ परगामाहृह दुविहं, सदेस परदेसओ न णायन्वं। एक्केकं पुण दुविहं, जलेण तह थलपहेणं च ॥१२५२॥ सप्चन्नाय णिप्पचनाय पुण होति दुविहमेक्केकं। संजमआयित्राहण. सपचनायिम जोएजा ॥१२५३॥ परदेसआहृहमी, सम्बनायिम होन्ति च उगुरुगा। णिप्पच्चाएं लहुगा, दागं एनेसि नोच्छामि ॥१२५४॥ च उगुरुगे अभन्तहं, दाणं हं होति तृ मुणेयन्वं। च उगुरुगे अभन्तहं, दाणं हं होति तृ मुणेयन्वं। च उन्हरूष आयामं, एमेन य होति सहसे ॥१२५५॥ उन्हरूष जोति तिविहं, पिहितुन्निण्णं कनाइउन्मिणं। जं तं पिहृतन्निण्णं, तं हितुन्निण्णं कनाइउन्मिणं।

उद्भिषम्

उन्भिण्ण होति तिविहं, पिहितुन्भिण्णं क्वाडउन्भिण्णं । जं तं पिहितुन्भिण्णं. तं दुविहं फासुगमफासुं ॥१२५६॥ फासुग छगणेणं तू, दहरएणं च पत्थ मासलहुं। तिह्यं पवहणदोसा, दाणं पुण एत्य पुरिमहूं॥१२५७॥ अप्पासुपुढिविमादी, सिचित्तंणं तु जं भवे लितं।
तिहयं उन्भिज्जंते, कायाण विराहणा इणमो॥१२५८॥
सिचित्तपुढिविलित्तं, लेल सिलं वा वि दाउमोलितं।
सिचित्तपुढिविलेवो, चिरं पि उद्गं अचिरिलेते॥१२५९॥
चिरिलित्तपुढिविकायो, निम्मेतुं लिप्पमाणे आउवहो।
जञ्जहत्तावणम्मी, तेऊ वाऊ वि तत्थेव॥१२६०॥
पणगिबयाइ वणस्सति, तस कुंथुपिपीलिएवमादीहिं।
एते ऊ लिप्पंते, इमे तु दोसा तु उल्लिते ॥१२६१॥
परस्स तं देति सए व गेहे, तेल्लं व लोणं व घयं गुलं वा।
उग्धाहितं तं तु करेयऽवस्सं, स विक्वयं तेण किणानि वऽण्णं॥
॥१२६२॥

टाणकयिवक्यादी. अहिगरणं हाति अजयभावस्स । णिवडंति जे य तहियं. जीवा मृह्यंगमूसादी ॥१२६३॥ जेहेव कुंभादिसु पुन्वित्ति, उन्भिज्जमाणम्मि वि कायघाओ । ओल्लिपमाणे वि तहेव घाओं, उन्भिणमेयं पिहियं पि बुतं

आवित्त दाणमेत्थं, ओहंणं चउलह ग्रुणेयव्वा । दाणं आयामं तू, विभागओ कायणिष्फण्णं ॥ २६५॥ एमेव कवाडम्मि वि. कायवही होइ ऊ ग्रुणेयव्यो । उप्पिहिय पिहिन्नंते. सिवसेमा जंतमाईसु ॥१२६६॥ यस्कोइलसंचारा, आवत्तण पेढियाए हिंदुवरि । णिन्ते दिते य अन्तो, हिंभादीपेछणे दोसा ॥१२६७॥ एत्थ वि चडलहुगा तू. ओहेणं दाणमेत्थमायामं । होति विभागेणं पुण, पुढवादोकायणिष्फण्णं ॥१२६८॥ उव्भिण्णेयं भणियं, अहुणा मालोहडं पवक्खामि । तं तिविहं उट्टमहे, तिरियं मालोहडं चेव ॥१२६९॥

मालाहृतम्

जृह दुभूमादीयं, अह जहियकोद्वयाइयं होति । तिरि अद्भगलगादी, इत्थपसाराउ जं गिण्हे ॥१२७०॥ सन्वं पि यु तं दुविहं, जहण्ण उक्कोसयं च बोद्धव्वं। अग्गपएहिँ जहण्णं, तिव्वत्रीयं ति उक्कोसं ॥१२७१॥ मालोहड उक्कोसे, आवत्ती चउलह ग्रुणेतच्या । दाणं आयामं तू, जहण्णमालोहडमियाणि ॥ १२७२॥ एत्थ तु मासलहुं तू, आवत्ती दाण होति पुरिमहं। इय मालोहड भणितं. अच्छेज्जं अहण वोच्छामि ॥१२७३॥ तिविहं पुण अच्छेज्जं, पभु य सामी य नेणए चेव । एक्केक्के चतुलहुगा, दाणं पुण एत्थमायामं ॥१२७४॥ अणिसिट्टं पि य तिविद्दं, साहारण चोल्लए य जड्डे य। तिविहे वि य अणिसहे, चउलहुगा दाणमायामै । १२७५:। साहारणमणिसट्टं. टाइयमादीण जं त होज्जाहि। स्तीरं आपण संखडि, दिहंतो गोहिभत्तेणं ⁽१२७६॥ सो चोल्लगो वि द्विहो, छिण्णमछिण्णो समासनो होति। परिछिणं चिय दिज्जति, एसो छिण्णो मुणेतन्त्रो ॥१२७७॥ अच्छिणपरिमाणो. सो वि णिसद्रो तहेव अणिसद्रो । णीसट्ठो तेसि चिय, णेतूण समप्पितो जो तु ॥?२७८॥ आणेति भ्रत्तसेसं. जं गहियं एय होति अणिसद्रं । छिण्णम्मि चोल्लगम्मी, कप्पति घेतुं णिसद्वेयं ॥११७९॥ अणिसद्वमणुण्णायं, कप्पति घेतुं तहेव अदिद्वं । चोल्लग अणिसट्टेयं, जङ्कणिसट्टं अतो बोच्छं ॥१२८०॥ रायक्रलातो भन्तं, णीयं जड्डस्स तं ण कप्पति त ।

णिवपिंडमंतराया, अदिण्णगहणादिदोसा य ॥१२८**१**॥

अाच्छेद्यम

अनिसृष्टम्

जड़ो व पतोसगतो, परिपाडे वसहिमादि भंजिज्जा। डोंबस्स संतिओ वि हु, अहिट्ठो कप्पति घेतुं ॥१२८२॥ अध्यवपूरकम् अणिसद्व भणियमेयं, एत्तो अन्झोयरं पवक्खामि । अहियं उदरं अञ्झोयरो त जं सगिहमेगम्म ॥१२८३॥ अहिगं त तंदलादी, छन्भति अन्झोयरो च सो तिविहो। जावंतिय पासंडे, साह अज्झोयरे चेव ॥१२८४॥ जावंतियम्मि लहुतो, आवत्ती दाणमेत्थ पुरिम्हं । पासंडी साहूण य, मासगुरू दाण भत्तेक्कं ॥१२८५॥ एसो अज्झोयरयो. सोलस वी उग्गमस्स दोसेते। णव कोडीउ भवंतिह, किं भणियं होति कोडि ? ति॥१२८६॥ कोडिउजंते जम्हा, बहुवो दोसा उ सहियए गच्छं। 'कोटि' कोडि त्ति तेण भण्णति, णव कोडीओ इमाताओ ॥१२८७॥ श्रन्दस्यार्थः हणण हणावण अणुमोदणं च प्यणं प्यावणऽणुमोया। कोटयः किणण किणावण अणुमोयणं च कोडीड णव एया ॥१२८८॥ णव चेव अट्टारसगं, सत्तावीमा तहेव चउपण्णा। णउती दो चेत्र सया. तु सत्तरा होन्ति कोडीणं ॥१२८९॥ ता चैव य णव कोडी, रागहोसेहिं गुणिय अद्वरस । अण्णाण मिच्छ अविरति,तिहिं गुणिए सत्तवीसा तु ॥१२९०॥ पुढवादीछसु संजय, छिहँ गुणिया होति एस चतुपण्णा । संतीमादीदसहिं उ. गुणिया णजती तु बोद्धव्वा ॥१२९१॥ णउती तिहिं गुणियातू. दंसणणाणेहिं तह चरित्तेणं। सत दोश्नि होन्ति सयरा, कोडीणं एस वित्थारो ॥१२९२॥ संखेवेण दुहा ज, जगमकोडी विसोहिकोडी य। जगमकोटी छन्विह, विसोहिकोटी अणेगविहा ॥१२९३॥

इणणतियं षयणतियं, उग्गमकोडी तु छव्विहा एसा । अहवा वि इमा छव्विह. जगमकोडी मुणेयव्वा ॥१२९४॥ आहाकम्म्रहेसिय, चरिमतियं पृति मीसजायं च। बाद्रपाहुडिया वि य, अज्झोयरए य चरिमदुगे ॥१२९५॥ एसा विसोहिकोडी, छव्विहमेया समासतोऽभिहिता। एत्तो छदा सुद्धं, वोच्छामो आणुपुरुवीए ॥१२९६॥ जगमकोडी अवयव, लेवालेवे य अकयकप्पे या। कंजिय आयामे चातुलोयसंसदृपृती य ॥१२९७॥ सुक्केण वि जं छिक्कं, असुइण तं घोव्वए जहा छोओ। इय सुक्केण वि छिक्कं, धोवइ कम्मेण भाणं तु ॥१२९८॥ लेवालेवे त्ति जं वृत्तं, जं पि दव्यमलेवडं । तं पि घेतुं ण कप्पेति, तक्कादी किम्रु छेवडं ? ॥१२९९॥ कंजियमादीगहणे, कम्हा त कर्न त ? भण्णती सुणसु । साहस्स उ आहेतुं, जं कीरइ आइकम्मं तं ॥१३००॥ इय णाउमाह कोयी, साहणिमित्ता य ओयणो उ कतो। ण उ कंजियमादीणि, तो वज्जो ओयणो एगो ॥१३०१॥ ण उ कंजियमादीणि, तो तम्महणे कते तमेवं ता। जिंद वि ण दिष्टा आहा. ओदणमहा तह वि वन्ने ॥१३०२॥ सेसा विसोहिकोडी, ठवितगमादी त जड वडणाभोगा। गहिता इवेज छुद्धा. अण्णम्मी भत्तपाणिम्म ॥१३०३॥ ताहे त जहासति, विगिचितव्वं तमण्णपाणं तु । दन्वादिकमेणं तू, इमेण वोच्छं समासेणं ॥१३०४॥ दन्वे तं चिय दन्वं. खेत्तं परेसेस जेस तं पहियं। काले अकालहीणं. जावऽण्णा भिक्ख णऽक्कमति ॥ १३०५॥ भावे अरत्तदुद्दी, असदी जं पासती तगं छड्डे।

अणलखियमीसद्दे सन्वविवेगोऽवयवे सुद्धो ॥१३०६॥ अह पुण ण संथरेज्जा, ताहे परिठावणा तु तम्मत्तं । इत्थं चउभंगो त्, सुक्खोल्लणित्राययो इणमो ॥१३०७॥ मुक्ते मुक्तं पहियं, मुक्ते उन्नं तु उन्नें मुक्तं तु । **उल्ले उल्लं च तहा. एस च**उत्थो भवे भंगो ॥१३०८ मुक्ले सुक्लं पहियं, पढमगभंगो विगिचति सुई तु । बितियम्मि दवं छोदं, गालेति दवं करं दाउं ॥१३०९॥ ततियम्मि करं छोटं. उल्लिपइ ओदणादि जं तरति । चरिमे सन्वविवेगो, दुलभदवे वा वि तम्मत्तं ॥१३१०॥ एव विगिचित्तऽसहो, जेसु पदेसुं तु मुज्झए साहू। मायाची ण वि सुज्झे. तम्हा असहेण होयव्वं ॥१३११॥ एवं गवेसणाए, उग्गमदारं समासतो भणितं । उप्पायणमहुणा तू, समासओ हं पवक्लामि ॥१६१२॥ सोलस उग्मदोसे, गिहिणो उ सम्रुट्टिए वियाणाहि। जप्पायणाएँ दोसे, साहतु सम्रुहिए जाण ॥१३१३॥ णामं उवणा दविष. भावे उप्पायणा मुणेयव्वा । दन्वे सचित्तादिविहाण, चित्ते दुपयादि तिविह इमा ॥१३१४॥ आयास्रयमादीहि, वालचिय-त्र्रंगबीयमादीस् । सुय-आस-दुमादीणं, उप्पायणया तु सचित्ता । १३१५॥ कणग-रययाइयाणं, जहेट्टधातुविहिता तु अचित्ता । मीसा उ सभंडाणं, दूपया तुष्पायणा द्व्वे ॥१३१६॥ भावे पसत्य इयरा, कोहादुष्पायणा तु अपसत्था । कोहादिजुया घायादिणं च णाणादि त पसत्था ॥१३१७॥ अपसत्थियभावःपायणाएँ एत्थं तु होति अहिगारो । सा सोलसहा त इमा. धायादीया ग्रुणेयव्वा ॥१३१८॥

उत्पा**दना**या निक्षेपाः षोडश उत्पा-दनादोषाः

धाती द्ती णिमित्ते, आजीव वणीमए तिमिच्छा य। कोहे माणे माया, छोमे य हवंति दस एते ॥१३१९॥ पुर्विव-पच्छासंथव, विज्ञा मंते य चुण्ण जोए य। उप्पायणाएँ दोसा, सोलसमे मूलकम्मे य॥१३२०॥

धात्रीदो**षः**

धारयति धीयए वा, धयंति वा तमिति तेण धाती तु । जहिवभवं आसि पुरा, खीराई पंच धातीओ ॥१३२१॥

पञ्च धात्र्य:

खीरे य मज्जणे मंडणे य कीलावणंकधाती य।
धाइचं कुणमाणो, एगयरं धातिपिंडो तु। १३२२॥
तं दुविहं धातिचं, करणे कारावणे य बोद्धवं।
तं पुण दारगमादी, पडुच धाति व्य कुज्जाहि ॥१३२३॥
पंचिवह धातिपिडे, आवत्ती चउलह मुणेयव्या।
दाणं आयामं तू, दृतीपिंडं अतो बोच्छं॥१३२४॥

दूतीदोष:

सम्गाम परग्गामे, दुविहा द्वी तु होति णायव्या।
एवकेका वि य दुविहा, पागड छण्णा य णायव्या। १३२५॥
पागड णिस्संको चिय, अप्पाहेन्तो व भणित इयरो वा।
सेज्ञानरखंतिया तू, धृया वा अण्णगामिम्म ॥१३२६॥
भिक्खादी वर्चतो. अप्पाहणि जेति खंतियाईणं।
सा ते अग्रुगं माया, सो व पिया पागडं भणित ॥१३२७॥
छण्णा पुणाइ दुविहा, द्वी एत्यं तु होति णायव्या।
छोउत्तरं तत्थेगा, वितिया पुण उभयपक्खे वि ॥१३२८॥
छोउत्तरं संघाडग, संकंतो सावछण्णवयणेहिं।
कह पुण छण्णं ? सेज्ञायरीय अप्पाहिओ गंतुं॥१३२९॥
संघाडयपचयद्दा, वेनी द्वि ति अम्ह ण वि कप्पे।
अविकोतिया सुया ते, जा वेइ इमं भणसु खंती।।१३३०॥
सा वि य भणती होतू, वारिज्ञिहिती अयाणिया सा छ।

लोउत्तरछण्णेसा. उभयच्छण्णं अतो वोच्छं ॥१३३१॥ षामाइतित्थजत्तागतस्स उवादिपोक्कडेण कतं । सो आगतो ति ध्रया, उभयच्छण्णं इमं भणति ॥१३३२॥ एव भणेजाहि खंती, तं किर तह चेत्र चिंतियं जं ता। जह ण वि संघाडो से, अण्णो व वियाणति कोति ॥१३३३॥ उभयच्छण्णा एसा, सम्गामे अभिहिता भने द्ती। एमेव परग्गामे. दुइ दृती कह पुण करंज्ञा ? ॥१३३४॥ गामाण दोण्ह वेरं, सेज्जार्यारध्रय तत्थ परगामे । सामत्थं गामस्स य, जह एवं इणिमों परगामं ॥१३३५॥ खंतो तु तत्थ पच्छा, भिक्खायरियाएँ तो तु सेज्जनरी । अप्पाहेती खंत, मम घृय भणेजासू एवं ॥१३३६॥ जह गामों पडिउकामो, सा उ भणेज्ञामु मा कुण पमायं। तीय कहियं त तस्या. तेण वि गामस्स तं कहियं ॥१३३७॥ ते य ठिय एगपासे, इतरे पहिता कतं तहिं जुद्धं । सेज्जातरिपति-पुत्ता, जामाता चेव वहिओ उ ॥१३३८॥ बेति जणो केणेयं, कहियं ? ति बेति सेज्जयरी । जामाति-पुत्त-पतिमारएण खंतेण मे सिद्धं ॥१३३९॥ जम्हा एते दोसा, दृतितं खुण कप्पती तम्हा। दृतीपिंडे चउछहु, आवत्ती दाणमायामं ॥१३४०॥ णियमा तिकालिविसयम्मि णिमित्ते छिन्वहे भवे दोसा। सज्जं तु बृहमाणो, आतुभए तत्थिमं णानं ॥१३४१॥ आकंपिया णिमित्तेण भोडणी केणती तु लिंगीणं। भोडयचिरगयपुच्छा, केवतिकालेण एजाहि ? ॥१३४२॥ कल्लं चिय एति त्री, इयरी पहिभणति पचयो को उ ?। तुह गुज्झदेस तिल्लओ, सुविणाती पचए कहए ॥१३४३॥

निमित्तदोषः

तीय क्यं आउत्तं, पेसविओ परिजणो य पञ्चोणी । इतरो वि अविदिओ चिय. पविसिस्सं भोडओ चिन्ते ॥१३४४॥ घरवित्तंता सित्तं, दिह्रो उविणगाओ य परिवग्गो। कह तुन्मे णायं ? ती, पेसविआ भोतिणीए त ॥१३४५॥ पुद्राय आदिअत्तेणं, तीय य सिद्धं सलाहमाणीए। समणे तीय भविस्सं, जाणइ तिल्ञो य णे सहो ॥१३४६॥ कोवो वलवागब्धं, च पुन्छितो पंचपुण्डमाहंस्र 🖟 फालण दिट्टो जदि णेव तो तहं अवितह करेवं ॥१३४७॥ तम्हा ण वागरेजा, णिमित्तर्षिडेस विष्णिओ त मए। तीतणिमित्ते चउलह, आवत्ती दाणमायामं ॥१३४८॥ पडक्कारणागर या. चनगुरुगा दाण होयऽभत्तरं। आजीविपण्डमेत्तो. समासओ हं पवक्खामि ॥१३४९॥

बाजीबदोषः जाती कुछ गण कम्मे. सिप्पे आजीवणा उ पंचिवहा । सुयाए असुयाए. व कहेड अप्पाणमेकेके ॥१३५०॥ जाती कुल गण कम्मे, सिप्पे आजीवणा तु पंचिवहा । एकेके चत्रलहगा. आवत्ती दाणमायामं ॥१३५१॥ जाती माहणमादी, मातिसम्रत्था व होति बोधव्या। तहियं सुयाए त. जाणावेमेहि अप्पाणं ॥१३५२॥ होमाडवितहकहणे, णज्जति जह सोत्तियस्स पुत्तो ति । वसितो वेस गुरुक्कले. आयरियगुणे व सुएति ॥१३५३॥ सम्ममसम्मा किरिया, अणेण ऊणाहिया व विवरीया। समिहा-मंता-ऽऽहुति-ठाण-जाय-काले य घोसादी ॥१३५४॥ बेति फ़र्ड चिय सुक्यं, असोइणं वा वि ते कतिमतं ति । तहितं भद्दगपंता, दोसा इणमो भवंती त ॥१३५५॥ भहो अम्ह सपन्ता. एस त्ती भिन्त देळाहेयस्स ।

पंतो ओभामेती. मुहमंगलि क्रणति भिष्तवहा ॥१३५६॥ जगाईयं तु कुलं, पितुवंसादि व्य तत्थ वि तहेव। मह्रसरस्स तमादिण. जाएई मंडलपवेसं ॥१३५७॥ देउलदरिसण-भासाउवणयणे मण्डवाइ स्रूएति । जंतुष्पीलणमादि तु, कम्मं तुण्णादियं सिष्पं ॥१३५८॥ अहवा जं सिक्खिज्जइ, आयरित्रवदेसतो तयं सिष्पं। जं कीरती सर्यं तू, तं कम्मे तेसु सव्वेसु ॥१३५९॥ कत्तरिपयोयणद्वा, वत्थु बहुवित्थेरस्र तह चेव । कम्मेस् य सिप्पेस् य. सम्ममसम्मेस् सृतिअतरा ॥१३६०॥ सब्वेस भद्दपंता. णियमा दोसा इवंति विण्णेया। आजीवगपिंडेसो, एत्तो तु वणीमगं वोच्छं ॥१३६१॥ किं भणियं वणीमें ? त्ति, भण्णति वणि जायणम्मि धातू तु। वनीपकदोष्ट्रः विणमगो पायप्पाणं. विणमो त्ती भण्णए तम्हा ॥१३६२॥ ते पंचहा वणीमग. जायणवित्ती तु होन्ति बोद्धन्ता। समणा माहण किवणे, अतिही साणा य पंचमया ॥१३६३॥ समणे माहण किवणे, अतिही साणे य जाण पंचसु वि। पत्तेयं चउलहुमा, आवत्ती दाणमायामं ॥१३६४॥ मयमादिवच्छगं पिव, वर्णेति आहारमादिलोभेणं। अप्पाण समण-माहण-िकमिणा-ऽतिहि-साणभत्तेम् ॥१३६५॥ णिगंध सक तावस, गेरुय आजीव पंचहा समणा। तेसि परिष्सणाष्, लोभेण वर्णेइ को अप्पं ? ॥१३६६॥ तचिण्णयादि दहुं, शुंजंते दातु पीति अणुकूळं। साहु तुमे विष्प ! कयं, दाउं जं देसि एतेसि ॥१३६७॥ भ्रंजंति चित्तकस्मद्विय व्व कारुणिय दाणरुइणो वा। अबि कामगृहमेस वि. ण वि णासइ कि प्रण जतीसु ? ॥१३६८॥

मिच्छत्तथिरीकरणं, उग्गमदोसा व ते पुण करेज्ञा। चटुकारऽदिण्णदाणा, पञ्चत्थिम मा पुणी एंत् ॥१३६९॥ एमेव माहणेस वि. दिक्तंतं दिस्स बेति अणुकूलं। दोण्हं भणियं दाणं, समणाणं माहणाणं च ॥१३७०॥ लोगाणुग्गहकारिस, भूमीदेवेस वर्षणं वाणं। अवि णाम बंभवंधुसु, किं पुण छक्तम्मणिरएसु ? ११३७१॥ किमणा उ क्रहि-कर-पाय-अच्छिमादीस जुंगिया जे तु । दहूण तेसि देन्तं, तस्स अणुकूलं इमं भणति ॥१३७२॥ किमणेस दुब्बलेस य, अबंधवा-ऽऽयंक-जुंगियंगेस । पूचाहको लोए, दाणपडायं हरति देन्तो ॥१३७३॥ ते चिय एत्थ वि दोसा, कोई पुण देति दाणमतिहीणं। तत्थ वि अणुष्ययं तु , दाणपितम्सा इमं भणित ॥१३७४॥ पाएण देति लोगो, उवगारी परिचिए व झसिए वा। जो प्रण अद्धाखिण्णं, अतिहिं प्रएति तं दाणं ॥१३७५॥ कोइ पुण साणभत्तो, भत्तं साणादियाण दि जंतं । तस्स य पियं ति भामति, तुममेगो जाणनी दाउं॥१३७६॥ अवि णाम होज्ञ सुलभो, गोणादीणं तणादि आहारो । छिच्छिकारहयाणं, ण य सुलभो होति सुणयाणं ॥१३७०॥ केलासभवणा एते, आगया गुज्झगा महिं। चरंति जनखरूवेण, पुरापूर्य हियाहिय ॥१३७८॥ प्यंति प्रयणिज्ञा, प्रयापं हियाय आगया इहाँ । ल्होगस्स हिता एते, पूइय अहवा हिया होन्ति ॥१३७९॥ अहवा वि पूर्यपूर्या, हिताहिता पूरिता हिता होन्ति । अपूरिता य अहिता, नम्हा खलु पूर्याणजेते ॥१३८०॥ पमादी अणुकूले. भणिते सन्वेसि माहणाईणं।

दाता चिंतेति ततो, मज्झत्थो एस समणो ति ॥१३८१॥ एतेण मज्झ भावो. विद्धो लोए पणामहज्जम्मि। एकेके पुरुवता, भद्दग-पंताइया दोसा ॥१३८२॥ दाणं ण होति अफलं, पत्तम्वते य सण्णिउञ्जंतं। इय विभणिए वि दोसा, पसंसिमो किं पुण अपत्ते ? ॥१३८३॥ विणमगपिंदो भिणतो, एत्तो वोच्छं तिगिच्छिपिडं तु। सा दुविहा तु तिगिच्छा, सुहुमा तह वायरा चैव ॥१३८४॥ सुहुमाए मासलहुं, आवत्ती दाण होति पुरिमहूं। बादरतेगिच्छाए, चचलहुगा दाणमायामं ॥१३८५॥ भिक्लादिगतं संतं. प्रच्छिति रोगी त ओमहं किंचि । भणई किमहं वेज्जो ?, पढमतिगिच्छा भवे एसा ॥१३८६। वेज्जो त्ति प्रच्छिय्व्वो. अन्यावत्तोड मृतियं एयं। अबुहाण बोहणं वा, अयाणमाणाण कतमेनं ११३८७॥ बेति व एरिस दक्खं, अग्रुएणं ओसहेण पडणं में। सहस्रपद्यं च रुपं, वारंमो अट्टमादीहिं ॥१३८८॥ एसा बितिय तिगिच्छा, दो वेयाओ तु सहमतेगिच्छं। वादरतेगिच्छं पुण, सतमेव करेति वेज्जनं ॥१३८९॥ संसोहण संसमणं, णिढाणपरिवन्त्रणं च जं जत्थ। आगंत्रधातुःखोभे, व आमए कुणति किरियं तु ॥१३९०॥ अस्संजयतेगिच्छे, कीरंते तह य सृह्मकदणम्म । तहियं त अणेगविहा. दोसा इणमो पसज्जंति ॥१३९१॥ अस्तंजमजोगाणं, पसंजणं कायघाओं अयगोलो । दुब्बलवग्घाहरणं, अच्चुद्रष् गिण्हणुड्डाहो ॥१३९२॥ जम्हा एने टोसा, तम्हा कायव्विया ण ह तिगिच्छा ।दारं। भणितो तिर्गिच्छिपिंडो. एचो कोहादि वोच्छामि॥१३९३॥

चिकित्सा-विण्ड:

कोधादयो दोषाः कोहादीणं कमसो, आहरणा होन्तिमे समासेणं। हत्थप्पं गिरिफुल्लिय, रायगिहं चेत्र चंपा य ॥१३९४॥

कोषे क्षपकः णगरम्मि इत्थकप्पे, करडुगभत्ते उ खमओं दिदृतो। कोसल्रदेसे गिरिफक्लिगामे वणकोट्रकारम्मि ॥१३९५॥

माने क्षळकः

साहण सम्रक्षावे. को णु हु अन्नं पए तु साहणं। आणेज्ज इदृगातो ?, खुड्डाऽंऽह तिहं अहं आणे ॥१३९६॥ घत-ग्रन्थसंज्ञत्ता वि य. जह आणिय इद्रगात खडेणं। सेर्डगुलिमादी हिं. णाएहि एत्य भत्तद्रं ॥१३९७।

मायागमा-षाढभूतिः

रायगिहे धम्मरुयी, असादभृती तु खुड्डओ तस्स । रायणडगेहपविसण, संभोइय मोटए लंभो ॥१३९८॥ आयरिय उवज्झाए, संघाडय अप्पयस्स अट्टाए। भुज्जो भुज्जो पविसति, काण-कुणी-खुज्जरूवेहिं ॥१३९९॥ उवरितल्रत्थो य णडो, पासित चिंतेनि बुद्धिमं सुडु । होज्ज णडो सारिक्खो, उवाययो एस घेत्रच्यो ॥१४००॥ चिंतिय जवायमेयं, वाहरिया देमि मोदए बहवे। भणिओ य तओ एज्जस्र, दिणे दिणे जाहे कर्ज त ॥१४०१॥ ध्रयदुगं संदिसती, हास-खेड्ड-परिहास-संफासे । एतेण समं कुव्वह, जह भज्जति एस अचिरेणं ॥१४०२॥ जिंद णामं गिण्हेन्जा, तो बेन्जह ग्रुयसु एय पन्वन्जं । ताहि तहक्कय खुभितो, रयहरणं लिंग मुयसु त्ति ॥१४०३॥ गुरु सिट्ट मोतुमातो, दिण्णा बीयाय भणिय जेणं च। पस्चत्तमपगतीओ, जत्तेणं उवयरेज्जाह ॥१४०४॥ रायगिहे य कयायी, जिम्महिलं जाहगं जहाऽगच्छी। ताव विरहम्मि मत्ता, उवरिगिहे दो वि पासूत्ता ॥१४०५॥ वाघाएण पविद्वो. दिट्ट विचेला विरागमावण्णो। आयरियगुरुसमीवं. पट्टित दिह्रो णहेणं च ॥१४०६॥

इंगितणाए ध्रयाखरंट पेसियय जीवणं देहि । देमि ति रद्वपाछं, णाडग मचीय क्रम्रमपुरे ॥१४०७॥ कडगादिअत्थदाणं, बहुपहितं तत्थ(नच)गम्मि णचंते । भरहो य वणादीया, भरहिट्टी तत्थ य णिबद्धा ॥१४०८॥ इक्लागवंस भरहो, आयंसघरे य केवलालोओ। हत्थे गहिओ मा कुण, कि भरहों णियत्तों ? पचाह ॥१४०९॥ ण हु तं पऽक्खड एवं, वेलंबो होति जित णियत्तामि । पंच सता तेण समं, पव्वइता णाडए डहुणं ॥१४१०॥ एमाटि मायपिंडो. ण कप्पती णवरि कारणे कप्पे। गेलण्ण-खमग-पाहण-थेरादद्वेत्रमादीस् ॥१४११॥ मायापिंडो भणितो (दारं). एत्तो वोच्छामि लोहपिंडं तू। सो कोहपिंडमादिस, सन्त्रत्थऽणुपाति अहत इमो ॥१४१२॥ लोमे सिंहकेस रकः क्षपकः-लब्भंतं पि ण गिण्हति, अण्णं अम्रगं ति अज्ज घेच्छामि । भहरसं ति व काउं. गिण्हति खद्धं सिणिद्धादी ॥१४१३॥ तत्थोदाहरणिमणं, चंपाएँ छणिम्म को वि खमतो तु । गेण्डति अभिगाई तू, सीहेसर्मोदए घेच्छ ॥१४,१४॥ भिक्ख पविद्वो य त्यो. पहिसेहे अण्ण लब्भमाणं पि । सीहेसरमलढंतो. संकिस्सति भावतो अह सो ॥१४१५॥ सीहेसरगतिचत्तो. विसरिसचित्तो य धम्मलाभो ति । बेई सीहेसरए, सुरत्थमिए वि हिंदइ तु ॥१४१६॥ सङ्गऽङ्गरत्त केसरभायणभरणं च पुच्छ पुरिमङ्गे। उवओग चन्दजोयण, साहु त्ति विर्मिचणे णाणं ॥१४१७॥ कोहादीणं कमसो. एमेते विष्णया उ आहरणा। एतेसिं चिय कमसो, आवत्ती दाण वोच्छामि ॥१४१८॥ कोहे माणे चतुलह, आवत्ती दाण होइ आयामं। मायाए मासगुरू, आवत्ती दाण भत्तेकं ॥१४१९॥

संस्तवदोषः

लोभे चउगुरुगा तू. आवत्ती दाण होयऽभत्तर्ह । दारं । संधुणण संथवी तु, धुणणा वंदणगमेगट्टं ॥१४२०॥ दिवही य संथवी खलु, संबंधी वयणसंथदी चैत्र । एक्केको पुण दुविहो, पुन्वि पन्छा य णायन्त्रो ॥१४२१॥ संबंधे पुट्य दुविहो, इत्थी पुरिसे य होति णायच्यो । एमेव य पच्छा वी. आवत्ती दाण वोच्छामि ॥१४२२॥ इत्थीए चतुग्रहगा, प्रिसेमु चतुलह मुणेत्न्या । चउगुरुए तु चउत्थं, चउलहुए दाणमायामं ॥१४२३॥ वयणे वि पुट्व दुविहो, इत्थी पुरिसे य होिः णायव्यो । एमेव य पच्छा वी. आवत्ती दाण वोच्छामि ॥१४२४॥ इत्थीए मासगुरुं, आवत्ती दाण होति भत्ते हं। पुरिसे मासलहं तू, आवनी टाण पुरिमन् 👯 ४२५॥ संबंधे पुरुवसंथत्रो, माय-पियाटी त होति ए। यन्त्रो । सासय-समुराजीओ, संबंधीसंथवी पच्छा ः १४२६॥ आयवयं च पन्वयं, णाउं संवंधती तयणुरुवं । मम माना एरिसिया, समा व ध्रया व णत्त ी ॥१४२७॥ अद्धी दिद्वीपण्हय. पुच्छा कहणं ममेरिसी ्णणी। थणखेत्रो संबंधो, विह्वासुण्हाय ढाणं च ॥१४२८॥ एमेव य पुरि:सु वि, पियभातादीहिं होति संबंधो । एमेव पच्छसंथव, अद्धिति दिहादि पुच्छादी ॥१४२९॥ पच्छासंथवदोमा, सामुय विहवादिधृयदाणं व । भज्जा मम एरिमिया, सन्जं घातो व भंगो वा ॥१४३०॥ संबंधे संथवेसी. एत्तो वोच्छामि संथवं वयणे। पुर्टिव पच्छा व तहा. संथुणणे कुणति दानाए ॥१४३१॥ गुणसंथवण पुरुवं, संनासंतेण जो अणेजाहि। दातारमदिण्णाम्मि, सो वयणे संथवो पुव्वि ॥१४३२॥

सो एसो जस्स गुणा, पयरंति अवारिया दसदिसास । इहरा कहास सुव्वति, पचक्वं अज्ञ दिट्ठो ति ॥१४३३॥ ग्रणसंथवेस पच्छा, मंतामंतेण जो थुणेजाहि। दातारं दिण्णम्मी. सो पच्छासंथवो वयणे ॥१४३४॥ विमलीकय णे चक्खं, जहत्थतो वियरिया गुणा तुः श्री। आसि पुरा णे संका, इदाणि णीसंकियं जायं ॥१४३५॥ तत्थ वि भद्दग-पंता, दोसा नह चेव होंति णायच्या । भणिएस संथवो 📆 (दारं) विज्ञा-मंते अतो वोच्छं ॥१४३६॥ विज्ञा-मंते चतुलह आवत्तो दाण होति आयामं। विज्जा-मंतविसेसं, उद्घिंगेऽहं समासेणं ॥१४३७० विज्ञा-मंतविसेसो, विज्ञित्थी पुरिसों होति मं हो तु। अहव ससाहण िज्जा, मंत्रो पुण पहिचसिद्धो त ॥१४३८॥ विज्जाए उ णिः रसणं, जह कोई भिच्छवासयो पत्तो । साइण पिडियाणं. अह उल्लावो इमो तत्थ ॥१४३९॥ इय पंतिभच्छवासी, साहण ण देति तत्थ भणाको । जड इच्छह विज्ञाए. घय-गुल-बत्याणि दार्वीम त्र१४४०॥ पेच्छामो ति य भाष्पए. गंतुं विजनाभिमंतिओ बैति । कि देमि ? त्ती धत-गुल-बन्धाणि दिण्ण साहरणं ॥१४४१॥ अन्नेहि य सो भणिओ, किह ने दिन्नं नि भत्त-पानादी १। तो बेति तगो रहो, केण हिनं ? केण मुद्दो मि ? ॥१४४२॥ पडिविज्ज थंभणःदी, सो वा अण्णो व से करंज्जाहि । पावाजीवी मायी. कम्मणकारी य गहणादी ॥१४४३॥ मंतिम उदाहरणं, पाडलिपुत्ते मुरुंडराइस्स । उप्पण्ण सीसवेदण, पालित्तयकहण ओमज्जे ॥१४४४॥ जह जह परेसिणी जाणुयम्मि पालित्तयो भमाडेति।

विद्या-मन्त्र-दोषी विद्या-मन्त्रयो-विद्योष:

विद्याया मिक्षू-पासकः

मन्त्रे पादलिप्त-मुरुण्डराजी तह तह सीसे वियणा, पणस्सित सुरुंडरायस्स ॥१४४५॥
मंतेणं अभिमंतिय, तह चेव दवाव दिन्न कोयिं तु ।
तत्थ वि ते चिय दोसा, पिंडमंतादी इमे होन्ति ॥१४४६॥
पिंडमंतथंभणादी, सो वा अण्णो व से करेन्नाहिं ।
पावाजीवी मायी, कम्मणकारी य गहणादी ॥१४४७॥
विन्ना-मंताभिहिया,(दारं) अहुणा वोच्छामि चुण्ण-जोगादी ।
विस्करणादी चुण्णा, अन्तद्धाणंजणादीया ॥१४४८॥
चुण्णे जोगे चउलहु, आवत्ती दाणमेत्थ आयामं ।
णिदिरसणं दुण्हं पी, उल्लिङ्गेऽहं समासेणं ॥१४४९॥
दिहुंतो चुण्ण-जोगे, जह कुसुमपुरम्मि केति आयरिया ।

जंघावलपरिहीणा, ओमे सीसस्स तु रहम्मि ॥१४५०॥

पच्छण्णिटय णिसामे, अवधारे अंजणं एक्कं ॥१४५१॥

कहयंति चुण्ण-जोगा, अंतद्धाणादि तत्थ दो खुड्डा।

वीसज्जिया वि साह, गुरूहि देसंत खुडुग णियत्ता ।

चूर्ण-योग-मूल-कर्मदोषाः

> चूर्णे श्रुह्नकद्वयम्

> > आयरिएहिं य भणिता, दुद्रु कयं जं णियत्ता मे ॥१४५२॥
> > भिक्खे परिहायंते, थेराणं ओमें तेमि देंताणं ।
> > कि ओम गुरूणं तू, कुन्वामो ? खुड सामत्थे ॥१४५३॥
> > कुणिमो अंतद्धाणं, दन्वे मेलेच अञ्जयंजणया ।
> > सह भोज्ज चंदग्रते, ओमोदरियाएँ दोन्वल्लं ॥१४५४॥
> > चाणक पुच्छ इट्टालचुण्ण दारिपहणं तु धूमो य ।
> > दुर्टुं कुच्छ पसंसा, थेरसमीवे जवालंभो ॥१४५५॥
> > एवं वसिकरणादिसु, चुण्णेसु वसीकरेचु जो तु परं ।
> > उप्पाएती पिंडं, सो होती चुण्णपिण्डो तु ॥१४५६॥
> > जे विज्ज-मन्तदोसा, ते चिय वसिकरणमादिचुण्णे हिं ।
> > एगमणेगपयोसं, कुज्जा पत्थारयो वा वि॥१४५७॥

योगः

भणिएस चुण्णपिण्हो, (दारं) अहुणा बुच्छामि जोगपिंहं तु । तहियं जोग अणेगा, इणमो तू संपवक्खामि ॥१४५८॥ सुभग-दोभग्गकरा, जोगा आहारिमा य इयरे य । आर्घंस ध्रुववासो, पायपलेवायिणो इतरे ॥१४५९॥ तत्थाहरणं इणमो, अणहारिमपादलेवजोगम्मि । आभीरगविसयम्मी, जह कत सुण तावसेहिं तु ॥१४६०॥ णदि कण्ह बेण्ण दीवे, पंच सया तावसाण णिवसंति । पन्वदिवसेस कुलवइ, पालेवे लिंप पाए तु ॥१४६१॥ पाउगदुरूढ सिळलुप्परेण उत्तरिउ एति णगरं ति । आउट्ट लोग प्रया, पञ्चक्खा तेते देव त्ति ॥१४६२॥ जण सावगाण खिंसण, तहियं तु वहरमामिमाउलया। आयरियअज्जसमिता, तेसिं च णिवेदियं तेहिं ॥१४६३॥ तेहि भणिया य वचह. ते मातिद्राणि पायलेवेणं । णतिम्रत्तरंति सगिहे, जेउसिणोएण घोव्यह ण ॥१४६४॥ तेहि य सगिहे णेउं. पाय बला घोयऽणिच्छमाणाणं । किं जाणति लोगो ? त्ती, दिण्णं विणएण बहुफलयं ॥१४६५॥ पहिलाभिय वर्चता, णिव्ड णदिक्ल मिलिय समिया य । विम्हिय पंच सता तावसाण पव्वज्ज साहा य ॥१४६६॥ एमादीजोगेहिं, आउट्टावेच एसती पिण्डं । सो ण वि कप्पे (दारं) एत्तो, वोच्छामी मूलकम्मं तु॥१४६७॥ दुविहं तु मूलकम्मं, गन्भादाणे तहेव परिसाडे । दविहे वि मूलकम्मे, पश्छितं होति मूलं तु ॥१४६८॥ आटाणे अहिगरणं, पडिबंधो छोभगादिदोसा य । पाणवह साडणम्मि, छोभग पडिणीय उड्डाहो ॥१४६९॥ इय मूलकम्मेणं, पिंडो उप्पादिओ ण कप्पति तु। उप्पातेंणेस भणिया, गर्वेसणा चेव य समत्ता ॥१४७०॥दारं।

योगे ब्रह्म-द्वैपिद्यः

मूलकर्म

ग्रहणै**ष**णा

एवं त गविद्रस्ता. उग्गमज्जावणाविसद्धस्स । गहणविसोहिविसुद्धस्स होति गहणं त पिंडस्स ॥१४७१॥ उगमदोस गिहीतो. उत्पायण होइ समणउत्थाणा । गहणेसणाए दोसे, आयपरसम्रहिए बोच्छं ॥१४७२॥ दोण्णि वि समणसमुत्था, संकित तह भावतोऽपरिणयं च । सेसा अट्ट वि णियमा, गिहिणो त सम्रद्विए जाण ॥१४७३॥ सा गहणेसण चतुहा, णामं ठवणा य दव्ये भावे य । दव्वं वाणरजुर्ह, सब्वं वत्तन्त्र वित्थरयो ॥१४७४॥ दव्वस्मि एस भणिता, भावे गहणेसणं तु वोच्छामि । दसहि पदेहि सदं. संकितमादी इमेहि त ॥१४७५॥ संकित मक्खित णिक्खित, पिहित साहरण दायग्रमीसे। अपरिणय लित्त छड्डिय, एमणदोसा दस हर्वनि ॥१४७६॥ संकाए चडभंगो, पढमो गहणे य भोयणे चेव। बितिओ गहणे ण भोयणे, तितओ पुण संकितो भोगे॥१४७७॥ णीसंकिओ त चरिमे, किह पुण संका हवेडज ? जह कोई। भिक्ख पविद्रो छद्धस्मि, हिमभिक्खं विगिचेति ॥१४७८॥ किण्णु ह खद्धा भिक्खा, लद्धा ? ण य तरति पुच्छिउं तहियं । हिरिम इति संकाए. भ्रंजित इह संकितो चेव ॥१४७९॥

वीएण गहिय संक्रिय, विगडन्तऽन्ने य णवरि संघाडे । पगयं पहेणगं वा. सोउं णिस्संकिओ भुंजे ॥१४८०॥

णीसंकगाहि तइओ, विगडेन्तो णिसम्ममण्णसंघाडं ।

संका पुणाइ जारिस, लद्ध मए अग्रुगगेहम्मि ॥१४८१॥

णीसंकिअ काऊणं, ग्रंजित तं संकिओ चेव ॥१४८२॥

महती भिक्खा तारिस, एतेहि वि लद्ध किण्ण होज्जाहि १।

पढ़मो दोस्र वि लग्गो, वितिओ प्रण गहणे भोयणे तहती।

ग्रहणेषणा **दशभ**ा

शाङ्कि**तदोषः**

शङ्काचतुर्भन्नी

जं संकितमावण्णो. पणुवीसा चरिमए सुद्धो ॥१४८३॥ छउमत्थो सुतणाणी, गवेसती उज्जुयं पयत्तेणं । आवण्णो पणुवीसं, स्नुतणाणपमाणतो सुद्धो ॥१४८४॥ सग्ह सुतोवयुत्तो, सुतणाणी जइ वि गिण्हइ असुद्धं । तं केवली वि भ्रंजित, अपमाण सुयं भवे इहरा ॥१४८५॥ स्चरस अप्पमाणे, चरणाभावो ततो य मोक्खरस । मोक्खाभावाओ चिय, पयत्तदिक्खा णिरत्था य ॥१४८६॥ सोलस उग्गमदोसा, णव एसणदोस संकमेतृण । ५ ग्रवीसेए दोसा, संकियमासंकिओ वोच्छं ॥१४८७॥ जइ संका दोसकरी, एवं सुद्धं पि होति तु असुद्धं । णीसंकमेसियं नि व. अणेसणिज्जं पि णिहोसं ॥१४८८॥ भण्णति संकियभावो, अविसृद्धो अपहितेकतरपक्ले । एमि पि कुणयऽणेसि, अणेमिमेसि विसुद्धो तु ॥१४८९॥ णिस्संक काउ तम्हा, भोत्तव्वं संकियं भणितमेयं ।दारं। मक्खितमिदाणि वोच्छं. मक्खित जं होति संसत्तं ॥१४९०॥ दुविहं च मिक्खतं खलु, सिचनं चेव होइ अचित्तं। सिचतं तत्थ तिहा, पुढवी आङ य वणकाए ॥१४९१॥ पुढवीससरक्वेणं, हत्थे मत्ते व सुक्वे पणगं तु । आवत्ती दाणं पुण, णिन्वितियं होति दातन्त्रं ॥१४९२॥ कदममिक्वयमीसे, लहुगो णिम्मीसे होन्ति लहुगा तु। लहुमासे पुरिमहूं, चतुलहुए होति आयामं ॥१४९३॥ ससणिद्धदुउन्ने या, पुर-पच्छाकम्म मक्खियं चतुहा । उक्कृष्ट-पिट्ट-कुक्कुसमिक्खतमेवादि वणकाये ॥१४९४॥ ससणिद्ध इत्थमत्ते, पणगं आवत्ति दाण णिव्विगई। उदउक्के मासलहुं, आवत्ती दाण पुरिमड्ढं ॥१४९५॥

म्रक्षितदोष:

पुरकम्म पच्छकम्मे, आवत्ती चतुल्रह् मुणेतन्वा । दाणं आयामं तू, वणकाय अतो तु वोच्छामि ॥१४९६॥ उकट्ट-पिट्ट-मिक्लय, परित्तहत्थे य मत्त सिच्चिते। मासलहू आवत्ती, दाणं पुण होति पुरिमहं ॥१४९७॥ एते चेव उ मिक्लिए, इत्थे मत्ते य होन्तऽणन्तेसु । आवत्ती मासग्रुरं, दाणं पुण होति भत्तेक्कं ॥१४९८॥ छिंदंती एव सागं. छिंदंती एव जं रसोलितं। उक्कट्टमक्खितेतं, परित्तऽणंतेण वा होज्जा ॥१४९९॥ सेसेहि त काएहिं, तीहि वि तेऊ-समीरण-तसेहिं। सिचतमीसएण व, मिक्खित ण विवज्जए किंचि ॥१५००॥ सचित्त मिक्खयम्मि उ, इत्थे मत्ते य होति चउभंगो । पहमिम दो वि मक्खिय, इत्थो वितियम्मि ण वि मत्तो॥१५०१॥ तितए मत्तो मिक्खतो, ण वि हत्थो चरिमए ण एको वि । आदितिए पहिसेहो, चरिमो भंगो अणुण्णातो ॥१५०२॥ अचित्तमक्खित दुहा, गरहितद्व्वेण वा वि इतरेणं। गरहित होति दुहा तु, लोगे तह उभययो वा वि ॥१५०३॥ मंस-वस-सोणिया-८८सव-लसुणादी गरहिएस लोगम्मि । म्रतपुरीसादीहिं, गरहियमेयं भवे उभए ॥१५०४॥ दविहे त गरहिए त, आवत्ती चडलह मुणेनच्या। दाणं आयामं तु, अगरहितेत्तो पवक्खामि ॥१५०५॥ अगरहिय कूरकुसणं, गोरस-घत-तेल्लमादीहिं जं तु । संसत्तमसंसत्तं, द्विहं पि य होति णायव्वं ॥१५०६॥ अचित्तमिक्खयम्मी, चउस्र वि भंगेस्र होति भयणा तु । अगरहिएण त गहणं, पडिसेहो गरहिए होति ॥१५०७॥ संसज्जिमेहिं वज्जं, अगरहिएहिं पि गोरसदवेहिं। मधु-घत-तेल्ल-गुलेहि य, मा मच्छि-पिवीलियाघाओ ॥१५०८॥

गोरससंसत्ते या. घत-तेल्ल-गुलादि-कीडिसंसत्ते । चतुळडुगा आवत्ती, दाणं पुण होति आयामं ॥१५०९॥ लोइयगरहित मज्जा-मंस-वसादी हिं मिक्ख्यं जं तु । नवरं पुराण भाविअ, देसिं व पडुच गहणं तु ॥१५१०॥ दोहिं पि गरहिएहिं. मुनुचाराइ होइ अग्गहणं। मक्खित भणितं एयं. एत्तो वोच्छामि णिक्खितं ॥१५११॥ णिक्सितं उवियं ति य, एगट्टं ठाणमग्गणा एत्थं। र्त तिविद्द होति ठाणं. सिच्चित्तं मीस अचित्तं ॥१५१२॥ एत्थं चतुभंग भवे, सिचतादी अणेगह इमो तु। सचित्तं सचिते. सचित्तं मीसे वऽचिते वा ॥१५१३॥ मीमं वा समचित्ते. सीमं भीसे व होति णिविखत्तं। चिन्णं मीसेण य. एवंको होति चउभंगो ॥१५१४॥ अहणा चित्ताचित्ते, चित्तं चित्तम्मि होति णिक्खेवो। चित्तं वा अचित्ते. अचित्त चित्तोभयमचित्तो ॥१५१५॥ अहुणा मीसं मीसे, मीसमचित्ते अचित्त मीसम्मि। अचित्तं अचित्ते, तिनएसां होति चत्रभंगो ॥१५१६॥ चत्रभंगेसेतेसं. संजोगाऽणेगहा मुणेयव्या पुढवादिएस छस्स्र वि. काएस सठाण परठाणे ॥१५१७॥ सचित्तपुदविकाए, सचित्तो चेत्र पुदवि णितिखत्तो । सचित्तं अचित्तो. अचित्ते वा वि सचित्तो ॥१५१८॥ अच्चित्ते अच्चित्तो. सद्राणे एस होति चउभंगो। परठाणे पंचडण्णे. आऊमादीसिमे होन्ति ॥१५१९॥ सचित्तपुढिवकाओ, सन्चित्ताउम्मि होति णिविखतो । सच्चित्तो अच्चित्ते, अच्चित्तो चैव सच्चित्ते ॥१५२०॥ अस्वित्तो अस्विते, एवं सेसेसु तेउमादीसुं। संजोगा णेतव्वा. पंचस परठाणे चडभंगो ॥१५२१॥

निक्षिप्तदो**षः**

एमेव आड-तेऊ-वाड-वणस्सति-तसाण चतुर्भगा । एकेके विण्णेया, छ च्चतुभंगाण संजोगा ॥१५२२॥ चित्ते सच्चित्तेणं, ते छत्तीसं हवंति संजोगा। अच्चित्तमीसएण वि एवतिया चेव संजोगा ॥१५२३॥ मीसे अच्चित्तण वि. एवतिय च्चिय हवंति संजोगा । तिण्णि वि छत्तीसा तू , मिलिया अइत्तरसर्य तु ॥१५२४॥ अहवण सचित्तमीसा, य एगयो एगयो य अध्वित्तो। एत्थं चतुभंगो तू, तत्थाऽऽदिनिए कहा णित्थ ॥१५२५॥ जं पुण अचित्तद्वं. णिक्लिपति चेयणेमु कायेमु । तहिं मगगणा त इणमो. अणंतर परंपरा होति ॥१५२६॥ चित्तपुढविइ अणंतर, ओगाहिमगाइ होति णिक्मिवनं। होती परंपरं पुण, पिहडगयं जं तु पुढविठियं ॥१५२७॥ उदगमणंतर णवणीयमादि पारंपरं त णावादी । ते उ अणंतर पारंपरं य द्यमा इमे सत्त ॥१५२८॥ विज्ञायसम्प्रितिगालमेव अप्पत्तपत्तसमजाले। बोलीणे सत्त दुगा, एते तु अर्णंतर परे य ॥१५२९॥ विज्ञाउ ति ण दीसति, अगी दीसति य इंघणे छहे। छारुम्मीसा पिगल, अगणिकणा मुम्मुरो होति ॥१५३०॥ णिज्जाला हिलिहलया, इंगाला ते भवे मुणेतन्वा । होति चडत्थो भंगो, ते जालाऽपत्तपिहडं तु ॥१५३१॥ पंचम पत्ता पिहुडं, छट्टम्मि य होति कण्णसमजाला। सत्तमए समतीया. अणंतरा होति सत्तस वी ॥१५३२॥ पारंपर पिहडादिमु, अगणीघहादि तन्थ दौसा तु। भयणा तु जंतचुल्लिसु, इणमो तु निह सुणैयव्वा ॥१५३३॥ पासोलित कडाहे, परिसाडी णत्थि तं पि य विसाछं। सो वि य अचिरच्छ्नदो, उच्छरसो णाइउसिणो य ॥१५३४॥

गहणमघट्टिय कण्णे, घट्टित छारादिपडण अग्गिवहो । उसिणोदगस्स गुलरसपरिणामिय गहणऽणच्चुमिणे ॥१५३५॥ दुविह विराहण उसिणे, छड्डण हाणी य भाणभेदो य। अच्चुसिणार्तो ण घेष्पति, जंतोल्लितेस जयणा तु ॥१५३६॥ वाउक्तिताणंतर, पष्पडिगादी तु होति णायव्या । वित्थि दितिपूरिओवरि, पनिद्विय परंपरं होनि ॥१५३७॥ इरियादि अर्णतर पूरियाड पारंपरं पिहडमादी । गोणादिपिष्ट पूत्राद्रणंतरे भरगकुतिगितरं ॥१५३८॥ सद्वं ण कप्पएयं, णिक्यित्त समासनो समक्खानं । पुढवादीणं एत्तो, आवत्ती दाण बोच्छामि ॥१५३९॥ पुढवादी जाव तसे, अर्णनवणकाय मोत्तु णिक्खित्ते । संति अणंतर लहुगा, परंपरे होति मासलहुं ॥१५४०॥ चतुलहुए आयामं, मासलहू दाण होति पुरिमट्टं। एयं सच्चित्तम्मि, भणियं मीसे अतो वोच्छं ॥१५४१॥ एतेमु चेत्र पुढवादिएसु मीसे अगंतरं लहुओ । होति परंपरं पणगं, दाणं एत्तो तु वोच्छामि ॥१५४२॥ लहुमासे पुरिमट्टं, पणगे पुण दाण होति णिव्तिगतिं। वणकायमणंतेमुं, आवत्ती दाण वोच्छामि ॥१५४३॥ वणकायअणंतेमं, णिक्खित अणंतरं तु चतुगुरुगा। होति परंपरि गुरुओ, दाणं तु अतां तु वोच्छामि ॥१५४४॥ चतुगुरुए तु चउत्थं, गुरुमासे दाणमेगभत्तं तु । आवत्ती दार्ण पि य. पिहियम्मि अतो उ वोच्छामि॥१५४५॥ पिहियाणंताऽणंतर, परंपरे चेव होति गुरुपणगं। लहुपणगं तु परित्ते, दोसु वि दाणं तु णिन्त्रिगती ॥१५४६॥ आवत्ती दाणे वा. पुढवादीणिक्लिवंन भणियं तु। एतो समासयो च्चिय, पिहिनद्दारं पत्रक्लामि ॥१५४७॥

पिहितदोष:

सच्चित्तादिस्र अच्चित्तपिहिय चतुर्भग तह य संजोगा। जह भणिया णिक्खित्ते. तह चैव य होन्ति पिहिते वि ॥१५४८॥ सचित्त मीस एको, एकं तोऽचित्त एत्थ चउभंगो। आदिदवे पहिसेहो. तिनष भंगिम मगगणया ॥१५४९॥ अच्चित्त सचित्तेणं, अतिरं सतिरं च जं भवे पिहितं। पुढवादिएस छस्स वि. लोहादी अतिर पुढवीए ॥१५५०॥ पच्छिय-पिहुडादिऽतिरं, ओगाहिमगादिऽणंतरं होति। बद्धणियादि परंपर, अगणिकाए इमं होति ॥१५५१॥ अतिरं अंगाराई, तहियं पुण संतरो सरावादी । तत्थेव अतिर वायु , परंपरो वित्थणा पिहिते ॥१५५२॥ अइरं फलादिपिहियं, वणम्मि इतरं त पच्छि-पिहडादो । कच्छवसंचारादी, अतिरतिरं पच्छियादीहि ॥१५५३॥ तइए भंगे मग्गण, भणिएस चउत्थभंगभथणा तुः अच्चित्त अच्चित्तेणं, पिहिएका भयण ? सुणसु इमा ॥१५५४॥ चतुर्भगो पिहिएणं, गुरुषं गुरुएण लहुअ (गुरुअ) लहुएणं । लहुयं गुरुएण तहा, लहुवं लहुएण चरिमो तहिं गज्झो॥१५५५ पुढवादीणं कमसो. आवत्ती दाण जह तु णिक्यिते ! आयविराहण गुरुयं, ति कातु णवरं तु चउगुरुवा ॥१५५६॥ एत्थ उ दाण चत्रन्थं, एतो बोच्छामि साहरणदारं। साहरणं उक्तरणं. विरेयणं चेत्र एगई ॥१५५७॥ मत्तेण जेण दाहिति, तत्थ अदे जं त हो ज जं दव्वं। तं साहरितं अण्णहि, मत्तेणं देइ साहरणा ॥१५५८॥ सा प्रण छम्र णातव्वा, सचित्रमीसा तहेव अच्चित्रा। एत्य वि जह णिक्खित. भंगा संजोग तह चेव ॥१५५९॥ सच्चित्तमीस आदिल्लएसु दुसु णित्थ मगगण विवेगो । तितयम्मि मग्गणा त्, छस्र भोमादीस् साहरणे ॥१५६०॥

संहतदोषः

द्वायकदोष:

चरिमे भंगे भयणा, जं दुइमचित्त का तहिं भयणा ?। भण्णइ सुणस तिहयं, चडभंगो होति इणमो तू ॥१५६२॥ सुक्के सुकं पढ़मं, सुक्के उल्लं तु बितियओ भंगो । उल्ले सुक्खं तहओ. उल्ले उल्लं चउत्थो तु ॥१५६२॥ एक्केक्के चडभंगो, सकादीएस चउस भंगेस । थोवे थोवं थोवे, बहुयं बहु थोव बहु बहुगं ॥१५६३॥ जत्थ तु थोवे थोवं, सुक्खे उल्लं च छभति तं गड्यं । जित तं तु समक्तिल्तं, थोवाहारं दळइ मर्च (अन्नं) ॥१५६४॥ सेसेय तीसुं पी, दाता भंगेस होति णातव्यो । थोव बहुं बहुग थोबो, बहु बहुगो चेव इणमो तु ॥१५६५॥ उक्खेवे णिक्खेवे, महल्लभाणिम्म खुद्ध वह डाहो। छकायवही य तहा, अचियत्तं चेव बोच्छेदो ॥१५६६॥ योवे थोवं छढं, सक्खे उरलं त उरले सुक्खं तू । बहुगं तु अणाइण्णं, कडदोसो सो त्ति कातूणं ॥१५६७॥ साहरणेयं भणियं, आवत्ती दाण जह तु णिक्खित । दायगदारं अहुणा, समासओ हं पवक्खामि ॥१५६८॥ बाले बुट्टू मत्ते, उम्मत्ते वेविए य जरिए य । अंधेल्लए पगलिए, आरूढे पाउयाहिं च ॥१५६९॥ इत्थंद-णियलबद्धे, विर्वाज्जए चेव इत्थ-पाएहिं। तेरासि गुन्त्रिणी बालवच्छ भुंजंति घुनुर्छेती ॥१५७०॥ भज्जेन्ती य दलेन्तो, कंडेन्ती चेत्र तह य पीसेन्ती । पिज्जंती रुंचंती, कत्तंती पगडूमाणी (पमदमाणी) य ॥१५७१॥ छकायवग्गहत्था, समणद्वा णिक्खिवितु ते चैव। ते चेवागाहेन्ती. संघट्टेंताऽऽरभंती य ॥१५७२॥ संसत्तेण तु दब्वेण लित्तहत्था य लित्तमत्ता य ।

ओयत्तेन्ती साहारणं च देन्ती य चोरिययं ॥१५७३॥ पाहृहियं च ठवेन्ती, सपश्चवाया परं च उहिस्स । आभोग अणाभोगेण दलंती वज्जणिज्जा उ ॥१५७४॥ एतेसि दायगाणं. गहणं केसिंचि होति भइयव्वं। केसिची अमाहणं, तप्पडिवबखे भवे गहणं ॥१५७५॥ एते दायगदोसा, एतेहिं दिज्जमाण ण वि कप्पे। जे त अकारणे गेण्हे. पच्छित्तं तेसि वोच्छामि ॥१५७६॥ बाले बुट्टे मत्ते, उम्मते वेविए य जरिए य। एतेर्सि मासलहं, आवत्ती दाण पुरिमट्टं ॥१५७७॥ अंघेछ-पगलियादी, जाव तु दारं तु बालवच्छ ति । पत्तेयं चतुगुरुगा, दाणं पुण होयऽभत्तद्रं ॥१५७८॥ भुंजण-घुमुलेन्तीए, आवत्ती चतुल्रहू मुणेयन्ता । दाणं आयामं ती. भज्जणमादी अतो बोच्छं ॥१५७९॥ भज्जन्ती य दलंती, जाव त छवकायवग्गहत्थ ति । समणहा ते चेव त. णिक्खिव आगाह घट्टनी ॥१५८०॥ एत्थ तु विसरिसदाणं, पच्छितं होति कायणिष्फण्णं । सेसेसुं दारेसुं, चतुलहुगा दाणमायामं । १५८१॥ एते दायग भणिता. एत्रो उम्मीसयं पवक्खामि । उन्मिश्रहोषः तं तिह सचित्त मोसग, अच्चित्तेणं च उम्मीसं ॥१५८२॥ जह चेव य संजोगी, कायाणं हेट्टओ त साहरणे। तह चैव य उम्मीसे, होति विभागो णिरवसेसो ॥१५८३॥ चोएति को विसेसो. साहरणुम्मीसयाण दोण्हं पि १। भण्णति साहरणं तू, भिक्खट्टा भत्तयं रेये ॥१५८४॥ उम्मीसं पुण दायव्वयं च दो वेते मीसितुं देजा। बीय हरियाइएहिं, जह ओदण-कुसणमादीणि ॥१५८५॥ तं पि य सुक्ले सुक्लं, भंगा चत्तारि जह तु साहरणे ।

अप्पब्हुए वि चलरो, तहेव चाइण्णऽणाइण्णं ॥१५८६॥ जम्मीस भणियमेयं, एत्तो वोच्छामि परिणयं दुविहं। दन्वे भावे य तहा, दन्वे पुढवादि छक्कं तु ॥१५८७॥ जीवत्तिम्य अविगते. अपरिणयं परिणयं गते जीवे । दिट्टंतो दुद्ध दही, इय अपरिणयं परिणयं चेव ॥१५८८॥ दव्वे अपरिणयम्मी, पिचछत्तं होति कायणिष्फणं। भावे अपरिणनं पुण, एत्तो वोच्छं समासेणं ॥१५८९॥ सिन्झिल्लगादिणं तू , अहवा अण्णेहिं होति सामण्णं । तत्थेगस्स परिणतो, भावो देमि त्ति साहस्स ॥१५९०॥ सेसाण ण वि परिणयो, अपरिणयं भावतो भवे एयं। अहवा वि दाणमण्णं, अपरिणयं भावतो होति ॥१५९१॥ संघाडग हिंडंतो. एगस्स गणम्मि परिणयं एमी बितिएण त परिणमती. तं पि अघेत्तव्य मा कलहो ॥१५९२॥ पढिमिल्छुग भावम्मी. अप्परिणयगेण्हणे त लहुमासो। तस्सावत्ती भवति, दाणं पुण होति पुरिमहूं ॥१५९३॥ भणित अपरिणयमेयं, एत्तो बोच्छामि लित्तदारं द्व । लित्त क्मि जत्थ लेवो, लब्भित क्रुसणाभिदव्यस्स ॥१५९४॥ तं खळ ण गेण्डियव्वं, मा तहियं होज्ज पच्छकम्मं त । तम्हा उ अलेवकडं. णिप्पावादी गहेतव्वं ॥१५९५॥ इति उदिते चोएई, जदि पच्छाकम्मदोस एवं तु । तो ण वि भोत्तव्वं चिय. जावज्जीवाए भणति गुरू ॥१५९६॥ को कल्लाणं नेच्छति, आवस्सगजोग जदि ण हायंति। तो अच्छत् मा भ्रंजत्, अह ण तरे तत्थ भंगऽहा ॥१५९७॥ संसद्रहत्य-मत्ते, सन्वम्मी सावसेस भंगऽहा। गहणं त सावसेसे, सेसयभंगेस्र भयणा यु ॥१५९८॥

अपरिणतदोषः

लिप्तदोष:

छर्दित**दोषः**

संसत्तहत्य-मत्ते, छित्ते लहुगा तु दाणमायामं। अवसेस लि..... उ, दाणं पुण होति पुरिमहूं ॥१५९९॥ लितं ति गतं एयं, एत्तो बोच्छामि छड्डियं अहुणा। तं पि तिह छिड्डियं तू, सचित्त मीसं च अच्चित्तं ॥१६००॥ छड्डिएँ चडलडुगा तू, आवत्ती दाण होति आयामं। अहव सचित्तादीणं, आवत्ती कायणिष्फण्णं ॥१६०१॥ सच्चित्त मीसए या. चडभंगो छङ्कणस्मि इत्थ भवे। चडभंगे पहिसेहो. गहणे आणादिणो दोसा ॥१६०२॥ उसिणस्स छड्डणे देन्तओ व ढज्झेज्ज कायडाहो वा । सीयपडणस्मि काया. पहिए महर्बिद्ञाहरणं ॥१६०३॥ छड्डिय भणियं एयं. गहणेरुण एस परिसमत्ता तु । गहितस्स अतो विहिणा, वासेसण पत्तमहुणा उ ॥१६०४॥ सा चत्रहा णामादी. सन्वं वण्णेत्त एत्य दारम्मि । एतस्सेवोवणयं, वोच्छामि इमं समासेणं ॥१६०५॥ मच्छत्थाणी साह, मंसत्थाणी य भत्तपाणं तु । रागादीण समुदयो, मच्छियथाणी मुणेतच्वो ॥१६०६॥ जह ण छिळिओ तु मच्छो, उवायगहणेण एव साह वि। अप्पाणमप्पण चिय, अणुसासे भ्रंजभाणो उ ॥१६०७॥ बायालीसेसणसंकडिम गेण्हंतों जीव ! ण सि छलितो । एण्डि जह ण छलिजासि, भुंजंती राग-दोसेहि ।।१६०८॥ घासेमणा त भावे. होति पसन्था य अप्पसत्था य। अपसत्था पंचिवहा, तन्विवरीता पसत्था त ।।१६०९॥ संजोइय अइबहुयं, संगाल सधुमयं अणट्टाए । पंचिवह अप्पसत्था, तिववरीता पसत्था तु ॥१६१०॥

संजोयणेत्य दविहा, दब्वे भावे य दब्वे बहियंतो ।

भिक्खं चिय हिण्डंता. संजोए बाहिरेसा तु ॥१६११॥

प्रासेषणा

सं योजनादोष

34]

खीर-दहि-कट्टरादिण, छंभे ग्रह-सालि-कर-घतमादी। जातित्ता संजोए. हिण्डंतंतो अतो वोच्छं ॥१६१२॥ अंतो तिह पादम्मी, लंबण वयणे य होइ बोद्धव्वं। जं जं रसोवकारिं, संजोययए तु तं पाए ॥१६१३॥ वाळंक-वहग-वाइंगणादि संजोए लंबणेण समं। वयणम्मि छोद्द लंबण, तो सालणगं छमे पच्छा ॥१६१४॥ दव्यम्मि एस संजोयणा त संजोएं जं त दव्याई। रसहेडं तेहिं पुण, संजोयण होति भावम्मि ॥१६१५॥ संजोएन्तो दव्वे, राग-होसेहिं अप्पगं जोए। राग-होसणिमित्तं, संजीययए त तो कम्मं ॥१६१६॥ कम्मेहिंतो य भन्नं, मंजीययए भन्नातु दुनखेणं। संजोययए अप्पं. एसा मंजोयणा भावे ॥१६१७॥ रसहेडं पडिकुट्टो, संजोयो कप्पए गिलाणहा । जस्स व अभत्तछंदो. सहोडओं अभावितो जो य ॥१६१८॥ अहव ण जाई टब्बं, पत्ते य घयादिगा वि मेलंति । सत्त्रामादीहि समं, मा होतु विगिचणीयंति ॥१६१९॥ अंतो बहि चउगुरुगा, बिनियाएसेण बाहि चउलहुगा। चउगुरुगेऽभत्तर्द्धं, चउलह्गे होति आयामं ॥१६२०॥ संजोयण भणिएसा, अहुण पमाणं भणामि आहारे । जावतियं भोत्तव्वं, साहहि जावणद्वाए ॥१६२१॥ बत्तीसं किर कवला, आहारो कुन्छिपूरओ भणिओ। पुरिसस्स महिलियाए, अट्टावीसं भवे कवला ॥१६२२॥ चउवीस पंडगस्सा, ते ण गहिन जेण पुरिस-इत्थीणं। पन्वज्ज ण पंडस्स उ, तम्हा ते ण गहिना एत्थं ॥१६२३॥ एतो किणावि हीणं. अद्धं अद्धद्धगं च आहारं। साहस्स बेन्नि धीरा. जायामायं च ओमं च ॥१६२४॥

प्रमाणदोषः

पकामं च णिकामं च. जो पणियं भत्त-पाणमाहारे । अतिबहुयं अतिबहुसो, पमाणदोसो मुणेयव्वो ॥१६२५॥ बत्तीसाउ परेणं. पकाम णिचं तमेव त णिकामं। जं पुण गलंतणेहं. पणीतिमिति तं बुहा बेंति ॥१६२६॥ अतिबहुयं अतिबहसी, अतिष्पमाणेण भीयणं भ्रुत्तं । हादेज व वामेज व. मारेज व तं अजीरंतं ॥१६२७॥ णियगाहारादीयं, अइबहुयं अइबहुसों तिण्णि वारा उ । तिण्ह परेण त जं त, तं चेव अतिष्पमाणं त ॥१६२८॥ अहवा अतिष्पमाणो, आतुरभुनो तु भ्रंजए जं तु । तं होति अतिपमाणं, हादणदोमा उ पुच्युत्ता ॥१६२९॥ जम्हा एते दोसा. अतिरित्ते तेण होति चतुलहुगा। आवत्ती दाणं पुण. आयामं होति णायव्यं ॥१६३०॥ दोसा अतिष्पमाणे, तम्हा भोत्तव्व होति केरिसयं ?। भण्णति सुणमु जारिस, भोत्तव्वं होति साहृहि ॥१६३१॥ हियाहारा मियाहारा. अप्पाहारा य जे णरा । ण ते विज्ञा चिगिच्छंति, अप्पाणं ते चिगिच्छगा ॥१६३२॥ हितमहितं होति दहा. इह परलोगे य होति चडभंगो। इहलोग हिनं ण परे, किंचि परे णेय इहलोए ॥१६३३॥ किचि हित्रमभयलोए, णोभयलोए चतुत्थओ भंगो। पढमगभंगो तहियं. जे दव्वा होन्ति अविरुद्धा ॥१६३४॥ जह खीर-दहि-गुलादी, अणेसणिज्ञा व रत्तदुढे वा। शुंजंते होति हियं, इहई ण पूणाइ परलोए ॥१६३५॥ अमण्णोसणसुद्धं, परलोगहितं ण होति इहलोगे। पत्थं एमणसुद्धं, उभयहियं होति णातन्त्रं ॥१६३६॥ अहितोभयलोगम्मी, अपन्थदन्वं अणेसणिज्जं च ।

अहवा वि रत्तदुद्दी, भुंजति एत्ती मियं वीच्छं ॥१६३७॥ अद्धमसणस्य सर्व्वजणस्य कुज्जा दवस्य दो भाष् । वायुपवियारणद्वा, छन्भागं ऊणगं कुज्जा ।।?६३८।। सीयो उसिणो साहारणो य कालो तिहा मुणेयन्त्रो । एएसुं तीसुं पी, आहारे होतिमा मत्ता ॥१६३९॥ एगो दवस्स भागो, अवद्वितो भोयणस्स दो भागा। बहुंति व हायंति व, दो दो भागा तु एक्केक्के ।।१६४०॥ एत्थ तु ततियचतुत्था, दोण्णि वि अणवहिता भवे भागा। पंचम छट्टो पढमो, वितिओ य अवद्विता भागा ॥१६४१॥ एयं तु मियं भणियं, एतो वी हीणगं भवे अप्षं। एय पमाणाऽभिहितं, संगालादी अतो वोच्छं ॥१६४२॥ संगाले चउगुरुगा, आवती दाण होयऽभत्तहं। चउलहुगा तु सधूमे, आवत्ती दाणमायामं ॥१६४३॥ णिकारण भुंजन्ते, एत्थ वि लहुगा तु दाणमायामं । वितियादेसे लहुओ, आवत्ती दाण पुरिमट्टं ॥१६४४॥ ण वि भुंजइ कारणतो, एत्थ वि लहुगा उ दाणमायामं । सेंगालादिण कमसो. सरूविमणमो पवक्खामि ॥१६४५॥ जह इंगाला जलिया, डहंति जं तत्थ इंघणं पहियं। इह चिय रागिंगाला, डढंति चरणिथणं णियमा ।१६४६॥ रागेण सइंगालं, जं आहारेइ मुच्छिओ साह । सुदु सुसंभित णिद्धं, सुपक सुरसं अहो सुरहि ॥१६४७॥ रागग्गीपज्जलिओ, धुंजंतो फासुयं पि आहारं। णिइ हिंगालणिमं, करेति चरणिषणं खिप्पं ॥१६४८॥ भणितं संगास्त्रेयं, अहुणा बोच्छं सधूमगं पगते ।

केवलवियणं तं तु, धूमायंतं तहा छगेणं ॥१६४९॥

अजग्रदोषः

धूमदोष:

जह वा वि चित्तक्रम्मं, धूमेणोरत्तयं ण सोभइ छ। तह धुमदोसरतं, चरणं पि ण सोभए मइलं ॥१६५०॥ दोसेण सधूमं तू, जं आहारेति साहु णिंदंतो। विरसमलोणं कृहितं. रोरो भोक्खेति णं एयं ॥१६५१॥ दोसग्गी वि जलंतो, अप्पत्तियधूमधूमियं चरणं। अंगारमेत्तसरिसं, जा ण भवति णिइहति ताव ॥१६५२॥ रागेण सईगालं, दोसेण सधुमगं मुणेयव्वं। राग-होससहगतं, तम्हा तु ण होति भोत्तव्वं ॥१६५३॥ आहारंति तबस्सी, विगतिगालं च विगयधूमं च। ञ्चाण-ऽज्ञ्चयणणिमित्तं, एसुवएसो पवयणस्स ॥१६५४॥ भणितं सधुममेयं, एतो वोच्छामि कारणहारं तं पुण पडिक्कमंतो, चरिग्रुस्सग्गे विचिन्तेति ॥१६५५। भोत्तव्व कारणम्मी, किं अन्धि अहव नन्धि जइ अन्धी। तो भुंजेज्जा साहू. के पुण ते कारणा ? सुणसु ॥१६५६॥ छहिं कारणेहिं साह, आहारंतो उ आयरति धम्मं। छहिं चेव कारणेहिं, णिज्जृहंनो यु आयरित ॥१६५७॥ वेयण वेयावचे, इरियट्टाए य संजमट्टाए । तह पाणवत्तियाए, छट्टं पुण धम्मचिन्ताए ॥१६५८॥ णित्थ छुहाएँ सरिसिया. वियणा भुंजेज्ज तप्पममणट्टा । छादो वेयावच्चं, ण तरति काउं अयो भुंजे ॥१६५९॥ इरियं च ण सोहेती, खुहितो भमलीय पेच्छ अन्धारं। थामो वा परिहायइ, पेहादी संजमं ण तरे ॥१६६०॥ आयु-सरीर-प्पाणादि छव्विहे पाण ण तरती मोत्तं । तद्धारणट्टतेणं, भ्रंजेज्जा पाणवत्तीयं ॥१६६१॥ धम्मज्ञाणं ण तरति, चिन्तेउं पुन्वरत्तकालम्मि । अहवा वी पंचिवहं, ण तरति सज्झाय काउं जे ॥१६६२॥

कारणदोष:

एतेहिं कारणेहिं. छहिं आहारेति संजतो णियमा । छहि चेव कारणेहिं, णाहारेती इमेहिं तु ॥?६६३॥ आतंके उवसागे, तितिक्खया बंभचेरगुत्तीए। पाणिदया-तवहेळ. सरीखोच्छेयणद्वाए ॥१६६४॥ आयंको जरमादी, तम्मुष्पण्णे ण ग्रुंजे भणितं च। सहस्रपदया वाही. वारंजना अद्रमाटीहिं ॥१६६५॥ राया सण्णायादी, जवसम्मो तम्मि वी ण भ्रंजेज्जा । सहणद्वा त तितिकखा, वाहिज्जंते त विसप्रहि ॥१६६६॥ भणिनं च जिणिदेहिं. अवि आहारं जती ह वोचिंछदे। लोगे वि भणिय विसया, विणिवत्तेते अणाहारे ॥१६६७॥ तो बभरक्खणहा, ण वि भ्रंजेज्जा हि एवमाहारं। पाणदय वास महिया. पाउसकाले व ण वि भ्रंजे ॥१६६८॥ तवहेतु चउत्थादी. जाव तु छम्मासिओ तवो होति । छट्टं णिच्छिण्णभरो, छड्डेतमणो सरीरं त ॥१६६९॥ असमत्थों संजमस्स उ. कतिकचीवक्खरं व तो देहं। छड़मि त्ति न भुंजर, सन्बह वोच्छेय आहारं ॥१६७०॥ घासेसणा सम्मत्ता ॥ मृलाह--सोलम जगमदोसा. सोलस जपादणाएँ दोसा तु। दस एसणाएँ दोसा, संजीयणमादि पंचेव ॥१६७१॥ सीयास्त्रीसं एते, सन्वे वी पिंडिता भवे दोसा । जेहिं अविसुद्ध पिंडे, चरणुवघातो जतीण भवे ॥१६७२॥ एतहोसविग्रको, भणिताऽऽहारो जिणेहिं साहणं। धम्मावस्सगजोगा, जेण ण हायंति तं कुज्जा ॥१६७३॥ उग्गममादीणं तू , कारणपञ्जन्तपत्थडो एस । लक्खण आवत्ती दाणमेव कमसो समक्खायं ॥१६७४॥

पिंडपत्थारो । अहुणा गाइत्थो--

गायाया अर्थः अहुणा गाहाणं तु, वोच्छामी अक्खरत्थमिणमो तु। उद्देस कम्म मोर्चुं, चरमितयं होति सेसं तु ॥१६७६॥ पासंडाणं पढमं, बितियं समणाण ततिय साधृणं । चरिमतियं एवं तू, कम्मं ती आहकम्मं तु ॥१६७६॥ पासंड मीसजाए, साहूमीसे य सघरमीसे य। बायरपाहुडिया तू, विवाह उस्सक ओसका ॥१६७७॥ आहड सपचवायं, विराहणा जत्थ होति आयाए । लोमेण जो उ एसति, सो होती लोभपिंडो तु ॥१६७८॥ सब्बेसु वि एतेसु, उद्देसिगमादिलोभपन्जंते । पत्तेयं पत्तेयं, सोही एत्थं तु भत्तद्वं ॥१६७९॥३५॥ अतिरं अणंतणिक्खित्त-पिहिय-साहरिय-मीसियादीसुं। संजोग सइंगाले, दुविह णिमित्ते य समणं तु॥३६॥ अतिर णिरंतर भण्णति, अणंतकायो तु होनि वणकायो । पूर्वालमादी किंची, णिक्खितं होति एत्थं तु ॥१६८०॥ विहितं अणंतकाए, साहरियमणंतमीसियं वा वि। आदिगाहणेणं पुण, अपरिणएऽणंतकाए वि ॥१६८१॥३६। कम्मुद्देसिय-मीसे, धायादि-पगासणादिएसुं च। पुर-पच्छकम्म-कुच्छिय-संसत्तालित्तकस्मते ॥३७॥ जावंतिकम्म पढमे, जावंतियमीसजायमादिहे । पंचिवह धार्तिपिंडे, खीरादी अंकपज्जन्ते ॥१६८२॥ आदिग्गणेणं पुण, द्तीपिंडे णिमित्ततीए य। आजीव वणिमपिंडो, बाद्रतेगिच्छणाहि च ॥१६८३॥ कोहे माणे य तहा, संबंधी वयणसंथवे थीसु । विज्ञा मंते चुण्णे, जोगे एमेते आदिपदा ॥१६८४॥

पादोकरण पगासे, दन्वे कीए य आयपरकीए। भावे त आयकीते. लोडयपामिचिएसं च ॥१६८५॥ लोइयपरियट्टे बी, परगामे आहडम्मि णिरवाते । पिहिजन्मिण्णसचित्ते, तह य कवाडे य णायव्वे ॥?६८६॥ मालोहरमुकोसे, अच्छेज्जे तह य होति अणिसट्टे। एमेते त पगासणमादिपदा होति णायच्या ॥१६८७॥ पुरकम्म पच्छकम्मे, कुच्छियद्व्येण मिक्खियं जं तु । संसत्तदव्यल्चि, इत्थे मत्ते व णातव्वं ॥१६८८॥ एतेस जहहिद्दो. कम्मादिस लित्तपज्जवसिएस। पत्तेयं पत्तेयं, सोही एत्यं त आयामं ॥१६८९॥३७॥ अतिरं परित्तणिक्लित्त-पिहिय-माहरिय-मीसियादीसु। अइमाण-धूम-कारणविवज्जए विहियमोयामं ॥३८॥ अतिर णिरंतर भणिनं, परित्तकाए उ होति णिक्खितं। परितेण य जं निहितं, साहरियं वा परित्तेणं ॥१६९०॥ मीस परित्रेणं चिया आदिगाहणा परित्रलित वि। परितेस छड्डियम्मि वि. आदिगाहणा त एमेते ॥१६९१॥ अइमाण सधूमे या, आहारे कारणे विवचासो । कारणविवज्जओ तू , केरिसओ होतिमं वोच्छं ॥१६९२॥ आहारेति अकडजे, ण सम्रहिसे एव कारणे जो तु। एस विवज्जो भणितो, सन्वत्य वि सोहि आयामं ॥१६९३॥३८॥ अज्झोयर-कड-पूतिय-मायाणंते परंपरगए य । मीसाणंताणंतरगतादिए चेगमासणगं।।३९॥ पासंहऽज्झोयरओ. साहअज्झोयरो य णायव्यो। होति कडो चउहा तू, जावंतियमादि विन्नेयो ॥१६९४॥

आहारे प्रतियम्मी. मायापिंडे य होति णायव्वे । सिचत्रऽणंतकाए. परंपरे जं तू णिक्खिते ॥१६९५॥ मीसाणंतअणंतरणिक्खित चेव होति णायव्वे । आदिगाहणे पिहिते, साहरिए मीसए चैव ॥१६९६॥ गहिताणंतपरंपरभीसऽतिरं पिहियमादि बोद्धव्वं । एव जहहिद्वेस, सन्वत्थ वि सोहि भतेकं ॥१६९७॥३९॥ ओह-विभागुद्देसोवकरण-पूतीअ-ठविय-पागडिए। लोउत्तर-परियद्रिय-पमिच-परभावकीए य ॥४०॥ ओह़ हेसविभागे, उद्देस चडव्विहे तु णातव्यो । उवगरणपूर्तिए या, चिरठविए पागडे चेव । १६९८॥ लोउत्तरपामिचे, परियद्विय उत्तरे य णायव्ये ॥ परभावकीय मंखादिएसु सव्वेसु उद्दिहो ॥१६९९॥ पत्तेयं पत्तेयं, सोही एत्थं तु होति पुरिमड्टं। सग्गामाहडमादी. पत्ते एयं पत्रक्लामि ॥१७००॥४०॥ सग्गामाहड-दद्दर-जहण्णमालोहडोतरे पढमे । सुहुमतिगिच्छा-संथवतिग-मक्लिय-दायगोवहए॥४१॥ सग्गामाहडदद्दर, उब्भिण्णे अहव गद्धिमहिए तु। मालोहडे जहण्णे. उयरो अज्झोयरो होति ॥१७०१॥ पढमो जावंतज्ङ्गोयरो तु एसो य हो मुणेतन्त्रो । मुहुमतिगिच्छा संथव, वयणे तू होति णायन्त्रो ॥१७०२॥ कद्दममक्खिय पुढवी-आऊ-उदउल्लमक्खिए जं तु। वणकायपरित्तेणं, उक्ट्वे मक्खियतिगेणं ॥१७०३॥ दायगजनहय एत्तो, दायग बालादियऽप्पभ्र जे य । एतेसेत्यऽहिगारो. ते य इमे होंति बाळादी ॥१७०४॥

बालें बुट्टे मत्ते, उम्मत्ते वेविए य जरिए य। एते देंति तु जं तू, तं होती दायगोवहयं ॥१७०५॥ प्तेसु जहु हिट्टेसाऽऽहदमादीसु जरिययन्तेसु । पत्तेयं पत्तेयं, सोही एत्थं तु पुरिमट्टं ॥१७०६॥४१॥ पत्तेयपरंपरठविय-पिहिय-मीसे अणंतरादीसु । पुरिमट्टं संकाए, जं संकइ तं समावज्जे ॥४२॥ वणकायपरित्रेणं. सचित्तपरंपरं त णिक्खिते। तेणेव य पिहियं तू, पर्परं होति विण्णेयं ॥१७०७॥ एमेव य साहरिए, सिचत्तपरंपरे परित्तम्मि । मीसपरित्त अणंतर, णिक्खित्ते होति णायव्वं ॥१७०८॥ आदिग्गहणेणं तू, पिहिए उ अणंतरे तु मीमम्मि। एमेव य साहरणे, मीसेसु अणंतरे होति ॥१७०९॥ सन्वेसु जहुद्दिद्वेसु सोहि पुरिमहुमेत्थ पत्तेयं। संकाए जं संकति, तस्सेव य होति पच्छित्तं ॥१७१०॥४२॥ इत्तरठविए सुहुमे, ससणिद्ध सरक्ल मक्लिए चेव । मीसपरंपरठवियादिएसु बितिएसु वा विगती ॥४३॥ इत्तरव्यणा भत्तो, पाहृहिया मुहुम तह य ससणिद्धे । आयू मिक्लयमेयं, समर्क्लं पुढविए होति । १७११॥ पुढवी आउकाए, तेऊ वाऊ परित्तवणकाए ह बेइंदिय तेइंदिय, चउरो पंचिदिएमुं च ॥१७१२॥ एतेसं पुढवादिसु, मीसे उ परंपरे उ णिक्खिते। पत्तेयं पत्तेयं, लहुपणगं दाण णिव्त्रिगती ॥१७१३॥ वणकायअणंतमीसे, णिक्खित्र परंपरं तु सोहीमा । ग्रह्मणमं आवसी, दार्ण पुण होति जिन्दिगति ॥१७१४॥

बितियाणंताऽणंतरणिविखत्ते गुरुगपणग् आवत्ती । दाणं णिव्विगती ऊ. परंपरे होति एमेव ॥१७१५॥ वितियपरित्ताणंतरणिक्खिते छहुगपणगमावत्ती । दाणं णिन्विगयं तू, परंपरे होति एमेव ॥१७१६॥४३॥ सहसाऽणाभोगेण व, जेस पडिकमणमाहियं तेसु । आभोगओ विबहुसो,अतिष्पमाणे वणिव्विगती॥४४ सहसा-अणाभोगा तु, पुन्तुत्ता जेसु जेसु ढाणेसु । सन्वेसु वि तेसु भवे, पहिक्सण पुन्वविहियं तु ॥१७१७॥ तेस्र ति कारणेसं, आभोगे इत्थ जाणमाणो उ। बहुसो होति पुणो पुणों, अतिष्यमाणे वि एमेव ॥१७१८॥ सञ्बत्य त णिन्विगई, सोही आभोगतो ग्रुणेतन्वा । बहुसो वि सोहि एसा, अतिष्पमाणे वि णातव्वा ॥१७१९॥४४ धावण-डेवण-संघरिस-गमण-किङ्डा-कुहावणादीसु । उक्कुहि-गीत-छेलिय-जीवरुयादीसु य चउत्थं ॥४५॥ धावण गतिमनिरित्ता, वाहित्ति व हैवणं तु... हुवणं । संघरिसों जमलिओ तू, को सिग्धगति ति वचति तु॥१७२०॥ किङ्का होयऽहानय, चउरंगा ज्यमादि णायच्या । वद्यादि इंदजालं, खेड्डा उ कुहावणा एसा ॥१७२१॥ आदिगाहणेणं तू, समासओं पहेलिया कुहेटादी । उक्कुट्टी पुकारो, गीतं पुण होइ कंटं तु ॥१७२२॥ छेलिय सेण्टा भण्णति, संगारो कीरती द्व सासण्णा। जीवह्य मयूरादी, कोइलमादी व णातव्वं ॥१७२३॥ धावणगादिपदेसुं, सन्वेसु अहक्तमेण विण्णेयं। पत्तेयं पत्तेयं, सोही साहुस्सऽभत्तद्वं ॥१७२४॥४५॥

तिविहोवहिणो विच्चुतविस्सरितापेहिताणिवेदणए। णिञ्चितियं पुरिमेकासणाइ सरूम्मि चायामं ॥४६॥ तिविहो त होति उनही, जहण्णओ मज्झिमो य उक्कोसो । चत्रविह छन्विह चतुभेदयो य कमसो मुणेयव्यो ॥१७२५॥ ग्रहपोत्ति पायकेसरि, पत्तद्ववणं तु गोच्छओ चेव। एसो जहण्णओ तू, मन्झिमगमतो पवक्लामि ॥१७२६॥ पढलय रयतरणं वा. पत्ताबंधो य चोलपट्टो य। मत्तय रयहरणं वा. मिन्समओ एस णातन्त्रो ॥१७२७॥ पच्छादतिग पहिग्गह. एसो उक्कोसओ चतुब्भेओ। ओहोवही उ एसी, तिविहो त समासतो होति ॥१७२८॥ ओवगाहिओ तिविहो, जहण्ण मज्झो तहेव उक्कोसो । सन्वो वण्णेयन्वो. जह भणिओ कप्पअन्झयणे ॥१७२९॥ विच्चुत पहियं भण्णति, पुणरिव लखे जहण्णमादीस ! सोही पमायमुला, णिन्वियमादी य इणमो उ ॥१७३०॥ णिन्त्रिगति जहण्णिम्म. मिन्सिमए सोहि होति पुरिमड़ं। एकासणमुक्तासे. सन्वस्मि य होति आयामं ॥१७३१॥ तिविहोविह विस्सरिए, ण वि पडिलेहेइ तत्थ सोहि इमा। णिव्वितितं पुरिमेकासणं तु सन्वम्मि चाऽऽयामं ॥१७३२॥ तिविहोबहि विस्सरिए, आयरियादीण जो तु ण णिवेदे। सोही णिव्वितियादी, आयामंता मुणेयव्वा ॥१७३३॥४६॥ हास्यिधोतुग्गमियाणिवेदणादिण्णभोगदाणेसु । आसणमायामचतुत्थयाई सन्वम्मि छहं तु ॥४७॥ जहण्णोवहि हारेती, सोही इकासणं त दातव्वं। मिज्यमप् आयामं, उक्कोसे होयऽभत्तद्वं ॥१७३४॥

जघन्य उपधि:

मध्यम उपधिः

उत्कृष्ट उपधिः

सव्वोवहि हारेती. सोही छट्टं त होति णायव्वं। एतो धोए वोच्छं, सोही उ जहण्णमादीणं ॥१७३५॥ घोषं जहण्णेकासण, मज्झिमए सोहि होति आयामं। उक्कोसेऽभत्तहं, घोए सन्वम्मि छहं त ॥१७३६॥ तिविद्दोविद्दमुगमितुं, आयरियाणं तु जो ण णिव्वेदे । आसणमायामचतुत्थयाई सन्वम्मि छट्टं तु ॥१७३७॥ उनही जहण्णमादी, गुरूहिँ अविदिण्ण जो तु परिभुंजे। सोहिकासणमादी. छटुंना होति सब्बम्मि ॥१७३८॥ अणुण्णाय गुरूहिं, उवहि जहण्णादि देति अण्णस्स । सोहिक्कासणमादी, छट्टेनो होति जीएणं ॥१७३९॥४७॥ महणंतय रयहरणे, फिडिए णिव्विगतियं चउत्थं तु। नासिय हारविए वा, जीएण चउत्थछहाइं ॥४८॥ मुहणंत किडिय उग्गह, सोही णिन्विगनियं तु दाइन्वं । रयहरणे त चडत्थं, फिडिए सोहंस लद्धम्मि ॥१७४०॥ म्रहणंत पमादेणं, हारविष णासिष व भत्तद्रं। रयहरणे छट्टं तु , सोहेम पमादिणो जीए ॥१७४१॥४८॥ कालऽद्धाणादीए, णिव्विगती खमणमेव परिभोगे । अविहिविगिंचणियाए, भत्तादीणं तु पुरिमृहं ॥४९॥ विकहादिपमाएणं, कालादीयं करेन्ते भतादी। सोही णिन्विगती तू. परिभोगे होयऽभत्तर्ह ॥१७४२॥ एवऽद्धाणातीए, अप्परिभोगे वि सोहि णिव्विगति । परिभोगेऽभत्तहो, अविहीय विगिचणे पुरिषं ॥१७४३॥४९॥ पाणस्सासंवरणे, भूमितिगापेहणे य णिव्विगती। सबस्सासंवरणे, अगहणभंगे य पुरिमट्टं ॥५०॥

पाणस्सासंत्ररणे, सोही साहुस्स होति णिन्विगति। भूमीतिगं इमं तू. वोच्छामि समासतो इणमो ॥१७४४॥ उचारभूमि पढमा, बितिया पुण होति पासवणभूमी । भूमित्रिकम् तइया उ कालभूमी, सोहेन्य अपेहणे विगति ॥?७४५॥ असणादी चतुभेदो, सन्वो वि य एत्थ होति आहारो । तस्स असंतरणम्मी, सोही साहुम्स पुरिषट्टं ॥१७४६॥ अहव णग्रुकारादी, पचरवाणं ण गेण्हए मञ्दं । गहितं वा जो भंजति, सोही सन्वन्य पुरिमट्टं ॥१७४७॥५०॥ एयं चिय मामण्णं, तव-पडिमा-ऽभिग्गहादियाणं पि। णिव्वितियादी पक्लिय-पुरिसादिविभागतो णेयं॥५१ एयं चिय पुरिमहं. सामण्ण विसेषियं मुणेयव्वं । तव पडिम अभिगाहे या. अगहणभंगे इमं वोच्छं ॥१७४८॥ तवो बारसहा होति, पडिमा तू एगरानिया। दव्वाती तु अभिगाह, अगहणभंगे तु पुरिमट्टं ॥१७४९॥ गाहापच्छद्भस तु. इमा विभामा तु, होति णातन्वा । खुड़ादी पंचण्ह वि. णिन्त्रिगनि अन्त भत्तद्वो ॥१७५०॥

एयं पित्रखए।
चाउम्मासिय लुडुग. भिक्ख् थेरा उवज्झ आयरिए।
पुरिमहु एगभत्तं. आयाम चडत्य छहंता॥१७५१॥चाउम्मासिए।
पितदिणपश्चक्खाणं. जहमत्ति अगेण्डणे तु मन्भिह्यं।
खुडुादी पंचण्ड वि, एकामणमृहमं अंतो॥१७५२॥ संवच्छिरिए।
फिडिए सत्मुस्मारिय भंगे वेगादि वंदणादीसु।
णिविगतिय-पुरिमेगासणादि सन्वेसु चायामं॥५२॥

फिडितुस्सरगे एके, पमाइणो सोहि होति णिन्त्रिगति । दोहिं पुरिमट्ट भवे, तिहिं फिडिए सोहि भत्तेकं ॥१७५३॥ सन्वे काउरसँगो, फिडिए जयओ पडिकमे जो तु। सोही पच्छाऽऽयामं, उस्सारंते इमं वोच्छं ॥१७५४॥ सत्रप्रसारे एकं, काउस्सम्मं ति एत्थ णिव्यिमति । दोसु तु पुरिमड्ट भवे, एकासणयं भवे तीहि ॥१७५५॥ सन्वे सतग्रस्सारे, आयंबिल एत्य होति सोही तु । भगो वि य एस चिय, सोही तह वंदणमदेन्ति ॥१७५६॥५२॥ अकएसु तु पुरिमा-ऽऽसणमायामं सन्वसो चउत्थं तु । पुञ्चमपेहितथंडिल, णिसिवोसिरणे दियासुवणे ॥५३ ण करेंतस्सुस्मर्गं, सोही पत्थं तु होइ पुरिमट्टं । दोहि य एकासणयं, तिहि अकरणे सोहि आयामं ॥१७५७॥ सन्दं चिय आवसयं, अकरेन्ते सोहि होयऽभत्तद्रो । काजस्सम्मे तह वंदणस्स सोही तहा[5]कर्णे ॥१७५८॥ गाहापच्छद्धेण तु, पुर्वं तु अपेहिए उ थंडिले । णिसिवोसिरणे सोही, माहुस्स भवे अभत्तद्वं ॥१७५९॥ दियसुवणे णिकारणें, सोही साहुस्स होयऽभत्तर्ह । कोई परिवसमाणे, ककोछादीमनो वोच्छं ॥१७६०॥५३॥ को हे बहुदेवसिए, आसव-ककोलगादिएसुं च। लसुणादी पुरिमडूं, तण्णादीबंधमुयणे य ॥५४॥ पविखयमितकामन्तो. बहुदेविस ओ ति एस कोहो तु । अहवा बहुदेवसिए, चाउम्मासादिरित्ते तु ॥१७६१॥ एयं बहुदेवसियं, एत्थ उ सोही तु होइ भन्नद्व । आसवो वियदं भण्णति, तमाइयंते अभत्तद्वं ॥१७६२॥

ककोलयसेवंते, सोही साहस्स होयऽभत्तहं। पूर्यफल-जाईफल-लवंग-तंबोलमादिसु य ॥१७६३॥ आदिग्गहणे णेतो. पत्तेयं एत्थ सोहऽभत्तर्द्रं। कमुणादिन्ते पुरिमं, आदिमाहणा पलंडुम्मि ॥१७६४॥ तण्णगबंधणमुयणा, सोही एत्थं तु होति पुरिमहुं। आदिमारुणेणं पुण, इंस-मयूरादिएसुं पि ॥१७६ँ५॥ ५४॥ अञ्चसिरतणेसु निञ्चिगतियं तु सेसपणएसु पुरिमङ्गं। अपडिलेहियपणए, एगासण तसवहे जं च ॥५५॥ अज्बुसिरं तु कुसादी, परिभोगा कारणे तु णिन्त्रिगति । सेसपणगं तु पंचह, सपंचभेयं पुणेकेकं ॥१७६६॥ पोत्यय-तणपणगं वा, दसे पणगं च दुष्पहिल्लेहे । अप्पहिलेहियद्से. पंचमयं चम्मपणगं च ॥१७६७॥ गंही कच्छवि ग्रुट्टी, छिवाहि संपुहयपोन्थए चेव। साली बीली कोहब, रालग रण्णे तणाई च ॥१७६८॥ अप्पहिलेहियद्से, तूली उवहाणए य णायव्वे । गंडुबहाणाऽऽलिंगणि, ममुरए चेव पोत्रणए ॥१७६९॥ परहिव कोयवि पावार णवयए तह य दाहियाली य। दुप्पहिलेहियद्से, एयं वितियं भवे पणगं ॥१७७०॥ गो-महिस-अया-एलग-मिगचम्मं पंचमं मुणेयघ्वं। अप्टवा वि चम्मपणगं. एयं चितियं तु विण्णेयं ॥१७७१॥ तिलगा खल्लग बज्झे, कोसग कत्ती य पंचमं पणगं। एते पंच उ पणगा, सर्यं च भेया समक्खाता ॥१७७२॥ ५५॥ ठवणमणापुच्छाए, णिविसणे विरियग्रहणाए य। जीएणेकासणयं, सेसगमायासु खबणं तु ॥५६॥

वनणकुल-दाणसङ्घादियाइ ताई तु गुरुमणापुच्छा । पविसइ णिन्विसँणा तू, पहिगाहे जं तु भत्तादी ॥१७७३॥ विरियं सामत्थं वा, परक्कमो चेव होइ एगद्वा। गृहण गोवण णूमण, पलियंचणमेव एगद्रं ॥१७७४॥ एरिसमायासहिए, जीएणं देळ एगभतं तु । स्रयववहारे अण्णह. सेसं मायं अयो वोच्छं ॥१७७५॥ भद्दगं भद्दगं भोचा, विवण्णं विरसमाहरे । आयरियाण सगासे. जसोन्थी एव चितर ॥१७७६॥ ल्ड्डिन महाभागो, एस साह जितिहिओ। रसचार्ग करेड ची, अंतर्पतेहिं लाहए ॥१७७७॥५६॥ दप्पेणं पंचिंदियवोरमणे मंकिलिडकम्मे य। दीहद्धाणासेविय-गिलाणकपावमाणेमु ॥५७॥ द्प्पो वम्मण-धावण-डेवणमादी त होति णायच्यो। पंचिदियवीरमणं. उद्दवण विराहणेगद्वं ॥१७७८॥ कम्मं तु संकिलिई, करकम्मं कुणित अंगादाणे उ। दीहेणऽद्धाणेणं, कम्म पलंबादि बहु सेवे ॥१७७९॥ गेळण्णाम्म तु दीहे, आहाकम्मादि मण्णिहीमादी। बहुअतियारणिसेवी. सोहि एत्थं तु अवसाणे ॥१७८०॥ एयम्मि जहुद्दिं, वोरमणादी गिलाणपज्जंते । पत्तेयं पत्तेयं, मोही तु पंचकञ्जाणं ॥१७८१॥५७॥ मञ्बोवहिकपम्मि य, पुरिमत्तापेहण य चरिमाए। चाउम्मासे वरिसे, य मोहणं पंचकलाणं ॥५८॥ पाउसकाले सन्वोवहिम्मि जयणा वि किष्पए सोही। पुरिमत्ताऍ पमाया. चरिमाऍ अपेहिने चेव ॥१७८२॥ वयही घोयवसाणे, पुरिमत्तावेहणाएँ चरिमाए।

पत्तेयं पत्तेयं. सोहेत्थं पंचकञ्चाणं ॥१७८३॥ चाउम्मासिय वरिसे. णिरतियारं यऽवस्स दायव्वं । आलोइयम्मि सोही, णियमेणं पंचकल्लाणं ॥१७८४॥ किं कारणमिह सोही, णिरतियारे वि दिज्जए एवं ?। चोयग ! सुहुमअतियारे,कए वि ण वि जाणति कयाति॥१७८५॥ अहत्रण संभरती तू, जह पायोसीय अट्टरत्तीए । वेरत्तिय पाभाइय, अम्महणा काल अतियारं ११९७८६॥ स्तत्यपोरिसीअकरणम्मि दप्पेष्ट दप्पमजास् । एतेण कारणेणं. सोही तू पंचकल्लाणं ॥१७८७::५८॥ छेदादिमसद्दहयो, मिउणो परियायगव्वियस्स वि य। छेदातीए वि तवो, जीएण गणाहिवइणो य॥५९॥ विषुलं नवमकरेंनो, किह मुज्झिन छेदमृलमेचणं ?। गुरुआणामेत्तेणं, अमहहंते तदो देयो ॥१७८८ः। मतुओं वि छैद मुले, व दिज्जमाणस्मि होति परितुद्रो। इहरा वि वंदणिक्जो. निक्खत्तो तस्म देह तवं ॥१७८९॥ द्विहो य गव्विभो खलु, चिरपरियाओ तहेव तवबलिओ । छेदम्मि दिज्जमाणे, परियाडी गव्तिओ होति ॥१७९०॥ केत्तियमेत्तं छिदिह ?, नह वि य हं नृष्भ होमि राइणिओ। एमा उ गव्विओ खलु, चिरपरियादी मुणेयव्वा ॥१७९१॥ तवबलिओ देह तवं, अहं समत्थो ति गव्विओ होति। नम्हा नहोसहरं, विवरीयं नेमि दातव्वं ॥१७९२॥ गणअहिवति आयरियो. तस्म वि छेटादि होति पत्तस्स । अप्परिणयसेहादिस्, मा होजा हीलिणजो ति ॥१७९३॥ धीबलसंघयणं वा. णातं कालं च तिविह गिम्हादी । तम्हा तद्दोसहरं, तवारिष्ठं दिक्कष् तस्स ॥१७९४॥५९॥०॥

जं जं ण भणियमिहतिं, तस्सावत्तीय दाणसंखेवे । भिण्णादिया य वोच्छं, छम्मासन्ता य जीएणं॥६०॥ जं जं ति होति विच्छा, ण वि भणियमिई ति जीतववहारे । पिंछत्तविसोही तू, तस्सावत्ती पणगमादी ॥१७९५॥ दाणं णिन्वितिगादी से य विसेसेणमेन्थ भणिहासि। संखेवो तु समासो, किह ण वि जीएण भणितमिहं १॥१७९६॥ कम्ही वा भणियं ? ती. गुरुराइ णिसीइ कप्प ववहारे । मुत्तत्थयो य भणियं, आणादि सवित्थरेणं तु ॥१७९७॥ पणगादी छम्मासावसाण आवत्तिविरयणाओ य । णेगविहा भणिता उ. णिसिहादिस वित्यरेणं त् ॥१७९८॥ इह पुण जीएणं त्र, णिवणावित्तदाणसंखेवं । भिष्णादी छम्मासा, णेदाणजिएणिमं वोच्छं ॥१७९९॥६०॥ भिण्णो अविसिद्घो चिय,मासो चउरो य छच्च लहुगुरुगा।

णिव्वितियादी अट्टमभत्तन्तं दाणमेतेसिं ॥६१॥

पणुवीस दिणा भिण्णो, अविमिद्वो एस गुरु लहू वा वि । अविसेसिओ विसिद्धो, एसो तू होति णायन्त्रो ॥१८००॥ मासो लहुओ गुरुओ, चतुरो मासा य होन्ति लहुगुरुया। छम्मास्सा लहुगुरुगा, दाणं एतेसि बोच्छामि ॥१८०१॥ पणगं दस पण्णरसं, वीसा पणुवीस जाव णिन्विगती । ळहुमासे पुरिमट्टूं. गुरुमासे दाण भत्तिकं ॥१८०२॥ चडलहुए आयामं, चउगुरुए होति दाण भत्तद्वं। छस्रहूप छद्दं तू , छग्गुरुप दाणमद्वमयं ॥१८०३॥ णिव्विगतिगमादीयं, अद्वमभत्तन्तमेय दाणं ति । भिष्णादीणं कमसो, छम्मासंताऽवसाणाण ॥१८०४॥६१॥०॥

इय सञ्वावत्तीओ, तवसो णाउं अहक्रमं समए। जीएण दिज णिव्वीतिगाति दाणं जहाभिहितं ॥६२ इय एतेण कमेणं, एवपगारेण अहव इतिसहो । सन्वा आवत्ती पणगादिया त छम्मासपज्जन्ता ॥१८०५॥ णिव्वीइगमाईओ, अटुमपज्जंतों होइ सन्ततवो । जीएण दिक्क दाणं, णिव्वीतिगमादिगं कमसो ॥१८०६॥ जहिभिहितं जह भणियं, तह तह देजाहिऽभिहितमेयं ति । सामण्णेणं एयं, समासतो होति णातव्यं ॥१८०७॥६२॥०॥ एयं पुण सञ्जं चिय, पायं सामण्णयो विणिहिद्रं । दाणं विभागतो पुण, द्व्वादिविसेसियं जाण ॥६३॥ प्यं ति जहुद्दिहं, पुणसद्दों विसेसणे तु णातव्यो । सच्वं पायच्छित्तं, दाणं पाएण बाहुङ्घा ॥१८०८॥ सामण्णं अविसेसित, णिहिट्टं विसेसितं विणिहिट्टं। दाणं णिन्वितिगादी, विभागतो देखा वितथरतो ॥१८०९॥ दव्वादीया पहिसेवणा तु लतिया तु आदिसहेणं। होति विसेसेणाऽवेक्खित्रण दिज्जाहि ऊणं पि ॥१८१०॥ अहवा वि समतिरित्तं, दाणं णाऊण देखा जीएणं। अहवा वि तत्तियं चिय, दिज्जाहि सुयोवदेसेणं ॥१८११॥६३॥०॥ द्व्वं खेत्तं कालं, भावं पुरिस पडिसेवणाओ य। णातुमितं चिय दिज्जा, तम्मत्तं हीणमहितं व।।६४॥ आहारादी दव्वं, खित्तं छुक्खादि काल गिम्हादी। हिट्ठादी भावं तू, पुरिसं गीयादि जाणिता ॥१८१२॥ आउद्दिनमादीया, पहिसेवण होति तू मुणेतव्या । णाकण जाणितुणं, इति मि ति जए त जीएणं ११८१३॥

देजाही तम्मिनं, हीणं अहितं व णातु दन्वाती । हीणे दव्वादीए, हीणं देजाऽहिए अहियं ॥१८१४॥६४॥ एसो त अक्खरत्थो, दन्त्रादीणं त विश्वनो कमसो । पुणरवि द्वादीणं. विभागतो सुरिमाहंसु ॥१८१५॥ आहारादी दव्वं, बलियं सुलभं च णाउमहियं पि। देज्जाहि दुव्बलं दुल्लभं च णाऊण हीणं पि ॥६५॥ आहारों जैसिमादी. दव्वाण ताइँ होति दव्वाई। आहारादीयाई, बलियाई जिम्म देसम्म ॥१८१६॥ जह अणुबदेस सालीकरों सभावेण होति बलिओ तु। सुलभो य सो त णिञ्चं, सेसा बहंति एमेव ॥१८१७॥ एयं णाऊण तहि. जं भणितं दाण जीनवबहारे । तं देज्ज समब्भिहियं. जिहे पुण वणबल्लकलमादी ॥१८१८॥ कंजियरुक्खाहारो, दुब्बल दुलभो य एव णाऊणं। देज सेत्यहीणं (?) जीतन्त्रवहारभणिया उ ॥१८१९॥६५॥ द्धवस्वं सीतल साहारणं च खेत्तमहितं पि सीयम्मि। लुक्विम्म य हीणयरं, एवं काले वि तिविहम्मि॥६६॥ लुक्खं त णेहरहिनं, जं खेत्तं वायपित्तलं वा वि। सीयं बलियं भण्णति, अहवा अणुवं भवं सीतं ॥१८२०॥ साहारणं समं तू, जंण वि णिद्धं ण चेव लुक्खं पि । एयं तिविहं खेत्तं, दाणं एतेसि वोच्छामि ॥१८२१॥ इय एव जीतदाणं, णिद्धे खित्ते ऽहियं पि देजाहिं। साहारणे तम्मत्तं, खुक्खे खेत्ते तु हीणयरं ॥१८२२॥६६॥ लुक्खादी तिह खेतं. एवेयं विष्णतं समासेणं। अहणा तु तिविह कालं, गिम्हादि समासतो वोच्छं॥१८२३॥

गिम्ह-सिसिर-वासासू , देजऽट्टम-दसम-बारसंताइं। णातुं विहिणा णवविहसुतववहारोवदेसेणं ॥६७॥ गिम्हासु चतुत्थं देजा, छट्टं च हिमागमे। वासासु अद्वयं दिज्जा, तत्रो एस जहण्यश्रो ॥१८२४॥ गिम्हासु छट्टं देजा, अट्टमं च हिमागमे । वासासु दसमें देजा, एस मज्ज्ञिमओ तवो ॥१८२५॥ गिम्हासु अटुमं देजा, दममं च हिमागमे। वासासु द्वालसमं, एम उक्कोमतो तवी ।।१८२६॥ जहासंखेणेसो. गिम्हादिनवो समासतो होति । एयं प्रण कह दिज्जा ?, णविवहसुत्तोवएसेणं ॥१८२७॥ सुतववहारेणऽहवा, णवभेदवियप्प सुहूम जाणित्ता । देज्जाहि निविद्यकाले, बबहारो सो इमा जबहा ॥१८२८॥ अहलहुसग लहुसयरो, लहुमा त्ती होति लहुसपक्विमा। अहलहुओ लहुपतरो, लहुओं त्ती लहुपपक्किम ॥१८२९॥ गुरुयो गुरुयतराओ. अहगुरुओ एस होति गुरुपक्ले । णविवद्ववद्वारेसो, आवत्ती तेसि वाच्छामि ॥१८३०॥ पण दस पण्णरसं वा, तिविहेसो होति लहुसपक्खम्मि । वीसा य पण्णवीसा, तीसा वि य छहुगपक्रविम्म ॥१८३१॥ गुरुमासो चतुमासो, छम्मासी चेव होति गुरुपक्खे । णविवह आवत्तेसा, णविवहदाणं अतो वोच्छं ॥१८३२॥ णिव्यिगति पुरिमट्टं, एकासणयं च लहुसपक्खिम। आयंबिलंडभत्तहं, लहुं वा होति लहुपक्ते ॥१८३३॥ अट्टम दसम दुवालस, गुरुपक्ले एय होति दाणं तु । आवत्ती तवो एसो. समासतो जवहमक्खातो ॥१८३४॥

णवविद्ववद्दारेसो, लहुसादि समासतो समनसातो । पुणरवि ओहेण विभागयो य ग्रुहमादि वोच्छामि ॥१८३५॥ ग्ररुओ ग्ररुगतरातो. अहाग्ररूयो व होति ववहारो । लहुओ लहुततरातो, अहालहू चेव ववहारो ॥१८३६॥ लहुसो लहुसतराओ, अहालहूसो य होति ववहारो। एएसि पच्छित्तं, वोच्छामि अहाणुपुन्त्रीए ॥१८३७॥ गुरुओ य होति मासो, गुरुयतराओ य होति चतुमासो। अहगुरुओ छम्मासो, गुरुपक्ते एस पहिन्ती ॥१८३८॥ तीसा य पण्णवीसा, वीसा वि य होति लहुयपक्खिमा। पण्णरस दस य पंच य, छहुसगपक्खिम्म पंडिवत्ती ॥१८३९॥ गुरुयं च अट्टमं खलु, गुरुयतरायं च होति दसमं तु । अहगुरुयं बारसमं, गुरुपक्खे एस पडिवत्ती ॥१८४०॥ छट्टं च चउत्थं वा, आयंबिल एगढाण पुरिमर्ड । णिव्वितियं दायव्वं, अहलहुसे अहव सुद्धो वा ॥१८४२॥ ववहारो आरोवण, सोही पच्छित्तमेयमेगट्टं। योवो तु अहालहुसो, पहुवणा होति दाणं तु ॥१८४२॥ ओहेण एस भणिओ, एत्तो वोच्छं पुणी विभागेणं। तिग णत्र सत्तात्रीसग, एकासीती य मेदेणं ॥१८४३॥ गुरुपक्लो लहुपक्लो, लहुसगपक्लो य तिबिह एस भवे। एकेको पुणों तिविहो, उक्कोसादी इमं वोच्छं ॥१८४४॥ गुरुपक्ले उक्कोसा, मज्जा जहण्णो य एव लहुए वि । एमेव लहुसए वी, उक्कोसो मज्ज्ञिम जहुज्जो ॥१८४५॥ गुरुपक्ले छम्मासो, पणमासो चेव होति उक्कोसो । मन्त्रिम तृ तेमासो, दुपास गुरुमासिय जहण्णो ॥१८४६॥

लहुमास भिण्णमासो, वीसा वि य तिविहमेय लहुपक्ते। पण्णरस दसग पंचग, लहुमुक्कोसादि तिविहेसो ॥१८४७॥ आवित्तवो एसो, णवमेदो विण्ति समासेणं। अहणा उ सत्तवीसो, दाणतवो तस्सिमो होति ॥१८४८॥ गुरु-छहु-छहुसगपन्खे, एकेन्को जवविहो ग्रुणेतन्त्रो । उक्कोसक्कोसो या. उक्कोसगमज्ज्ञिम जहण्लो ॥१८४९॥ मिन्समा वक्तोसी या, मिन्सममन्त्री तहा जहण्णी य। होति जहण्णुकोसो, जहण्णमञ्ज्ञो दुहजहण्णो ॥१८५०॥ गुरुपक्खो-

उक्कोस्रुक्कोसो या, उक्कोसगमन्दिमो जहण्णो य। मिक्समाउक्कोसो तूं, मिक्सममज्झो जहण्णो य ॥१८५१॥ होति जहण्युक्कोसो, जहण्यमञ्ज्ञो जहण्यगजहण्यो । णविवद्दववहारेसो, लहुपक्ते होति णानन्वो ॥१८५२॥ उक्कोसुक्कोसो तु, उक्कोसगमन्द्रिमो जहण्णो य। मज्झिमउक्कोसो तू, मज्झिममज्झो जहण्णो य ॥१८५३॥ होति जहण्यक्कीसो, जहण्यमञ्ज्ञी जहण्यगजहण्यो। णविवहववहारेसो, लहुसगपन्खे ग्रुणेनव्यो ॥१८५४॥ बारसम दसम अद्वम, छप्पणमासेसु निविह दाणेदं। चउतेमासे दसमऽह, छट्ट उक्कोसगाति तिहा॥१८५५॥ एमेवुनकोसादी, दुमास गुरुमासिए तिहा दाणं । अद्वम छट्ट चउत्थं, णवविद्दमेयं तु गुरुवक्खो ॥१८५६॥ दसमं अद्वम छट्टं, लहुमासुक्कोसगादि तिइ दाणं। अहम छट्ट चडत्थं, उक्कोसादेय तिह भिण्णे ॥१८५७॥ छह चबत्याऽऽयामं. उक्कोसादेय दाण वीसाए । लहुपन्खम्मी णवगो. बीओ एसो मुणेयन्वो ॥१८५८॥ अद्वय छट्ट चज्त्यं, प्युक्कोसादिदाण पण्णरसे ।

छट्ट चउत्थाऽऽयामं, दसस् तिविहेत दाण भवे ॥१८५९॥ खमणाऽऽयामेक्कासण, तिविहोक्कोसादि दाण पणगेयं। ळहुसेस ततियणवगो, सत्तावीसेस वासासु ॥१८६०॥ सिसिरं दसमादी पुण, चारणभेदेण सत्तवीसे य। टायति पुरिमृहम्मी, अह्रोक्कंती य तह चेव ॥१८६१॥ अट्टममादी गिम्हे, चारणभेदेण सत्तवीसेण। तह चेत्र अड्डोक्कंती, डायति णिव्वीतिए णवरि ॥१८६२॥ अहुणा उ चारणा तु, उक्कोसुक्कोसगादि गुरुगादी । वासास्र सिसिरे या, गिम्हे य समामतो वोच्छं ॥१८६३॥ अहगुरुए वासास् . उक्कोसुक्कोसए य वारसमं । उक्कोसमञ्झ दसमं, उक्कोमजहण्णमद्वमगं ॥१८६४॥ अहगुरुए सिसिरंसुं. उक्कोनुक्कोसए य दसमं तु। उक्कोसमज्ज्ञिम अट्टम, उक्कोमजदृण्णए छट्टं ।।१८६५।। अहगुरुए गिम्हासुं, उक्कोसुक्कोसमटुम दिज्जा। उक्कोसमज्झ छट्टं, उक्कोसजहण्णए चउन्थं ॥१८६६। अहागुरुपक्खे— गुरुयतरा वासामुं. मिडझमडक्रोसए य दसमं तु । मिज्ज्ञमभञ्जे अट्टम, मञ्ज्ञजहण्णेण छट्टं तु ॥१८६७॥ गुरुततरा सिसिरेमुं, मिज्झमउक्कोसमट्टमं देजा। मिज्झममञ्झे छट्टं, मञ्झजहण्णे च उन्धं तु ॥१८६८ः गुरुननरा गिम्हेमुं, मिन्झमउक्कोसे देज छट्टं नु । मिडझममञ्झ चउन्थं, मञ्झजहण्णेण छट्टं तु ॥१८६०॥ गुरुततगामि आयामं । गुरुअतग्वक्ते-गुरुष वास जहण्णे, उक्कोसे अट्टमं तु देजाहि। छट्ठं जहण्णमञ्झे, होइ चउत्थं दुहजहण्णे ॥१८७०॥

गुरु सिसिरेऽत्थ जहण्णे, उक्कोसं देज छट्टभतं तु । जहण्णयमञ्झे चडत्थं, दृहयो जहण्णेण आयामं ॥१८७१॥ गुरुष गिम्ह जहण्णे, उक्कोसा देळा तू चउन्थं तु । जहण्णयमज्झाऽ ऽयामं, एक्कासणयं दुहजहण्णे ॥१८७२॥ गुरुपक्खे ॥

लहुए वासारते, उक्कोसुक्कोसगम्मि दसमं तु। उक्कोसमज्झिमऽद्वम. उक्कोमजहण्णए छट्टं ॥१८७३॥ लहुए उक्कोसुक्कोमनम्मि सिमिर्मिम अट्टमं दिन्जा। उक्कोसमज्झ छट्टं, उक्कोसज्ञहण्णऍ चउन्थं ॥१८७४॥ लहुपक्खे उक्कोसे, गिम्हम्मी देज्ज छट्टभनं तु। मजिझमगं तु चउन्धं, उक्कोसजहण्णमायामं ॥१८७५॥ लह्यपक्खे ॥

लहुयनरे वासामुं, मिज्झमउद्गोसमृहमं दिज्ञा। मज्ज्ञिममज्ज्ञे छट्टं, मज्ज्ञजहण्णेणऽभत्तट्टं ॥१८७६॥ ल्रहुयतरा सिसिरंमुं. मिज्झमउकोस देउन छट्टं तु। मिज्जममन्त्र चन्थं, मन्ज्ञनहण्णेणमायामं ।१८७७॥ लहुयतरा गिम्हेसुं, मिव्झमउकोम देज्जऽभत्तहुं। मिं इसमार्ज्यायामं, मज्झनहण्णेण भत्तेकं ॥१८७८॥ लहुअनरपक्खे ॥

अहलहुया वासासुं, जहण्णउनकोम छट्ट देउनाहि । मज्जिमग्रम चडन्थं, जहण्णगजहण्णमायामं ॥१८७९॥ अहलहूयम सिसिरेसुं, जहण्णउक्कोस देज्जऽभत्तट्टं। मज्जिमने आयामं, जहण्णगजहण्णे भत्तेकं ॥१८८०॥ अहलहुगे गिम्हामुं, जहुणगुक्कोस देज्ज आयामं। प्रकासणगं मज्झे, पुरिमहं दुइजहण्णस्मि ॥१८८१॥

अहालहुयपक्खे ॥

लहुसग वासामुक्कोसगम्मि उक्कोसमद्वमं देजा।
उक्कोसमञ्झ छई, उक्कोसजहण्णए चउत्थं।।१८८२॥
लहुसग सिसिरासुकोसगं तु उक्कोस छट्ट देज्जाहि।
मिज्यमगं तु चउत्थं, उक्कोसजहण्णमायामं।।१८८३॥
लहुसग गिम्हासुक्कोसगम्मि उक्कोस देज्जऽभत्तर्द्धं।
मिज्यमगं आयामं, उक्कोसजहण्ण भत्तकं।।१८८४॥
लहुसपक्रसे॥

लहुमतरा वामामुं, मज्झकोसेण छट्टभतं तु।
मज्झिममज्झ चउत्थं, मज्झजहण्णेण आयामं ॥१८८५॥
लहुसतरा सिसिरामुं, मज्झकोसेण देजजञ्भत्तद्वं।
मज्झिममज्झाऽऽयामं, मज्झजहण्णेण भत्तकं ॥१८८६॥
लहुसतरा गिम्हेमुं, मज्झकोसेण देज आयामं।
मज्झिममज्झेकामण, मज्झजहण्णेण पुरिमहुं॥१८८७॥
लहमतरपवस्वे॥

अहलहुसय वासामुं, जहण्णमुकोस देज्ज उभत्तहं।
मिज्झिमगं आयामं, भत्तेकं दुहजहण्णेणं ॥१८८८॥
अहलहुसग सिसिरामुं, जहण्णमुकोम दिन्ज आयामं।
जहण्णगमन्झेकामण, जहण्णजहण्णेण पुरिमहं॥१८८९॥
अहलहुमग गिम्हामुं, जहण्णमुकोम देन्ज भत्तेकं।
मिज्झमगं पुरिमहं, दुहयो जहण्णेण णिन्त्रिगति॥१८९०॥

अहालहुस्पक्ते ॥
एतेहिं ठाणेहिं, आवत्तीओं .. मटा णियमा ।
बोहव्ता सव्वाओं, असहुस्सेक्केक्कहामणया ॥१८९२॥
जाव ठियं एक्केकं, नं पि य हाविज्ञ असहुणो नाहे।
दाउं सहाणेवं, परठाणं देज्ज एमेव ॥१८९२॥

एवं ठाणे ठाणे, हेट्टाहत्तो कमेण हासेता। णेतव्वं जाव डिनं, णियमा णिव्वीयियं एकं ॥१८९ ३॥ णवविद्य ववहारंसो, आवत्तीदाणसहितकालजुतो । बुद्धीओ विण्णेओ, विभागतो एसमक्खातो ॥१८९४॥ अहव तिमो लहुसादी, तिविहादि समास विन्थरे बोच्छं। हीणो मज्बुकोसो, तिविहेसो होति णायव्यो ॥१८९५॥ लहसगपत्रसे पणगं, दस पण्णर तिविह एय णातव्यं। वीसा य भिण्णमामो, लहुमासो निविह लहुपक्ले ॥१८९६॥ गुरुमासो चडमासो, छम्मामो चेत्र एम गुरुपक्ले । णवविह आवत्तेसा, टाणं णवहा तिमं वोच्छं ॥१८९७॥ णिव्विगतिय पुरिमड्डं, एकामण लहुमए य दाणं ति । आयाम चउन्थं वा. छट्टं तू लहुगपऋषम्मि ॥१८९८॥ अट्टम द्रमम द्रवालस. गुरुपक्ते एय होति दाणं तु । णवविहटाणं एमो, अहवाऽऽवत्ती इमा णवहा ॥१८९९॥ पण दस पण्णरमं वा, लहुगुरुगा लहुमए तु पक्खम्मि । वीसा य भिण्णमासो. लहु गुरु लहुओ य मासेको ॥१९००॥ गुरुमासो दृष्णि मासा, लहुगुरुगा तिग चउक लहुगुरुगा ॥ पंचग छम्मासा या, लह्गुरुगा एम णवहा तु ॥१९०१॥ आवत्तिनवो एसो. णवभेदो विष्णिनो समासेणं। अहुणा तु सत्तवीसो. दाणतवो तस्सिमो होति ॥१९०२॥ लहुसग लहुगुरुपक्त्वो, एक्केक्को णवविद्दी ग्रुणेतन्वो। दुहयो जहणो जहणगमञ्झा य जहण्णगुक्कोसो ॥१९०३॥ मज्ज्ञिमजहण्णगं त्, मज्ज्ञिममज्ञ्ञं तु मज्ज्ञिमुकोसं । उक्कोसगे जहण्णं, उक्कोसगमज्झ उक्कोसं ॥१९०४॥ लहसगपक्खे वेयं. णत्रभेद समासतो समक्खायं। लहुपक्खे वि णविवहं, गुरूपक्खे त्री मुणेयव्त्रं ॥१९०५॥

वासासु अहालहुसो, दुइयो जहणेण देज्ज भत्तेकर्क । जहण्णगमञ्ज्ञायामं, जहण्णगुक्कोसए चउत्थं ॥१९०६॥ लहुसतर मिज्झमजहण्णयम्मि वासायु देज्ज आयामं। मिन्सममन्द्रे चउत्थं, मिन्द्रमउन्कोसए छट्टं ॥१९०७॥ ल्रहुसग उक्कोसजहण्णगम्मि वासामु देउजऽभत्तर्ह । उनकोसमज्झ छर्टुं, उनकोसुक्कोसमहमगं ॥१९०८॥ अइलहुए वासासुं, जहण्णजहण्णे तु देन्ज आयामं। जहण्णगमज्य चउन्धं, जहण्णउनकोसए छट्टं ॥१९०९॥ **छहुयतरा वासामुं, मज्झजहण्णाम्मि इवयऽभत्तर्ह** । मजिज्ञममञ्जे छट्टं, मजिज्ञमउक्कोसमहमगं ॥१९१०॥ लहुए वासासुनकोसर्गाम्म जहणे तु देउन छहं तु । उक्कोसमज्ज्ञमहम. उक्कोसुक्कोसए इसमं ॥१९११॥ गुरुपक्ते जहण्णाम्म, जहण्ण होनी च उत्थभत्तं तु । हीजगमञ्झे छट्टं, जहण्याचनकोयमट्टमगं ॥१९१२॥ गुरुअतरा वासासुं. मज्झजहण्णेण देवन छट्टं तु । मज्जिममज्ज्ञं अट्टम, मज्ज्ञिम उक्कोसए दसमं ॥१९१३॥ अहगुरुए वासामुं, उक्कोमजहण्णमट्टमं देजा। उक्कोसमज्ज्ञ दसमं. उक्कोसुक्कोस बारसमं ॥१९१४॥ अइलहुसग मिसिरमुं, जहण्णजहण्णेण होति पुरिमङ्ग्रं। हीणगमज्झेक्कामण, जहण्णउक्कोम आयामं ॥१०.१५॥ छहुसनरा मिसिरंसुं, मञ्ज्ञजहण्णेण भत्तमेकं तू । मज्झिममज्झाऽऽयामं, मज्झिमउक्कोसए चउत्थं ॥१९१६॥ लहुसग सिसिरुकोसे. जहण्ण एयं तु देजा आयामं । मज्झिमगं तु चउत्थं, उक्कोसुकोम छट्टं तु ॥१९१७॥ अहलहुयग मिमिरेमुं, दृष्टाजहण्णेण देख भत्तेक्कं । जहणगमज्झाऽऽयामं, जहण्णमुक्कोसए चन्धं ॥१९१८॥

लहुसतरा सिमिरेसुं, मन्झजहण्णेण देज आयामं। मिज्जिममञ्ज्ञ चउत्थं, मिञ्जिम उक्कोसए छट्टं ॥१९१०॥ लहुए सिसिरुक्कोसे, होति जहण्णं चतुत्थभर्तं तु । उक्कोसमज्ज्ञ छट्टं, उक्कोसुक्कोसमट्टमग् ॥१९२०॥ गुरुए सिनिर जहण्ये. जहण्यएं तु देज आयामं। जहण्णगमज्ञ चाउत्थं. जहण्णउक्कोसए छट्टं ॥१९२१॥ गुरुयतरा सिसिरमं, मञ्झजहण्णेण देजाऽभत्तर्ह । मिज्जिममज्ज्ञे छहुं, मिज्जिमज्क्कोसमहमगं ॥१९२२॥ अहगुरुए मिमिर्मं. उक्को सजहण्णएण छट्टं तु । उक्कोसमज्झिमऽहुम, उक्कोसुक्कोसए दसमं ॥१९२३॥ अहल्रहमग गिम्हामुं, जहण्णजहण्णेण होति णिव्विगति। हीणगमञ्झे पुरिमं, जहण्णउक्कोस भत्तेकर्क । १९२४॥ ल्रहुसतरा गिम्हेमुं, मज्झजहण्णेण होति पुरिमट्टं। मज्जिममञ्ज्ञेक्कासण, मज्ज्ञिमज्क्कोसमायामै ॥१९२५॥ ल्रहुसग गिम्हुक्कोसे, जहण्णगे होति भत्तमेकं तु। उक्कोसमज्झ आयबिलं तु उक्कोमए चउत्थं ॥१९२६॥ अहलहुयम गिम्हेसुं. पुरिमहूं होति दुहजहण्णेणं। मडझजहण्णेक्कामण, जहण्णेडक्कोममायामं ॥१९२७॥ लह्यतरा गिम्हेमुं, मज्झजहण्णेण भत्तमेक्कं तु । मज्ज्ञिममज्ज्ञाऽऽयामं, मज्ज्ञिमउक्कोमए चउत्थं ॥१९२८॥ लहुयग गिम्ह्क्कोसे, जहण्णएणं तु होति आयामं । मज्जिमगं त चउन्धं, उक्कोसुक्कोसए छट्टं ॥१९२९॥ गुरुष गिम्ह जहण्णे, जहण्णयं होति भत्तमेक्कं तु । हीणगमञ्ज्ञाऽऽयामं, जहण्णजनकोसए चउत्थं ॥१९३०॥ गुरुअतरा गिम्हेमुं, मञ्झजहण्णेण होति आयामं । मिन्द्रममञ्ज्ञ चउत्थं, मिन्द्रमञ्चकोसए छहं ॥१९३१॥

अहगुरुष् गिम्हासुं. उक्कोसजहण्णए चउत्थं तु ।
उक्कोसमञ्झ छहं. उक्कोसुक्कोसमहमगं ॥१९३२॥
णविह ववहारेसो, आवती-दाणमहियकालजुओ ।
बुद्धीए विण्णेयो, विभागतो एसमक्खातो॥१९३३॥६०॥।॥
हहगिलाणाभावम्मि देज्ज हहस्मण तु गिलाणस्स ।
जावतियं वा विसहति, तं देज्ज सहज्ज वाकालं॥६८॥
भावं पडुच अहियं, देज्जाही हट्ट-बलिय-णिरुयस्म ।
गिलाणस्स तु जणतरं, ण व देज्ज सहेज्ज वा कालं॥१९३४॥
असुभ सुभो वा भावो, लेस्साभेदेण होति णायव्यो ।
निच्चो निच्चतरो वा. निच्चतमो एव मंदो वि ॥१९३५॥
पणए वि सेवियम्मी, चरिमं भाओ उ केइ पावंति ।
चरिमाओ वा पणगं, एविमणं भावणिष्कण्णं ॥१९३६॥
भावे त्ति गतम ।

पुरिसं पडुच अहियं, ऊणं वा दिज्ञ अहव तम्मतं।
ते पुण पुरिसादीया, इमे समासेण णायव्या ॥१९३७॥६८॥
पुरिसा गीतागीता, सहामहा तह सढासढा केति ।
परिणामाऽपरिणामा, अतिपरिणामा अवस्थ्रणं ॥६९॥
केयी पुरिसा गीता, केयि अगीयत्थ होंति णातव्या ।
धिति-संघ्यणादीहि, केइ सहा केइ त् अमहा ॥१९३८॥
मायावी होन्ति सहा, असहा पुण उज्जुपण्ण णेतव्या ।
परिणामादी इणमो, समासतोऽहं पवक्यामि ॥१९३९॥
परिणामा अपरिणामा, अतिपरिणामा य वत्थु चरिमदुए ।
अंबादीदिष्टंता, होति विभागो इमो तेसि ॥१९४०॥
जो दव्यत्वेत्तकयकालभावयो जं जहा जिणक्यायं।
तं तह सहसाणं, जाणसु परिणामंगं साहं ॥१९४१॥

परिणामक-अपरिणामक-अनिपरिणा-मका:

जागति दव्य जहहिय, सिचताचित्त मीसयं चेय। कप्पाकपं च तहा. जोगं वा जस्स जं होति ॥१९४२॥ खेत्ते जं कायव्वं, अद्वाणे जयण एव सहहति । काले सभिन्छ-दश्भिन्खमादिम् जो जहा कष्पो ॥१९४३॥ भावे हद्रगिलाणं. आगाहे जं जहा व कायव्वं। तं सद्दृति करेति य, एसो परिणामओ साह ॥१२.४४॥ जो दव्यक्वेत्तकयकालभावयो जं जहा जिणक्खायं। तं तह असहहंतं. अप्परिणामं वियाणाहि ॥१९४५॥ जो द्व्यत्वेत्तकयकालभावयो जं नहा जिणक्लायं। तल्लेसुस्मृत्तमती, अतिपरिणामं वियाणाहि ॥१९४६॥ परिणमति जहत्थेणं, मनी तु परिणामगस्स कज्जेसु । बितिए ण त परिणमती, अहितमती परिणमें तितिए ॥१९४७॥ दोस्र तु परिणमित मती, उस्सग्गऽत्रवाययो तु पढमस्स । बितियस्स त उस्मागे, अतिअववार त ततियस्म ॥१९४८॥ अंबादीदिट्रेनेहिं परिक्खा नेमि होति कायच्या। जह कोयि गुरूहिं तु. भणिनो अंबाणि आणेहि ॥१९४९॥ परिणामगोऽन्थ भणती, किं सिचत्तेऽचिते व आणेमि ?। भावतो केवइए वा ?, कि टाले (?) भिष्ण ऽभिष्णे वा ? ॥१९५०॥ बेति गुरू लद्ध चिय. पुणो व वोच्छिम् अहव वीमंसा । भणिओं मि त्ती एवं, अप्परिणामो इमं बेति ॥१९५१॥ कि ते वित्तपलावो ?. मा वितियं एरिसाई जंपाहि। मा णं परो वि सोच्छिति. अहं पि णेच्छामि एयस्स ॥१९५२॥ अतिपरिणामी भणति. कालो सिं अतिच्छए अहो तात्र। कि एचिरस्स वर्त ?, इत्थऽम्ह वि ण तरिमो भणितं ॥१९५३॥ घेतूण भारमागतो, भणती अण्णे वि किं नु आणेमि ? । तो दो वि ग्ररू भणती. उवालभन्तो इमं तहितं ॥१९५४॥

णाभिष्पायं गिण्हसि, असमते चेव भासिस वयणे।
सुकंबिललोणकए, तिण्णे अहवा वि दोच्चंगे।।१९५५॥
एमेव य रुक्ते वी, भंजितु आणेह बेति अपरिणतो।
णिष्फावादी रुक्ते, भणामि ण दुमे अहं हरिए।।१९५६॥
एमेव य बीयाई, आणेती आणिए गुरू भणित।
अंबिलि विद्धत्थाणिव, भणामि ण वि रोहणि समत्थे।।१९५७॥
थुँॐ॥६९॥

तह धितिसंघयणोभयसंपण्णा तदुभएण हीणा य । आयपरोभयणोभयतरगा तह अण्णतरगा य ॥७०॥

धितिदुब्बल देहे बली, धितिबलिओ देहदुब्बलो कोइ।
कोयी दोहि वि बलिओ. दोहिं पी दुब्बलो कोइ।।१९५८॥
दोहि वि बलिए सब्बं, धितिहीणे जत्थ चिट्टिन धिनी से।
आसज्ज व देहबलं, देज्जा लहुयं उभयहोणे।।१९५९॥
अहवा पंच विकप्पा—
केयी पुरिसा पंचह, आयतराती इमे उ णायव्या।
पढमो आयतरो तू, णो परयो परतरं वितिओ।।१९६०॥
उभयतरो तू तितओ. णोभयह चउन्थओ उ णायव्यो।
अण्णयरो परयो तू, पंचमओ होइ णानव्यो।।१९६१॥
आयतर-परतराणं, को णु विसेसो ? त्ति एत्थ चोदेति।
आततरो चउत्थादी, जं दिज्जित तं तु णित्थरित ।१९६२॥
वेयावचकरो तू, गच्छस्स उवग्गहिम्म वृहति तु।
एसो तु होति परतरो, चतुभंगो एव णायव्यो।।१९६३॥
वेयावचतराणं, एकं सकेति दो ण णित्थरित।
पंचमगो तू पुरिसो, अण्णतरो एस णातव्यो।।१९६४।।धृ०॥००॥

कपष्टियादयो वि य, चतुरो जे सेतरा समक्खाता। सावेक्खेतरभेयादयो य जे ताण पुरिसाण।।७१।।

कप्पट्टिता परिणता, कटजोगी चेव होन्ति तरमाणा । पडिपक्खेण वि चतुरो, अकप्पट्टियमादि णातन्त्रा ॥१९६५॥ पतिद्रा ठवणा ठवणी अवत्था संठिती दिती । अवत्थाणं अवत्था या, एगट्टा चिट्टणा ति य ॥१९६६॥ सामायिष य छेदे, णिन्त्रिसमाणा तहेव णिन्तिहे। जिणकप्पे थेरेस य. छव्विह कप्पट्टिनी होति ॥१९६७॥ सो पुण ठिती मज्जायाणासो कप्पो य होति कतिहा उ ?। भण्णति सो दसभेदो, इणमो वोच्छं समासेणं ॥१९६८॥ आचेलक्क्रहेसिय, सेज्जायर रायपिंड किनिकम्मे । वत जेट्र पडिकमणे. मासं पज्जोसवणकप्पे '१९६९॥ कतिहि ठिता अठिता वा. सामायिककप्पसंठिती णियमा ?। कतिहाणपतिहो वा. छेदोबहाणकप्पो उ ? ॥१९७०॥ चतुहिं ठिया छहिं अठिया, सामानियसंजया मुणेयन्त्रा । दसस्र वि णियमा त्र हिता, छेगोवट्टा सुणैतव्वा ॥१९७१॥ सेज्जातरपिंडे या, कितिकम्मे चेत्र चाउजामे य। पुरिसज्जेट्ट य तहा, चत्तारि अवट्टिया कप्पा ॥१९७२॥ आचेलक्कुद्देसिय, रायपिंडे तहा पडिक्रमणे । मासं पज्जोसवणाकप्पे तऽणवद्विना कप्पा ॥१२७३॥ दसठाणाठितो कप्पो. पुरिमस्म य पच्छिमस्स य जिणस्स । आचेलकादीसुं, तेसि तु परूवणा इणमो ॥१९७४॥ दुविहा होति अचेला, संताचेला असंतचेला म ।

तित्थगरऽसंतचेला, संताचेला भवे सेसा ॥१९७५॥

र्संतेहिं वि चेलेहिं, किह पुण समणा अचेलया होन्ति ? ।

भाचेल¶यम्

भण्णति सुणस् चोदग !, जह संतेहिं अचेला छ ॥१९७६॥ सिस्सावेडियपोत्ति, णतिसंतरणिम णग्गयं बेन्ति। जुण्णेहिं णग्गिय म्हि, तरसालिय ! देहि मे पोत्ती ॥१९७७॥ जुण्णेहिं संहिएहि य, असन्त्रतणुपाउएहिं ण य णिसं। संतेहिं वि णिगंथा, अचेलगा होंवि चेलेहिं ॥१९७८॥ एवं दुग्गयपहिया, वऽचेलया होति ते भवे बुद्धी । ते खल्ल असंततीए, धरंति ण त धन्मसद्धाए ॥१९७९॥ सति लाभर्मिम साह, गेण्डन्तऽसहद्वणाइं ताई तु । ताणि वि खण्डियमादी. धरेन्ति तह धम्मबुद्धीए ॥१९८०॥ आवेलुक्को धम्मो, प्रिमस्स य पश्छिमस्स य जिणस्सा । मज्ज्ञिमगाण जिणाणं, होति सचेलो अचेलो वा ॥१९८१॥ पहिमाए पाउया वा. णऽतिक्रमंते त मिन्समा समणा। पुरिमचरिमाण सहणद्वणा त भिण्णाणिमो मोर्चु ॥१९८२॥ णिरुवहयलिंगभेदो, णिकारणयो ण कप्पये कार्तुं। कि प्रण तं णिरुवहयं ?, भण्णति अहजायलिंगं तु ॥१९८३॥ जम्मं दुविहं होति, मातुकुच्छिम्म पढम जं जम्मं । भवसंसारचडके, णिप्फिडितो बितिय पव्वक्तं ॥१९८४॥ तस्स इमे भेदा खल्जु, खंधद्वारे य समणे पाउरणे । गकलढंसे पट्टे. लिंगदवे या इमा भयणा ॥१९८५॥ णिकारणयो--

लहुओ लहुआ लहुगा. तिस्र चतुगुरुगा य होंति बोद्धव्वा । गिहिलिंग अण्णलिंगे, दोसु वि मूलं तु बोद्धव्वं ॥१९८६॥ कुव्विक्त कारणे पुण, भेदं लिंगस्सिमेहि कज्जेहिं। गेलण्ण रोग लोए, सरीरवेयाविडयमादी ॥१९८७॥ अहवा इमेहि कारणेहिं— आसज्ज खेत्तकप्पं, वासाठाई अभाविए असहू । काले अद्धाणिम्म य, सागिर तेणे य पंगुरणं ॥१९८८॥ असिवे ओमोयरिए, रायहुट्टे पवायिदुट्ट वा । आगाढे अण्णिलिंगं, कालक्खेवो व गमणं वा ॥१९८९॥ अचेल ति गतं ।

मंघस्सोह विभागे, समणा समणी य कुल-गणस्सेन । कडिमह डिए ण कप्पति, अट्टियकप्पे जम्रुह्मिस ॥१९९०॥ आयरिए अभिसेगे, भिक्खुम्मि गिलाणगम्मि भयणा उ । तिक्खुत्तऽडिवपवेसे, तियपरियट्टे तओ गहणं ॥१९९१॥ उद्देसिय त्ति गतं।

ओ।हेशिकम्

तित्थगरपिडकुटो, आणा अण्णाय उग्गमो ण सुन्झे ।
अविद्वति अळाघवया, दुल्लभसेज्ञा ठितुच्छेदो ॥१९९२॥
पुरपिच्छमवन्त्रेहिं, अवि कम्मं जिणवरेहिं लेसेणं ।
भुत्तं विदेहगेहिं य, ण य सागरियस्स पिण्डो तु ॥१९९३॥
दुविहे गेळण्णम्मी, णिमंतणा दन्बदुल्लभे असिवे ।
ओमोयरिय पयोसे, भए व गहणं अणुण्णातं ॥१९९४॥
तिक्खुत्तो सक्खेत्ते, चडिहिंस मिग्गऊण कडजोगी ।
दन्बस्स य दुल्लभया, सागारियसेवणा दन्वे ॥१९९५॥
सेज्ञायरे त्ति गयं ।

शय्यातरः

केरिसयो त् राया ?, भेया पिंडस्स के व ? सिं दोसा ?। केरिसयम्मि व कज्जे, कप्पति ? काए व जयणाए ?॥१९९६॥ मुदिए मुद्धऽभिसित्ते, मुदिओ जो होति जोणिमुद्धो तु । अभिसित्तो व परेहिं, सयं व भरहो जहा राया ॥१९९७॥ पढमगभंगे वज्जो, होतुवमा वा वि जे भणिय दोसा । सेसेमु होयऽपिंडो, जिह्न दोसा तं विवज्जेज्जा॥१९९८॥ असणादीया चजरो, वत्ये पादे य कंवले चेव । पाउंछणए य तहा, अट्टविहो रायपिंडो तु ॥१९९९॥

राजपिण्ड:

अट्टविह रायपिंडं. अण्णयरायं तु जो पहिग्गाहे। सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराहणं पावे ॥२०००॥ दोसा इमे ईसरतलवरमाडंविएहिं सत्थवाहेहिं। णिन्तेहिं अइन्तेहि य. वाघातो होति साहस्स ॥२००१॥ ईसर भोडयमादी, तलवरपट्टेण तलवरो होति। वेट्रणवहो सेट्टी. पच्चंतणियो उ माइंबी ॥२००२॥ जा णिन्तऽइन्त ता अच्छतो त सत्तादि-भिवखपरिहाणी । इरिया अमंगलं ति य. पण्हाहणणा इहरहा तु ॥२००३॥ लोभे एसणवानो. संका तेणे णपुंस इत्थी य। इच्छंतमणिच्छंते, चातुम्मासा भवे गुरुगा ॥२००४॥ अण्णस्य एरिसं दल्लभं नि नेण्हेज्जऽणेसणिज्जं पि । अण्णेण वि अवहरिए, संकिज्जिति एस तेणो ति ॥२००५॥ संका चारिय चोरं. मूलं णिस्संकिए य अणवहो । परदारि अहिमरे वा, णवमं णीसंकिते दसमं ॥२००६॥ अलभंता य वियारं, इन्थिणपुंसा बला वि गिण्हेज्जा । आयरिय कुल गणे वा. संघे वा कुउन पत्थारं ॥२००७॥ अण्णे वि अत्थि दोसा, गोम्मियआइण्णर्यणमादी य। तण्णीसाए पविसे, निरिक्खमणुया भने दुट्टा ॥२००८॥ गोम्मियगहणा हणणा, रण्णो य णिवेइयम्मि जं पावे । आदीणरतणमादी, सत गेण्हेयरो व तण्णीसा ॥२००९॥ चारियचोराभिमरा. कामी व विसंति तत्थ तण्णीसा । वारणतरच्छवग्वा, मेच्छा य णरा व घाएज्जा ॥२०१०॥ दुविहे गेलण्णम्मी. णिमंतणा दृष्वदृह्मभे असिवे। ओमीयरिय पदोसे, भए व गहुणं अणुण्णायं ॥२०११॥ निक्लुत्तो सक्लेत्ते. चडिहसिं मिगतूण कडजोगी। दन्बस्स य दृष्ठभना. जनणाए कप्पनी ताहे ॥२०१२॥ रायपिडे ति गतं ।

कृतिकर्म

कितिकम्मं पि य दुविधं, अब्धुट्ठाणं तहेव वंदणयं।
समणेहि य समणीहि य, जहारिहं होति कायव्वं ॥२०१३॥
सव्वाहिं संजईहिं, कितिकम्मं संजताण कातव्वं।
पुरिस्त्तरिओ थम्मो, सव्विज्ञणाणं पि तित्थिम्म ॥२०१४॥
तुच्छत्तणेण गव्वो, जायः ण य संकते परिभवेणं।
अण्णो वि होज्ज दोमो, धियासु मा हुज्जह्जासु ॥२०१५॥
अवि य हु पुरिसपणीतो, थम्मो पुरिसो य रिक्खतुं सत्तो।
लोगविरुद्धं चेयं, तम्हा समणाण कातव्वं ॥२०१६॥
किङकम्मो त्ति गयं।

व्रतानि

पंचडनामो धम्मो, पुरिमस्स य पिन्छमस्स य जिणस्स ।
मिन्झमयाण जिणाणं, चातुन्नामो भवे धम्मो ॥२०१७॥
पुरिमाण दुन्त्रिमोन्झो, चरिमाणं दुन्णुपालयो कप्पो ।
मिन्झमयाण जिणाणं, स्विसोन्झो सुरणुपालो य ॥२०१८॥
जङ्कत्रणेण हंदी, आइक्खिवभाग उच्चतं ।
सहसम्स्रुयदंताण य. निनिक्ख अणुसासणा दुक्लं ॥२०१९॥
पुरिमाणं—

मिच्छत्तगोवियाणं. दुव्वियहुमतीण ठाणमीलाणं।
आइक्खितु अइदुक्खं, उवणेउं वा वि दुक्खं तु ॥२०२०॥
दुक्खेद्धं भच्छियाणं, तणुधितिअबलत्तयो य दुतितिक्खं।
एमेव दुरणुसासं, माणुक्कडयाय चरिमाणं ॥२०२१॥
एते चेव य ठाणा, सपण्णउज्जुत्तणेण मञ्झाणं।
सहदुहउभयवलाण य, विमिस्सभावा भवे सहुमा ॥२०२२॥

वए ति गयं।

पुन्तनरं सामइयं. जम्म कयं जो व तेसु वा ठविनो । एस कितिकम्मजेट्टो. ण जाति-सुययो दुपक्ले वि ॥२०२३॥

पुरु**ष**ज्येष्टः

सा जेसि तुबद्धवणा, जेहि य ठाणेहिं पुरिमचरिमाणं । पंचायामे धम्मे. आएसतिमं चिमं स्रणस्र ॥२०२४॥ दस चेव छच चत्ररो. एते खछ तिण्णि होन्ति आदेसा । कतरे इवन्ति दस तु?. भण्णति सुणसु इमे ते तु ॥२०२५॥ ततो पारंचिया बुत्ता, अणबदृष्पा य तिण्णि तु । दंसणम्मि य वन्तम्मि, चरित्तम्मि य केवले ॥२०२६॥ अहवा चियत्तिकच्चे. जीवकायं समारमे । सहे य दसमे बुत्ते. जस्सोबद्रावणा भवे ॥२०२७॥ एते दस तू बुत्ता, अण्णादेसेण होंति छत्त इमे । तिण्णि वि पारंचेकं, अणवदृष्पा वि तिण्णेकं ॥२०२८॥ दसणवन्ते तइए, चरित्तवंते भवे चउत्थं तु। पंचम चियत्तिक्यो. छट्टो सो होउवट्टप्पो ॥२०२९॥ एसो बितियाएसो. ततियाएसो इसो मुणेयन्त्रो । चत्तारि व उबद्वरपा, कयरे तु ? इमे मुणेतव्वा ॥२०३०॥ पारंची अणुबहा, दंसण चरणे स्रुते पदिहा तु । दंसणचरित्तवंता. तो दोण्णेते भवन्ती तु ॥२०३१॥ चियत्तिक्वो सेहो य, चत्तारेते हवंत्रवट्टपा। एते तिण्णादेसा, जवउवणाए ग्रुणेतच्या ॥२०३२॥ केवलगहणं कसिणं, जति वमती दंसणं चरित्तं वा । तो तस्स उवद्ववणा, देसे वंतिम्म भयणा तु ॥२०३३॥ एमेव य किंचि पदं, सुर्यं च असुर्यं च अप्पदोसेणं। अविकोविए कहेन्तो, चोइय आउट सुद्धो तु ॥२०३४॥ सो पुण दंसणवंतो, अणभोगेणं त अहव आभोगा। अणभोगेणं तहियं, कोयी सड्डो तु संवेगा ॥२०३५॥ दट्टण णिण्हगे तू , एते साहू जहुत्तकारि ति । णिक्तंतो अणभोगा, दिहो अण्णेहि साहृहि ॥२०३६॥

भणिओ य णिण्हगाणं. कीस सगासे तमं सि णिक्खंतो ?। तो बेति ण याणामि. एय विसेसं अहं भंते ! ॥२०३७॥ एवमणाभोगेणं, मिच्छत्तगतो पुणो वि सम्मत्तं। जो पहिन्का सो तू, आलोतियणिन्दितो सुद्धो ॥२०३८॥ सो चैव य परियायो. णत्थि जवद्रावणा पुणी तस्स । तं चिय पच्छित्तं से, जं चिय सम्मं तु पडिवज्जे ॥२०३९॥ जो पुण जाणंतो स्थिय, गतो त होज्जाहि णिण्हएसुं त । पुणरागतो य सम्मं, तस्स उवट्टावणा भणिया ॥२०४०॥ छण्हं जीवनिकायाणं, अणपज्झो तु विराहओ ! आलोतियपहिकंतो. सुद्धो इवति संजतो ॥२०४१॥ छण्डं जीवणिकायाणं, अपज्झो तु विराधयो । आस्त्रोतियपदिकंतो, मूलच्छेज्जं तु कारए ॥२०४२॥ खेत्तादिअणपण्डा. अणभोगेणं व जो गतो मिच्छं। सो त अपायिष्ठनो. विराहती तस्स दिन्तो त ॥२०४३॥ जं जो द्व समावण्णो, जं पायोगं व्व जस्स वत्थुस्स । तं तस्स त दायव्वं. असरिसदाणा इमं होति ॥२०४४॥ अपिच्छत्ते य पिच्छत्तं, पिच्छत्ते अतिमत्तया। धम्मस्साऽऽसायणा तिन्वा, मगगस्स य विराहणा ॥२०४५॥ उरम्रत वथहरेंतो, कम्मं बंधति चिक्कणं। संसारं च पबड्टेति, मोहणिज्जं व कुव्यती ॥२०४६॥ उम्मग्गदेसए मग्गद्सए मग्गविष्पडीवाए । परं मोहेण रंजेन्तो. महामोहं पक्रव्वती ॥२०४७॥ एवं त उबद्वितो जो पढमयरं त अहव सामतिए। ढिवतो सो जेट्टयरो. कप्पपकप्पद्विताणं च ॥२०४८॥ प्ररिसजेंद्रे ति गतं॥

सपिडकमणो धम्मो, पुरिमस्स य पिच्छमस्स य जिणस्स । प्रतिकमणम्

मिज्यमगाण जिणाणं, कारणजाए पिडक्समणं॥२०४९॥
गमणागमणिवहारे, सायं पादो य पुरिमचिरमाणं।
णियमेण पिडक्समणं, अतियारो होउ वा मा वा ॥२०५०॥
अतियारस्स द्व असती, णणु होति णिरत्थयं पिडक्समणं।
भण्णित एवं चोदग!. तत्थ इमं होति णानं तु ॥२०५१॥
जह कोिय ढंडिओ तू, रसायणं कारवेति पुत्तस्स ।
तत्थेगो तेगिच्छी, बेती मज्झं तु एरिसयं॥२०५२॥
जित दोसे होअगतं, अह दोसो णित्थ तो गयो होति ।
वितियस्स हरति दोसं, ण गुणं दोसं व तद्भावा॥२०५३॥
दोसं हंतूण गुणे, करेति गुणमेव दोसरिष्ण ति ।
तइयसमाहिकरस्स तु, रसायणं ढंडियसुतस्स ॥२०५४॥
इय सइ दोसं छिंदति, असती दोसिम्म णिज्जरं कुणित ।
कुसलितिगच्छरसायण, उवणीयिमणं पिडक्मणं ॥२०५५॥
पिडक्मणे त्ति गतं।

मासक्षः

जिणथेरअहालंदे, परिहारिंग अज मासकप्पो तु ।
सेते कालमुवस्सयपिंडग्गहणे य णाणतं ॥२०५६॥
एतेसि पंचण्ह वि, अण्णोण्णस्सा चतुप्पपिंह तु ।
सेतादीहि विसेसो, जह तह वोच्छं समासेण ॥२०५७॥
णित्थ तु स्वेत्तं जिणकप्पियाण उडुबद्धे मामकालो तु ।
बामामुं चउमासा, वमही अममत्तपरिकम्मा ॥२०५८॥
पिंडो तु अलेवकडो, गहणं तू प्रमणाहुवरिमाहि ।
तन्थ वि कातुमभिग्गह, पंचण्डं अण्णयरियाए ॥२०५९॥
थेराण अत्थि खेत्तं, तु उग्गहो जाण जोयण सकोसं ।
णगरे पुण वसहीप, कालो उउबद्धे मासो तु ॥२०६०॥
उस्सग्गेण य भणितो, अववाएणं तु होज्ज अहिओ वि ।
एमेव य वासामु वि, चतुमासो होज्ज अहिओ वा ॥२०६१॥

अममत्त-अपरिकम्मो, उवस्मओ एन्थ भंगया चतुरो । उरसामेणं पढमो. निष्णि त अववायओ भंगा ॥२०६२॥ भत्तं लेवकडं वा, अलेवकडं वा वि ते त गेण्हंति। सत्ति व एसणाहिं, सावेक्खो गच्छवासो सि ॥२०६३॥ अहरूंदियाण गच्छे. अपिडिबद्धाण जह जिणाणं तु । णवरं काले विसेसी. उदमासी पणग चतुमासी ॥२०६४॥ गच्छे पहिचद्धाणं, अहलंदीणं त अह पुण विसेसो । जो तेसि उमाही खल, सो साऽऽयरियाण आहवति॥२०६५॥ एगवमहीए पणगं, छव्वीहीओं य गाम कुव्वंति। दिवसे दिवसे अण्णं, अहंति वीहीं त णियमेणं ॥२०६६॥ परिहारविसुद्धीणं, जहेव जिलकाष्प्रयाण णवरं त्। आर्यविकं तु भन्ते, बोद्धव्यो बेरकप्पो नु ॥२०६७॥ अज्ञाण परिगाहियाण उगाही जो तु सो ह आयरिए। कालतो दो दो मामा, उद्बद्धे तासि करपो तु । २०६८॥ सेमं जह धेराणं, पिटो य उवस्मयो य तह तामि । सो सब्बो वि य द्विहो. जिणकप्पा थेरकप्पा य ५२०६९॥ जिणकिपयऽहालंदी, परिहारविसृद्धियाण जिलकप्पो । थेगण अज्ञियाण य, बोद्धन्त्रो थेर्कष्पो तु ॥२०७०॥ द्विहो उ मामकप्पो. जिलकप्पो चेव थेरकप्पो य। णिरणुगाही जिणाणं. थेराण अणुगाहपवत्ती । २०७१॥ उद्वासकालऽनीए, जिणकप्पीणं तु गुरुगो गुरुगा य। होंति दिणम्मि दिणम्मी, थेराणं ने चिय छह उ ॥२०७२॥ तीसं पदाऽवराहे, पुट्टो अणुवासियं अणुवसंता । जे तत्थ पदं दोसा, ने तत्थ ततो समावण्णो ॥२०७३॥ पण्णरस्रममदोसा, दम एसणदोम एय पण्वीसं। संजोयणाइ पंच य. एते तीसं त अवराहा ॥२०७४॥

एतेहिं दोसेहिं, संपत्तीए वि लग्गती जियमा । दिवसे दिवसे सो ऊ. कालातीते वसंतो तु ॥२०७५॥ वासावासपमाणं, आयारउदुप्पमाणियं कप्पं। एयं अणुम्ध्रयंतो, जाणसु अणुवासकत्त्वो तु ॥२०७६॥ आयारपकप्पम्मी. जह भणितं तीय संवसंतो वि। होति अणुवासकत्वो, तह संवसमाण दोस्रो तु ॥२०७०॥ दुविहे विहारकाले, वासावासे तहेव उदुबद्धे। मासातीतेऽशुवही, वासाईते भवे उवही ॥२०७८॥ उच्चिद्धिएसु अद्वसु, तीतेमुं वास तत्य ण वि कप्पे। घेतुणं उवहिं खलु, वासाम्रु त तीने कप्पति त ।।२०७९॥ वासउद्अहालंदे, इत्तरिसाहारणोग्गहपुहत्ते । संकमणहा दन्वे, गच्छे पुष्फाविकण्णा तु । २०८०॥ वासासु चडम्मासो, उउबदे मासो लंद पंच दिणा। इत्तरिओ रुक्खमुले, वीसमणद्वा ठियाणं तु ॥२०८१॥ साहारणा उ एते, समगठियाणं बहुण गुच्छाणं । एकेण परिग्गहिता. सन्वे वोहत्तिया होन्ति । २०८२॥ संकमणऽण्णोण्णस्सा, सगासे जित उ ते अहीयंते । सुत्तत्थतदुभयाई, सन्त्रो अहवा वि पढिपुच्छे ॥२०८३॥ ते पुण मंडलियाए, आवलियाए व तं तु गिण्हेजा । मंडलियमहिङ्जंते, सिचतादी तु जो लाभो ॥२०८४॥ सो तु परंपरएणं, संकमती ताव जाव सट्टाणं। जहियं पुण आवलिया, तहियं पुण ठाति अंतिम्म ॥२०८५॥ ते पुण जहा तु एक्काये, वसहीए अहव पुष्फिकिण्णा तु । अहवा वि तु संकमणे, दघ्वस्सिणमो विही अण्लो ॥२०८६॥ सुत्तत्थतदुभयविसारयाण थोवे अ संभतीभेदे । संकमणद्वा दव्ये, जोगे कप्पे य आवस्त्रिया ॥२०८७॥

पुन्नहिताण खेते, जित आगच्छेज अण्ण आयरिओ।
बहुसुय बहुआगमिओ, तस्स सगासिम जित खेती॥२०८८॥
किंचि अहिज्जेजाही, थोवं खेतं च तं जह हवेजा।
ताहे असंथरंता, दोण्णि वि साहू विवज्जेन्ति॥२०८९॥
अण्णोण्णस्स सगासे, तेसिं पि य तत्थऽहिज्जमाणाणं।
आभवणा तह चेव य, जह भिणयमणंतरं सुत्ते ॥२०९०॥
एवं णिव्वाघाए, मास चतुम्मासिओ तु थेराणं।
कप्पो कारणयो पुण, अणुवासो कारणं जाव॥२०९१॥
एमो तु मासकप्पो, थेरकप्पो य विण्णिओघेणं।
अहुणा वियमवियं तू, थेराणं इण्छु वोच्छामि ॥२०९२॥
सो थेरकप्पो दुविहो, अद्वितकप्पो य होति वितकप्पो।
एमेव जिणाणं पी, वितमवितो होति कप्पो तु ॥२०९३॥
मासकप्पेति गतम।

पज्जोसवणाकष्पो, होति ठिनो अहिओ य थेराणं।
एमेव जिणाणं पी. दृह ठियमठिओ य णानव्यो ॥२०९४॥
चातुम्मासुक्कोसो, सत्तरि राइंदिया जहण्णेणं।
ठिनमहिय एगतरे, कारणवच्चासिनण्णयरे ॥२०९५॥
थेराण सत्तरी खल्छ, वासासु ठिनो उ दृष्णि मामो तु।
वच्चासिओ तु कज्जे, जिणाण णियमह चतुरो वा ॥२०९६॥
दोसासित मिज्झमया, अच्छंनी जाव पुव्वकाही तु।
विहरंति य वासासु वि, अकहमे पाणरहिए य ॥२०९७॥
भिण्णं पि वासकष्पं, करेंति तणुयं पि कारणं पप्प।
जिणकिष्पया वि एवं, एमेव महाविदेहे वि ॥२०९८॥
एयं ठियम्मि मेरं, अहियकष्पे य जो पमाएति।
सो बहति पासत्थे, ठाणम्मि तगम्मि वज्जेज्जा ॥२०९९॥

पर्युषणाकस्पः

पासत्थसंकिलिहं, ठाणं जिणवृत्त थेरेहि य। तारिसं त्र गवेसंतो. सो विहारे ण सुज्झित ॥२१००॥ पासत्थसंकिलिहं, ठाणं जिणवृत्त थेरेहि य। तारिसं तु विवज्जैंनो, सो विहारं तु सुज्झति ॥२१०१॥ जो कप्पठितीसेयं, सहहमाणो करंति सहाणे। सो तारिसं त गवेसेजा. जनो गुणाणं अपरिहाणी ॥२१०२॥ वितमवियम्म दस्विहे. व्यणाक्षं य द्विहमण्णयरे । उत्तरगुणकष्पिम य, जो मरिकष्यो म संभोगो ॥२१०३॥ ठवणाकष्पो द्विहो, अकष्पठवणा य सेहठवणा य । पढमो अकप्पिएणं, आहारादीणि गिण्हावे ॥२१०४॥ अट्ठारसेव पुरिसे, वीसं इत्थीण दस णपुंसे य। दिक्खेति जो ण एते. सेहट्टबणाए मो कप्पो ॥२१०५॥ आहार उवहिसेज्जा. उगामउपायणेसणासु द्वं। जो परिगिष्हति णिययं, उत्तरगुणकप्पिओ स खलु ॥२१०६॥ सरिकापे सरिछंदे, तुल्लचरिते विमिट्टनरए वा। साहहिं संथर्व कुज्जा, णाणीहिं चरित्तगुत्तिहि ॥२१०७॥ सरिकणे सरिछंदे, तल्लचरित्ते विसिट्टारण वा । आइएज्ज भत्तपाणं. सर्ण लाभेण दा तुस्से ॥२१०८॥ इय सामाइयछेदे, जिणथेराणं ठिती समकवाता । एत्तो णिव्विसमाणे. णिव्विष्ट यावि वोच्छामि ॥२१०९॥ परिहारकल्यः परिहारकण्पं बोच्छामि, परिहरितव्यं जहा विद् । आदी मज्झावसाणे य, आणुपुच्चि जहक्कमं ॥२११०॥ भरहेरवयवासेसु, जदा तित्थगरा भवे। पुरिमा पच्छिमा चैव, परिहारी तेस होन्ति तु ॥२१११॥ मज्झिमाण ण संती तु, तित्थेमुं परिहारिया। ण यावि य विदेहेसु, विज्ञंतो परिहारिया ॥२११२॥

केवतियकालसंजोगो, गच्छो तु अणुसद्धती । तित्थंकरंसु पुरिमेसु, तहा पच्छिमएसु य ॥२११३॥ पुन्वसयसहस्साति, पुरिमस्सऽणुसज्जती। जम्हा ण पडिवज्जंति. दोण्ह गच्छा परेण तु ॥२११४॥ देयुणपुरुवकोडीओ, दो सा दोण्ह भवंति तु। दो सा एगुणनीमा त. तेण ऊणा ततो भवे ॥२११५॥ वीसगमो य वासाई, चरिमस्सऽणुसज्जए। जाव देमुणगा टोणिंग, सवा वासाण होंनि तु ॥२११६॥ पन्यज्ञा अद्भामस्म. उत्रष्टा णत्रमस्मि उ । एगुणवीसपरियाए, दिद्विवाओ य तस्स तु ॥२११७॥ उद्दिस्सिति वरिसेण य, तस्स य सो तु समप्पती । णव वीसा य मेलीणा, उपातीसा भवंति त ॥२११८॥ इति एगुणतीमाए, सयमूणं तु पच्छिमे । एमो दोम तु एनेणं, जणाई दो मयाणि उ ॥२११९॥ पालित्ता सर्व ऊणं, टाणं ने तु पन्छिमे । काले देसेन्ति अण्णेसिं, इति ऊणा उ वे सता ॥२१२०॥ पडिवज्जंनि जिणिदस्स, पायमुळिन्म जे विज्ञ। ठावयंति उ ते अण्णे, नो तु ठावितठावगा ॥२१२१॥ सक्वे चरित्तमंता य, दंसणे परिणिट्टिया। णवपूच्वी जहण्णेणं, उक्षोस दसपुव्यिया ॥२१२२॥ पंचिवहे ववहारं, कप्पे ते दुविहम्मि य । दमविहे य परिछत्ते, सन्ये ते परिणिद्रिता ॥२१२३॥ अत्तणो आउगं सेसं, जाणित्ता ते महाम्रणी । परक्कमं बलं विरियं. पचवाए तहेव य ॥२१२४॥ जित जीतपद्मवाया, ण होति तेसि त अण्णतरा । तो तं पहिवडनंती, वाघाएणं तु तेण वी ॥२१२५॥

पहिवज्जंते वीसग्गसो कहं देसणा दो सया भवंति ? वीसाए परेण वि एयमगां. पव्यज्जा० सिलोगा ३। वाससयाज्या मणुस्सा जम्मानो. सेसं तहेव सन्वं ॥ तत्थ जे उसभसामिस्स तित्थे पुन्वसतसहस्सा ते देखुणा दो पुन्वकोडी भवंति । कहं ? अट्टवासपरियातो, सिलोगा ३ । ते पुष्वकोडिआउया मणुस्सा जम्माओ ८ पव्वइता,२९वासाए दिद्विताओ व समप्पति, सो उसभसामिकालपडिवण्णो, एसा एगा पुन्त्रकोडी देसुणा। एयस्स मूले एवं च अण्णो पहिच-ज्जति तस्स वि [एगा पुव्यकोडी देमुणा। एवं] देसुणाओ दो पुन्वकोडीओ । एतस्स अण्णा मूले ण पडिवज्जंति । उस-भसामिस्स आउयं ८४ [लक्खपुन्त्राणि ।] आपुच्छिजण अरहंते, मरगं देसिति ते इमं। पमाणाणि य सन्वाणि, मग्गहे य बहुविहे ॥२१२६॥ उवहीगमणप्पमाणाणि, पुरिसाणं च जाणिउं। द्रव्यं खेत्तं च कालं च. भावं अण्णे य पज्जवे ॥२१२७॥ संसद्वमाइयाणं, सत्तर्वं एयणाण तु । आदिल्लाहि दोहि तु, अग्नहो मह पंचहि ॥२१२८॥ तत्थ वि अण्णयरीए, एगीए अभिगाहं तु कातूणं। उवहिणो अम्महो दोसुं, इयरो एगतरीय तु ॥२१२९॥ अइरुग्गयम्मि सूर्गिम, कृष्पं देसेन्ति ते इमं। आलोइयपडिचकंता, ठावयंति तयो गणे ॥२१३०॥ सत्तावीसं जहण्णेणं, उक्कोसेणं सहस्त्रमो । णिग्गंथसूरा भगवंतो, सब्बगोण विवाहिया ॥२१३१॥ सवगासी य उक्कोसा, जहण्णेण तनो गणा। गणो य णवगो बुत्तो, एमेया पडिवत्तीओ ॥२१३२॥ एगं कप्पट्टियं, कुजा, चत्तारि पारिहारिया । अणुपारिष्ठारिया चेव. चत्तरो प्रतेसि ठावप ॥२१३३॥

ण तेसि जायते विग्धं. जा मासा दस अट्ट य। ण वेयणा ण वाऽऽयंको, ण वायणे उवहवा ॥२१३४॥ अद्वारसम् पुण्णेसं, होज्जा एते उवहवा। कणिए कणिए यावि. गणे मेरा इमा भवे ॥२१३५॥ जित्रण गणी उणी, तित्र तत्थ पिक्सवे। एगं दवे अणेगा वा. एम कप्पे त ऊणिए ॥२१३६॥ एते अणुणिए कप्पे, उन्नसंपज्जिति जो तर्हि। एगे दुवे अणेगे वा, तेसिं कप्पो इमो भवे ॥२१३७॥ अच्छंति ता उदिक्खंना, जाव पुण्णा तु ते णव। पच्छा पडिवज्जंति, जं कप्पं तेसि अंतिए ॥२१३८॥ पमाण कप्पट्रिनो तत्थ. ववहारं ववहरित्तए । अणुपरिहारियाणं पि, पमाणं होति सेव तु ॥२१३९॥ आलोयण कष्पठिए, पश्चनखाणं तहेव वंदणयं । तं च वहंते ते तू, उज्जाणी एव मण्णंति ॥२१४०॥ अणुपरिहारी गोबालगव्यगाबीण णिच्युउजुत्ता । परिहारियाण मम्मतो. हिंहिंती णिचमुञ्जूता ॥२१४१॥ पडिपुच्छं वायणं चेत्र, मोत्तणं णित्थ संकहा । आलावो अत्तणिहेमो. परिहारियस्स कारणे ॥२१४२॥ परिहारियाण उ तवो, वासामुक्कोस मिज्यम जहण्लो। बारसम दसम अट्टम, दसमऽट्टम छट्ट सिसिरेसु ॥२१४३॥ अद्भा छट्ट चउत्थं, गिम्हे उक्कोस मिजझम जहण्लो। आयंबिलपारणगं, अभिगहिताएमणाए तु ॥२१४४॥ अणुपरिहारीया पुण. णिचं पारिति ते उ आयामे। कप्पट्टिए वि ते चिय, आणिति अभिगाहीताहि ॥२१४५॥ परिहारिय पत्तेयं, अणुपरिहारीण तह य कप्पठिए। पंचण्ह वि तेसिं तू, संभोगेको ग्रुणेतन्वो ॥२१४६॥

परिहारिएस बढे. अणुपरिहारी ततो वहंती है। कप्पट्टियो य पच्छा, बहती बृदेसु तेस्रं तु ॥२१४७॥ परिहारिया वि छम्मासे, अणुपरिहारिया वि छम्मासे। कप्पट्टितो वि छम्मासे. एते अट्टारस तु मासा ॥२१४८॥ अणुपरिहारिया चेव. जे य ते परिहारिया । अण्णमण्णेस्र ढाणेस्र, अविरुद्धा भवंति ते ॥२१४९॥ गतेहिं छहिं मासेहिं, णिव्विदा भवंति ते । अणुपरिद्वारिया पच्छा, परिद्वारं परिद्वरंति तु ॥२१५०॥ गएहिं छहिं मासेहिं. णिव्विद्रा भवंति ते । वहती कप्पट्रिनो पच्छा. परिहारं अहाविहि । २१५१ त पतेसि जे वहन्ती. णिव्वियमाणा हवंति ने णियमा । जैहिं वृढं पुण ते सिं, हर्वति णिब्विट्टकाइया । २१५२॥ अट्ठारसहि मासेहि, कप्पो होति समाणितो । मुलद्रवणा एसा, समासेण वियाहिता ॥२१५३॥ एवं समासिए कप्पे. जे व सिं जिणकप्पिया। तमेव कर्ष ऊणा वि. पालए जावजीवियं ॥२१५४॥ अट्टारसहिं पुण्णेहिं. मासेहिं थेरकिपया । पुण गच्छं णियच्छंति, एसा तेसि जहाविही ।२१५५॥ ततिय चउत्था कष्पा, समोअरंते तु वितियकष्पिम । पंचमछद्रवितीसं. हेट्रिल्लाणं समोयारं ॥२१५६॥ सामाछेदो णिन्विस, णिन्विद्व एते जिणथेरं ओयर्ति ॥ अहणा जिणकपाठिती, सा पुच्चं मासकप्पस्त्रामिम्। भणिया स चेत्र इहं. जनरममृष्णत्थ भणित इमं ॥२१५७॥ गच्छिम्मि य णिम्माया, धीरा जाहे य मुणितपरमत्था । अगाह अभिगाहे या, उर्वेति जिणकत्पिगविहारं ॥२१५८॥ णवपुन्ति जहण्णेणं, उक्कोसेणं तु दस असंपुण्णा । चोहसपुत्र्वी तित्थं. तेण त जिणकप्प ण पवज्जे ॥२१५९:॥दारं।

जिनकम्पः

वहरोसभसंघयणा. सुत्तस्सऽत्थो त हाति परमत्थो । संसारसंभवो वा णातो तो म्रणियपरमत्थो ॥२१६०॥ दारं । अगहो ततियातीया. पडिमाहि गहण भत्तपाणस्स । दोहिं तु उवरिमाहिं, गेण्हंती वत्थपायाई । २१६१।। दारं। दव्वे अभिग्नहा पुण, रतणावलिमाइनाइ बोद्धव्या । एतेस विदितभावी. उवेति जिणकप्पियविहारं ॥२१६२॥ दुविहा अनिसेसा वि य, तेसि इमे विणया समासेणं। बाहिर अब्भितरगा, तेसि विसेसं पवक्खामि । २१६३॥ बाहिरओ सरीरस्मा, अनिसेमो तेसिमो तु बोद्धव्यो। अच्छिहपाणिपाया. वहरोसभसंघतण घीरा ॥२१६४॥ वग्गुलिपक्ससरिसयं, पाणितलं तेसि धीरप्ररिसाणं। होति खतीवसमेणं, लढ़ी तेसि उमाऽऽहंस् ॥२१६५॥ माएज घडसहरसं, धारेज व सो त सागरा सब्वे। जो परिसलद्धीए, सो पाणिपडिमाही होति ॥२१६६॥ दारं। अब्भितर अतिसेसो, इमो उ तेसि समासयो भणितो । **उदही वित्र अक्खोभा, सूरो इव तेयसा जुत्ता ॥२१६७॥** अव्वावण्णसरीरा, व गंधा ण होति से सरीरस्स । म वि ण कुच्छ तेसिं.परिकम्मं ण वि य कुर्व्वति॥२१६८॥ पाणिपडिग्गहिया तु, एरिसया णियमसो मुणेतन्वा। अतिसेसे वोच्छामि, अण्णे वि विसेसना तेसि ॥२१६९॥ द्विहो तैसऽतिसेसो, णाणातिसयो तहेव सारीरो । णाणादिसयो ओही, मणपज्जव तदुभयं चैव ॥२१७०॥ अहवाऽऽभिणिबोहीयं, सुतणाणं चेव णाणअतिसेसो । तिवलीअभिण्णचचा, एसो सारीर अतिसेसो ॥२१७१॥ रतहरणं मुहपोत्ती. जहण्णम्रवगरण पाणिपत्तिस्स । उक्कोसं कप्पतियं, सञ्जो नि य एस पंचिवहो ॥२१७२॥

पिंदगहभारि जहण्णो, णवहा उक्कोस बारसिवकणो ।
तेसिं एयाणि चिय, अतिरेगे पायणिज्जोगो ॥२१७३॥
रुढणह णियणग्रुंडो, दुविहो उवही जहण्णओ तेसिं ।
एसो लिंगो तेसिं, णिव्वाघाएण णेतव्वो ॥२१७४॥
रतहरणं ग्रुहपोत्ती, संखेवेणं तु दुविह उवही तु ।
वाघात विगतलिंगे, अरिसाम्र व होति कडिपट्टो ॥२१७५॥
सत्त य पिंडग्गहम्मी. रतहरणं चेव होति ग्रुहपोत्ती ।
एसो तु णवविकणो, उवही पत्तेयबुद्धाणं ॥२१७६॥
एगो तित्थयराणं, णिक्खममाणाण होति उवही तु ।
तेण पर णिरुवही तू . जावज्जीवाए तित्थगरा ॥२१७७॥
एसा जिणकण्पिठती, ठाणामुण्णत्थया समक्खाता ।
वित्थरयो पुण णेया, जह भिणतं मासकण्पिम ॥२१७८॥
णिज्जुत्तीए ॥

स्थविरकस्पः

अहुणा थेरथिती तू, सा वि य भणिता तु पुन्नमेवं तु ।
दारमसुण्णत्थिमियं. णवरं संखेनतो नोच्छं ॥२१७९॥
संजमकरणुज्जोया, णिष्फायग णाण-दंसण-चरित्ते ।
दीहो य बुहुनासो. नसहीदोसेहि य निम्रुको ॥२१८०॥
दीहो ति बुहुनासो, थेरा ण तरंति जाहे कातुं जे ।
अन्धुज्जयमरणं ना. अहना अन्धुज्जयनिहारं ॥२१८१॥
दीहं च आउगं तू, वृहानासं तयो नसे ।
उग्गमादीहिं दोसेहिं, निष्पमुकाए नसहीए ॥२१८२॥
मोत्तुं जिणकष्पठितिं, जा मेरा एस निण्णता हेट्टा ।
एसा तु दुपदजुत्ता, होति ठिती थेरकष्पिम ॥२१८३॥
दुपदं ती जस्सग्गो, अननाओ चेन होति दोण्णेते ।
एतेहिं होति जुत्तो, णियमा खलु थेरकष्पो तु ॥२१८४॥
पलंबाओ जान दृती, जस्सग्गऽननाइयं करेमाणो।

अववाष उस्समं, आसायण दीइसंसारी ॥२१८५॥ अह उस्सम्मेऽत्रवायं, आयरमाणो विराहओ होति। अववार पुण पत्ते. उस्सम्मणिसेवओ भड्यो ॥२१८६॥ कह होती भतियन्वो ?, संवयणधितिजुतो समग्गो तु । एरिसनो अववाए, जस्सग्गणिसेवओ सुद्धो ॥२१८७॥ इयरो उ विराहेई, असमत्थो जेण परिसहे सहितं। धितिसंघतणेहिं तू, एगतरेणं व सो हीणो ॥२१८८॥ इति सामाइयमादी, छव्तिह कप्पद्विती समक्खाया । दारं । विरियं दारं अहुणा, इणमो वोच्छं समासेणं ॥२१८९॥ परिणत गीतत्था तू, विपन्रत्वभृया अपरिणया होंति। कडजोगी कयजोगी, चतुत्थमादीहि णायव्या ॥२१९०॥ अकडज्जोमा जोमानियचत्त्यादीहिं होन्नि णायच्या । धितिसंघयणादीहि, तरमाणा होति णायव्या ॥२१९१॥ धितिसंघयणेणं तु , एगयरज्ञया उ होंनि अनरा उ । अहवा दोहि वि जुत्ता, अतरगपुरिसा मुणेयन्वा ॥२१९२॥ एतेषां कल्पस्थितादीनाम् ॥ ાહશાશ્ક્રીશા

ज जह सत्तो बहुतरगुणो व्य तस्माहियं पि देज्जाहि हीणतरे हीणयरं, झोसेज्ज व सव्वहीणस्स ॥७२॥ कप्पष्टियमातीणं, पुरिसाणं जाव उभयहा अतरो । जो जह सत्तो उ भवे, तस्स तहा होति दायव्वं ॥२१९३॥ बहुतरगुणसमगो तू, धितिसंघतणादि जो तु संपण्णो । परिणय कडजोगी वा, अहवा वि हवेज्ज उभयनरो ॥२१९४॥ एयगुणसमग्गस्स तु, जीयमया अहियगं पि देज्जाहि । होणस्स तु हीणतरं, ग्रंवेज्ज व सन्बहीणस्स ॥२१९५॥ ॥७२॥६र्जर॥

एत्थपुण बहुतरा भिक्खुणात्ति अकयकरणाणभिगयाय जंतेण जीतमञ्जमभत्तंनमविगतिमादीयं ॥७३॥

जीतयन्त्रविधः एत्थं इमिम जीए, बहुतर्या भिन्खुणो भवंनी तु । अकयकरणा उ जे तू, अणभिगया नेव णायव्या ॥२१९६॥ चस्सद्देण थिराथिर, गहिया तू एत्थ तू समासेणं। जंतयविद्वीकमेणं, जीयाभिमएण देजजाहि ॥२१९७॥ कतकरण अकयकरणा, कयकरणा गच्छवासि इयरे य अक्रयकरणा त णियमा, णायव्या गच्छवासी त ॥२१९८॥ ते अभिगत अणभिगता, अणभिगता थिराऽथिरा व होजनाहि। कत अभिगत जं सेवे, अणिभगते अत्थिरे इच्छा ॥२१९९॥ अहवा णिरवेविखयरा, दुविहा पुरिसा समामनो होति । णिरवेक्खो जिणमादी, ते णियमा होंति कतकरणा ॥२२००॥ सावेक्खा होति निहा, आयरिय उत्रज्झ भिक्खुणो चेत्र । कतकरणमकतकरणा, आयरिया चेवुवज्ज्ञाया ॥२२०१॥ भिक्ख गीयाऽगीया, गीयत्थ थिराऽथिरा य वोद्धव्या । कतकरण अकतकरणा, एकेका होन्ति ते द्विहा । २२०२॥ अग्गीया वि थिराऽथिर, कयाऽकया चेव होंति एक्केका । कतकरण अकतकरणा, केरिसया होति ? सुणमु इमे ॥२२०३ छट्टऽद्रमाइएहिं, कनकरणा ते त उभयपियाए । अभिगत कतकरणतं, जं जोग नवारिहा केवी ॥२२०४॥ णिरवेक्खा एगविहा, सावेक्खाणं त कि णिमित्तणं। तिविहो भेदो त कतो, आयरियादी ? इमं सुणस्र ॥२२०५॥ भण्णइ जुनरायादी, बत्धृविसेसेण दंडी जह लोए। तह वत्थुविसेसेणं, आयोरयादीण आरुवणा ॥२२०६॥ आयरिय-उवज्झाया, दोविण वि णियमेण होति गीयत्था । गीयत्यमगीयत्था, भिक्खु पुण होति णातव्या ॥२२०७॥

कारणमकारणं वा, जयणाऽजयणा व णत्थऽगीयत्थे। एतेण कारणेणं, आयरियादी तिविह भेदी ॥२२०८॥ कज्जाऽकज्ज जवाऽजय, अविजाणंतो अगीयो जं सेवे। सो होति तस्म द्प्यो, गीते दप्पाजने दोसा ॥२२०९॥ अविसिद्धा आवत्ती, चरिमं मन्वेसि तेण सावेक्खे । चरिमं चिय कयकरणे, आयरिए अकए अणवहो ॥२२१०। कतकरणउवज्झाए, अणवहो होति मूलमकयभ्मि । भित्रसुगीयथिरम्मी. कतकरणे मूलमेव भवे ॥२२११॥ अकयथिरम्मी छेटो. अत्थिरकयकरणे होति सो चेव। अस्थिरअकते छग्गुरु, अगीतथिरकरणे ते चेव ॥२२१२॥ अग्गीतथिरे अकते, छल्लहुमा होति तू ग्रुणेनच्या । अग्गीयअथिरकयकरण च्छल्लह् चउगुरू अकते ॥२२१३॥ एसाऽऽदेसो एको, अयमण्णो विनियओ त आदेसो । चरिमं चिय आवण्णे, कतकरणगुरुम्मि अणवट्टो ॥२२१४॥ अकतकरणम्म मूलं, मुलग्नुवज्झाए होति कतकरणे। अकतकरणिम्म छेदो. इय णेयं अहुकंतीए ॥२२१५॥ एमेव य अणवर्द्ध, आवण्णे होति दोण्णि आदेमा । णिरवेक्लो ण भणिएत्थं, जं दोण्णि ण होंति तस्सेते ॥२२१६॥ अहुणा मूळावण्णो, सच्चे मूळं तु होति णिरचेक्खे। मुळं चेव गुरुस्म वि, कतकरणे अकते छेदो तु ॥२२१७॥ कतकरणउवज्झाए, छेदे अकतम्मि होन्ति छग्गुरुगा । इय अट्टोकंनीए, णेयं अयमण्णो आएसो ॥२२१८॥ सावेक्लो ति त्र काउं, गुरुस्स कडनोगिणो भवे छेदो। अक्तनकरणिम छग्गुरु, कतकरण उवज्झे छग्गुरुगा ॥२२१९॥ अकते छल्लहुगा तू, इय अड्डोकंतीए तु णातव्वं । अहुणा छम्मुरुमे तू , आहर्त्तं ठाइ गुरुभिण्णे ॥२२२०॥

छ्छहुयादत्तम्मी, ठायति छहुए तु भिण्णमासम्मि । चतुगुरुआदत्तम्मी, अन्नम्मी ठाइ गुरुवीसे ॥२२२१॥ चतुछहुए वीसाए, गुरुमासे ठाति पण्णरसर्हि तु । ('गुरुमासे ठाति गुरुग पण्णरसे' इति मत्यन्तरे)

लहुए लहुपण्णरसे, गुरुभिण्णे ठाति गुरुदसर्हि . २२२२!! लहुभिण्णे दसलहुए, गुरुवीसा अंते ठाति गुरुपणए। लहवीसा आढतं. अंतम्मी ठाति लहुपणए ॥२२२३॥ पण्णरसिं गुरुएहिं, अंतम्मी अट्टमम्मि टायति तु । पण्णरसिं लहुएहि, अंतम्मी ठाति छट्टम्मि ॥२२२४॥ दसगुरुए आहत्तं, अंतम्मी ठायती चतुत्थमिम । दसलहुए आढत्ते, डायति तू अंते आयामे ॥२२२५॥ गुरुपणए आढत्ते, एकासणयम्मि अंते डायइ तू । लहुपणए आढते, अंतम्मी वाति पुरिमहू ॥२२२६॥ अद्रमभत्ताऽऽहत्तं, अंतम्मी ठायई अ णिवित्रगती । जंतिवहीपत्थारो, समासनो एसमक्खानो ॥२२२७॥ एयं तु अजयणाए, सावित्रखाणं तु होति पच्छित्तं । अह गीयत्थो सेवे, कारण जनणाए तो सुद्धो ॥२२२८॥ एयं त कारणम्मी, जतणासेविस्स विष्णयं दाणं। अहवा वि इमं अण्णं, आयरियादी जहाकमसी ॥२२२९॥ आयरिय उवज्झाए, कतकरणे अकतकरण दुविहा तु । भिक्खुम्मि अभिगते या, अणभिगते चेव दुविहो तु॥२२३०॥ अभिगते कत अकते या, अणभिगते थिरे तहेव अथिरे य। थिर कतकरणे अकते, अथिरे कनकरणमकए य ॥२२३१॥ एते सन्वंऽवेगं, आवत्ती पंचराइगाऽऽवण्णा । तं पणगं अविसिद्धं, चउत्थमादी हिं विण्णेयं ॥२२३२॥

आतरिए कतकरणे, तं चिय पणगं त होति दातव्वं । अकतकरणे चडत्थं, कयकरणे उवज्झे तं चेव ॥२२३३॥ अक्रयम्मी आयामं, भिक्खुम्मी अभिगतम्मि कतकरणे। आयामं दायव्वं, अकयकरणे उ भत्तेकं ॥२२ ३४॥ भिक्खुम्मी अणभिगते, थिरकयकरणे य एगभत्तं तु । अकयम्मी पुरिमहूं, अणिभगए अस्थिरे कतम्मि ॥२२३५॥ पुरिमहूरे चिय णियमा, अस्थिरअकयम्मि होति णिव्विगति । अह्वाऽणिभगय अथिरे, इच्छाए तं च अण्णं वा ॥२२३६॥ एमेव य दसरायं, सच्वे आवण्णमेगमावर्त्ति । कतकरणे आयरिए, दसरायं चेव दायव्वं ॥२२३७॥ अक्रयकरणस्मि पणगं, कतकरणे पणगमेवुवज्झाए। अकतकरणे चउत्थं, एवं तु अड्डुकंतीए ॥२२३८॥ ता णेयव्य कमेणं, जाव उ अंतम्मि होति पुरिमहूं। इय पण्णरमाऽऽरदं, ठायइ एकासणगमंते ।।२२३९॥ वीसाऽऽरद्धं ठायति, आयामे भिण्णमासऽभत्तद्व । मासाऽऽरद्धं पणगे. दुमास दसराए ठायइ तु ॥२२४०॥ तेमासे पण्णरसे, चतुमासे ठाति वीसरातम्मि । पणमासे पणुवीसे, छम्मासे मासिए ठाति ॥१२४१॥ छेदो दोमासीए, मूले तैमासियम्मि ठायति तु । अणवट्ट चतुमासे, पारंचिइए तु पणमासे ॥२२४२॥ एए भणिता छहुगा, सन्वे वि तवारिहा समासेणं। एमेव य गुरुगा वी, णेयन्त्रा अहुकंतीए ॥२२४३॥ एमेव य मीसा बी, अहुकंतीए होन्ति णेतव्वा । एमेव पंचपचहिं, मासादी सातिरेगादी ॥२२४४॥

जा छम्मासा णेया, तत्थ वि उग्घाय तह अणुग्घाया । मीसा वि अ णेतव्वा, अहुोक्कंतीए सव्वत्थ ॥२२४५॥ अहवा वी णिव्विगती, पुरिमेकासण तहेव आयामं। तत्तो चउत्थ पणगं, दस पण्णर बीस पणुवीसा ॥२२४६॥ मासो लहु गुरु चतु छच लहु गुरु च्छेद मूल अणवद्रो। पारंचिए य तत्तो, पणयादी हासण तहेव ॥२२४७॥ छहु गुरुग मीसगा वि य, तहेव एत्थं पि होन्ति णायन्ता । एवं एयं दाणं, बुद्धीए होति विण्णेयं ॥२२४८॥ एमेव य समणीणं, णवरं दुगवज्जितं तु कातन्त्रं। अणवट्टो पारंची, एय दुगं णितथ समणीणं ॥२२४९॥ अहवा पुरिसा दुविहा, समासतो होन्तिमे उ णातव्या । एगविहारी य तहा, गणबद्धविहारिणो चेव ॥२२५०॥ गच्छाहि णिग्गया जे, पडिमापडिवण्णया य जिलकप्पी। जे यावि सयंबुद्धा, इत एगविहारिणो तिविहा ॥२२५१॥ ते णिचमप्पमत्ता, जति आवज्जे कहंचि कम्मुद्या। तक्खणमेव तु तं पहुवेन्ति णियमा य सक्खीवा ॥२२५२॥ संघयणधितिसमग्गा, सत्ताहिद्वियमहन्तजोगधरा । सुबहुं पि हु आवण्णा, वहन्ति णिरणुगाई सब्वं ॥२२५३॥ आलोयणोत्रयुत्ता, ते तू आलोयणाए सुद्रवंति । तेसि जाव तु मूळं, करेन्ति सतमेव सुद्धंति ॥२२५४॥ अणिगृहियबल-विरिया, जहवादीकार्या य ते धीरा। उत्तमसद्धसमण्णागया य सुडझंति ते णियमा ॥२२५५॥ गणपडिबद्धा दुविहा, जिणपडिरूवी य होंति थेरा य। जिणपिंडरूवी द्विहा, विसुद्धपरिहारऽहालंदी ॥२२५६॥ ते णिचमप्पमत्ता, जति आवज्जे कहंचि कम्मुद्या । तक्त्वणमेव हु तं पट्टवेन्ति कप्पट्टियसगासे ॥२२५७॥

संघयणिवितिसमग्गा, सत्ताहिहियमहंतजोगधरा।
सुबहुं पि हु आवण्णा, वहंति णिरणुग्गहं धीरा।।२२५८॥
अट्ठविहा पट्टवणा, तेसि आलोयणाति मूलंता।
तं पट्टवेतु धीरा, सुद्धंति विसुद्धवारिता।।२२५९॥
थेरा वि विसुद्धतरा, तेसु वि जित केति किंचि आवज्ञे।
तक्खणमेव हु तं पट्टवेंति णियमा गुरुसगासे ॥२२६०॥
एत्थ य पट्टवणं पित, आयरिओ विहिमिणं अजाणंतो।
लंछेइ य अप्पाणं. तं पि य सीमं ण सोहेति ॥२२६१॥
पुरिसे ति गतं दारं, इमं तु पिटिसेवणं पवक्खामि।
मा पुण चतुहा सेवणा, आउट्टियमादिमाहंसु॥२२६२॥
॥ थुँ ३॥७३॥

आउट्टियाय दप्पपमायकप्पेहिं वा णिसेविज्जा । दृद्धं खेत्तं कालं, भावं वाऽऽसेवओ पुरिमो ॥७४॥ आउट्टिया उचेचा, दप्पो एण होति वग्गणादीओ । कंटप्पाटि पमाओ, अहव कमायादिओ णेओ ॥२२६॥ इमो—

कमाय विकहा वियहे. इंदिय णिह प्यमाय पंचिवहो । एम पमायो भणितो. कप्पं तु इमं पवक्खामि ॥२२६४॥ गीयन्थो कडजोगी, उवउत्तो जयणज्ञत्तो सेवेज्जा । गाहापच्छद्धस्म तु. इणमो उ समासतो वोच्छं ॥२२६५॥ द्वं आहारादी, खेत्तं अद्धाणमादि णातव्वं । कालो ओमादीओ, इट्टगिलाणादि भावो तु ॥२२६६॥ ॥ थूँण्क ॥७४॥

जं जीयदाणमुत्तं, एयं पातं पमायसहियस्स । एत्तो चिय ठाणंतरमेगं वड्रेज्ज दप्पवयो ॥७५॥ जं जीतदाण भणियं, णिग्बीतियमादि अद्धमं अंते । तितयपिहसेवणाष्, पमायसिहयस्स एयं तु ॥२२६७॥ दप्पपिहसेवणाष्, पुरिमहुादी तु होति दायव्वं । अंते दसमं दिज्जा, आउद्दीष उ वोच्छामि ॥२२६८॥ ॥धैनृ॥७५॥

आउट्टियाए ठाणंतरं व सद्घाणमेव वा दिज्जा। कप्पेण पिडक्कमणं, तदुभयमहवा विणिहिद्धं ॥७६॥ आउद्दियावराहे, एकासणमादि अंते बारसमं। पाणितपायवराहे, सद्घाणं होति मूळं तु ॥२२६९॥ आउद्दिय ति गतम ॥

कप्पेण उ सेवाए, तह सुद्धो अहव मिच्छकारं तु । अहवा तदुभयप्रुत्तं, आल्रोय पहिकमाहि ति ॥ २२७०॥ कप्पपहिसेवणा गता ॥ थ्रुफी ॥७६॥

आलोयणकालम्मि १व, संकेस विसोहि भावतो णातुं। हीणं वा अहियं वा, तम्मत्तं वा वि देज्जाहि॥७७॥ आलोयणकालम्म व, गृहित अहवा वि कुश्चती किश्चि। सो संकिलिट्टिचत्तो, तस्मऽहितं दिज्ज ऊणं वा ॥२२७१॥ जो पुण आलोएन्तो, काले संवेगमुवगतो जो उ। जिंदणगरहादीहिं, विसुद्धित्तत्तो तु तस्सऽप्यं ॥ २२७२॥ जो पुण आलोएन्तो, ण वि गृहित ण वि य णिद्दए जो तु। सो मिज्झमपरिणामो, तस्स उ देज्जाहि तम्मत्तं ॥२२७३॥ ॥ धूर्मा ॥७७॥

इति दवादिबहुगुणे, गुरुसेवाए य बहुतरं देज्जा। हीणतरे हीणतरं, हीणतरे जाव झोसो त्ति ॥७८॥ इति एस दव्व खेचे, काले भावेसु बहुगुणेसू तु ।
गुरुसेवा तु पहाणा, एतेसुं बहुतरं दिज्जा ॥२२७४॥
हीणतरे हीणतरं, ति देज्ज दव्वादिमादिहीणेहिं ।
तह तह हीणं देज्जा, झोसेज्ज व सव्वहीणस्स ॥२२७५॥
॥ थूँही ॥ ७८ ॥

झोसिज्जित सुबहुं पि हु, जीएणऽण्णं तवारिहं वहयो। वेयावचकरस्स य, दिज्जित साणुग्गहतरं वा ॥७९॥

श्रोसण खवणा ग्रुंचण, एगद्वा तं तु ग्रुंचए कस्स ?।
अण्ण वसंतु वहंते, जह पट्टविए उ छम्मासे ॥२२७६॥
पंचिदिणेहिं गएहिं, पुणरिव जइ सो उ अण्णमावज्ञे।
तो से तं तिहं छुब्भित, एवं झत्रणा तु तस्स भवे॥२२७०॥
वैयावच करेंतो, जित आवज्जित तु किंचि अण्णतरं।
ताविततं से दिज्जिति, जं णित्थरती तु सो वोहं॥२२७८॥
कालं ठावितु दिक्खे, णित्थिण्णे नं तु काहिती सो तु।
एय तवािरह भणिनं (दारं), अहुणा छेदारिहं वोच्छं॥२२७९॥
॥ धुंॐ॥ ७९॥

तवगन्तिओ तवस्स य, असमत्थो तवमसहहन्तो य।
तवसा त जो ण दम्मति, अतिपरिणाम प्यसंगी य।। ८० वेदमानिक्ष सुबहुतरगुणन्मंसी, छेदावत्तिसु पसज्जमाणो य।
पासत्थादी जो वि य, जतीण पहितप्पिओ बहुसो।। ८१
उक्कोसं तवभूमीं, समतीओ सावसेसचरणो य।
छेदं पणगादीतं, पावति जा धरति परियाओ।। ८२।।
दारगाहाओ तिण्णि॥

तवबलिओ देह तवं. अहं समत्थो ति गन्तिओ एस । तवअसमत्थ गिलाणो. बालादी अहव असमत्थो ॥२२८०॥ जो उण सदृहति तवं, अहवा वी जो तवेण ण वि दम्मे। अतिपरिणामी जो तु. पुणो पुणो सेवति पसंगी ॥२२८१॥ **उत्तरगुण बहुगा तू**्रीपंडविसोहादिगा उ **णे**गविहा। भंसेति विणासेती, प्रणो प्रणो जो तु ताई तु ॥२२८२॥ छेदावत्तीओ वा, पकरेति पसज्जनी य जो तेसं ! अहुणा पासत्थादी, आदीसहेणिमाहंसु ॥ २२८३॥ पासत्थोसण्णो वा. कसील संसत्त अहव णीओ वा। वेयावचकराइण, जतीण पडितप्पिओ बहुसो ॥२२८४॥ उकोसा तत्रभूमी, आदिजिणिदस्य होति वरिसं तु । मिज्यमगाण जिणाणं, अट्ट उ मासा भवे भूमी ॥२२८५॥ चरिमस्स जिणिदस्सा, उक्कोसा भूमि होति छम्मासा । एयं तू उक्तोसं. समतीओ चरणसेसो य ॥ २२८६। एव जहुहिद्वाणं, तवगन्वियमादियाण सन्वेसि । छेदं पणगादीयं, देज्जा जा घरनि परियाओ ॥२२८७॥ छेदारिहं गयं ॥ ८२ ॥ ८२ ॥

मूलप्रायश्चित्तम्

आउट्टियाय पंचिंदियघाते मेहुणे य दण्पेणं। सेसेसुकोसाभिक्लसेत्रणादीसु तीमुं पि।।८३।। आउट्टि उवेचा तू, पंचिंदि वहेति मिहुण दणेणं। सेस वय मुसाऽदिन्नं, परिगाहो चेत्र णाद्व्यो ॥२२८८॥ एतेसुक्कोसाणि, पिंडसेत्रयऽभिक्लणं तु मिच्छा तु। एतेसि मव्वेसि, मूलं तू होति दातव्वं ॥२२८९॥०३॥८३॥ तवगव्वियादिएसु य, मूलुत्तरदोसवतियरगएमुं। दंसणचरित्तवन्ते, चियत्तिक्चे य सेट्टे य ॥८४॥ तवगिव्यमादीया, जावऽइपरिणाम अतिपसंगि ति ।
एत जहु हिट्टाणं, मूळं तू होति णातव्वं ॥२२९०॥
मूळगुण उत्तरगुणे, बहु विह बहुसो य द्से भंजति वा ।
वितकरमेयं होती, एरिसजुत्तस्स मूळं तु ॥२२९१॥
णिच्छयनयस्स चरणायिवघाये णाणदंसणवहो वि ।
ववहारस्स तु चरणे, हयम्मि भयणा तु सेमाणं ॥२२९२॥
चत्तं जेण दिरसणं, चारितं वा वि मो तु णातव्वो ।
चत्तिक्चो वेसो, चियत्तिक्चो मुणेतव्वो ॥२२९३॥

अहवा---

संजम सकलं किचं. जेणं चत्तं स चत्तकिचो तु । सेहो अणुबट्टविओ, मृलं एतेमि सन्वेसि ॥२२९४॥

अच्चंतोसण्णेसु य, परिलंगदुवे य मूलकम्मे य ।
भिक्खुम्मि य विहितत्वे, अणवहपारंचियं पत्ते॥८५॥
ओसण्णे पव्चाविय, संविग्गेहिं व जप्पभिति त ।
ओसण्णयाप विहरिओ, सो भिणतऽचंतयोसण्णो ॥२२९६॥
गिहिलिंग अण्णजित्थय, परिलंगदुवे य कुणित दप्पेणं ।
गब्भादाणे साहण, दुविहिमिहं मूलकम्मं त ॥२२९६॥
भिक्खणसीला भिक्खू, विहिततवं उत्रणयं त णातव्वं ।
तवअणवह उवणय, पारंचितवं च णातव्वं ॥२२९७॥
अतियारसेवणाप, पत्तं एयं त होति दुविह तवं ।
एतेसिं सक्वेसिं, दातव्वं होति मूलं तु ॥२२९८॥० है॥८५॥
छेदेणापरियाएऽणवहपारंचियावसाणे य ।
मूलं मृलावित्सु, बहुसो यपस ज्जणे भिणयं ॥८६॥

छिज्जंते परियाप, जस्स तु छिण्णो हु णिरवसेसो तु ।
तवअणवट्टे वूढे, पारंचितवावसाणेसु ॥२२९९॥
मूलावित्तसु एसु, पुणो पुणो सज्जए तु जो सगणे।
सन्वेसु वि एतेसुं, मूळं तू होति दातव्वं ॥२३००॥
मूलारिहं गतम् ॥ एफ्री ॥८६॥

अणवहृत्यो दुविहो, आसायण तह य होति पिडसेवी । आसायणअणवहं, समासयोऽहं इमं वोच्छं ॥२३०१॥ तित्थकरं संघ सुयं, आयरियं गणहरं मिहृहीयं । एते आसाएन्ते, पिच्छत्ते मग्गणा इणमो ॥२३०२॥ पदम बिति देस सन्वे, णवमं सेसेसु चउगुरू देसे । पिडसेवणअणवहं, अहुणा उ इमं पवक्लामि ॥२३०३॥

अनवस्थःप्य– प्रायश्वित्तम्

उक्कोसं बहुसो वा, पउडिचित्तो तु तेणियं कुणित ।
पहरित जो य सवकरवे, णिरवेकरवो घोरपरिणामो ॥
उक्कोसं तु विसिद्धं, पुणो पुणो एय होति बहुगं तु ।
कोहादी व अतीव तु. पउट्टिचतो ग्रुणेतच्यो ॥२३०४॥
पिंहसेवणअणबद्धो. होती तिविहो इमो समासेणं ।
साहिम्मयऽण्णधिम्मयतेण्णे तह हत्थताले य ॥२३०५॥
साहिम्मतेण्ण दुविहं, सिचतं तह य होति अचित्तं ।
अधित्तोविह भत्ते, सिचत्त संहावहारो तु ॥२३०६॥
साहिम्मउविहहरणं, वावारण झावणा य पत्थवणा ।
तं पुण सेहमसेहो, हरेज अहिट्ट दिट्टं वा ॥२३०॥।
सेहो ति अगीयत्थो, जो वा गीतो अणिट्टिसंपण्णो ।
उवही पुण वत्थादी, अपरिग्नह एतरो तिविहो ॥२३०८॥
अपरिग्निहतो तहियं, साहम्मी मोत्त पवसितो जस्स ।
आहरमाणे सोही, होति हमा खेलिण्फण्णा ॥२३०९॥

अण्णोवस्सयबाहिं, णिवेस वाडे य गामग्रज्जाणे । सीमाए जा णेयं. सन्वत्य वि अन्तो बहिया वा ॥२३१०॥ एतेसुं तेण्णे तेमासस्रहुं आइकाउ जा छेदो। अड्डोक्कंती णेयं, अद्दिहेसा भवे सोही ॥२३११॥ मासगुरुगादि दिहे, मूलं सेहस्स एयणिहाई । अभिसेयाऽऽयरियाणं, एक्केक्कं ढाणगं वहूं ॥२३१२॥ एवं तुवस्सयाओ, साहम्मीणुवहिमवहरंतस्स । वावारिए इदाणि, बोच्छं सयमेव गेण्डन्ते ॥२३१३॥ वावारिया गुरुहिं, वश्चह आणेह तिविद्दसुविहं ति। तं लद्धं तत्तो चिय, तुज्झं मज्झे य अत्तद्धी ॥२३१४॥ छहुओ अत्तद्वंते, जित पुण आणेत् गुरुण न णिवेदे । तो होंती चतुलहुगा, अणबट्टप्पो व आदेसा ॥२३१५॥ वावारियतेण्णेयं, अण्णो पुण सावए णिमन्तेन्ते । पहिसिद्धाऽऽयरियेणं, दट्टूणं तत्थ गंतूणं ॥२३१६॥ बेती झामिय उवही, अहयं च गुरूहिं पेसिओ देह। तो दिष्णो तेहुवही, किह पुण सहूँ हिंसो णातो ? ॥२३१७॥ सो तं घेत्रण गतो, णवरं ते आगता गुरुसगासं। पुरुछंति यते सट्टा, उवहि पहुत्तो व ण पहुत्तो ? ॥२३१८॥ केवडयं वा दट्टूं ?, तो विन्ति ण डज्झए हु उवहि ति। केण व णीतो उवही ?, इति सोचा पत्तिमप्पत्ति ॥२३१९॥ लहुगा अणुग्गहम्मी, गुरुगा अप्पत्तिए प्रुणेयन्त्रा । मूळं च तेणसद्दे, वोच्छेयपसज्जणा सेसे ॥२३२०॥ एवं ताव अहज्झते, अह सचं झामितो भवे उनहीं। पेसविको य गुरूहिं, लद्धे तहिं अंतरा जो तु ॥२३२१॥

लहे अत्तहेती, चतुलहुगा अह गुरूण ण णिविदे । तो चतुगुरुगा तहियं, अणबहुष्पो व आदेसा ॥२३२२॥ सूत्रादेशातु ।

एवं झामणहेतुं, अवहारी अह इयाणि पत्थवियं । आयरियादिण केणित, आयरियाणं त अण्लेसि ॥२३२३॥ उक्कोसो सणिजोगो, पडिग्गहो अन्तरा तहिं लद्धो । अत्तद्वंते लहुगा, गुरुगा अदत्तेऽणवट्टो वा ॥२३२४॥ एवं ता उवहिम्मी. अहुणा भत्तम्मि तेण्ण बोइछामि। जित पविसे असंदिहो. टवणकुले तो भवे लहुगा ॥२३२५॥ अज्ञ अहं संदिद्धो, पुद्घोऽपुद्घो व साहए एवं। पाहणगिलाणगद्वा, तं च पलोहंति तो बितियं ।२३२६॥ मायाणिष्फण्णं त्, एवभणंतस्य होति मासगुरू। अहवा आगंतूर्णं. णाळोए तह वि मासगुरुं ॥२३२७। कह पुण हवेज णायं, माहहिं नह य तेहिं सट्टेहिं। जह खल्छ पितृहो अण्णो, उत्तणकुलाई अमंदिहाँ ? ॥२३२८॥ गुरुसंचाडम्मि गए, भणंति गुरुज्ञोग्ग जीयमेत्ताहे । णित्थ त्रऽणुगाहम्मी. छह्मा अप्पत्तिए गुरुमा ॥२३२९॥ वोच्छेद गुरुगिलाणे, गुरुगा लहुगा य म्वमगपाहुणए ॥ गुरुगो य बालबुट्टे, सेहे य महोदरे छहुगो ॥२३३०॥ भत्तिम भणियमेतं, तेण्णं भणियं च मेयमिक्त । अहुणा सिचतम्मी, सेहं सेहीय बोच्छामि ॥२३३१॥ तं पुण णिज्जंनो वा, अभिहारेन्नो व आमियाडेजा । भिक्लादि पविद्वे वा, गाम बहि ठवेत् णिज्जंनो ॥२३३२॥ तं पुण सण्णादिगतो. अद्धाणीओ व कोति पासेजा। वंदियपुट्टो कोनी, भणे अहं पत्तति उकामो ॥२३३३॥ ससहातो अमहानो ?. ति पुच्छनो भणित ताहे ससहायो । सो कत्य ? मज्झ कज्जे, छाय पिवासस्स वा अडति ॥२३३४॥ तो बेति अण्णपासं. इम भ्रंत्रऽणुकंपराए सुद्धो तु । धम्मं च पुटुऽपृद्धो, कहेति मृद्धो अमहवाती ॥२३३५॥ सदयाए पुण दोमो, भत्तं देनम्म अहव कहवते । आसीआवणहेतं. सोहि इमेहिं त ठाणेहि ॥२३३६॥ भने पण्णत्रण णिगृहणा य वावार जंपणा चेव । पत्थवण सर्यहरणे. सेहे अब्बत्त वत्तर्य ॥ २३३७ ॥ गुरुओ चतुलह् चतुगुरु, छछह् छगगुरुग छेदमन्त्रते। वत्ते भिवखुणो मूलं, दूर्ग तु अभिसेग आयरिए ।२३३८॥ एवं ना जो णिउजति, अहिहारेन्नो प्णोति जो जाति । मो वि य तहेव पुट्टो, भणाइ वज्ञामऽमुगमूलं ॥२३३९॥ नह चेत्र भत्तपाणं, पण्णतणा चेत्र होति एन्थं पि। सेसा जिग्रहणाती, सब्वे वि पया ज संति इहं ॥२३४०॥ एमेव य इन्थीए. णिडजंनऽभिधारयंति एमेव। वत्तऽब्वताए गर्मा, दोसा य इमे हर्गतम्म ॥२३४१॥ आणायऽणंतसंमारियत्त बोहीय दुल्लभतं च साहम्मियनेण्णम्मी, पमत्तछलणाऽहिकरणं च ॥२३४२॥ बिनियपयं बोच्छेदं, पुब्बगए कालियाण्योगे य। एनेहि कारणेहिं. कप्पति सेहाऽबहारो त ॥२३४३॥ एवं त मो अवहितो, जाहे जातो मयं त पावयणी। कारणजाए य जया. होजाही अवहिनो तेण ॥२३४८॥ सो तं चिय धरित गणं, कालगता गुरुम्मि तं विहारेन्ते । जावेको जिप्फाणी, नाहे से अपनो इच्छा ॥२३४५॥ अह हरिए णिकार्णे, नाहे पुरिमाण वेव सो जाति । अह अञ्जूज्जयमरणं, पहित्रण्णो गुरुतिहारं वा ॥२३४६॥ अण्णाम्म अविष्कृते, आयरियपदारुहे तमेव गणं। धारेति जाव अण्णो, णिम्मानो तम्मि गच्छम्मि ॥२३४७॥

सचित्ततेण्णमेयं, साहम्भीणं तु एवमक्खातं। आभवणं दोसा या. परधम्मियतेण्णे बोच्छामि ॥२३४८॥ परधम्मिया वि दुविहा, लिंगपविद्वा तहा गिहत्था य । तेसिं तिविहं तेण्णं, आहारे उविह सिचते ॥२३४९॥ भिक्खमादीसंखिंह, तं लिंगं काउ भ्रंतर लुद्धो । आभोगम्मि उ लहुगा, गुरुगा उद्धंसणे होति ॥२३५०॥ कुरणिमित्तं चेव उ, अजियंना एते एत्थ पव्वइया । अविदिण्णदाणगा खळु. पत्रयणहीला द्रप्पत्ति ॥२३५१॥ गिहवासे वि वरागा, धुवं खु एते अदिदृक्क हाणा। गलओ जबर ज बलिओ. एतेसि सत्थुजा चैव ॥२३५२॥ एवं ता आहारे. जबहीतेण्णं पुणी इहं होज्जा। जह कोदि भिन्छुगादी, उबस्सए मोत्त उबगरणं ॥२३५३॥ भिक्तादिगतो तं तू, जित गिण्हति चतुलह भवे तन्थ । मिण्हण कर्ण ववहार परछकड तह य णिव्विसए ॥२३५४॥ गिण्हणे गुरुँगा छम्माम कटूणे छेटो होति बबहारे। पच्छाकडम्मि मुलं. णिव्यिमयोद्यावणे चरिमं ॥२३५५। जम्हा एने दोसा, तम्हा अविदिण्णगं ण घेत्तव्वं । उवहीतेण्णं एयं, एत्तो वोच्छामि सचिते ॥२३५६॥ खुड्डं व खुड्डियं वा. तेणेनि अवत्त पुच्छितं गुरुगा । वत्तम्मि णन्थि पुच्छा, खेतं थामं च णातूणं २३५७॥ लिंगपिवद्वाणेवं, एमेव तिहा अदिण्ण गिहियाणं। गहणादीया दोसा, सविसेसतरा भवे तेसु ॥२३५८॥ आहारे पिट्टादी, विरक्षियं दट्ट खुड्डिया गेण्हे । गेण्हंनी दिद्वा वि य, ता क्रसलपरंपरा छभणा ॥२३५९॥ तहियं होति चतुलह, अगवद्रपो व होति आदेमा । एमेव य उवहिम्मि वि. सुत्तट्टी वस्थमादीया ॥२३६०॥

णीएहिं तु अविदिण्णं, अप्पत्तवयं पुमं ण दिक्खेन्ति । अपरिग्गहमन्वत्तो, कप्पति तु जढो सदोसेहि ॥२३६१॥ अपरिग्गद्द णारी पुण, ण भवति तो सा ण कप्पति अदिण्णा। सा वि य ह काइ कप्पइ, जह पडमा खुडुमाया वा ॥२३६२॥ वितियपदं पाऽऽहारे, अद्धाणोमाइएस कज्जेस । उन्ही निनित्तमादिस्, आगाढे गहणमनिदिण्णे ॥२३६३॥ सघलीस ताव पुरुवं, बला व गेण्हंति तत्थ अदलेन्ते । बलवन्ते दृद्वसुं पुण, छण्णं पी ताहे गिण्हंति ॥२३६४॥ ताहे परिलगीण वि. जाति य पुन्वं अद्ते छण्णिम । गारत्थीस वि एवं, आगाहे होति गहणं त ॥२३६५॥ आहारे उत्रहिम्मि य, बितियपदे गहणमेतमक्खायं। एत्तो सचित्तगहणं, वोच्छामि अदिण्ण बितियपए ॥२३६६॥ णाऊण य बोच्छेयं, पुन्वगए कालिआणुओंगे य। उवयुक्तिऊण पुरुवं, होहिति जुगप्पहाण ति ॥२३६७॥ ताहे खुड्डम खुड्डी, हरेज्ज गिहि-अण्णितित्थयाणं वा । साहरिम-अण्णधरिमय, एयं तेण्णं समक्खातं ॥२३६८॥ गाहापुव्यद्धस्य तू, इति एसा अभिहिता इहं तेण्णा । अहुणा पच्छद्धस्स तु. गाहासुत्तं इमाऽऽहंसु ॥२३६९॥ अह एतो वोच्छामो, हत्थायालं जहकमेणं तु। कि पुण इत्थायालं ?, भण्णति इणमो णिसामेहि ॥२३७०॥ हत्थाताले इत्थालंबे, हत्थायाणे य होति बोद्धव्ये। एतेसि णाणतं, वोच्छामि जहाणुपुन्त्रीए ॥२३७१॥ हत्येणं जं तालण, हत्थायालं तगं मुणेतव्वं । तिहयं हवति अ दण्डो, लोइय लोउत्तरो इणमो ॥२३७२॥ जिंगाण्णिम य गुरुओ, दंदी पिंडयिम्म होति भतणा तू । एवं खु लोडयाणं, लोउत्तरियं अतो वोच्छं ॥२३७३॥

हस्तताल:

इन्थेण व पाएण व. अणवद्रप्पो त होति उमिगण्णे। पहियम्मि होति भयणा. उद्दवणे होति पारंची ॥२३७४॥ बितियपय खड्ड विणयं. गाहेन्ते अहव बोहिगाटीसु । सावयभये व घोरे, देजाही हन्थतालं त ।।२३७५॥ विजयमाहण खड्डं, कण्णामोड-खदुहा-चवेडादी। सावेक्लो इत्थतालं. दलाइ मम्माणि रक्लंनो ॥२३७६॥ परपरियावणकरणं, चोदेइ असायबंबहेउ सि । तं कह तस्साणुण्णा, तन्मेहि कया ? इमं सुणसु ॥२३७७॥ कामं परपरितावो, असानहेतू जिणेहि पण्पत्तो । आयपरहियकरो तू. इन्छिज्ञह दुम्सीले स खलु ॥२३७८॥ सिष्यं णेडणियद्रा, बाबाते सहीत लोडया गुरुणो । ते इहलोगफलाणं, महुरविवागेस उवमा तु ॥२३७९॥ अहवा वि रोगितस्सा. ओमह चाडुहि दिजाए पुन्वं। पच्छा ताडेतं पी. देहहिनहाए दिज्जित से २३८०॥ इय भवरोगत्तस्य वि. अणुक्रलेण तु सार्णा पुट्यं । पच्छा पडिकूलेण वि, परलोयहियह कायव्या ॥२३८१॥ इहपरलोगे य फलं, विणीतविणयो अणुत्तरं लभति । संविग्गाडगुणेहि, इमेहि जुत्तो महाभागी ॥२३८२॥ संविग्गो महविओ, अग्रुटी अणुयत्तओ विसेमण्ण । उज्जुत्तमपरितंतो, इन्छियमन्थं लभइ माह ॥२३८३॥ बोहिभयसावयादिसु, गणस्म गणिणो व अञ्चए पत्ते। इच्छंति इत्थयालं, कालाइवरं व सज्जं वा ॥२३८४॥ एरिसए आगारे, बोहियमादीम् जीयमंदहे। जं जस्म तु सामत्थं, सो तु ण हावेति एत्थं तु ॥२३८५॥ कुणमाणो वि हु कडणं, कयकरणो णेव दोसमब्भेति। अप्पेण बहुं इच्छिति, विसुद्धमालंबणो समणा ॥२३८६॥

आयरियस्स विणासे, गच्छे अहवा वि कुल गणे संघे। पंचिदियवोरमणं. पि कातु णित्थारणं कुज्जा ॥२३८७॥ एवं त करेन्तेणं, अव्वोच्छित्ती कया उ तित्यम्मि। जित वि सरीरावायो, तह वि य आग्राहओ सो उ ॥२३८८॥ षो पुण सइ सामन्थे, विज्ञानिमनी व अहव मारीरे। एरिसए आगाहै, हावेन्तो विराहयो भणितो ॥२३८९॥ एयं हत्थायालं, हत्थालंबं इसं सुणेतन्वं । दुक्खेण अभिद्याणं, ज सत्ताणं परित्ताणं ॥२३९० ॥ अमिवे पुरोवरोहे. एमादीवइससेमु अभिभृता ॥ संजायपत्रया खलु. अण्णेस् य एवमादीस् ॥ २३९१ ॥ मरणभएणऽभिभूए, ते णातं तेहिं वा वि भाजया त। पहिमं काउं मज्झे. चिद्रति मंते परिजवेन्तो ॥२३९२॥ एतं हत्थालंबं, हत्थायाणं अयो परं बोच्छं। जो अन्धं उप्पाप, णिमित्तमादी इमं णातं ॥२३९३॥ उन्जेणी उस्सण्णं, दो वीणया पुच्छि अण आयरिअ। ववहारं ववहरंती, तं ताहे तैमि सो साहे । २३९४॥ तस्म य भगिणीपुत्तो, भोगहिलासी तु धुंचए लिंगं। नो अणुकंषा भणती. कि काहिसि तं विणडन्थेणं १॥२३९५॥ तो बच ते वर्णाए. भणाहि अत्थं पयच्छहा मज्झे । तेणाऽऽगंतं भणिता, तो तेसि बेति अह इको ॥२३९६॥ कत्तो अत्थो अम्हं !, कि सउणी रूबए इंह हमती १। बीआ चंगेरि भरेतु णिगातो णत्लयाणं तु ॥२३९७॥ गिण्हस्र जावइएहिं, कडनं तो गहित तेण जावऽहो । वितियम्मि हायणम्मो, किं गिण्हामो ? ति ते बेन्ति ॥२३९८॥ भणितो सर्जाणहयन्तो, तण कहु वस्थ रूत कप्पासे । णेहगुलघण्णमादी, अंतो णगरस्स ठावेहि ॥२३९९॥

हर्तालम्बः

हस्तादानम्

बितिओ य तहिं भणिओ, सन्वादाणेण गिण्ह तणकहं। णगरबहिद्रा ठावय. गहिए णवरिं च वासासुं ॥२४००॥ **ढइएसुं गेहेसुं, पिलत्ते दहुं** ततो उतं णगरं। तणकट्टाणं पुजी, अइवमहर्ण्यो तु सो जातो ॥२४०१॥ दड्डमियरस्स सन्वं, ताहे सो गंतु भणति आयरियं। उच्छाइओ अहोऽहं. किह व ण णातं समं त्रभे ? ॥२४०२॥ किं सर्जाणया णिमित्तं. हयंति अम्हं ? ति भणति णेमित्ती । होति कयाइ तयऽण्णह, रुट्टं णातुं तयो खामे॥ २४०३॥ एमादिणिमिचेहिं, उप्पाएन्तम्मि अत्थयाण भवे । सो एरिसयो पुरिसो, अब्धुट्टेजा जड़ कयाइ ॥२४०४॥ तस्स त ण उबद्रवणाः तिम्मं खेत्तिम्म जाव संचिक्खे । एस चिय अणवहो, जऽणुबद्धवणा तहि खेते ॥२४०५॥ जेत्रण अण्णखेत्तं, तस्स उवट्टावणा त कायव्या । तहि णोवट्टा खेत्ते, किं कारण ? भण्णती सुणस् ॥२४०६॥ पुब्बब्भामा भेसेजा, किचि गोरव मिणेह भययो वा । ण सहति परिस्महं पि य. णाणे कंडु व्य कच्छुङ्गो ॥२४०७॥ तेण तु नहितं थाणे, ण ह् दैन्ती तस्म भावलिंगं तु । देज्ञा व कारणम्मी, असिवोमादीस तिप्पहिति ॥२४०८॥ ण य ग्रुचित अवहातो. तहितं पुट्टो त भणित वीसरियं। अहवा वि उत्तिमहे, देजाहो लिंग तत्थेव ॥२४०९॥ एवं ता ओसण्णे, गिहत्थे पुण दव्यभाविजगाई। टोण्णि वि ण वि दिर्ज्ञती, दिज्जेज व उत्तिमदृश्मि ॥२४१०॥ एवं अत्थायाणे, जे पुण सेसा हवंति अणवद्रा । साइम्मि-अण्णधम्मियतेणादी ते उ भयणिज्ञा ॥२४११॥ का पुण भयणा एत्थं ?, आहारे उविहतेण अधिते । स्रहुमो स्रहुमा ग्रुहमा, अणवट्टप्पो व आदेसा ॥२४१२॥

ì

कह पुण आएसेणं. अणवट्टो होइमं णिसामेह ।
अणुतरमंतो कीरति. अहवा उस्मण्णदोसो तु ॥२४१३॥
अहवा भिक्खू पावति, एतेमु पदेसु तिविह पच्छितं ।
णवमं पुण बोद्ध्वंतं, अभिसेगे सृरिणो दममं ॥२४१४॥
तुष्ठ्राम्म वि अवराहे, तुष्ठमतुष्ठं च दिज्जए दोण्हं ।
पारंचिए वि णवमं. अभिसेगे गुरुस्म पारंची ॥२४१६॥
अहवा अभिक्खसेवी. अणुवरमं पावती गणी णवमं ।
पावति मूलमेव तु, अभिक्खपिहसेविणो सेमा ॥२४१६॥
अत्थादाणे तिततो, अणवट्टो खेत्तओ ममक्खातो ।
गच्छे चेव वमंता. णिज्जूहिज्जंति अवसेमा ॥२४१७।
अहवा—

अभिसेओ मठवेसु य, बहुमा पारंचियावराहेसु।
अणवहणावित्तसु, पमज्जमाणो अणेगासु॥८८॥
अभिसेगो उवज्झाओ, पुणो पुणो होति बहुमसद्दो ऊ।
पारंचियावराहे, आवज्जित मन्त्रसद्दो तु ॥२४१८॥
अणवहणावत्ती उ सेवए णेगमा ति बहुमो तु।
णंतरगाथाए सो, अणवहणो ति कीरइ तु ॥२४१२॥
जुनं तावऽणवहे, दिज्जिति अणवहमेव अभिसेगे।
पारंचियावराहे, पत्ते किह पावती णवमं १ ॥२४२०॥
भण्णित जह णवदममे. आवण्णस्सावि भिक्खुणो मुलं।
दिज्जिति तहाऽभिसेगे, परं परं होति णवमं तु ॥२४२१॥

11 0 ही 110011

कीरति अणवद्वप्पो,सो लिंगक्खेत्तकालयो तवयो । लिंगेण दब्ब भावे, भणियो पब्वावणाऽणरिहो॥८९॥

अप्पडिविरयोसण्णो, ण भावलिंग।रिहोऽणवट्टप्पो । जो जेण जत्थ दूमति, पडिसिद्धा तत्थ मो खेते॥९०॥ जत्तियमेत्तं कालं, तवसा उ जहण्णएण छम्मासा। मंवच्छरमुक्कोसं, आसाती जो जिणादीणं ॥९१॥ वासं बारस वासा, पडिसेवी कारणे तु मञ्चो वि । थोवं थोवनरं वा, वहेज्ज मुच्चेज्ज वा मब्वं ॥९२॥ वंदित ण य वंदिज्जिति, परिहारतवं सुद्च्चरं चरित । संवासो से कप्पति. णालवणादीणि सेमाणि॥९३॥ परपक्ख सपक्खे वा. ण वि विख्यो नेजगादिदोसेहिं। अप्पडिविस्यो अहवा, हत्थायालादिमु प्रमु ।२४२२।। ओमन्ममाइया तू. अणुवर्या दो मलिंगमहिया ज । अणबहुष्पा ते ऊ. कायब्वा भावन्त्रिगेणं ॥२४२३। खेत्तनो गतं॥ कालना अणवद्रपो, अणुत्रगतदोमो जित्तयं कालं। सो अणवहो कीरति, जित्तयमेत्तं तयं काळ ॥२४२४। काळे ति॥ तवअणवहो द्विहो, आमायणयाय हो ति पहिसेवी। एकेको विय द्विहो, जहणाओ चेव उक्कोमो ॥२४२५॥ तवअणवट्टा ऽऽसायण, जहण्ण छम्माम वरिममुक्ताम । के पुण आसाएंनी ?. जिलमाटी जा महिट्टीयं ॥२४२६॥ पडिसेवी अणवद्दो, जहण्ण विस्म तु बारसुकोसा । कि पुण पडिसेवित तृ?. तेण्णाटीया पटा सब्वे ।२४२७॥ कारणमादिपदा तू. उत्रनि वोच्छिमु अहुण पनिहारै। वंडणमादी य पटा. समासयो हं हुमं बोच्छं ।२४२८॥ परिहरणं परिहारो, आलावणमादि दमहि तु पदेहिं। सेहादिए वि वंदिन, मो पुण ण वि वंदिणिज्जो तु ॥२४२९॥

केरिसगुणसंजुत्तो. अणब्द्रो कीरती ? इमं सुणसु । संघतण-विरिध-आगम-सत्तत्ध-धितीय उनवेयो ॥२४३०॥ उनरिमतिगसंघयणो, सञ्जूषो केवलं अजियणिहो । देउजा से सब्बतर्व, अणबद्धं वा वि पारंची ॥२४३१॥ णवदसपुव्यकतत्थो, सट्टो इव उग्ममिवितिकयकरणो । परिणामसमगो ति य, अणबहुत्पं से दायव्यं ॥२४३२॥ एवं तु गुणसमग्गो, चरित्तसेहिं तु णहु भिण्णं वा । पोराणियगुणसेढिं, णिरवयवं सो त पूरेति ॥२४३३॥ मो वंदति सेहादि वि. पग्गहितत्वो जहा जिणो चेव। विहरति बारस वरिसे, अणवद्रत्यो गणे चेव ॥२४३४॥ तस्म य परिहारतवं, पडिवर्ज्ञतस्म कीरउस्सरगो । संवाहठवणभीए. आमस असमत्थकरणं च ॥२४३५॥ किं कारणमुस्मागो ?, भण्णित सेहाण जाणणहार । भयजणणद्राय तहा. णिह्नस्मागद्रया चेन ॥२४३६॥उस्समी चि कष्णद्विनो अहं ते. अणुपरिहारी य एम गीओ ते। पुच्चं कतपरिहारो, तस्मडमितऽण्णो वि दहदेही ॥२४३७॥ संघाडो ति गतम ।

एम तर्न पडिवज्ञित, ण किंचि आलवित मा ण आलवहा ।
अत्तद्घिन्तगस्सा. वाघातो मे ण कायव्वो ॥२४३८॥
ताते य परिहरिज्ञिति, गच्छेणं सो य परिहरित गच्छं ।
अपरिहरंताऽऽरोवण. दसिंह पएहिं इमेहिं तु ॥२४३९॥
आलावण पिडयुच्छण, परियद्वृद्घाण वंदणग मते ।
पिहलेहण संघाडग. भनदाण संश्वंजणे चेव ॥२४४०॥
जा संघाडो ताव तु. लहुओ मामो तु होति गच्छस्स ।
लहुगा य भन्तदाणे, संश्वंजणे होन्नऽणुग्धाता ॥२४४१॥
संघाडओ तु जाव उ, गुरुओ मासो दसण्ह तु पयाणं।

भत्तस्स दाण संभुंजणे य परिद्वारिए गुरुगा ॥२४४२॥
कितिकम्मं च पहिच्छति, परिण्ण पहिषुच्छ देति य गुरू से।
सो वि य गुरुमुवचिद्वति, उदन्तमवि पुच्छितो कहते॥२४४३॥
टवणे ति गतं॥

एवं तु उवणाए, उवियाए भयं तु कस्सतुववज्जे । किह न मए एक्केणं. णित्यरियव्वेत्तिओ कालो ? ॥२४४४॥ ताहे आसासेती, आयरिओ मा ह एव तं बोमें। अणुपरिहारी एस य. अहवा कप्पट्टिनी एसा ॥२४४५ ॥ जं किंचि पाडिपुच्छं, तं सब्व मए समं करेजाहि। हिडिहिसी भिक्खं पि य, अणुपिरहारीण नं मद्धि । २४४६॥ एव भणिओ तू संतो. आसासती तं च ताहे णित्थरति। किह पुण होआसासी?. भणानि इणमी णिमामेहि ॥२४४७॥ जह कोति अगडपडिओ, जित भण्णित एम हा ! मतीवरती। तो ग्रंचित अंगाई, पच्छा मरती य सो ताहे ॥२४४८॥ अह पुण भण्णति एवं, मा बीहस एस आणिया रज्जु। उत्तारिज्ञिस एवं. आसासो से इवित ताहे ॥२४४९॥ एवं णदिवुब्भेते, राया रुद्रो व कासती होज्जा। सो वि जति विणद्रो सि. ति भण्णए तो विराएउजा ॥२४५०॥ अह भण्णति मा बीभे, राया असमिक्खिए अकज्जे वा। ण वि किंचि करेड़ ती, मोइज्जेहिसि व आससति ॥२४५१॥ एवासासो तस्स वि. होती आसासियस्स संतस्स । इय पडिवण्णो सो छ, वहड हु छम्मं तत्रोकम्मं ॥२४५२॥ आसासो ति गतम ॥

तो उग्गेण तवेणं, सो जाहे खामदुब्बलसरीरो । ण तरेज्जुद्वाणादी, काउं ताहे इमं भणति ॥२४५३॥ उद्रेज णिसीएज्जं. भिक्खं हिंहिज्ज भंडगं पेहे । क्रवितिपतबंधवो विय, तसिणी संघाडो तो कारं ॥२४५४॥ वितियपय अण्णगच्छा, पेसेज्जा वंदणं अयाणंतो। गेलण्णे उभयस्स व. क्रुजा करणिज्ज जयणाए ॥२४५५॥ गच्छिल्लया गुरुस्स उ. गुरु अणुपरिहारिए समप्पेति । अणुपरिहारी परिहारियस्स देन्तेस जयणा त ॥२४५६॥ सो वा करंजन तेसिं, आगाढ परंपरेण एमेव। ग्रहणो एगागिस्स व, अण्णऽसतीए करेज्जाहि ॥२४५७॥ ताहे जित्थिण्यतयो, क्रलादिकज्जे व तिप्पतो जो तु। उवडावण तस्स भवे, केयी गिहिवेस कातूणं ॥२४५८॥ गिहिवेसमकाऊणं, उबहुवेन्ते उ होति चउगुरुगा। आणादिणो य दोसा, पावइ अहवा इमे दोसे ॥२४५९॥ वरणेवत्थं एगे, ण्हाणविवज्जमवरं जुवलमेत्तं । परिमामज्झे धम्मं, सुणेज्ज कहणा पुणो दिवला ॥२४६०॥ किं तस्स त गिहिवेसं ?, किं वरणेवत्थ ? किं व जुयलं त ?। किं वा परिसामज्झे, धम्मो से कहिज्जए तस्स ? ॥२४६१॥ ओभामिओ ण कुन्त्रति, पुणो वि सो तारिसं अतीयारं। होति भयं सेहाण य. गिहिभूए धम्मया चेव ॥२४६२॥ अणबट्टप्पे त्ति गतम् ॥ 🖂 ३ ॥९३॥

तित्थगर पवयण सुतं, आयरियं गणहरं महिड्डीयं । आमाएन्तो बहुसो, आभिणिवेसेण पारंची ॥९४॥

पाराश्चिक-प्रायश्चित्तम्

किह पुण आसाएती ?, अवण्णवायाइ वयइ जं तेसि । केरिसओ तु अवण्णो ?, भण्णइ इणमो णिसामेहि ॥२४६३॥ पाहुहियं उवजीवति, जाणंतो किं व शुंजए भोगं ? । अजुत्तं च इत्थितित्यं, अतिकक्खड देसिया चरिया ॥२४६४॥

भाशातका-पाराधिकः अण्णं व एवमादी, अवि पिडमासु वि तिलोगमिहयाणं । जित भणित कीस कीरति. मल्लालंकारमादीयं ? ॥२४६५॥ जो वि पिडल्विविणयो, तं सन्त्रं अवितद्दं अकुन्वंतो । वंदणशुर्मादीयं, तित्थगरासायणा एसा ॥ २४६६ ॥ तित्थगरे ति गतम ॥

अक्कोसतज्ज्ञणादिसु, संघमिहिनिखनइ संघपिडणीए । अण्णे नि अत्थि संघा, सियाल्रणंतिकृढंकादी ॥ २४६७॥ पनयणे ति गतम् ॥

काया वया य ते चिय. ते चेत्र पमाय अप्पमाया य । मोक्खाहिगारियाणं,जोतिसनिञ्जाहि किं व पुणो ? ॥२४६८॥ स्रते त्ति गतं ।

इहिरससातगरुया, परोबदेसुङजया जहा मंखा । अत्तद्वपोसणस्या. आयरिया जह दिया चेत्र ॥२४६९॥ अब्धुङजयं विहारं, देसेन्ति परेसि सत्तमुदामीणा । उवजीवंति य इहिं. णीसंगा मो त्ति य भणंति ॥ २४७०॥ आयरिए त्ति गृतम् ।

गणहर एव महिहूी, महातवस्मी व वादिमादी वा ।
तित्थगरपढमसीसा, आदिग्गहणेण गहिना वा ॥२४७१॥
सा दुह देसे सब्वे, देसम्मी एगदेसमादीया ।
जं वयति सब्व देसो, मन्वेसिं वा वि सन्वेसो ॥२४७२॥
तित्थकरं संघं वा, देसेणं वा वि अहव सन्वेणं ।
आसाएन्ते चरिमं, सेसेमुं चतुगुरू देसे ॥२४७३॥
सब्वे वाऽऽमाएन्तो, पावित पारंचितं तु सो ढाणं ।
एत्यं पुण सचरित्ती, देसे सब्वे य अचरित्तो ॥२४७४॥
तित्थगरपढमसीसं, एकं वी साद्यंतो पारंची ।
अत्थस्सेव जिणिहो, पभवो सुत्तस्स सो जेणं ॥२४७५॥

आसायणपारंची, एमेमो विण्णितो समासेणं । दारं । पहिसेवणपारंची, एत्तो वोच्छं समासेणं ॥२४७६॥

॥ ८ है। ९४॥

जो य सिलंगे दुद्वो, कमायविस्एहिं रायवहओ य । व रायग्गमहिसिपिडसेवओ य बहुसो पगासो य ॥९५॥ पिडसेवणपारंची, निविद्वेसो विष्णिओ तु सृत्तिम्म । दुद्वादीहिं पदेहिं, समासओ हं पवक्खाम् ॥२४७७॥

दुहो य पमत्तो या, अण्णोण्णासेवणापमत्तो उ । एतेसि विभागं तू, वोच्छामि जहक्रमेणेव ॥२४७८॥

दुनिहो य होति दृहो, कसायदुहो य निसयदुहो य । दुनिहो कमायदुहो, सपक्खपरपक्खवतुभगो ॥२४७९॥

सामनणाले मुहणंतए य उत्रुगन्छि सिहरिणी चेन । एते सपन्त्वदृहा, एतेसि परूनणा इणमो ॥२४८०॥

सासवणाले लर्डु, गुरु छंदिय खड्य सन्त्रितर कोहो । खामण अणुत्रममन्ते, गणी ठवेत्तऽण्णहि परिण्णा ॥२४८१॥

पुच्छंतमणक्याए. सोचऽण्णयो गंतु कत्थ से मरीरं ?

गुरु पुरुवकहित दाइय, पडियरणं दन्तमंजणया ॥२४८२॥ मुह्रणंत्रयमालोयण, आणियमुक्कोस गहित गुरुणा य।

कुविष्ण णिसी गंतुं, गलए लड्ओ य पासुत्तो ॥२४८३॥ सम्मृढंणियरेण वि, गलए लड्ओ उतो मता दो वि ।

अण्णो पुण सिन्वंतो, अत्यामिर गुरूहिं अह भणितो ॥२४८४॥ अत्यामयम्मि वि सिन्वसि. उत्यासरिच्छच्छि तो वहे रुसिती।

तुइ उक्लणामि अच्छी, खामिज्जंतो विण वि पसिए॥२४८५॥

तो उविय गणि गच्छे. भत्तपरिण्णं करेति अण्णगणे ।

जह पदमो णवरि इहं, उल्लुअच्छी उत्ति होंकेति ॥२४८६॥

प्रतिसं**दना**-पार जिकः

कषायदुष्टः

अवरो वि सिहिरिणीए, छंदिय सन्वाइयं तो उग्गिरणा।
तत्थेव तू परिण्णा, ण गच्छती णवर अण्णत्थ ॥२४८७॥
जम्हा एते दोसा, तम्हा ण वि गेण्हियन्वयं गुरुणा।
एगस्सेव तु सन्वं, अण्णायायारसीलस्स ॥२४८८॥
गहणम्मि विही इणमो, जित गहिया मत्तगा तु सन्वेहिं।
तेसि णिमंतेन्ताणं, अलाहि पज्जन्तमो बेंति ॥२४८९॥
णिब्बन्धे थोवथोवं, सन्वेसि गेण्हए ण एगस्स।
सन्वेसि पि ण गेण्हित, बितियाएसेण गहियं पि ॥२४९०॥
गुरुभित्तमं जो य मणाणुक्लो, सो गिण्हती णिस्समणिस्सयो वा।
तस्सेव सो गेण्हित णेतरेसिं, अलब्भमाणम्मि व थोव थोवं॥
।। २४९१॥

सित लाभिम व गेण्हति, इतेरसि जाणितूण णिब्वंधं।

ग्रंचित य सावसेसं, जाणित उत्रयारभणियं च ११४९९॥

ग्रुरुसंसट्टुब्बिर्यं, बालादसतीए मण्डलि जाित।

जो अण्णायरमत्ताग, गिलाणभुत्तुब्बिरति वि ११२४९३॥

सेसाणं संसट्टं, न छुब्भई मंडलोपिडिग्गहए।

पत्ते गहितं छुब्भइ, उद्ध्यासण लंभ मोत्तूणं ११२४९४॥

पाहुणगद्घा व तयं, धरेन्तु अविवाहडं विगिचंति।

इति गहणश्चंजणिवही, अविहीगहणेण दोसेते ११२४९५॥

एते सपक्खदुद्धा, परपक्ले उदाधिमारगादीया।

परपक्खसपक्खिम य, पालकादी मुणेतव्या ॥२४९६॥

पालको त पुरोहितो. नंबदगपमुहाण जेण पंच सया।

पुव्वि विराहियेणं, जंते पीलाविता जतिणो ॥२४९७॥

मुणिसुव्वयदित्थमी, वाएण परातिओ स पुर्विव तु ।

खंदगरण्णो ताहे, पावो स प्रओसमावण्णो ॥२४९८॥

परपक्लो परपक्ले, रायादी अभमरा जहा केति। वहपरिणया व वहगा. भणिता चत्तारि दृद्रेने ॥२४९९॥ एतेसि चत्रण्हं पी, पन्छित्तमहाविहिं पनक्खामि । जे सासवणालाढी. लिंगविवेगो भवे तेसि ॥२५००॥ जो वि सपक्लो रायादियाण वहपरिणयो व वहगो वा। सो लिंगतो पारंची, जो विय परिवर्ष तं तु ॥२५०१॥ सण्णी व असण्णी वा, जो परपक्खे सपक्खे दुहो तु। तस्स णिसिद्धं लिंगं, अइसेमी वा वि से देजा ॥२५०२॥ परपक्तो परपक्ते, रायामाडीपद्टो जो वि भवे। तस्स मदेसे ण कप्पति, कप्पइ अण्णिम उवसंते ॥२५०३। एमो कसायदृहो (दारं), विसयपदृहं इदाणि वोच्छामि । तस्स वि सपक्खपरपक्खयो य चतुभंगी तह चेव ॥२५०४॥ संजित करपिटए पढमो. सेजातरि अण्णतिन्थिणी बीओ। परपक्ते संजनीए. उभयपरी होति उ चतन्थी ॥२५०५॥ लिंगेण लिंगिणीए, संपत्ति जति णिगन्छनी पात्रो । णिरयाउनं णिवंधड, आसायण ओ अबोही य ॥२५०६॥ लिंगेण लिंगिणीए, संपत्तिं जो णिगच्छती पावो । महजिणाणऽज्ञानो. सघो आसादिता नेणं । २५०७॥ पावाणं पावयरो, दृश्ण ण बद्दए हु साहूणं । जो जिणपुंगवप्रदं, णिमिजण तमेव धरिसेति ॥२५०८॥ संमारमणवयमां, जानिजरामरणवेयणापउरं) पावमलपहलछन्ना. भगंति ग्रुहाधरिसणेणं ॥२५०९॥ एमो पढमगभंगो, पारंचियमेन्थ होति पच्छितं। वितियगभंगम्मि तहा. अणुवर्यम्मी भवे चरिमं ॥२५१०॥ जन्युप्पज्जिति दोसो, कीरति पारंचिओ स तम्हा उ। सो पुण सेवि असेवी. गीयमगीयो व एमेव ॥२५११॥

विषय**दुष्टः**

वसिंह णिवेसण वाहग. साही तह गाम देस रज्जू य !
कुल गण संघे णिज्जूहणाए पारंचिओ होत ॥२५१२॥
उवसंतो वि समाणो, वारिज्जित तेसु तेसु ठाणेसु ।
हंदि हु पुणो वि दोसं, तहाणाऽऽसेवणा कुणित ॥२५१३॥
जेसु विहरंति ताओ, वारिज्जित णवर तेसु ठाणेसु ।
पढमगभंगे ताइं. सेसेसु वि ताइं ठाणाई ॥२५१४॥
इत्थं पुण अधिगारो, पढमगभंगेण उभयदुदृण ।
उच्चारियसरिसाई, सेसाई विकोवणहाए ॥२५१५॥

पुन्त्रद्धं गतम् ।

इति एस अभिहिओ तू, उभयपदुट्टी य रायवहगी य ।
रायगगहिसिपिडिसेवओ छ अहुणा इमो होति ।'२५१६॥
रायस्म महादेवी. अहवा जा जस्म होति इहा तु ।
सा तस्स होति अग्गा, अग्ग पहाण ति एगट्टा ॥२५१७॥
तं पिडिसेवित जो तू, पुणो पुणो होति वहुमसहो छ ।
लोगपगासो अहवा, सो पावित चिरमठाणं तु ॥२५१८॥
चस्सहा अण्णाण वि, जा इहा मा हु तेमि होअग्गा ।
जुवरायादीआणं, तेसि पि जहेव राइम्स ॥२५१९।
इयरमिहलासु चिरमं, ण विज्ञती कीम १ एव चोएति ।
भण्णइ बहुआऽवाया, इतरामुं अप्पणो चेव ॥२५२०॥
रायस्स अग्गमिहसीए अप्पणो कुल गणे व मंघे वा ॥
पत्थाराई दोसा, पागतमिहलामु तम्सेव ॥२५२१॥
वतलोवो सरीरे वा, दोमा ण हु कुलगणादिपत्थारो ।
एतेण कारणेणं, इतरामु ण होति चिरमपदं ॥२५२२॥

प्रमत्तपारा-श्चिकः दुझ्मो पारंची. भणितो अहुणा पमत्त वोच्छामि । सो कल्लस विकद्द विकडे, इंदिय णिद्दा य पंचविहे । २५२३॥ कोहाति चल्ड कलुसा, विकहा पुण इत्थिमादिया चल्हा।
पुन्वन्भासा वियहं, इंदिय सोयादिए पणगं ॥२५२४॥
पोग्गल मोदग फरुसग, दंते वहसाल्लभंजणे चेव ॥
थीणदीआहरणा, वोच्छामि विभागमेतेसि ॥२५२५॥

॥ 🖯 नृ॥९५॥

थीणद्धिमहादोसा, अण्णोण्णासेवणापसत्तो य। चरिमडाणावत्तिसु, बहुसो य पसज्जए जो उ ॥९६॥ जह उदअम्मि यए वा, थीणम्मि णोवलन्भए र्किचि । इदं चित्तं भण्णति, तं थीणं तेण थीणद्धी ॥२५२६॥ पिसितासि पुन्वमहियं, विविचियं दिस्स तत्थ णिसि गंतु। अण्णं हंतं खायति. उवस्सतं सेसयं णेति ॥२५२७॥ मोदगभत्तमलद्भं, भंतु कवाडे घरस्स णिसि खाइ। भाणं च भरेतृणं, आगओ आवासए वियडे ॥२५२८॥ अवरो वि फहसमूंडो, मत्तियपिंडे व छिंदिउं सीसे। एगन्ते पव्यिन्धति (य विविचिति प्र०), पामुत्ताणं वियहणा य।। अवरो विवाडिओ मत्तहत्थिणा पुरक्तवाड भंतूणं। तस्यक्रवणित दन्ते. वसही वाहिं वियडणा य ॥२५३०॥ उद्भामग बहसालेण चट्टिओ कोइ पुटव वणहन्थी। वहसालभंजणाऽऽणणः, उस्सम्माऽऽलोयण पभाए ॥२५३१॥ तस्सोदयकालम्मि. हवती जं केमवस्स अद्भवलं। ण वि देति अणतिसेसी, लिंगं अवि केवली होज्जा ॥२५३२॥ णानिम्म पण्णविज्ञति. मय लिंगं पत्थि तुज्झ चारित्तं। देसवय दंसणं वा. गिण्हस्र इच्छन्ते रमणिज्जं ॥२५३३॥ अह णेच्छति तो संघो. लिंगं हरई ण हरति सि एगो । मा गच्छेज पदोसं, छहेत्तऽसत्तीए पासुतं ॥२५३४॥

स्त्यान≀ईंनि-द्राप्रमत्तपारा-ज्ञिकः स्रन्यो ऽन्य-पाराश्चिकः णिइपमत्तो एसो, पारंची लिंगतो समक्सातो (दारं)।
कुणमाण अण्णमण्णं, पारंचीयं अतो वोच्छं ॥२५३५॥
करणं तु अण्णमण्णं, समणाण ण कप्पती सुविहियाणं।
किह करण अण्णमण्णे ?, भण्णति इणमो णिसामेहि ॥२५३६॥
आसयपोसयसेवी. केई पुरिसा दुवेदगा होन्ति।
तेसिं लिंगविवेगो, कातच्वो होति णियमेणं ॥२५३७॥
अण्णोण्णसेवणे ति गतम्॥

चिरमं अंतं भण्णित, तं पुण पारंचियं ति णातव्वं । पारंचियावराहे, पुणो पुणो सज्जए जो तु ॥२५३८॥ थीणिद्धमादियाणं, सोहिं वोच्छं पुणो वि सव्वेसिं। र्छिगादीणं कमसो, पत्थ इमा होति गाहाओ ॥२५३९॥

॥ 🞖 ॥९६॥

सो कीरति पारंची, लिंगाओ खेत्तकालओ तवतो। संपागडपडिसेवी, लिंगाओ थीणगिद्धी य ॥९०॥ वसहिणिवेसणवाडगसाहिणिओयपुरदेसरज्जाओ खेताओ पारंची, कुलगणसंघालयाओ वा॥९८॥ जत्थुष्पण्णो दोसो, उप्पज्जिस्सति व जत्थ णाऊणं। तत्तो तत्तो कीरति, खेताओ खेत्तपारंची॥९९॥ जत्तियमेनं कालं, तवसा पारंचियस्स उ स एव। कालो दुविगप्पस्स वि,अणवहष्पस्म जोऽभिहितो१००

लिङ्कक्षेत्रादि-पाराश्चिकाः आसातण पहिसेवण, दुह अणवदृम्मि जो भवे कालो । पारंचिए वि सो चेव होति उक्कोसग जहण्णो ॥२५४०॥ पारंचिया उ एते, तिण्णि वि सामण्णयो विणिहिट्टा । एत्तो जो जारिसतो, विसेसमेतेसि वोच्छामि ॥२५४१॥ दुहे य पमचे या, अण्णोण्णासेवणापसत्ते य । एतेसिं तिण्हं पी. विसेसमेत्रो पवनखामि ॥२५४२॥ तहियं तु विसयदुद्दी, सपक्खपरपक्खनी व जो होज्जा। सो कीरति पारंची, खेतेणं तू ण छिंगेणं ॥२५४३॥ अणुवरमंतो कीरति, सेसो णियमेण लिंगपारंची । खेत्तेण य लिंगेण य, पारंची अभिहिता एते ॥२५४४॥ किं एते चिय भेया, पारंचीए उयाह अण्णे वि ?। भण्णति तवपारंची, अण्णो वि हु केरिसो स खुलु?॥२५४५॥ इंदियपमायदोसा, जो तु अवराहम्रुत्तमं पत्तो । सब्भावसमाउद्दो, जइ य गुणा से इमे होंति ॥२५४६॥ वडरोसहसंघतणो. धितीय जो वज्जक्रह्रसामाणो। णवमस्स ततियवन्थुं, सुत्तऽत्थेहिं च जोऽहीओ ॥२५४७॥ खुडूगसीहनवादीहिं भावितो जो य इंदियकसाए। णिग्वेत्तण समन्थो, पत्रयणसारे अभिगतन्थो ॥२५४८॥ णिज्जहितस्स असुभो, तिलतुसमेत्तो वि जस्स ण य भावो। णिजजहणाए अरिहो. सेसे णिजजहणा णित्थ ॥२५४९॥ एयगुणसंपउत्तो, पात्रति पारंचियं तु सो ठाण । एयगुणविष्पमुके. तारिसयम्मी भवे मूलं ॥२५५०॥ पारंचियं तु पावति, आसापन्तो तहेव पडिसेवी । एकंको होति दहा, जहण्ण उक्तोसओ चैव ॥२५५१॥ आसायणो जहण्लो, छम्मासुकोस बारस त मासा। वासं बारसवासा, पहिसेवी कारणे भतिओ ॥२५५२॥ जित होज्जा आयरिओ, तो गणणिक्खेनिमित्तिरिं कातुं। गंतुणं अण्णाणे, दब्बादिसुभे विगडणा तु ॥२५५३॥ || Goo||?oo||

एगागी खेत्तबहिं, कुणति तवं सुविपुलं महासत्तो। अवलोवणमायरिओ, पतिदिणमेगो कुणति तस्स १०१ ओलोयणं गवेसणमायरिओ कुणित णिचकालं पि। खेत्तबहिचिद्रियस्सा, इमेण विहिणा पवन्खामि ॥२५५४॥ जभयम्मि दातुण स पाडिपुच्छं, बोहुं सरीरस्स य बहुमाणि। आसासतित्राण तवोकिलंतं, तमेव गच्छं पुणरेन्ति थेरा॥२५५५ असह सुर्च दाउं, दो वि अदाउं व गच्छति पदे वि। संघाडो से भत्तं, पाणं चाऽऽणेति मगोणं ॥२५५६॥ पारंचितस्स तहियं, तं वहमाणस्स होज्ज गेलण्णं । ताहे से पडिकम्मं, तेहिं पयत्तेण कायव्वं ॥२५५७॥ आहरति भत्तपाणं. उच्चत्तणमाइयं पि से कुणति। सतमेव गणाहिवई, वेयावचं जहत्थामं ॥२५५८॥ जो उ उवेहं कुज्जा, आयरिओ केणती पमाएणं। आरोवण तस्स भवे, गिलाणसत्तिम जा भणिया ॥२५५९॥ अह पूण ण तरेज्ञ गुरू, गंतुं गेलण्णमादिहिं तहियं। कालण्हे दुव्वलो वा, कलादिकज्जेण वऽण्णेण ॥२५६०॥ अभिसेयं तो पेसे. अण्णं गीयं व जो तहिं जोग्गो। पुट्टो व अपुट्टो वा, सो थि य दीवेति तं कज्जं ॥२५६१॥ सो य समत्थो होज्जा, संपाडेत्रमिह तस्स कज्जस्स । खीरादिलद्धिजुत्तो, विज्ञादिगअतिसएहिं च ॥२५६२॥ जाणंता माहप्पं. सतमेव ग्ररू वदंति तं जोगं। अत्थि मम एत्थ विसतो, अजाणए ते व सो वेति ॥२५६३॥ अच्छा महाणुभावो, जहासुहं गुणसयागरो संघो। गुरुयं पि इमं कज्जं, मं पष्प भविस्सए लहुयं ॥२५६४॥ अभिहाणहेतुकुसलो, बहुसु अणिराइओ विदुसभास । गंतुण रायभवणं, भणाइमं रायदारिहं ॥२५६५॥

पिंडहाररूवी ! भण रायरूवी, तिमच्छए संजतरूवि द्टुं। णिवेयतित्ताण सपित्थवस्स, जिंहं णिवो तत्थ तयं पवेसे॥२५६६॥ तं पूयतित्ताण सुहासणत्थं, पुर्चिछस्र राया गतकोजहुङ्को। पण्हे जराले असुए कयाई, स यावि आइक्खित पत्थिवस्स ॥ २५६७॥

जारिसया सकादीण आयरक्याण तारिसो एसो । तह राय! दारपालो. तं पि य चक्कीण पडिरूवी ॥२५६८॥ अट्टारससीलसहस्सधारया होन्ति साहुणो अह्यं। तं पनि पडिरूवित्तं. अतियारणिसेवणापत्तो ॥२५६९॥ णिज्जृहो मि णरीसर !, खेते वि जतीण अच्छितुं ण छमे । अतियारस्स विसोहिं. पकरंमि पमायमुलस्स ॥२५७०॥ धम्मकहा आतुद्दाण पुच्छणं दीवणा य कज्जस्स । कि प्रण हवेज कर्ज ?, इमेहिं होज्जाहि एगतरं ॥२५७१॥ वायपरायणक्रविओ. चेतियहृब्ब संजतीगहणे। णिव्यिसयादि चतुण्ह वि. कज्जाण हवेज्ज एगतरं ॥२५७२॥ संघो ण लभति कज्जं. लद्धं कज्जं महाणुभावेणं। तुर्व्भित विसन्जेमी, सेवियसंघो ति पूर्ति ॥२५७३॥ भणति य राया संघं. तुन्भं कज्जं करेमि अद्दमेयं। तुन्मे वि कुणह मन्झं, एयस्सेयं विसन्जेह ॥२५७४॥ अब्भत्थितो सर्यं वा. रण्णा संघो विसज्जए तृहो । आदी मज्याञ्चराणे, सो यावि इवेज्ञ सोहीए ॥२५७५॥ देसं व देसदेसं. सन्वं त्र वहेळा अहव ग्रुच्चेळा। छन्भागो से देसो, दसभागो देसदेसो तु ॥२५७६॥ छम्मासपरे बारसमासाणं बारसण्ह य समाणं । एको हो हो मासा. घउवीसा होति छन्भागो ॥२५७७॥

अट्टारस छत्तीसा, दिवसा छत्तीसमेव वरिसं च। बावत्तरिं च दिवसा. दसभागेणं हवेज्जा वा ॥२५७८॥ एयासि तिण्हं गाहाणं वक्ता--आसायणपारंची, जहण्ण छम्मास मासो छन्भागो। छब्भागेणं वरिसे, दो मासा हुति णातव्या ॥२५७९॥ पहिसेवणपारंची, वरिसे दो मास होन्ति छन्भागे। वरिसाण बारसण्हं, मासा चतुवीस छब्भागे ॥२५८०॥ देसे ति गतम्।

दसभागेणऽद्वारस, दिवसा छण्डं हवंति मासाणं। वरिसस्स त दसभागे, दिवसा छत्तीसई होंति ॥२५८१॥ वरिसाण बारसण्हं, वरिसं बावत्तरिं चऽहोरत्ता। दसभागेण इवंति हु, एसी खछ देसदेसी तु ॥२५८२॥ एवं तस्स तु संघो, तुहो देसं व देसदेसं वा। म्रेंचेज वहेजा वा. अहवा सन्त्रं व झोसेन्जा ॥२५८३॥ अहव अगीयणिमित्तं, अप्परिणामे य तस्स ववहारं। णवविह पत्थारेत्ता, गेण्हस्र एयं लहुसभत्ते ॥२५८४॥ इत्थं तु भमाडेतुं, दरिसेतुं णविवहं पि ववहारं। ताहे भण्णति एवं, सो गेण्हस लहसयं एयं ॥२५८५॥ ॥ सु०१ ॥ २०१ ॥

अणवद्वपो तवसा,तवपारंची य दो वि वोच्छिणा। चोद्दसपुवधरिम, धेरेंति सेसा तु जा तित्थं ॥१०२॥

पारंचिय अणवट्टा, तवसा आरेण भद्दबाइओ। बोच्छिण्णा हो तेसि, सेसा त धरेंति जा तित्थं ।।२५८६॥ लिंगेण खेत्त काले. घरेन्ति पारंचियाऽणवट्टा जे। र्लिगेण अणुसञ्जति, दच्वे भावे य जा तित्थं ॥२५८७॥

म छ०२ ॥ १०२ ॥

इति एस जीतकप्पे, समासतो सुविहिताणुकंपाए। कहितो देयोऽयं पुण, पत्तेसु परिच्छियगुणेसु ॥१०३॥ इति एस अणंतरतो. उद्दिही होति जीतकप्पी तु। जीतं आयरणिक्तं, कप्पो पुण छन्विहो इगमो ॥२५८८॥ आजीवियधरणाओ. व अहव जीतं इमं मुणेयव्वं। जीतस्स तस्स कप्पो. एत्थं जो जीतकप्पो सो ॥२५८९॥ सामत्थे वण्णणाए य. छेटणे करणे तहा। ओवम्मे आहिवासे य, कप्पसद्दो तु विणातो ॥२५९०॥ छेदणे वश्रणे चेव. कप्पसद्दो इहं कतो। जीयस्स वण्णणा जीतकप्पो तह छेटणं चेव ॥२५९१॥ एयस्स जीयकप्पस्स समासो इति इहं मुणेतन्त्रो ! संखेवो य समामो. ओहो त्ति व होन्ति एगट्टा ॥२५९२॥ सोभणविही त जेसिं. सोभणविहिता व स्वविहिता ते त। तेसि अणुकंपाए. कहिनो देयो य पत्तेस ॥२५९३॥ सत्तेण वि अत्थेण वि. जो पत्तो स खल जीयकप्पस्स । जोग्गो भणितो इयरो, होति अजोगो ति णातव्यो ॥२५९४॥ अधिकारी प्रणसद्दो तु विसेसणे, किन्नु विसेसेति ? तिन्तिणादीयं । पते त विसेसेती. विवरीया होन्ति पत्ता त ॥२५९५॥ अहवा---संविग्गऽवज्जभीरु, परिणामो जो य होति गीयत्थो। आयरियवण्णवादी, संगहसीलो अपरितन्तो ॥२५९६॥ मेहावी य बहसूतो, गुरुअसुयी णिश्चमप्पमत्तो य । पमादिग्रणसमग्गो. जीतस्स स होति पत्तो ति ॥२५९७॥ जह ताव छेज्ज णिहसे. अविकोवि स्वरूणयं मणेतन्वं।

तह अविकारी जो खलु, आदी मज्झे य अवसाणे ॥२५९८॥

उपसंहार:

जीतशब्द-स्यार्थः

कस्पशब्द-स्यार्थ:

≠याध्ययने

एवं देज्जा सुपरिक्खियस्स णऽनस्स जीतववहारं। अणरिहदेन्ताऽऽरोवण, आणादी जं च पाविहिती ॥२५९९॥ पंचमहव्वयमेदो. छक्षायवहो य तेणऽणुण्णाओ । मुहसीलणीयगाणं, कहयति जो पवयणरहस्सं ॥२६००॥ आमे घडे णिहित्तं, जहा जलं तं घडं विणासेति। इय सिद्धंतरहस्सं, अप्पाहारं विणासेति ॥२६०१॥ मरेज्ञ सह विज्ञाए, काले णं आगए विद् । अपर्त्त तु ण वाएजा, पर्त्तं च ण विमाणए ॥२६०२॥ वितियपए वाएजा, अद्धाणादीहिं कारणजाए। बहुसो तिष्पस्सति वा, वेयाबचादिणा अम्हं ॥२६०३॥ अप्परगंथ महत्थी, इति एसी विणिओ समासेणं । पंचमतो ववहारो, नामेणं जीयकप्पो ति ॥२६०४॥ कृष्प-व्ववहाराणं, उदहिसरिच्छाण तह णिसीहस्स । स्रतरतणबिन्दुणवणीतभूतसारेस णातच्यो ॥२६०५॥ कत्पादीए तिण्णि वि, जो सुत्तत्थेहि णाहिती णितुणं। णिगदिस्सति सो एयं, सीसपसोसाण ण हु अण्णो ॥२६०६॥ ॥ सु०३ ॥१०३॥

॥ इति जीतकल्पस्त्रं सभाष्यं परिसमाप्तमिति ॥

॥ समुत्रस्य भाष्यस्य गाथाः २७०९ ॥

॥ ग्रन्थाग्रम् – ऋोकसंख्या ३२०० ॥